अनुवाद विज्ञान

प्रश्न पत्र : Skill : Enhancement Course — **Credits : 04**

(DSC-IC) — **पूर्णांक : 100 (आई.सी.डी.ई.ओ.एल. एवं प्राईवेट परीक्षार्थी**

(SEC&2) HIND206

पूर्णांक : 70 (रेगुलर परीक्षार्थी)

आंतरिक मूल्यांकन : 30

समय : तीन घण्टे

इकाई 1

1.1 अनुवाद का तात्पर्य, अनुवाद के विभिन्न प्रकार – भाषान्तरण, सारानुवाद तथा रूपान्तरण में साम्य–वैषम्य। अनुवाद के प्रमुख प्रकार–कार्यालीय, साहित्यिक ज्ञान–विज्ञानपरक, विधिक, वाणिज्यिक।

1.2 अनुवाद के शिल्पगत भेद अधिक अनुवाद (लिटरल), भावानुवाद/छायानुवाद, आशु अनुवाद, डबिंग कम्प्यूटर अनुवाद।

इकाई 2

2.1 साहित्यिक अनुवाद के प्रमुख रूप–काव्यानुवाद, कथानुवाद, नाट्यानुवाद।

2.2 अनुवाद में पर्यवेक्षण (वेटिंग) की भूमिका।

इकाई 3

3.1 वैज्ञानिक तकनीकी शब्दावली का अनुवाद, मुहावरों/लोकोक्तियों का अनुवाद, संक्षिप्ताक्षरों तथा कूटपदों का अनुवाद, आंचलिक शब्दावली का अनुवाद, व्यंजनात्मक लाक्षणिक पद प्रयोगों का अनुवाद।

3.2 अनुवाद से सम्पादन प्रविधि।

3.3 अनुवादक की अर्हता और सफल अनुवाद के अभिलक्षण।

इकाई 4

4.1. विश्व भाषाओं की प्रमुख कृतियों के हिन्दी अनुवाद हिन्दी की प्रमुख कृतियों विश्व भाषाओं में किये गये अनुवाद।

4.2 भारत में अनुवाद प्रशिक्षण के प्रमुख केन्द्र अनुवाद के राष्ट्रीय प्राधिकरण के गहन की आवश्यकता।

4.3 भविष्य का हिन्दी अनुवाद।

प्राश्निक के लिए निर्देश :

1. प्रश्न पत्र दो भागों में विभक्त होगा। पहला भाग अनिवार्य है, जिसमें एक प्रश्न के अन्तर्गत 14 वस्तुनिष्ठ बहुविकल्पीय प्रश्न पूछे जाएंगे। वस्तुनिष्ठ प्रश्न समान रूप से चारों इकाइयों में से पूछे जाएंगे। वस्तुनिष्ठ प्रश्न समान रूप से चारों इकाइयों में से पूछे जाएंगे।

   14 X 1 = 14 अंक (रेगुलर, आई.सी.डी.ई.ओ. एवं प्राइवेट)

2. दूसरे भाग के अन्तर्गत कर प्रश्न शत–प्रतिशत विकल्प के साथ चारों इकाइयों में से पूछे जाएंगे। सभी प्रश्न को दो उपविभागों में विभाजित किया जाएगा जिनमें प्रत्येक प्रश्न के लिए 7 अंक निर्धारित किए गए हैं।

   7+7 = 14 अंक (रेगुलर)

   10¾ + 10¾ + 21½ अंक (आई.सी.डी.ई.ओ.एल. एवं प्राईवेट)

अंक विभाजन :

रेगुलर : 14 + 14(7+7) 14(7+7) + 14(7+7) + 14(7+7) = 70 अंक

<u>आई.सी.डी.ई.ओ.एल एवं प्राईवेट</u> विद्यार्थियों के लिए दूसरे भाग के अन्तर्गत प्रत्येक प्रश्न 21½ अंकों का होगा।

14 + 21½ + 21½ + 21½ + 21½ = 100 अंक

इकाई-1
अनुवाद का तात्पर्य

संरचना

1.1 भूमिका

1.2 उद्देश्य

1.3 अनुवाद

1.3.1 अनुवाद का अर्थ, परिभाषा एवं क्षेत्र

- अनुवाद का अर्थ
- अनुवाद की परिभाषा
- अनुवाद का क्षेत्र

स्वयं आकलन प्रश्न-1

1.4 अनुवाद की परम्परा

- प्राचीन परम्परा
- आधुनिक परम्परा

स्वयं आकलन प्रश्न-2

1.5 सारांश

1.6 कठिन शब्दावली

1.7 स्वयं आकलन हेतु प्रश्नों के उत्तर

1.8 संदर्भित पुस्तकें

1.9 सात्रिक प्रश्न

1.1 भूमिका

इकाई एक के अन्तर्गत हम अनुवाद का अर्थ अनुवाद की परिभाषा, अनुवाद का क्षेत्र, अनुवाद की परंपरा प्राचीन परंपरा तथा आधुनिक परंपरा का विस्तारपूर्वक अध्ययन करेंगे।

1.2 उद्देश्य

इकाई एक का अध्ययन करने के पश्चात हम यह जानने में सक्षम होगे कि-

1. अनुवाद का अर्थ क्या है ?
2. अनुवाद की परिभाषा क्या है ?
3. अनुवाद की परंपरा कहाँ से प्रारंभ होती है ?

4 अनुवाद के प्रमुख क्षेत्र कौन-कौन से है।

1.3 अनुवाद

किसी भाषा में कही या लिखी गयी बात का किसी दूसरी भाषा में सार्थक परिवर्तन अनुवाद (Transtacon) कहलाता है। अनुवाद का कार्य बहुत पुराने समय से होता आया है।

संस्कृत में 'अनुवाद' शब्द का उपयोग शिष्य गुरु बद बात के दुहराए जाने, पुनः कथन, समर्थन के लिए प्रयुक्त कथन आवृत्ति जैसे कई संदर्भो में किया गया है। संस्कृत के 'वद्' धातु में 'अनुवाद' शब्द का निर्माण हुआ है। 'वद्' का अर्थ है बोलना 'वद्' धातु में 'अ' प्रत्यय जोड़ देने पर भाववाचक संज्ञा में इसका परिवर्तित रूप है। 'वाद' जिसका

अर्थ है 'कहने की क्रिया' या 'कही हुई बात'। 'वाद' में 'अनु' उपसर्ग जोड़कर 'अनुवाद' शब्द बना है. जिसका अर्थ है, प्राप्त कथन का पुनः कहना। इसका प्रयोग पहली बार **मोनियर विलियम्स** ने अंग्रेजी शब्द टांसलेशन के पर्याय के रूप में किया। इसके बाद ही 'अनुवाद' शब्द का प्रयोग एक भाषा में किसी के द्वारा प्रस्तुत की गई सामग्री को दूसरी भाषा में पुनः प्रस्तुति के संदर्भ में किया गया।

वास्तव में अनुवाद भाषा के इन्द्रधनुषी रूप की पहचान का समर्थतम मार्ग है। अनुवाद की अनिवार्यता को किसी भाषा की समृद्धि का शोर मचाकर टाला नहीं जा सकता और न अनुवाद की बहुकोणीय उपयोगिता से इन्कार किया सकता है। Translation के पर्यायस्वरूप 'अनुवाद' शब्द का स्वीकृत अर्थ है, एक भाषा की विचार सामग्री की दूसरी भाषा में पहुंचाना। अनुवाद के लिए हिंदी में 'उल्था' का प्रचलन भी है। अंग्रेजी में Translation के साथ ही Translation का प्रचलन भी है जिसे हिंदी में 'लिप्यन्तरण' कहा जाता है।

अनुवाद के लिए 'भाषांतर' और 'रूपांतर' का प्रयोग भी किया जाता रहा है, लेकिन अब इन दोनों ही शब्दों के नए अर्थ और उपयोग प्रचलित हैं। 'भाषांतर' और 'रूपांतर' का प्रयोग अँग्रेजी के Translation शब्द के पर्याय स्वरूप होता है. जिसका अर्थ है दो व्यक्तियों के बीच भाषिक संपर्क स्थापित करना। कन्नड़भाषी व्यक्ति और असमियाभाषी व्यक्ति के बीच की भाषिक दूरी को भाषांतरण के द्वारा ही दूर किया जाता है। 'रूपांतर' शब्द इन दिनों प्रायः किसी एक विधा की रचना को अन्य विधा में प्रस्तुति के लिए प्रयुक्त है। जैसे, प्रेमचन्द के उपन्यास 'गोदान' का रूपांतरण 'होरी' नाटक के रूप में किया गया है।

किसी भाषा में अभिव्यक्त विचारों को दूसरी भाषा में यथावत् प्रस्तुत करना अनुवाद है। इस विशेष अर्थ में ही 'अनुवाद' शब्द का अभिप्राय सुनिश्चित है। जिस भाषा में अनुवाद किया जाता है। वह मूलभाषा या स्त्रोतभाषा है। उससे जिस नई भाषा में अनुवाद करना है, वह 'प्रस्तुत भाषा' या 'लक्ष्य भाषा' है। इस तरह. स्त्रोत भाषा में प्रस्तुत भाव या विचार को बिना किसी परिवर्तन के लक्ष्यभाषा में प्रस्तुत करना ही अनुवाद है।

इतिहास

अनुवाद असाधारण रूप से कठिन और आह्वाहनात्मक कार्य माना जाता है। यह एक जटिल, कृत्रिम आवश्यकता जनित और एक दृष्टि से सर्जनात्मक प्रक्रिया है. जिसमें असाधारण और विशिष्ट कोटि की प्रतिभा की आवश्यकता होती है। यह इसकी अपनी प्रकृति है। परन्तु माना जाता है कि मौलिक लेखन न होने के कारण अनुवाद को सम्मान का स्थान नहीं मिलता है क्योंकि इस बात की अवगणना होती है कि अनुवाद इसीलिए कठिन है कि वह मौलिक लेखन नहीं-पहले कही गई बात को हो दुबारा कहना होता है जिसमें अनेक नियन्त्रणों और बंधनों का पालन करना आवश्यक हो जाता है। इस प्रकार अमौलिक होने के कारण अनुवाद का महत्व तो कम हो गया परन्तु इसी कारण इसके लिए अपेक्षित नियन्त्रणों और बन्धनों को महत्त्वपूर्ण नहीं समझा गया। इस सम्बन्ध में सृजनशील लेखकों के विचारों की प्रायः चर्चा होती रही है। कुछ विचार इस प्रकार हैं-

अनुवाद

(क) सम्पूर्ण अनुवाद कार्य केवल एक असमाधेय समस्या का समाधान खोजने के लिए किया गया प्रयास मात्र है। **(हुम्बोल्त)**

(ख) किसी कृति का अनुवाद उसके दोषों को बढ़ा देता है और उसके गुणों को विद्रूप कर देता है। **(वाल्तेयर)**

(ग) कला की एक विधा के रूप में अनुवाद कभी सफल नहीं हो सकते। **(चक्रवर्ती राजगोपालाचारी)**

(घ) अनुवादक वंचक होते हैं। **(एक इतालवी कहावत)**

ऐसे विचारों के उद्‌भव के पीछे तत्कालीन परिस्थितियाँ तथा उनसे प्रेरित धारणाएँ मानी जाती हैं। पहले अनुवाद सामग्री का बहुलांश साहित्यिक रचनाएँ होती थीं, जिनका अनुवाद रचनाओं को साहित्यिक प्रकृति की सीमाओं के कारण पाठक को आशा के अनुरूप नहीं हो पाता था। साथ ही यह भी धारणा थी कि रचना को भाषा के प्रत्येक अंश का अनुवाद अपेक्षित है जिससे मूल संवेदना का कोई अंश छूट न पाए और क्योंकि यह सम्भव नहीं, अतः अनुवाद को प्रवंचना की कोटि में रख दिया गया था।

पृष्ठभूमि

यह स्थिति स्थूल रूप से उन्नीसवीं शताब्दीं के पूर्वार्द्ध तक रही. जिसमें अनुवाद मुख्य रूप में व्यक्तिगत रुचि से प्रेरित अधिक था सामाजिक आवश्यकता से प्रेरित कम। इसके अतिरिक्त मौलिक लेखन की परिमाणगत प्रचुरता के कारण भी इस प्रकार की राय बनी। दूसरे विश्वयुद्ध के पश्चात् साम्राज्यवाद के खण्डित होने के फलस्वरूप अनेक छोटे–बड़े राष्ट्र स्वतन्त्र हुए तथा उनकी अस्मिता का प्रश्न महत्त्वपूर्ण हो गया। संघीय गणराज्यों के घटक भी अपनी अस्मिता के विषय में सचेत होने लगे। इस सम्पर्क स्थापना तथा अस्मिता विकास की स्थिति में भाषा का केन्द्रीय स्थान है, जो बहुभाषिकता की स्थिति के रूप में दिखाई पड़ता है। इसमे अनुवाद की सत्ता अवश्यम्भावी है। इसके फलस्वरूप अनुवाद प्रधान रूप से एक सामाजिक आवश्यकता बन गया। विविध प्रकार के लेखनों के अनुवाद होने लगे। अनुवाद कार्य एक व्यवसाय हो गया। अनुवादकों को प्रशिक्षित करने के अभिकरण स्थापित हो गए जिनमें अल्पकालीन और पूर्णसत्रीय पाठ्यक्रमों और कार्यशालाओं आदि का आयोजन किया जाने लगा। इसका यह भी परिणाम हुआ कि एक ओर तो अनुवाद के प्रति सामाजिक दृष्टिकोण बदला तथा दूसरी ओर ज्ञानात्मक दृष्टि से अनुवाद सिद्धान्त के विकास को विशेष बल मिला तथा अनुवाद प्रशिक्षण पाठ्यक्रमों के लिए अनुवाद सिद्धान्त की आवश्यकता को स्वीकार किया गया। फलस्वरूप अनुवाद सिद्धान्त एक अपेक्षाकृत स्वतन्त्र ज्ञानशाखा बन गया जिसकी जानकारी अनुवादक, अनुवाद शिक्षक, और अनुवाद समीक्षक तीनों के लिए उपादेय हुआ।

सामयिक सन्दर्भ

अनुवाद के विषय में सैद्धान्तिक चर्चा का सूत्रपात आधुनिक युग में ही हुआ ऐसा समझना तथ्य और तर्क दोनों के ही विपरीत माना जाने लगा। अनुवाद कार्य की लम्बी परम्परा को देखते हुए यह मानना तर्कसंगत बन गया कि अनुवाद कार्य के विषय में सैद्धान्तिक चर्चा की परम्परा भी पुरानी है। ईसा पूर्व पहली शताब्दी में सिसरो के लेखन में अनुवाद चिन्तन के बीज प्राप्त होते हैं और तत्पश्चात भी इस विषय पर विद्वान अपने विचार प्रकट करते रहे हैं। इस चिन्तन को पृष्ठभूमि भी अवश्य रही है, यद्यपि उसे स्पष्ट रूप से पारिभाषित नहीं किया गया। यह अवश्य माना गया कि जिस प्रकार अनुवाद कार्य का संगठित रूप में होता आधुनिक युग की देन है, उसी प्रकार अनुवाद सिद्धान्त को अपेक्षाकृत सुपरिभाषित पृष्ठभूमि का विकसित होना भी आधुनिक युग की देन है।

अनुवाद सिद्धान्त के आधुनिक सन्दर्भ की मूल विशेषता है इसकी बहुपक्षीयता। यह किसी एकान्वित पृष्ठभूमि पर आधारित न होकर अनेक परन्तु परस्पर सम्बद्ध शास्त्रों को समन्वित पृष्ठभूमि पर आधारित है जिनके प्रसंगोचित अंशों से वह पृष्ठभूमि निर्मित है। मुख्य शास्त्र हैं– पाठ संकेत विज्ञान, सम्प्रेषण सिद्धान्त भाषा प्रयोग सिद्धान्त और तुलनात्मक अनुप्रयुक्त भाषाविज्ञान। यह स्पष्ट करना भी उचित होगा कि एक और मानव अनुवाद तथा यान्त्रिक अनुवाद तथा दूसरी ओर लिखित अनुवाद और मौखिक अनुवाद के व्यावहारिक महत्त्व के कारण इनके सैद्धान्तिक पक्ष के विषय में भी चिन्तन आरम्भ होने लगा है। तथापि मानवकृत लिखित माध्यम के अनुवाद की ही परिमाणगत तथा गुणात्मक प्रधानता मानी जाती रही है तथा इनसे सम्बन्धित सैद्धान्तिक चिन्तन के मुद्दे विशेष रूप से प्रासंगक है।

यद्यपि प्राचीन भारतीय परम्परा में अनुवाद चिन्तन की परम्परा उतने व्यवस्थित तथा लेखबद्ध रूप में प्राप्त नहीं होती जिस प्रकार पश्चिम में तथापि अनुवाद चिन्तन के बीज अवश्य उपलब्ध है। तदनुसार, अनुवाद पुनरुक्ति हैं–एक भाषा में व्यंजित सन्देश को दूसरी भाषा में पुन: कहना।

अनुवाद

अनुवाद के प्रति यह दृष्टि पश्चिमी परम्परा में स्वीकृत धारणा से बाह्य स्तर पर ही भिन्न प्रतीत होती है। परन्तु इस दृष्टि को अपनाने में अनुवाद सम्बन्धी अनेक सैद्धान्तिक बिन्दुओं को अधिक विशद् तथा संगत व्याख्या की गई है। इसी सम्बन्ध में दूसरी दृष्टि द्वन्द्वात्मकता की है जो आधुनिक है तथा मुख्य रूप से संरचनावाद की देन है।

अनुवाद कार्य की परम्परा को देखने से यह स्पष्ट है कि अनुवाद सिद्धान्त सम्बन्धी चिन्तन साहित्यिक कृतियों को लेकर ही अधिक हुआ है। यह स्थिति संगत भी है। विगत युग में साहित्यिक कृतियों को ही अनुवाद के लिए चुना जाता था। अब भी साहित्यिक कृतियों के ही अनुवाद अधिक परिमाण में होते हैं। तथापि, परिस्थितियों के अनुरोध से अब साहित्येत्तर लेखन का अनुवाद भी अधिक मात्रा में होने लगा है। विशेष बात यह है कि दोनों कोटियों के लेखना में एक मूलभूत अन्तर है जिसे लेखक की व्यक्तिनिष्ठता तथा निर्वैयक्तिकता की शब्दावली में अधिक स्पष्ट रीति से प्रकट कर सकते है। व्यक्तिनिष्ठ लेखन का अपनी प्रकृति की विशेषता से कुछ अपना ही सन्दर्भ है। यह कहकर हम दोनों की उभयनिष्ठ पृष्ठभूमि का निषेध नहीं कर रहे, परन्तु प्रस्तुत सन्दर्भ में हम दोनों की दूरी और आपेक्षिक स्वायत्तता को विशेष रूप से उभारना चाहते है। यह उचित ही है कि भाषा प्रयोग के पक्ष से निर्वैयक्तिक लेखन के अनुवाद के सैद्धान्तिक सन्दर्भ का भी विशेष रूप से उभारा जाए।

विस्तार

अनुवाद सिद्धान्त का एक विकासमान आयाम है अनुसन्धान की प्रवृत्ति। अनुवाद सिद्धान्त की बहुविद्यापरक प्रकृति के कारण विभिन्न क्षेत्रों के विशेषज्ञ भाषाविज्ञानी, समाजशास्त्री, मनोविज्ञानी, शिक्षाविद, नृतत्त्वविज्ञानी, सूचना सिद्धान्त विशेषज्ञ परस्पर सहयोग के साथ अनुवाद के सैद्धान्तिक अंशों पर शोधकार्य में रुचि लेने लगे। अनुवाद कार्य का क्षेत्र बढ़ता गया। अलग-अलग संस्कृतियों के लोगों में सम्पर्क बढ़ा लोग विदेशों में शिक्षा के लिए जाते व्यापारिक-औद्योगिक संगठन विभिन्न देशों में काम करते, विभिन्न भाषा-भाषी लोग सम्मेलनों में एक साथ बैठकर विमर्श करते, राष्ट्रों के मध्य राजनयिक अनुबन्ध होने लगे। इन सभी में अनुवाद को अनिवार्य रूप से आवश्यकता प्रतीत हुई और अनुवाद की विशिष्ट समस्याएँ उभरने लगी। इन समस्याओं का अध्ययन अनुवाद सम्बन्धी अनुसन्धान का उर्वर क्षेत्र बना। एक और भाषा और संस्कृति तथा दूसरी ओर भाषा और विचार के मध्य सम्बन्ध पर अनुवाद द्वारा प्रस्तुत साक्ष्य के आधार पर नया चिन्तन सामने आया।

मशीन अनुवाद तथा मौखिक अनुवाद के क्षेत्रों में नई-नई सम्भावनाएँ सामने आने लगी. जिसने इन क्षेत्रों में अनुवाद अनुसन्धान को गति प्रदान की। मानव अनुवाद तथा लिखित अनुवाद के परम्परागत क्षेत्रों पर भी भाषा अध्ययन की नई दृष्टियों ने विशेषज्ञों को नूतन पद्धति से विचार करने के लिए प्रेरित किया। इन सब प्रवृत्तियों से अनुवाद सिद्धान्त को प्रतिष्ठा का पद मिलने लगा और इसे सैद्धान्तिक शोध के एक उपयुक्त क्षेत्र के रूप में स्वीकृति प्राप्त होने लगी।

अनुवाद दशा में पहला सार्थक प्रयास एच. एच. विल्सन ने 1855 में 'ग्लारी ऑफ ज्यूडिशियल एड रेवेन्यू टर्म्स' के द्वारा किया। सन् 1961 में राजभाषा विधायी आयोग की स्थापना हुई। इसका काम अखिल भारतीय मानक विधि शब्दावली तैयार करना था। 1970 में विधि शब्दावली का प्रकाशन हुआ। इसका परिवर्धन होता आ रहा है। इसका नवीन संस्करण 1984 में निकला। इस आयोग ने कानून संबधी अनेक ग्रंथों का अनुवाद किया है। कई न्यायालयों में न्यायाधीश हिंदी में भी निर्णय देने लगे है।

1.3.1 अनुवाद का अर्थ, परिभाषा एवं क्षेत्र

भारत में अनुवाद की परम्परा प्राचीन काल से ही चली आ रही है। कहते है अनुवाद उतना ही प्राचीन है जितनी कि भाषा। आज 'अनुवाद' शब्द हमारे लिए कोई नया शब्द नहीं है। विभिन्नभाषायी मंच पर, साहित्यिक पत्रिकाओं में अखबारों में तथा रोजमर्रा के जीवन में हमें अक्सर 'अनुवाद' शब्द का प्रयोग देखने-सुनने को मिलता है। साधारणत: एक भाषा-पाठ में निहित अर्थ या संदेश को दूसरे भाषा पाठ में यथावत् व्यक्त करना अर्थात एक भाषा में कही गई बात का दूसरी भाषा में कहना अनुवाद है। परंतु यह कार्य उतना आसान नहीं, जितना कहने या सुनने में जान पड़ रहा है। दूसरा अनुवाद सिद्धांत की चर्चा करना और व्यावहारिक अनुवाद करना दो भिन्न प्रदेशों से गुजरने जैसा है फिर भी इसमें कोई दो राय नहीं कि अनुवाद के सिद्धांत हमें अनुवाद कर्म की जटिलताओं से परिचित कराते हैं। फिर, किसी भी भाषा के साहित्य में और ज्ञान-विज्ञान के क्षेत्र में जितना महत्त्व मूल लेखन का है उससे कम महत्त्व अनुवाद का नहीं है लेकिन सहज और संप्रेषणीय अनुवाद मूल लेखन से भी कठिन काम है। भारत जैसे बहुभाषी देश के लिए अनुवाद की समस्या और भी महत्वपूर्ण है। इसको जटिलता को समझना अपने आप में बहुत बड़ी समस्या है।

अनुवाद का अर्थ

अनुवाद एक भाषिक क्रिया है। भारत जैसे बहुभाषा-भाषी देश में अनुवाद का महत्त्व प्राचीन काल से ही स्वीकृत है। आधुनिक युग में जैसे-जैसे स्थान और समय की दूरियाँ कम होती गई वैसे-वैसे द्विभाषिकता की स्थितियों और मात्रा में वृद्धि होती गई और इसके साथ-साथ अनुवाद का महत्त्व भी बढ़ता गया। अन्यान्य भाषा-शिक्षण में अनुवाद विधि का प्रयोग न केवल पश्चिमी देशों में वरन् पूर्वी देशों में भी निरन्तर किया जाता रहा है। बीसवीं शताब्दी में देशों के बीच दूरियाँ कम होने के परिणामस्वरूप विभिन्न वैचारिक धरातलों और आर्थिक, औद्योगिक स्तरों पर पारस्परिक भाषिक विनिमय बढ़ा है और इस विनिमय के साथ-साथ अनुवाद का प्रयोग और अधिक किया जाने लगा है।

साधारणतः अनुवाद कर्म में हम एक भाषा में व्यक्त विचारों को दूसरी भाषा में व्यक्त करते हैं। अनुवाद कर्म के मर्मज्ञ विभिन्न मनीषियों द्वारा प्रतिपादित अलग-अलग शब्दों में परिभाषित किए हैं। अनुवाद के पूर्ण स्वरूप को समझने के लिए यहाँ कुछ महत्त्वपूर्ण परिभाषाओं का उल्लेख किया जा रहा है-

पाश्चात्य चिन्तन

नाइडा- 'अनुवाद' का तात्पर्य है स्रोत भाषा में व्यक्त सन्देश के लिए लक्ष्य-भाषा में निकटतम सहज समतुल्य सन्देश को प्रस्तुत करना। यह समतुल्यता पहले तो अर्थ के स्तर पर होती है फिर शैली के स्तर पर।'

जॉन कनिंगटन -'लेखक ने जो कुछ कहा है, अनुवादक को उसके अनुवाद का प्रयत्न तो करना ही है जिस ढंग से कहा उसके निर्वाह का भी प्रयत्न करना चाहिए।'

कैटफोड -'एक भाषा की पाठ्य सामग्री को दूसरी भाषा की समानार्थक पाठ्यसामग्री से प्रतिस्थापना ही अनुवाद है।

सैमुएल जॉनसन- 'मूल भाषा की पाठ्य सामग्री के भावों की रक्षा करते हुए उसे दूसरी भाषा में बदल देना अनुवाद है।'

फॉरेस्टन-'एक भाषा की पाठ्य सामग्री के तत्त्वों को दूसरी भाषा में स्थानान्तरित कर देना अनुवाद कहलाता है। यह ध्यातव्य है कि हम तत्त्व या कथ्य को संरचना (रूप) में हमेशा अलग नहीं कर सकते हैं।'

हैलिडे- 'अनुवाद एक सम्बन्ध है, जो दो या दो से अधिक पाठों के बीच होता है, ये पाठ समान स्थिति में समान प्रकार्य सम्पादित करते हैं।'

न्यूमार्क- अनुवाद एक शिल्प है, जिसमें एक भाषा में व्यक्त सन्देश के स्थान पर दूसरी भाषा के उसी सन्देश को प्रस्तुत करने का प्रयास किया जाता है।'

इस प्रकार नाइडा ने अनुवाद में अर्थ पक्ष तथा शैली पक्ष दोनों का महत्त्व देने के साथ-साथ दोनों को समतुल्यता पर भी बल दिया है। जहाँ नाइडा ने अनुवाद में मूल-पाठ के शिल्प की तुलना में अर्थ पक्ष के अनुवाद को अधिक महत्त्व दिया है. वहीं कैटफोड अर्थ की तुलना में शिल्प सम्बन्धी तत्त्वों को अधिक महत्त्व देते हैं। सैमुएल जॉनसन ने अनुवाद में भावों की रक्षा की बात कही है तो न्यूमार्क ने अनुवाद कर्म को शिल्प मानते हुए निहित सन्देश को प्रतिस्थापित करने की बात कही है। कैटफोड ने अनुवाद को पाठसामग्री के प्रतिस्थापन के रूप में परिभाषित किया है। उनके अनुसार यह प्रतिस्थापन भाषा के विभिन्न स्तरों (स्वन स्वनिम, लेखिम) भाषा की वर्ण सम्बन्धी इकाइयां (लिपि वर्णमाला आदि) शब्द तथा संरचना के सभी स्तरों पर होना चाहिए। नाइडा कैटफोड, न्यूमार्क तथा सैमुएल जॉनसन की उपर्युक्त परिभाषाओं से स्पष्ट हो जाता है कि अनुवाद एक भाषा पाठ में व्यक्त (निहित) सन्देश को दूसरी भाषा पाठ में प्रस्तुत करने की प्रक्रिया का परिणाम है। हैलिडे अनुवाद को प्रक्रिया या उसके परिणाम के रूप में न देखकर उसे दो भाषा-पाठों के बीच ऐसे सम्बन्ध के रूप में परिभाषित करते हैं जो दो भाषाओं के पाठों के मध्य होता है।

भारतीय चिंतन

देवेन्द्रनाथ शर्मा- विचारों को एक भाषा से दूसरी भाषा में रूपान्तरित करना अनुवादहै।

भोलानाथ-किसी भाषा में प्राप्त सामग्री को दूसरी भाषा में भाषान्तरण करना अनुवाद है दूसरे शब्दों में एक भाषा में व्यक्त विचारों को यथा सम्भव और सहज अभिव्यक्ति द्वारा दूसरी भाषा में व्यक्त करने का प्रयास ही अनुवाद है।

पट्टनायक- अनुवाद वह प्रक्रिया है जिसके द्वारा सार्थक अनुभव (अर्थपूर्ण सन्देश या सन्देश का अर्थ) को एक भाषा-समुदाय से दूसरी भाषा-समुदाय में सम्प्रेषित किया जाता है।'

विनोद गोदरे - अनुवाद, स्रोत-भाषा में अभिव्यक्त विचार अथवा रचना अथवा सूचना साहित्य को यथासम्भव मूल भावना के समानान्तर बोध एवं संप्रेषण के धरातल पर लक्ष्य भाषा में अभिव्यक्त करने की प्रक्रिया है।

रीतारानी पालीवाल- स्रोत भाषा में व्यक्त प्रतीक व्यवस्था को लक्ष्य भाषा की सहज प्रतीक व्यवस्था में रूपान्तरित करने का कार्य अनुवाद है।

दंगल झाल्टे- स्रोत भाषा के मूल पाठ के अर्थ को लक्ष्य भाषा के परिनिष्ठित पाठ के रूप में रूपान्तरण करना अनुवाद है।

बालेन्दु शेखर- अनुवाद एक भाषा समुदाय के विचार और अनुभव सामग्री को दूसरी भाषा समुदाय की शब्दावली में लगभग यथावत् सम्प्रेषित करने की साद्देश्यपूर्ण प्रक्रिया है।

उपर्युक्त परिभाषाओं से स्पष्ट होता है कि अनुवाद की परिकल्पना में स्रोत-भाषा की सामग्री लक्ष्य भाषा में उसी रूप में सम्पूर्णता में प्रकट होती है। सामग्री के साथ प्रस्तुति के ढंग में भी समानता हो। मूल भाषा से लक्ष्य-भाषा में रूपान्तरित करने में स्वाभाविकता का निर्वाह अनिवार्यतः हो और लक्ष्य-भाषा में व्यक्त विचारों में ऐसी सहजता हो कि वह मूल भाषा पर आधारित न होकर स्वयं मूल-भाषा होने का एहसास पैदा करे। हम यह भी लक्ष्य करते हैं कि लगभग सभी परिभाषाओं में अनुवाद प्रक्रिया को शामिल किया गया है। इन सभी परिभाषाओं के आधार पर 'अनुवाद' को परिभाषित किया जा सकता है अनुवाद मूल-भाषा या स्रोत-भाषा में निहित अर्थ (या सन्देश) व शैली को यथा सम्भव सहज समतुल्य रूप में लक्ष्य भाषा को प्रकृति व शैली के अनुसार परिवर्तित करने की सोद्देश्यपूर्ण प्रक्रिया है।'

अनुवाद के क्षेत्र

आज की दुनिया में अनुवाद का क्षेत्र बहुत व्यापक हो गया है। शायद ही कोई क्षेत्र बचा हो जिसमें अनुवाद की उपादेयता को सिद्ध न किया जा सके। इसलिए यह कहना अतिशयोक्ति न होगी कि आधुनिक युग के जितने भी क्षेत्र है सबके सब अनुवाद के भी क्षेत्र है. चाहे न्यायालय हो या कार्यालय, विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी हो या शिक्षा संचार हो या पत्रकारिता साहित्य का हो या सांस्कृतिक सम्बन्ध, इन सभी क्षेत्रों में अनुवाद की महत्ता एवं उपादेयता को सहज ही देखा-परखा जा सकता है। चर्चा की शुरुआत न्यायालय क्षेत्र से करते हैं।

न्यायालय-अदालतों की भाषा प्रायः अग्रेजी में होती है। इनमें मुकद्दमों के लिए आवश्यक कागजात अक्सर प्रादेशिक भाषा में होते हैं, किन्तु पैरवी अंग्रेजी में ही होती है। इस वातावरण में अंग्रेजी और प्रादेशिक भाषा का बारी-बारी से परस्पर अनुवाद किया जाता है।

सरकारी कार्यालय- आजादी से पूर्व हमारे सरकारी कार्यालयों की भाषा अंग्रेजी थी। हिन्दी को राजभाषा के रूप में मान्यता मिलने के साथ ही सरकारी कार्यालयों के अंग्रेजी दस्तावेजों का हिन्दी अनुवाद जरूरी हो गया। इसी के मद्देनजर सरकारी कार्यालयों में राजभाषा प्रकोष्ठ की स्थापना कर अंग्रेजी दस्तावेजों का अनुवाद तेजी से हो रहा है।

विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी- देश-विदेश में हो रहे विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी के गहन अनुसंधान के क्षेत्र में तो सारा लेखन कार्य उन्हीं की अपनी भाषा में किया जा रहा है। इस अनुसंधान को विश्व पटल पर रखने के लिए अनुवाद ही एक मात्र साधन है। इसके माध्यम से नई खोजों को आसानी से सभी तक पहुँचाया जा सकता है। इस दृष्टि से शोध एवं अनुसंधान के क्षेत्र में अनुवाद बहुत ही महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है।

शिक्षा– भारत जैसे बहुभाषा भाषी देश के शिक्षा क्षेत्र में अनुवाद की भूमिका को भला कौन नकार सकता है। कहना अतिशयोक्ति न होगी कि शिक्षा का क्षेत्र अनुवाद के बिना एक कदम भी आगे नहीं बढ़ सकता। देश की प्रगति के लिए परिचयात्मक साहित्य ज्ञानात्मक साहित्य एवं वैज्ञानिक साहित्य का अनुवाद बहुत जरूरी है। आधुनिक युग में विज्ञान, समाज– विज्ञान, अर्थशास्त्र, भौतिकी, गणित आदि विषय की पाठ्य सामग्री अधिकतर अंग्रेजी में लिखी जाती है। हिन्दी प्रदेशों के विद्यार्थियों की सुविधा के लिए इन सब ज्ञानात्मक अंग्रेजी पुस्तकों का हिन्दी अनुवाद तो हो ही रहा है. अन्य प्रादेशिक भाषाओं में भी इस ज्ञान सम्पदा को रूपान्तरित किया जा रहा है।

जनसंचार– जनसंचार के क्षेत्र में अनुवाद का प्रयोग अनिवार्य होता है। इनमें मुख्य है समाचार पत्र, रेडियो, दूरदर्शन। ये अत्यन्त लोकप्रिय है और हर भाषा–प्रदेश में इनका प्रचार बढ़ रहा है। आकाशवाणी एव दूरदर्शन में भारत को सभी प्रमुख भाषाओं में समाचार प्रसारित होते हैं। इनमें प्रतिदिन 22 भाषाओं में खबरें प्रसारित होती है। इनकी तैयारी अनुवादकों द्वारा की जाती है।

साहित्य–साहित्य के क्षेत्र में अनुवाद वरदान साबित हो चुका है। प्राचीन और आधुनिक साहित्य का परिचय दूरदराज के पाठक अनुवाद के माध्यम से पाते हैं। 'भारतीय साहित्य' की परिकल्पना अनुवाद के माध्यम से ही संभव हुई है। विश्व–साहित्य का परिचय भी हम अनुवाद के माध्यम से ही पाते हैं। साहित्य के क्षेत्र में अनुवाद के कार्य ने साहित्यों के तुलनात्मक अध्ययन को सुगम बना दिया है। विश्व की समृद्ध भाषाओं के साहित्यों का अनुवाद आज हमारे लिए कितना जरूरी है कहने या समझाने की आवश्यकता नहीं।

अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्ध– अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्ध अनुवाद का सबसे महत्त्वपूर्ण क्षेत्र है। विभिन्न देशों के प्रतिनिधियों का संवाद मौखिक अनुवादक की सहायता से ही होता है। प्रायः सभी देशों में एक–दूसरे देशों के राजदूत रहते हैं और उनके कार्यालय भी होते हैं। राजदूतों को कई भाषाएँ बोलने का अभ्यास कराया जाता है। फिर भी देशों के प्रमुख प्रतिनिधि अपने विचार अपनी ही भाषा में प्रस्तुत करते हैं। उनके अनुवाद की व्यवस्था होती है। इस प्रकार हम देखते हैं कि अन्तर्राष्ट्रीय मैत्री एवं शान्ति को बरकरार रखने की दृष्टि से अनुवाद की भूमिका बहुत ही महत्वपूर्ण है।

संस्कृति–अनुवाद को 'सांस्कृतिक सेतु' कहा गया है। मानव–मानव को एक दूसरे के निकट लाने में मानव जीवन को अधिक सुखी और सम्पन्न बनाने में अनुवाद की महत्त्वपूर्ण भूमिका है। 'भाषाओं की अनेकता' मनुष्य को एक दूसरे से अलग ही नहीं करती उसे कमजोर, ज्ञान की दृष्टि से निर्धन और संवेदन शून्य भी बनाती है। 'विश्वबंधुत्व की स्थापना' एवं 'राष्ट्रीय एकता' को बरकरार रखने की दृष्टि से अनुवाद एक तरह से सांस्कृतिक सेतु की तरह महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा कर रहा है।

अनुवादक

अनुवादक (translator) का कार्य स्रोत भाषा के पाठ कों अर्थपूर्ण रूप से लक्ष्यभाषा में अनुदित करता है। अनुवाद का कार्य अन्ततोगत्वा एक ही व्यक्ति करता है। एकाकी अनुवाद में तो अनुवादक अकेला होता ही है, सहयोगात्मक अनुवाद में भी, अन्तिम भाग में सम्पादन का काम अनुवादक को अकेले करना होता है। अतः अनुवादक के साथ अनेक दायित्व जुड़ जाते हैं और कार्य के सफल निष्पादन में उससे अनेक अपेक्षाएं रहती है। भाषा ज्ञान, विषय ज्ञान, अभिव्यक्ति कौशल, व्यक्तिगत गुण आदि की दृष्टि से अनुवादक से होने वाली अपेक्षाओं पर विचार करना होता है।

एक अच्छा अनुवादक वह है, जो–

स्त्रोत भाषा (जिससे अनुवाद करना है) के लिखित एवं वाचिक दोनों रूपों का अच्छा ज्ञाता हो.

लक्ष्य भाषा (जिसमें अनुवाद करना है) के लिखित रूप का अच्छा ज्ञाता हो,

पाठ जिस विषय या टॉपिक का है, उसकी जानकारी रखता हो।

स्वयं आकलन प्रश्न

प्रश्न-1. 'अनुवाद' शब्द मूलतः किस भाषा का शब्द है ?

प्रश्न-2. 'अनुवाद' शब्द की निष्पति कैसे हुई है ?

1.4 अनुवाद की परम्परा

अनुवाद की परम्परा बहुत पुरानी है। बेबल के मीनार (Tower of Babel) की कथा प्रसिद्ध ही है, जो इस तथ्य की ओर संकेत करती है कि, मानव समाज में अनेक भाषाएँ बोली जाती हैं। यह तर्कसंगत रूप से अनुमान किया जा सकता है कि पारस्परिक सम्पर्क की सामाजिक अनिवार्यता के कारण अनुवाद व्यवहार का जन्म भी बहुत पहले हो गया होगा। परन्तु जहाँ तक लिखित प्रमाणों का सम्बन्ध है, अनुवाद परम्परा के आरम्भिक बिन्दु का प्रमाण ईसा से तीन सहस्र वर्ष पहले प्राचीन मिस्र के राज्य में द्विभाषिक शिलालेखों के रूप में मिलता है।

तत्पश्चात् ईसा से तीन सौ वर्ष पूर्व रोमन लोगों के ग्रीक लोगों के संपर्क में आने पर ग्रीक से लैटिन में अनुवाद हुए। बारहवीं शताब्दी में स्पेन में इस्लाम के साथ संपर्क होने पर यूरोपीय भाषाओं में अरबी से अनुवाद हुए।

बहृत् स्तर पर अनुवाद तभी होता है जब दो भिन्न भाषा-भाषी समुदायों में दीर्घकाल पर्यन्त संपर्क बना रहे तथा उसे संतुलित करने के प्रयास के अंतर्गत अल्प विकसित संस्कृति के लोग सुविकसित संस्कृति के लोगों के साहित्य का अनुवाद कर अपने साहित्य को समृद्ध करें। ग्रीक से लैटिन में और अरबी से यूरोपीय भाषाओं में प्रचुर अनुवाद इसी प्रवृत्ति के परिणाम माने जाते हैं। अनुवाद कार्य को इतिहास की प्रवृत्तियों की दृष्टि से दो भागों में विभाजित किया जाता है-प्राचीन और आधुनिक।

प्राचीन परम्परा

प्राचीन युग में मुख्यतः तीन प्रकार की रचनाओं के अनुवाद प्राप्त होते हैं। क्योंकि इन तीन क्षेत्रों में ही प्रायः ग्रंथों की रचना होती थी। ये क्षेत्र हैं साहित्य, दर्शन और धर्म। साहित्यिक रचनाओं में ग्रीक के इलियड और ओडेसी, संस्कृत के रामायण और महाभारत ऐसे ग्रन्थ हैं, जिनका व्यापक स्तर पर अनुवाद हुआ। दार्शनिक रचनाओं में प्लेटो के संवाद अनुवाद की दृष्टि से लोकप्रिय हुए। धार्मिक रचनाओं में बाइबिल के सबसे अधिक अनुवाद पाए जाते हैं।

आधुनिक परम्परा

आधुनिक युग में अनुवाद के माध्यम से प्राचीन युग के ये महान ग्रन्थ अब विभिन्न भाषा भाषियों को उपलब्ध होने लगे है। अनुवाद तकनीक की दृष्टि से इन अनुवादों की विशेषता यह है कि प्राचीन युग में ये अनुवाद विशेष रूप से एकपक्षीय रूप में होते थे अर्थात् जिस भाषा में अनुवाद किए जाते थे (लक्ष्यभाषा) उनसे उनकी किसी रचना का मूल ग्रन्थ भाषा (मूलभाषा या स्रोत भाषा) में अनुवाद नहीं होता था। इसका कारण यह कि मूल ग्रन्थों की तुलना में लक्ष्यभाषा के ग्रन्थ प्रायः उतने उत्कृष्ट नहीं होते थे, दूसरी बात यह कि मूल ग्रंथों को भाषा के प्रति अत्यन्त आदर भावना के कारण लक्ष्य भाषा के रूप में प्रयोग में लाना सम्भवतः अनुचित समझा जाता था।

आधुनिक युग में अनुवाद का क्षेत्र विस्तृत हो गया है। उपर्युक्त तीन के अतिरिक्त विज्ञान, प्रौद्योगिकी प्रौद्योगिकी, चिकित्साशास्त्र, प्रशासन, कूटनीति, विधि, जनसम्पर्क (समाचार पत्र इत्यादि) तथा अन्य अनेक क्षेत्रों के ग्रन्थों और रचनाओं का अनुवाद भी होने लगा है। प्राचीन युग के अनुवादों की तुलना में आधुनिक युग के अनुवाद द्विपक्षीय (बहुपक्षीय) रूप में होते हैं। आधुनिक युग में अनुवाद का आर्थिक और राजनीतिक महत्त्व भी प्रतिष्ठित हो गया है। विभिन्न राष्ट्रों के मध्य राजनीतिक, आर्थिक और सांस्कृतिक अनुबन्धों के प्रपत्र के द्विभाषिक पाठ तैयार किए जाते हैं। बहुराष्ट्रीय संस्थाओं को एक से अधिक भाषाओं का प्रयोग करना पड़ता है। संयुक्त राष्ट्र में प्रत्येक कार्य पाँच या छः भाषाओं में किया जाता है। इन सब में अनिवार्य रूप से अनुवाद को आवश्यकता होती है।

इस स्थिति का औचित्य भी है। आधुनिक युग में हुई औद्योगिक, प्रौद्योगिक, आर्थिक और राजनीतिक क्रान्ति के फलस्वरूप विश्व के राष्ट्रों में एक-दूसरे के निकट सम्पर्क की आवश्यकता की चेतना का अतीव शीघ्र विकास हुआ, उसके कारण अनुवाद को यह महत्त्व मिलना स्वाभाविक माना जाता है। यही कारण है कि यदि प्राचीन युग की प्रेरक शक्ति अनुवादक की व्यक्तिगत रुचि अधिक थी, तो आधुनिक युग में अनुवाद की सामाजिक-आर्थिक-राजनीतिक आवश्यकता एक प्रबल प्रेरक शक्ति बनकर सामने आई है। इस स्थिति के अनेक उदाहरण मिलते है। भाषायी अल्पसंख्यक वर्ग के लेखकों की रचनाएँ दूसरी भाषाओं में अनुदित होकर अधिक पढ़ी जाती है। अपेक्षाकृत छोटे तथा बहुभाषी राष्ट्रों को अपने देश के भीतर ही विभिन्न भाषाभाषी समुदायों के मध्य सम्पर्क स्थापित करने की समस्या का सामना करना पड़ता है।

सामाजिक आवश्यकता के अनुरूप अनुवाद के इस महत्त्व के कारण अनुवाद कार्य अब संगठित रूप से होता देखा जाता है। राजनीतिक-आर्थिक कारणों से उत्पन्न आवश्यकताओं को पूर्ति के लिए अनुवाद अब एक व्यवसाय बन चुका है तथा व्यक्तिगत होने के साथ-साथ उसका संगठनात्मक रूप भी प्रतिष्ठित होता दिखता है। अनुवाद कौशल को सिखाने के लिए शिक्षा संस्थाओं में प्रबन्ध किए जाते हैं तथा स्वतन्त्र रूप से भी प्रशिक्षण संस्थान काम करते हैं।

व्याख्याएँ

ज्ञातस्य कथनमनुवादः- ज्ञात का (पुनः) कथन अनुवाद है।

(जैमिनिन्यायमाला)

प्राप्तस्य पुनः कथनेनुवाद : पूर्वकथित का पुनः कथन अनुवाद है।

(शब्दार्थचिन्तामणिः)

आवृत्तिनुवादों वा-पुनरावर्तन ही अनुवाद है। **(भर्तृहरि)**

लेखक होना सरल है, किन्तु अनुवादक होना अत्यन्त कठिन है। **मामा वरेरकर**

प्रत्येक कृति अनुवाद योग्य है परन्तु प्रत्येक कृति का अच्छा अनुवाद नहीं किया जा सकता। **खुशवन्त सिंह**

अनुवाद, प्रकाश के आने के लिए वातायन खोल देता है, वह छिलके को छोड़ देता है, जिससे हम गूदे का स्वाद ले सकें। -**बाइबिल**

एक विशिष्ट प्रकार के भाषिक व्यापार के रूप में अनुवाद, भारतीय परम्परा की दृष्टि में कोई नई बात नहीं। वस्तुतः 'अनुवाद' शब्द और उससे उपलक्षित भाषिक व्यापार भारतीय परम्परा में बहुत पहले से चले आए है। अतः 'अनुवाद' शब्द और इसके अंग्रेजी पर्याय 'ट्रांसलेशन' के व्युत्पत्तिमूलक और प्रवृत्तिमूलक अर्थों की सहायता से अनुवाद की परिभाषा और उसके स्वरूप को श्रेष्ठतर रूप में जाना जा सकता है।

व्युत्पत्तिमूलक अर्थ

'अनुवाद' का व्युत्पत्तिमूलक अर्थ है-पुनः कथन, एक बार कही हुई बात को दोबारा कहना। इसमें अर्थ की पुनरावृत्ति होती हैं, शब्द (शब्द रूप) की नहीं। 'ट्रांसलेशन' शब्द का व्युत्पत्तिमूलक अर्थ है 'पारवहन' अर्थात् एक स्थान-बिन्दु से दूसरे स्थान-बिन्दु पर ले जाना। यह स्थान बिन्दु भाषिक पाठ है। इसमें भी ले जाई जाने वाली वस्तु अर्थ होता है, शब्द नहीं। उपर्युक्त दोनों शब्दों में अन्तर व्युत्पत्तिमूलक अर्थ की दृष्टि से है, अतः सतही है। वास्तविक व्यवहार में दोनों की समानता स्पष्ट है। अर्थ की पुनरावृत्ति को ही दूसरे शब्दों में और प्रकारान्तर से, अर्थ का भाषान्तरण कहा जाता है, जिसमें कई बार मूल भाषा की रूपात्मक-गठनात्मक विशेषताएँ लक्ष्यभाषा में संक्रान्त हो जाती है।

वस्तुतः 'अनुवाद' शब्द का भारतीय परम्परा वाला अर्थ आधुनिक सन्दर्भ में भी मान्य है और इसी को केन्द्र बिन्दु बनाकर अनुवाद की प्रकृति को अंशशः समझा जाता है। तद्नुसार, अनुवाद कार्य के तीन सन्दर्भ हैं-समभाषिक, अन्यभाषिक और अन्तरसंकेतपरक।

समभाषिक अनुवाद

समभाषिक सन्दर्भ में अर्थ की पुनरावृत्ति एक ही भाषा की सीमा के अन्तर्गत होती है, परन्तु इसके आयाम भिन्न-भिन्न हो जाते हैं। मुख्य आयाम दो हैं - कालक्रमिक और समकालिक। कालक्रमिक आयाम पर समभाषिक अनुवाद एक ही भाषा के ऐतिहासिक विकास की दो निकटस्थ अवस्थाओं में होता है. जैसे, पुरानी हिन्दी से आधुनिक हिन्दी में अनुवाद। समकालिक आयाम पर समभाषिक अनुवाद मुख्य रूप से तीन स्तरों पर होता है-बोली, शैली और माध्यम।

बोली स्तर पर समभाषिक अनुवाद के चार उपस्तर हो सकते हैं-

(क) एक भौगोलिक बोली से दूसरी भौगोलिक बोली में, जैसे ब्रज से अवधी में।

(ख) अमानक बोली से मानक बोली में, जैसे गंजाम ओड़िया से पुरी की ओड़िया में अथवा नागपुर मराठी से पुणे मराठी में।

(ग) बोली रूप से भाषा रूप में, जैसे ब्रज या अवधी से हिन्दी में।

(घ) एक सामाजिक बोली से दूसरी सामाजिक बोली में, जैसे अशिक्षितों या अल्पशिक्षितों की भाषा से शिक्षितों की भाषा में या एक धर्म ।

स्वयं आकलन प्रश्न

प्रश्न-1. Memorandum का हिंदी अनुवाद क्या है ?

प्रश्न-2. 'अनुवाद परकाया प्रवेश की प्रक्रिया है।' यह सिद्घांत किस प्रकार के अनुवाद पर लागू होता है।

1.5 सारांश

किसी भाषा में अभिव्यक्त विचारों को दूसरी भाषा में यथावत् प्रस्तुत करना अनुवाद है। इस विशेष अर्थ में ही 'अनुवाद' शब्द का अभिप्राय सुनिश्चित है। जिस भाषा से अनुवाद किया जाता है, वह मूल भाषा या स्रोत भाषा है। जिस नई भाषा में अनुवाद करना है, वह प्रस्तुत भाषा या 'लक्ष्य भाषा' है। सूचना, ज्ञान और विचारों के प्रसार के लिए अनुवाद आवश्यक है। विभिन्न संस्कृतियों के बीच प्रभावी और सहानुभूतिपूर्ण संचार के लिए यह नितांत आवश्यक है। इसलिए अनुवाद सामाजिक सद्‌भाव और शांति के लिए महत्वपूर्ण है।

1.6 कठिन शब्दावली

अनुदित - अकथित, अकथनीय

प्रणाली - परंपरा, प्रथा

प्रायोगिक - क्रियात्मक

प्रयोक्ता - किसी काम में लगाने वाला

समतुल्य - समरूप, सदृश्य

1.7 स्वयं आकलन हेतु प्रश्नों के उत्तर

अभ्यास प्रश्न 1 के उत्तर

उ.1 संस्कृत

उ.2 'वह' धातु में 'धञ' प्रत्यय तथा 'अन' उपसर्ग लगाने से

अभ्यास प्रश्न-2 के उत्तर

उ.1 ज्ञापन

उ.2 सृजनात्मक साहित्य का अनुवाद

1.8 संदर्भित पुस्तकें

1. डॉ. रवीन्द्रनाथ श्रीवास्तव और कृष्ण कुमार गोस्वामी, अनुवाद : सिद्धान्त और समस्याएँ, आलेख प्रकाशन, दिल्ली।
2. डॉ. सोहन शर्मा (सं.), अनुवाद: सोच और संस्कार, समिति प्रकाशन, बम्बई।
3. डॉ. नगेन्द्र (सं), अनुवाद विज्ञान, दिल्ली विश्वविद्यालय।

1.9 सात्रिक प्रश्न

प्रश्न–1 अनुवाद से क्या तत्पर्य है, अर्थ, परिभाषा और क्षेत्र सहित परिचय दीजिए।

प्रश्न–2 अनुवाद की परम्परा सहित महत्त्व पर प्रकाश डालिए।

*****

इकाई-2
अनुवाद के प्रकार

संरचना

2.1 भूमिका
2.2 उद्देश्य
2.3 अनुवाद के प्रकार
- माध्यम के आधार पर
- प्रक्रिया के आधार पर
- पाठ के आधार पर

स्वयं आकलन प्रश्न-1

2.4 अनुवाद के विभिन्न प्रकार
- भाषान्तरण
- सारानुवाद
- रूपान्तरण
- कार्यालयी
- साहित्यिक
- ज्ञान-विज्ञानपरक
- वाणिज्यिक

स्वयं आकलन प्रश्न-2

2.5 सारांश
2.6 कठिन शब्दावली
2.7 स्वयं आकलन हेतु प्रश्नों के उत्तर
2.8 संदर्भित पुस्तकें
2.9 सात्रिक प्रश्न

2.1 भूमिका

इकाई एक में हमने अनुवाद का अर्थ, परिभाषा, अनुवाद का क्षेत्र तथा अनुवाद की परंपरा का गहन अध्ययन किया है। इकाई दो में हम अनुवाद के विभिन्न प्रकारों जैसे भाषन्तरण, सारानुवाद, रूपान्तरण, कार्यालयी, साहित्यिक ज्ञान-विज्ञानपरक तथा वाणिज्यिक अनुवाद का विस्तारपूर्वक अध्ययन करेंगे।

2.2 उद्देश्य

इकाई दो का अध्ययन करने के पश्चात् हम यह जानने में सक्षम होंगे कि -

1. अनुवाद के प्रमुख प्रकार कौन-कौन से हैं ?
2. भाषान्तरण अनुवाद क्या है?
3. सारानुवाद क्या है ?
4. रूपान्तरण क्या है?
5. कार्यालयी एवं साहित्यिक अनुवाद क्या है ?
6. वाणिज्यिक अनुवाद से आप क्या समझते है ?

• अनुवाद का तात्पर्य :

अनुवाद से अभिप्राय 'किसी कही गई बात को फिर से कहना है।' दूसरे शब्दों में किसी एक भाषा में पहले से ही रचित कृति (पाठ) के संदेश को किसी दूसरी भाषा में समतुल्य रचना (पाठ) के रूप में व्यक्त करना ही अनुवाद है। स्पष्ट है कि अनुवाद दो भाषाओं के सप्रेषण व्यापार की अपेक्षा रखता है। पहली भाषा, मूल रचना की भाषा होती है। जिसे तकनीकी भाषा में 'स्त्रोत भाषा' कहते हैं और दूसरी भाषा जिसमें मूल का अनुवाद किया जाता है, होती है, उसे लक्ष्य भाषा का नाम दिया जाता है। इस प्रकार अनुवाद से तात्पर्य स्त्रोत भाषा की सामग्री (पाठ/रचना) को लक्ष्य भाषा की रचना या पाठ में इस प्रकार उतारना है कि वह उसके समतुल्य अर्थ और शैली की हो। अनुवाद मूलतः एक भाषा की रचना के संदेश का दूसरी भाषा में भाषातंरण है। स्त्रोत भाषा का पाठक उसका आनंद ले सकता है परंतु अनुवादक को दो भाषाओं में निपुण होना चाहिए ताकि अनुदित रचना का पाठक भी वही आनंद और संदेश ले सके, जो मूल रचना के पाठक को उसे पढ़कर मिला था। इस प्रकार अनुवाद मूल कृति का पाठक होता है और अनुदित लक्ष्य भाषा की कृति का लेखक होता है। वह लक्ष्य भाषा के अनुसार, स्त्रोत भाषा के पाठ का भाषान्तरण करता है।

2.3 अनुवाद के प्रकार :

अनुदित पाठों और अनुवाद प्रणालियों में जो विविधता दिखाई पड़ती हैं वह एक हद तक अलग-अलग प्रकार के अनुवादों के ही कारण होती है, दूसरे शब्दों में कहा जाए तो कह सकते हैं कि अनुवाद के प्रकार वास्तव में एक ओर तो अनुवाद प्रणालियों के प्रकार कहे जा सकते हैं दूसरी ओर अनुदित पाठों के। अनुवाद एक प्रायोगिक विद्या है इसलिए प्रयोग, प्रयोजन और प्रयोक्ता के आधार पर इसके विभिन्न रूप सामने आते हैं। अनुवादों का वर्गीकरण तीन आधारों पर कर सकते हैं।

1. माध्यम 2. प्रक्रिया 3. पाठ।

• माध्यम के आधार पर :

अनुवाद की प्रक्रिया को व्यापक तथा सीमित, दोनों अर्थों में देखा जा सकता है। व्यापक संदर्भ में अनुवाद एक भाषा के प्रतीकों का दूसरी भाषा के समतुल्य प्रतीकों में रूपातंरण है। यह माना जाता है कि कथ्य का प्रतीकान्तरण ही अनुवाद है। सीमित अर्थ में भाषा सिद्धांत के आधार पर यह माना जाता है कि अनुवाद कथ्य का भाषातंरण है। माध्यम के आधार पर अनुवाद के निम्न तीन भेद संभव है। (1) प्रतीक प्रकार (2) भाषा प्रकार (3) लेखन प्रकार।

• प्रतीक प्रकार :

प्रतीक प्रकार भी तीन तरह के हो जाते है। यदि अनुवाद एक ही भाषा की किसी एक प्रतीक व्यवस्था से उसी भाषा की किसी अन्य प्रतीक व्यवस्था के बीच किया गया है तो यह अंतः भाषिक अनुवाद है। यदि अनुवाद एक भाषा की प्रतीक व्यवस्था से दूसरी भाषा की प्रतीक व्यवस्था में होता है तो यह अंतरभाषिक अनुवाद का विषय बनता है। तीसरा क्षेत्र अंतर प्रतीकात्मक व्यवस्था का है जहां एक भाषिक प्रतीक व्यवस्था से किसी अन्य भाषेतर प्रतीक व्यवस्था में अर्थ का अंतरण किया गया हो इसे अंतर प्रतीकात्मक अनुवाद कहेंगें।

• भाषा प्रकार :

भाषा के विभिन्न रूप जैसे मौखिक, लिखित, गद्य, पद्य आदि में किया गया अनुवाद भाषा प्रकार के दो रूप हैं या उपादान हैं इसलिए पाठ या लिखित अनुवाद तथा आशु अनुवाद अर्थात उच्चातरित वक्तव्य का अनुवाद दो सप बन जाते हैं। इसी प्रकार भाषा के दो सप गद्य और पद्य है। इसलिए अनुवाद के दो अन्य प्रकार गद्यानुवाद और पद्ययानुवाद बन जाते हैं।

• प्रक्रिया के आधार पर :

अनुवाद प्रक्रिया का निर्धारण स्त्रोत भाषा तथा लक्ष्य भाषा के पाठों की प्रकृति की दृष्टि से भी किया जा सकता है। इस आधार पर मूल रचना का जो प्रभाव मूल भाषा के पाठक पर पड़ा है वही प्रभाव अनुदित पाठ के पाठकों पर पड़ना चाहिए। इन दोनों आधार पर अनुवाद के दो भेद सामने आते हैं। (1) पाठ धर्मी अनुवाद (2) प्रभाव धर्मी अनुवाद।

• पाठ के आधार पर प्रकार :

पाठ, वास्तव में कथ्य (अर्थ) और अभिव्यक्ति का समन्वित रूप है। कुछ अनुवादों में पाठ के अर्थ पर जोर रहता है और कुछ में अभिव्यक्ति पर। इस दृष्टि से अनुवाद या तो अभिव्यक्ति सापेक्ष हो सकता है या फिर अर्थ सापेक्ष।

अभिव्यक्ति सापेक्ष :

अभिव्यक्ति सापेक्ष अनुवाद रचना सापेक्ष भी हो सकता है और व्यवस्था सापेक्ष भी। रचना सापेक्ष अनुवाद में कभी पाठ के प्रत्येक अंश का अनुवाद किया जाता है जिसे पूर्ण अनुवाद कहते हैं और कभी उसके अंश मात्र का अनुवाद होता है उसे आंशिक अनुवाद कहते हैं।

व्यवस्था सापेक्ष अनुवाद का आधार भाषिक तत्वों के विभिन्न स्तरो से है। यहां दो तरह की संभावनाएं बनती हैं। पाठ के सभी भाषिक स्तरों का अनुवाद किया जाए अथवा किसी एक या कुछ स्तरों का। इस दृष्टि से अनुवाद के दो भेद बनते हैं समग्र अनुवाद और परिसीमित अनुवाद।

अर्थ सापेक्ष अनुवाद :

अर्थ सापेक्ष अनुवाद पाठ के आधार पर किए गए अनुवादों का दूसरा प्रकार है जिसके अंतर्गत निम्नलिखित चार प्रकार के अनुवाद आते हैं। (1) शब्द प्रतिशब्द अनुवाद, शाब्दिक अनुवाद, भावानुवाद, छायानुवाद।

• अनुवाद के विभिन्न प्रकारों का परिचय :

मूल रूप से अनुवाद दो प्रकार के हैं। (1) अंतः भाषिक अनुवाद (2) अंतर भाषिक अनुवाद। अंतः भाषिक का अर्थ है एक ही भाषा के भीतर एक प्रकार की प्रतीक व्यवस्था का दूसरी तरह की प्रतीक व्यवस्था में अनुवाद। इस दृष्टि से गद्य का पद्य में अथवा पद्य का गद्य में किया गया अनुवाद भी आता है और एक शैली विशेष जैसे 'संस्कृत निष्ठ शैली' में लिखी रचना या उर्दू मिश्रित शैली में अनुवाद भी आता है। मुंशी प्रेमचंद ने 1924 में 'माधुरी' पत्रिका में 'शतरंज के खिलाड़ी' कहानी हिंदी में प्रकाशित करवाई और फिर उसके हिन्दुस्तानी (उर्दू) (जिसे हम हिंदी की एक शैली मानते हैं 'भले ही उसकी लिपि भिन्न है) में अनुवाद किया, नमूना देखिए

(1) शतरंज के खिलाड़ी (माधुरी)

'अंधेरा हो चला था। बाजी बिछी हुई थी। दोनों बादशाह अपने-अपने सिहासनों पर बैठे हुए मानो शतरंज की बाजी (जमाना, उर्दू) 'अंधेरा हो गया था। बाजी बिछी हुई थी। दोनों बादशाह अपने-अपने तख्त पर रौनक अफरोज थे। उन पर हसरत छाई हुई थी, गोया मक्तलीन की मौत का मातम कर रहे थे।'

• अंतरभाषिक अनुवाद :

एक भाषा में व्यक्त अर्थ को दूसरी भाषा के द्वारा व्यक्त किया जाना, अंतरभाषिक अनुवाद कहलाता है। आमतौर पर हम इसी तरह के अनुवाद की चर्चा करते है। यहां दो भिन्न प्रतीक व्यवस्थाओं का प्रयोग होता है। स्त्रोत भाषा की प्रतीक व्यवस्था का लक्ष्य भाषा की प्रतीक व्यवस्था में रूपातंरण किया जाता है। अनुवादक का दोनों भाषाओं, स्त्रोत और लक्ष्य, भाषा, पर समान अधिकार अपेक्षित है। अनुवादक जब तक दोनों भाषाओं की संरचनात्मक प्रकृति, समाज, संस्कृति आदि से भली-भांति परिचित नहीं होता, अच्छा अनुवाद नहीं कर सकता। इस प्रकार यहां प्रतीक-1 और प्रतीक-2 अलग-अलग भाषाओं से होते हैं।

• अंतर प्रतीकात्मक अनुवाद :

इसमें जब किसी रचना के प्रतीकों को भाषा के अतिरिक्त किसी अन्य माध्यम के प्रतीकों द्वारा व्यक्त किया जाता है। जैसे फणीश्कर नाथ रेणु की कहानी, 'मारे गए गुलफाम' की 'तीसरी कसम' नामक पिक्चर के रूप में तैयार करना। यहां माषिक प्रतीक व्यवस्था को चित्रात्मक प्रतीक व्यवस्था में बदला गया इसलिए अंतरप्रतीकात्मक अनुवाद है।

• पाठ अनुवाद :

भाषा के दो उपादान-लिखित और उच्चरित हैं। जब लिखित रूप में होने वाले अनुवाद का आश्य अनुवाद (उच्चारित/मौखिक) से अंतर बताना हो तो पाठ अनुवाद के अंतर्गत ऐसा किया जाता है।

• आशु अनुवाद :

यह पाठ अनुवाद का ही रूप है जिसमें मुख से उच्चारित बात को तुरंत दूसरी भाषा में अनुदित किया जाता है। विदेशी राजनेताओं में आपसी वार्तालाप, आशु अनुवादक की सहायता से ही संपन्न होता है।

• गद्य और पद्यानुवाद :

मूल पद्य का गद्य में अनुवाद गद्यानुवाद कहलाता है। गद्य साहित्य में दो तरह की रचनाएं हैं साहित्यिक (सर्जनात्मक) तथा प्रयोजन परक। इस आधार पर साहित्यिक अनुवाद और प्रयोजन परक अनुवाद जैसे विज्ञान, विधि, वाणिज्य, समाज शास्त्र, दर्शन आदि का गद्यानुवाद आता है।

पद्यानुवाद में किसी भाषा की कविता का अन्य भाषा की कविता में अनुवाद हो अथवा किसी भाषा की गद्य रचना का, उसी भाषा में अथवा किसी अन्य भाषा में पद्य में अनुवाद ही, पद्यानुवाद कहलाता है।

• लिप्यंकन (ट्रांसक्रिप्शन) का अर्थ है मौखिक भाषाओं को लिपिबद्ध करना अथवा टेप रिमांइडर या अन्य ध्वनियंत्र की ध्वनियों को लिपिबद्ध करना, लिप्यंकन कहलाता है।

• लिप्यतंरण : (ट्रांसलिट्रजेशन) :

स्त्रोत भाषा की वर्तनी में जो लिपि चिह्त प्रयुक्त हुए हैं उनके लिए लक्ष्य भाषा से प्राप्त लिपि चिह्नों का प्रयोग करना लिप्यंतरण कहलाता है। उदाहरण के लिए रोमन में 'SHUT' की ध्वनियां 'SUT' बनती हैं जिन्हें देवनागरी में 'श+अ+र' लिखकर जोड़ेगे का 'शट' शब्द बनेगा जो लिप्यंतरण है। मोबाईल में लिप्यंतरण का प्रयोग संदेश भेजने के लिए खूब किया जा रहा है। रोमन में हिंदी के वाक्य टाईप किए जाते हैं।

• पाठधर्मी अनुवाद :

स्त्रोत भाषा के पाठ का लक्ष्य भाषा के पाठ में अंतरण ही पाठधर्मी अनुवाद है। यह अर्थ का अंतरण होता है। अनुदित पाठ में अर्थ को प्रतिस्थापित करते समय मूलकृति की संरचना तथा बनावट को ध्यान में रखना होता है। जहां प्रभाव पर अधिक ध्यान रहता है वहां प्रभावधर्मी अनुवाद होता है। अनुवाद के अन्य भेदों में पूर्ण अनुवाद (मूल रचना के प्रत्येक अंश का अंनुवाद), आंशिक अनुवाद (रचना के किसी अंश का अनुवाद), समग्र अनुवाद (सोल भाषा के अधिकांश स्तरों पर लक्ष्य भाषा में प्रतिस्थापन करना), परिसीमित अनुवाद (भाषा के किसी एक स्तर, ध्वनि, शब्द, व्याकारिणक आदि) का ही अनुवाद।

अनुवाद प्रक्रिया के आधार पर शब्द प्रति अनुवाद, शाब्दिक अनुवाद, भावानुवाद तथा छायानुवाद जैसे अन्य प्रकार भी अनुवाद के हैं। इस प्रकार यह स्पष्ट हो जाता है कि माध्यम, पाठ और प्रक्रिया के आधार पर अनवुाद में निम्नलिखित प्रकार है अंत: भाषिक, अंतरभाषिक, अंतरप्रतीकात्मक, पाठ अनुवाद, आश्य अनुवाद, पद्यानुवाद, गद्यानुवाद, लिप्यंकन, लिप्यंतरण, पाठधर्मी अनुवाद, प्रभाव धर्मी, पूर्ण अनुवाद, आंशिक अनुवाद, समग्र अनुवाद, परिसीमित अनुवाद, शब्द प्रति शब्द अनुवाद, शाब्दिक अनुवाद, भावानुवाद तथा छायानुवाद।

पाठ्यक्रम में निर्धारित निम्न लिखिक अनुवाद प्रकारों पर विचार अपेक्षित है।

(1) भाषातंरण (2) सारानुवाद (3) रूपातंरण (4) कार्यालयी अनुवाद (5) साहित्यिक (6) ज्ञान विज्ञान परक अनुवाद (7) विधिक, (8) वाणिज्यिक अनुवाद।

स्वयं आकलन प्रश्न-1

प्रश्न.1 किस विद्वान् ने अनुवाद की संभावना पर ही प्रश्नचिन्ह लगाया है?

प्रश्न.2 किस विद्वान् ने अनुवाद को 'पाप' की संज्ञा दी है?

2.4 अनुवाद के विभिन्न प्रकार

• भाषान्तरण :

भाषान्तरण को अंग्रेजी में Interpretation कहा जाता है और इस कार्य को करने को Interpreter कहा जाता है। मौखिक रूप से कही बात को स्पष्ट करना या समझाना, वह भी किसी अन्य भाषा में, भाषान्तरण कहलाता है। इसका शाब्दिक अर्थ है अर्थ निर्णय, निर्वचन, अनुवचन, वार्तानुवाद, व्याख्या, भाख्य तथा अनुवाद। जनसभाओं में जहां वक्ता की भाषा को श्रोता नहीं जानते वहां भाषान्तरित करने वाला (इंटरप्रेट्टर) उसकी बात को लोगों की भाषा में समझाता चलता है। वह शब्दानुवाद न करके आशु भावानुवाद करता जाता है। इसी को भाषान्तरण कहा जाता है। निर्वचक या दुभाषिया यह कार्य तभी कर सकता है जब तक वक्ता और श्रोता की भाषाओं में प्रयुक्त वाक्यांशों, मुहावरों की पृष्ठभूमि समझ सकता हो। भाषान्तरण क्योंकि मौखिक रूप से कही गई बात का होता है। इसलिए वक्ता के हाव-भाव में कहां जोर दिया, कहां मौन रहकर अर्थ गहराया गया, इसे भी श्रोता तक पहुंचाना होता है। यह आशु अनुवाद है इसलिए निर्वचक की स्मृति तेज होनी चाहिए।

अनुवाद में अनुवादक अन्य व्यक्तियों, पुस्तकों, कोशों आदि का सहारा ले सकता है परंतु निर्वचन (दुभाषिए) को यह सुविधा उपलब्ध नहीं रहती उसे तुरंत भाषान्तरण करना होता है इसलिए उसका प्रव्युत्पन्न भांति होना भी आवश्यक है।

• सारानुवाद :

'सारानुवाद' शीर्षक से स्पष्ट है कि मूल रचना का सार अर्थात अभिप्रेत अर्थ या कथ्य ही प्रस्तुत किया जाता है। प्राय श्रेष्ठ रचनाओं का गद्य और पद्य में सारानुवाद किया जाता है। इसके माध्यम से लक्ष्य भाषा के श्रोता को स्त्रोतभाषा के लेखक द्वारा दिए संदेश से परिचित करवाना ही लक्ष्य रहता है। ऐसा अनुवाद सरल और ग्राहय रहता है। 'मूलभाषा से लक्ष्य भाषा में इसी प्रकार क्रमबद्ध और संक्षिप्त रूप में किए अनुवाद को सारानुवाद कहते हैं।' आधुनिक युग में भारी भरकम मूल कृतियां पढ़ने का समय नहीं रहता इसलिए आज का पाठक सारानुवाद से ही कृति को समझने का प्रयास करता है।

सारानुवाद की प्रक्रिया सरल है। सारानुवादक मूल पाठ का अर्थ ग्रहण करता है उसमें से मुख्य बिंदुओं का चयन करता है और उन्हें पहले मूल भाषा में लिखता है फिर उसका लक्ष्य भाषा में अनुवाद करता है।

सारानुवाद संक्षेपण भी है और सर्जनात्मक लेखन भी। इसमें मूलकृति की गंध भी रहनी चाहिए और आकार भी संक्षिप्त होना चाहिए। यह शिष्ट, सरल और स्वाभाविक हो। सारानुवाद और भावानुवाद में समानता यही है कि दोनों में मूल पाठ का अधिग्रहण कर उसका सार या संक्षेप प्रस्तुत किया जाता है। भावानुवाद में भाव या अर्थ पर बल रहता है अर्थात् अर्थ-व्यंजना के आधार पर किया अनुवाद ही भावानुवाद कहलाता है। भावानुवाद में संकेतार्थ को लेने पर बंद रहता है। भावानुवाद स्वछन्द अनवुादक को देता है।

सारानुवाद की सीमा :

सारानुवाद में रचना का आशय ही जाना जा सकता है उसके शिल्पगत सौंदर्य का आनंद नहीं लिया जा सकता। इसमें मूलपाठ की रूपरेखा मात्र ही रह जाती है। सभी संकेतिक अर्थ इसमें नहीं आ पाते। इसलिए यह भ्रामक भी हो जाते हैं। कविता का सारानुवाद संभव नहीं। 'भारतीय साहित्य का विश्व कोष' 22 भारतीय राष्ट्र भाषाओं की प्रमुख रचनाओं का सारानुवाद इसमें संकलित है।

• रूपातंरण :

'रूपातंरण' शब्द में ही इसका अर्थ छुपा है। यह स्त्रोत भाषा की रचना के रूप को कोई न रूप देने की प्रक्रिया है। इसमें एक विधा की रचना का दूसरी विधा में बदलना भी शामिल है। चंद्रधर शर्मा गुलेरी की कहानी 'उसने कहा था' का धारावाहिक बनाना, रूपांतरण है। इसके अंतर्गत मूलभाव या अर्थ के साथ-साथ रचना के प्रभाव को भी रखना आवश्यक होता है। रूपान्तरकार को पर्याप्त छूट रहती है।

रूपांतरकार को विधांतर करने के साथ-साथ संक्षेपण, परिवर्तन, सांस्कृतिक प्रतिस्थापन का काम भी करना पड़ता है। कहानी को नाटक में रूपान्तरित करना, अंग्रेजी कहानी को हिंदी नाटक में बदलना, कठिन काम है। यह अनुवाद की अपेक्षा अधिक परिश्रम साध्य कार्य है। इसमें अनुवाद के साथ-साथ कृति का रूप भी बदल जाता है।

• कार्यालयी अनुवाद :

भारतीय संविधान ने केंद्र की राजभाषा हिंदी को माना है और हिंदी भाषा प्रदेशों की राजभाषा भी हिंदी है ऐसे में अंग्रेजी से हिंदी में अनुवाद की आवश्यकता नहीं होनी चाहिए। गैर हिंदी भाषी राज्यों से पत्र-व्यवहार अंग्रेजी में होता है। वास्तविक स्थिति यह है कि मूल आदेश, पंजिकाएं अंग्रेजी में तैयार हो रही हैं और फिर उनका हिंदी अनुवाद, आवश्यकतानुसार किया जा रहा है। इसका कारण एक तो हमारी गुलामी की मानसिकता है। आज भी अंग्रेजी लिखना और बोलना अफसरशाही का चिन्ह् है दूसरे गत दो सौ वर्षों से देश की राजभाषा अंग्रेजी रही और विश्व के अनेक देशों की राजभाषा आज भी अंग्रेजी है। विशेषकर जो देश इंग्लैंड के उपनिवेश रहे है। हम अभी भी उसके प्रभाव से मुक्त नहीं हो पाए हैं। हम अभी भी उसके प्रभाव से मुक्त नहीं हो पाए हैं। तीसरे हिंदी में तकनीकी शब्दावली के निर्माण का काम धीमा रहा और परिभाषिक शब्दों में एकरूपता नहीं हो पाई इसलिए प्रशासन में अंग्रेजी की जरूरत रही। विधि संबंधी प्रक्रिया में आज भी अंग्रेजी हावी है।

कार्यालयी अनुवाद की प्रक्रिया :

कार्यालयी पत्र व्यवहार में अधिसूचना, निविदा सूचना, संकल्प, सामान्य आदेश, प्रेस विज्ञप्ति, प्रशासनिक तथा अन्य रिपोर्ट, संसद को प्रस्तुत कागजात, अनुबंध, अनुबंध, निविदा फार्म, परमिट, पत्र शीर्ष, लिफाफे आदि लेखन, लाइसेंस, नियमावली, नाम पट्ट, टेलीफून, डायरेक्टरी, सम्मेलनों की कार्यसूची आदि आते हैं।

कार्यलयी अनुवाद की प्रक्रिया के पांच सोपान हैं। प्रथम सोपान पर अनुवादक मूलपाठ का अध्ययन कर इसमें उसके आशय को समझता है, दूसरे सोपान पर पाठ का विश्लेषण शब्द, पदबंध और वाक्य के स्तर पर भाषिक योजना बनाता है, तीसरे सोपान पर भाषातंरण अर्थात अनुवाद का कार्य करता है जिसमें अर्थ और शैली के समकक्ष सामग्री, लक्ष्य भाषा में जुटाता है। चौथे सोपान पर भाषातंरण का परिष्कार किया जाता है ताकि उसमें सहज प्रवाह, शैली, वस्तुनिष्ठता, संप्रेषणीयता और दोषहीनता आदि की दृष्टि से अनुदित सामग्री का परिष्कार कर सके। अंत में पांचवें सोपान पर वह मूल के साथ अनुदित सामग्री की तुलना करके उसे अधिकारिक समतुल्य बनाने का प्रयास करता है।

कार्यालयी अनुवाद की समस्याएं :

हिंदी को राजभाषा का दर्जा मिलने से पूर्व, अंग्रेजी भारत की राजभाषा थी। इसलिए राजकार्य से जुड़े पत्र-व्यवहार में अंग्रेजी की शब्द-रचना, वाक्य-रचना को आदर्श मानकर उसका अनुदित रूप प्रयोग किया जाने लगा। अनुवाद में अर्थ महत्वपूर्ण है, शैली का महत्व नगण्य होता है। पहली समस्या इसी से आती है। अंग्रेजी की वाक्य रचना से भिन्न हिंदी की प्रकृति के अनुरूप वाक्य रचना अटपटी मानी जाती है। दूसरे परिभाषिक शब्दों की अनेकरूपता और कभी भी अनुवाद में बाधक बनती है। तीसरे अंग्रेजी शब्दों के सुनिश्चित हिंदी पर्याय किसी कोश में उपलब्ध नहीं। संस्कृत आधृत परिभाषिक शब्द दुरूह और अप्रचलित है। भारत के विभिन्न राज्यों में परिभाषिक शब्दों के अनुवाद में भी एकरूपता नहीं। केंद्रीय सरकार में 'नोट' के लिए टिप्पणी, मध्य प्रदेश में 'टिप्पण' शब्द है। 'Abstract' के लिए, केंद्र में सार, उत्तर प्रदेश में सारपत्र, बिहार में सारांश शब्द प्रचलित है। व्यक्तियों के नाम और संक्षिप्तियोंके नियम अस्पष्ट हैं। 'अटल बिहारी वाजपेयी' को ए.बी. वाजपेयी लिखा जाएगी जबकि होना चाहिए। अ.बी. वाजपेयी अनुबंध के लिए कोश ग्रंथों की कमी, पर्यायों का अभाव, उचित पुनपरीक्षा का प्रभाव।

कार्यालयी अनुवाद तीन तरह के प्रलेखों/पत्रों का हो सकता है। संविधानिक अनुवाद, तकनीकी अनुवाद तथा दैनिक महत्व की सामग्री। सरकार और संस्था के संविधान संबंधी सामग्री संविधानिक अनुवाद के अंतर्गत आती है। तकनीकी सामग्री परिभाषिक शब्दावली का विकास कर तकनीक अनुवाद में संभव है। दैनिक महत्व की सामग्री में आदेश,

परिपत्र, अधिसूचनाएं, प्रेस विज्ञप्तियां तथा प्रतिवेदन आदि सामने आते हैं। राष्ट्रपति की आज्ञानुसार निम्नलिखित सामग्री का प्राधिकृत हिंदी रूप देना अनिवार्य है। जनता के साथ पत्र व्यवहार, प्रशासनिक रिपोर्ट, सरकारी पत्रिकाएं, विधायी अधिनियम, तथा सन्धियां और करार आते हैं।

• साहित्यिक अनुवाद : (सर्जनात्मक सामग्री का अनुवाद) :

सर्जनात्मक साहित्य में गद्य और पद्य में स्वा संपूर्ण साहित्य आता है जिसमें कविता, कहानी, उपन्यास, नाटक, निबंध आदि सभी विधाएं आ जाती हैं। साहित्येत्तर सामग्री का अनुवाद करते समय अर्थ पर जोर दिया जाता है, शिल्प पर नहीं परंतु साहित्यिक रचनाओं के अनुवाद में शिल्प भी समतुल्य खोजना पड़ता है। साहित्यिक कृति में शब्दानुवाद नहीं चलता, साहित्येत्तर में हो सकता है। साहित्येत्तर रचनाओं में अभ्यास और दक्षता चाहिए, साहित्य के अनुवाद में प्रतिभा आवश्यक है क्योंकि यह कार्य पुनसृजन के समकक्ष होता है।

साहित्यिक रचना का अनुवादक संवदेनशील, रसग्राही पाठक होना चाहिए तभी वह साहित्य के मर्म को आत्मसात कर पाएगा। तत्पश्चात उसे स्त्रोत-भाषा और मूल भाषा के सामाजिक-सांस्कृतिक परिवेश का भी जानकार होना चाहिए और दोनों भाषाओं का मर्मज्ञ भी होना चाहिए उसमें कुछ न कुछ प्रतिभा भी रहनी चाहिए। वह पाठक से सर्जक की भूमिका में आ जाता है।

साहित्यिक अनुवाद का प्रथम सोपान है अनुवादक द्वारा मूल रचना कार से तादात्म्य स्थापित करना है। मूल लेखक से उसकी रचना के माध्यम से तादात्म्य स्थापित करने के पश्चात वह मूलकृति की भाषिक संरचना और सांस्कृतिक परिवेश को लक्ष्य भाषा में उतारने की कोशिश में निरंतर प्रयास करता है। दूसरा सोपान मूलकृति का पाठ विश्लेषण है जोकि पदक्रम, सहप्रयोग, पदबंध, मुहावरे-लोकोक्तियों, सांस्कृतिक स्तर, अनेकार्थक संरचनाओं के स्तर पर, स्त्रोत भाषा के लक्ष्य भाषा पर प्रभाव के स्तर पर होता है। तीसरा सोपान मूलकृति का लक्ष्य पाठ में रूपातंरण का है। मूल भाषा (स्त्रोत भाषा) और लक्ष्य भाषा में सामाजिक सांस्कृतिक परिवेश-जन्य भी अंतर होता है और भाषा की संरचना के स्तर पर भी, जिसके कारण भाषान्तरण अधूरा ही रहता है। सर्जनात्मक रचना के अनुवाद के बाद स्त्रोत भाषा एवं लक्ष्य भाषा का समायोजन किया जाता है। अनुवादक पाठक की भूमिका में उतर कर उसका विश्लेषण करता है। समायोजन के अभाव में भाषाओं की संरचना, व्याकरण और शैली का ध्यान न रहने से अनुदित रचना बोधगम्य नहीं रह पाती। मुहावरे और लोकोक्तियों के अनुवाद में समतुल्यता खोजना भी कठिन काम है।

काव्य का अनुवाद गद्य के अनुवाद से कठिन होता है क्योंकि काव्य ध्वनि पर आधारित रहता है जिसमें प्रतीक नाटक, उपन्यास, जीवनी, रिपोर्ताज, रेखाचित्र, आत्मकथा आदि साहित्यिक रचनाओं में आती है।

• ज्ञान-विज्ञानपरक अनुवाद :

ज्ञान-विज्ञान के अंतर्गत-भौतिकी, गणित, रसायन प्राणी-विज्ञान, आयुर्विज्ञान, कम्प्यूटर, इंजीनियरिंग, कृषि-विज्ञान आदि विषय आते हैं। विज्ञान-प्रणाली की तीन विशेषताएं रहती है तर्क, प्रामाणिकता और वस्तनुष्ठिता।

विज्ञानपरक अनुवाद की विशेषताएं :

विज्ञान सार्वभौम नियमों को स्थापित करता है। इसलिए लेखन में निव्य वाचक क्रियाओं का प्रयोग उचित होता है। यथा-हे, होता है, 'ता है' आदि। विज्ञान आरेखों और चित्रों द्वारा अपनी विषय वस्तु को स्पष्ट करता है जिनका अनुवाद नहीं हो पाता। विज्ञान-विषय का अनुवाद यदि विषय का ज्ञाता हो तभी अच्छा अनुवाद नहीं कर पाएगा। विज्ञान पर अनुवाद में परिभाषिक, तकनीकी शब्दों का प्रायः अनुवाद नहीं किया जाता। विज्ञान के अनुवाद की भाषा के चार स्तर है प्रयोगशाला स्तर, कार्यालय स्तर, दैनिक व्यवहार का स्तर तथा प्रचार और विक्रय का स्तर। इन चारों प्रकार के अनुवादों की भाषा का स्तर भिन्न-भिन्न रहता है। चिकित्सा विज्ञान में ग्रीक और लैटिन के अनेक शब्दों का लिप्यंतरण होता है यथा कैंसर, टिटनस और 'ब्रेन हैमरेज' आदि। वैज्ञानिक विषयों के अनुवाद में तथ्यात्मक-प्रामणिकता आवश्यक है। वैज्ञानिक अनुवाद प्रायः शब्दानुवाद होता है परंतु लोकप्रिय वैज्ञानिक विषय, सहज, सरल, बोधगम्य भाषा में अनुदित होते हैं।

• विधिक अनुवाद :

स्वतंत्रता से पूर्व पराधीनता के युग में भारत में कोर्ट-कचहरी की भाषा अंग्रेजी और उर्दू रही। स्वाधीनता के पश्चात् हिंदी को केंद्र की राजभाषा बताया गया तो न्यायालयों में भी हिंदी का प्रचलन बढ़ा। आज निचले न्यायालयों में हिंदी का प्रयोग कचहरी में होता है तथा उच्चतम न्यायालय में भी इसका कभी न कभी व्यवहार होने लगेगा। भारतीय संविधान का प्रामाणिक हिंदी स्वरूप तैयार किया गया जिसमें अंग्रेजी से हिंदी में सर्जनात्मक, समतुल्य शब्द दिए गए तथा 'प्रेजीडेंट' के लिए 'राष्ट्रपति' 'हाउस' ऑफ स्टेटस के लिए 'राज्यसभा' आदि।

विधि संबंधी भाषा संवेदनशील होती है और इसमें शब्द क्रम का अधिक महत्व रहता है। इसलिए शब्दानुवाद इसके अनुकूल रहता है। कानूनी दस्तावेजों में दिए शब्दों का अर्थ न्यायालय निर्धारित करता है, पाठक या कोश नहीं। न्यायालय किसी उचित का जो अर्थ निर्धारित करता है उसे राजपत्र में अधिसूचित कर विधिक मान्यता दी जाती है। विधिक शब्द संक्षिप्त और निश्चित होते हैं।

• विधि संबंधी दस्तावेजों के अनुवाद की विधि :

विधिक दस्तावेजों में दिए हर शब्द का निश्चित अर्थ निकलता है। अंग्रेजी पाठ की भाषा शैली और वाक्य विन्यास को यथा संभव वैसे ही रखने का प्रयास किया जाता है ताकि किसी प्रकार का अर्थ-परिवर्तन या अर्थ की हानि न हो। विधिक अनुवाद में स्त्रोत भाषा के पाठ का सरलीकरण या संक्षेपीकरण अपेक्षित नहीं होता। अंग्रेजी के कुछ शब्द भ्रामक भी हो सकते हैं यथा Servant of the Government अर्थात 'सरकारी सेवक' और Public Servant अर्थात 'लोक सेवक' का अंतर पाठक को स्पष्ट नहीं हो पाता। 'सरकारी सेवक' वह है जिसे सरकार नियुक्त करती है तथा 'लोक सेवक', 'स्वयंसेवक' भी हो सकता है। विधिक अनुवाद में 'लिप्यंतरण', 'व्याकरणिक व्यवस्था' का ध्यान रखना पड़ता है। भारतीय दंड संहिता में लिंग की परिभाषा करते हुए 'He' में 'She' भी शामिल है। विधिक अनुवाद अपनी संरचना के कारण दुर्बोध भी हो जाते हैं। विधिक संबंधी अनुवाद बहुत कठिन है। इसकी परिभाषिक शब्दावली तो मानक होनी ही चाहिए। साथ ही वाक्य रचना भी ऐसी होनी चाहिए जिसमें विधि और न्यायालय की संकल्पना निहित हो। इसके साथ ही लक्ष्य भाषा के सामान्य भाषा के पाठक के लिए संप्रेषणीय और बोधगम्य हो। विधि साहित्य के अनुवाद में सहजता, यथातथ्यता, शब्दों में अभिव्यक्तियों में प्रामाणिकता, अभिव्यक्ति की एकरूपता और असंदिग्धता होना अनिवार्य है, तभी वह अनुवाद विधि क्षेत्र में अपनी सार्थकता और उपयोगिता कर पाएगा।

• वाणिज्यिक अनुवाद :

वाणिज्य के अंतर्गत लेखा-परीक्षा, बैकिंग, और व्यापार आदि क्षेत्र आते हैं। साथ ही इसका विस्तार अर्थशास्त्र, कंपनी, निगम, प्रबंधन आदि तक होता है। इसमें विधिक प्रकृति का काम भी शामिल है। वाणिज्य के क्षेत्र में काफी परंपरागत शब्दावली उपलब्ध है। 'शुक्रनीति', 'अर्थशास्त्र', 'मनुस्मृति' आदि ग्रंथों में अर्थ-संबंधी विवेचन होने के कारण राजस्व, कृषि-कर्म, मुद्राओं के टंकण, अर्थदंड और राजकोष आदि के विषय भी वाणिज्य का अंग बन जाते हैं।

भारतीय भाषाओं में महाजनी, में महारानी, राजस्व, बाजार, बही खाता आदि संबंधित प्रचुर शब्दावली सदियों से विकसित हुई है। स्वतंत्रता के पश्चात् अर्थशास्त्र, वाणिज्य और बैकिंग का राष्ट्रीयकरण और अंतर्राष्ट्रीकरण हुआ है। वाणिज्यिक शब्दावली सरकारी कार्यकलापों, जनसंचार के माध्यमों आर्थिक समाचारों और आर्थिक गतिविधियों में प्रयुक्त होता है।

स्वदेश वाणिज्यिक शब्दावली :

अर्थशास्त्र, वाणिज्य और व्यापार की पर्याप्त शब्दावली संस्कृति तथा आधुनिक भारतीय भाषाओं में उपलब्ध है। मूल्य, व्यय, धन, अर्थ, चक्रवृद्धि ब्याज, फालिक वृद्धि, ब्याज, खाता, जमा, नामे, जोखिम, उठाव, उछाल, मंदी, सौदा और जब्ती आदि शब्द मौजूद हैं। इन शब्दों के अंग्रेजी पर्याय भी बनाए गए।

वाणिज्य-व्यापार, बैकिंग आदि विषयों की सामग्री अनुवाद करते समय परिभाषिक शब्दावली के साथ इन विषयों की शैली का भी ध्यान रखना चाहिए।

सामान्य वाणिज्यिक शब्दावली :

वाणिज्य और व्यापार में अनेक विषयों की शब्दावली प्रयुक्त होती है क्योंकि इसका संबंध जीवन के अनेक पक्षों में रहता है। यही कारण है कि इसमें तकनीकी अर्ध तकनीकी, और गैर तकनीकी शब्दावाली प्रयुंक्त होती है। वाणिज्यिक भाषा की वाक्य-संरचना की जो विशिष्ट प्रयुक्ति होती है, उसमें लेना-देना अदा करने के बीच आधार रूप में धन होता है जहां से वस्तु जाती है, वहां को और जहां 'से' वस्तु जाती है वहां 'से' लगता है।

अंग्रेजी और संकर शब्दावली का प्रयोग वाणिज्यिक अनुवाद में होती है। अंग्रेजी शब्द है इक्विटी, एजेंट, बैंक, चैक, प्रीमियम, कमीशन आदि। संकर (मिश्रित) शब्द हैं गारंटीकृत, शेयर धाारक, इंडैंटकर्त्ता, लाइसेंसधारी आदि शब्दों में अंग्रेजी और हिंदी मिश्रित संकर शब्द हैं। देशज शब्द आढ़तियां, कुर्की, दलाली, राक्का आदि।

वाणिज्य में संदर्भानुसार अर्थ भी शब्द देते हैं जैसे 'Account' शब्द का अर्थ कारोबार में 'लेखा' और बैंक में 'खाता' होता है। 'Credit' का सामान्य अर्थ 'साख या श्रेय' है। व्यापार में इसका अर्थ 'ऋण' है।

वाणिज्यि क्षेत्र में संक्षिप्तियां प्रयुक्त होती हैं। उदाहरण के लिए I.M.E. का अर्थ है 'इंटरनेशनल मॉनीटरी फंड' या 'अंतरराष्ट्रीय मुद्रानिधि', 'अ.मु.नि.' है। वाणिज्यिक क्षेत्र में तकनीकी, अद्र्ध तकनीकी और गैर तकनीकी शब्द भी प्रयुक्त होते हैं। उसी के अनुसार वाक्य विन्यास बनता है। इसमें कई मुहावरेदार अथवा पदबंधीय उक्तियां विषयानुकूल अर्थ प्रदान करती है। यह भाषा सरल और प्राय: अभिधापरक होती है। शाब्दिक की जगह भावानुवाद पर बल दिया जाता है। संदर्भानुसार, शब्दों के अर्थ बदल जाते हैं।

बाजार समाचारों की भाषा रोचक होती है। बाजार की भाषा उसे कहते हैं जिसे बाजार में व्यापारी प्रयुक्त करते है। बाजार की भाषा का भावानुवाद होता है, शब्दानुवाद संभव नहीं। उदाहरण के लिए, बाजार में खामोशी, बाजार टूटा, सोना उछला, चांदी नरम आदि पद बंधों का शब्दानुवाद संभव नहीं है।

विज्ञापन की भाषा सृजनात्मक होती है, सांकेतिक और सम्प्रेषणीय होती है 'दाग अच्छे हैं', 'दाग! देखते रह जाओगे', 'यह दिल मांगे मोर जैसे विज्ञापन प्रसिद्ध हुए।' बैंक की भाषा अभिधात्मक और परिभाषिक, तकनीकी शब्दों से युक्त होती है।

इस प्रकार हम देख सकते हैं कि बाजार, व्यापार और वाणिज्य हमारे जीवन के अनेक पहलुओं को छूता है। इसलिए इसमें अनेक तरह की भाषा यहां प्रयुक्त होती है।

प्रस्तुत पाठ में हमने अनुवाद का तात्पर्य क्या है और इसके कितने प्रकार (भेद) हो सकते हैं, इस बात पर विचार किया। सार रूप में यह कह सकते हैं कि

1. अनुवाद से तात्पर्य है एक भाषा की रचना/सामग्री को दूसरी भाषा में इस तरह स्थानातंरित करना है कि उसका आराम/भाव समतुल्य बना रहे और यथा संभव उसकी शैली का प्रभाव भी उसमें रहे।
2. अनुवाद के प्रकार या भेद तीन आधारों पर आश्रित है (1) माध्यम के आधार पर (2) प्रक्रिया के आधार पर (3) लेखन प्रकार के आधार पर।
3. माध्यम के आधार पर अनुवाद दो तरह का हो सकता है। (क) प्रतीक आधारित (ख) भाषा रूप आधारित। प्रतीक आधारित अनुवाद अंत: भाषिक हो सकता है, अंतर भाषिक हो सकता है और अंतर-प्रतीकात्मक हो सकता है। भाषा रूप के आधार पर अनुवाद उपादान सापेक्ष और रचना सापेक्ष हो सकता है। उपादान सापेक्ष अनुवाद भाषा के लिखित और मौखिक रूप के अनुसार सामान्य लिखित अनुवाद हो सकता है अथवा उच्चारित (मौखिक) रूप के अनुसार आशु रूप हो सकता है। रचना-साक्षेप अनुवाद पदयानुवाद हो सकता है अथवा गद्यानुवाद हो सकता है।

(4) प्रक्रिया के आधार पर अनुवाद दो प्रकार का हो सकता है (क) पाठ धर्मी अनुवाद (ख) प्रभाव धर्मी आधार। पाठ धर्मी अनुवाद रचना के अनुसार पूर्ण अनुवाद अथवा आंशिक अनुवाद हो सकता है। पाठ धर्मी अनुवाद, धर्म के आधार पर शब्दशः अनुवाद, शाब्दिक अनुवाद, भावानुवाद अथवा छायानुवाद का रूप ले सकता है। प्रक्रिया के आधार पर दूसरी तरह का अनुवाद है। प्रभाव धर्मी अनुवाद। प्रभाव धर्मी अनुवाद सारानुवाद और छायानुवाद भी हो सकता है।

(5) लेखन प्रकार के आधार पर दो तरह का अनुवाद हो सकता है। लिप्यकंन और लिप्यंतरण। आलेख के माध्यम से अनुवाद के प्रकार निम्न प्रकार से दिखाए जा सकते हैं।

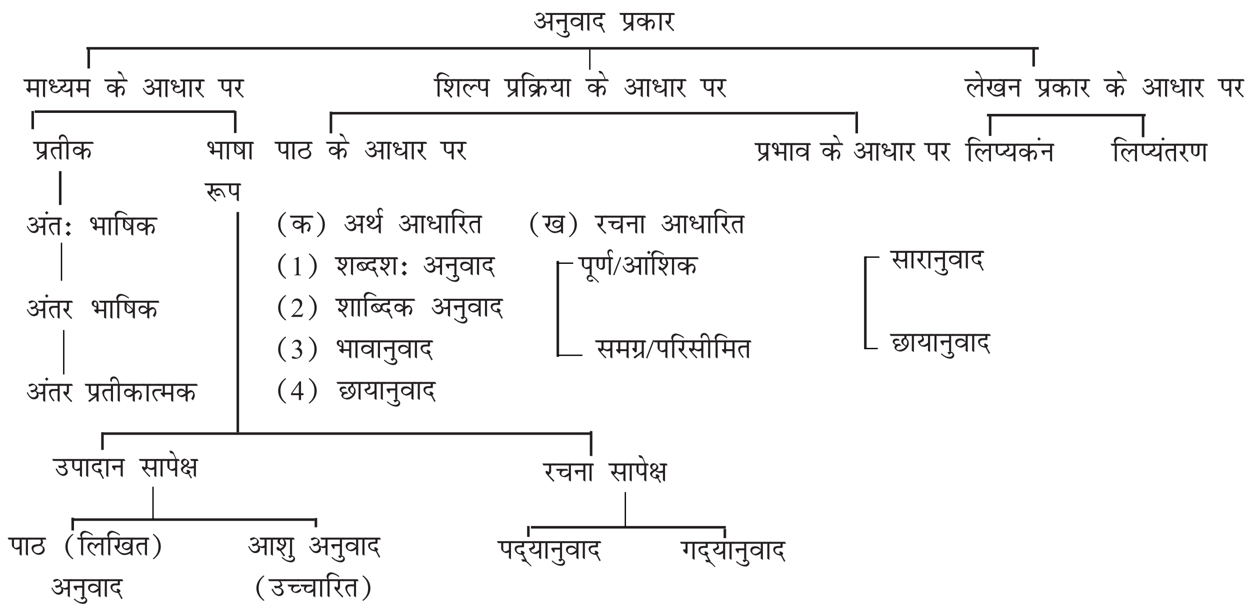

इस प्रकार अनुवाद के प्रकार हैं

(1) अंतः भाषिक (2) अंतर भाषिक (3) अंतर प्रतीकात्मक (4) शब्दशः अनुवाद (5) शाब्दिक अनुवाद (6) भावानुवाद (7) छायानुवाद (8) पूर्ण अनुवाद (9) शाब्दिक अनुवाद (10) समग्र अनुवाद (11) परिसीमित अनुवाद (12) सारानुवाद (13) छायानुवाद (14) लिप्यंकन (15) लिप्यंतरण।

स्वयं आकलन प्रश्न-2

प्रश्न-1 किस प्रकार के अनुवाद में मूल पाठ के समग्र संदर्भ को ध्यान में रखना आवश्यक होता है ?

प्रश्न-2 किस विद्वान ने अनुवाद को 'स्वादहीन एवं सूखी स्ट्राबेरी' की संज्ञा दी है ?

2.5 सारांश

अनुवाद की आवश्यकता के अनुरूप इसे अलग-अलग रीतियों से प्रयोग में लाया जाता रहा है। किसी विशेष प्रकार के अनुवाद में शब्द को महत्त्व दिया जाता रहा है तो किसी में भाव को। इसी तरह से विविध प्रकार की प्राथमिकताएँ भी नज़र आती है। अनुवाद की इन विभिन्न रीतियों को अनुवाद - सिद्धांत चिंतन में 'अनुवाद के प्रकार' कहा जा सकता है। विभिन्न प्रकार के अनुवादों के लिए अलग-अलग कौशल, विशेषज्ञता और ज्ञान की आवश्यकता होती है। जैसे साहित्यिक, कार्यालयी, तकनीकी और व्यावसायिक अनुवाद। इनमें से प्रत्येक क्षेत्र में अनुवादकों के सामने कई प्रकार की चुनौतियां आती हैं।

2.6 कठिन शब्दावली

संप्रेषण - प्रेषित करना

तकनीकी - तकनीक विषयक

भाषान्तरण - अनुवाद

प्रयोजन - उद्देश्य

वर्गीकरण - वर्ग के अनुरूप वस्तुओं का विभाजन

2.7 स्वयं आकंलन हेतु प्रश्नों के उत्तर

अभ्यास प्रश्न-1 के उत्तर

उ.1 हम्बोल्ट

उ.2 शावरमैन

अभ्यास प्रश्न-2 के उत्तर

उ.1 साहित्यिक अनुवाद

उ.2 फारेस्ट स्मिथ

2.8 संदर्भित पुस्तकें

1. वासुदेव नन्दन प्रसाद, हिन्दी अनुवाद : सिद्धांत और प्रयोग, भारती भवन, पटना।
2. कैलाश चन्द्र भाटिया, अनुवाद कला; सिद्धांत और प्रयोग, तक्षशिला प्रकाशन, दिल्ली।
3. सुरेश कुमार, अनुवाद सिद्धान्त की रूप रेखा, वाणी प्रकाशन, दिल्ली।

2.9 सात्रिक प्रश्न

प्रश्न-1 भाषान्तरण का अभिप्राय स्पष्ट करते हुए अनुवाद व भाषान्तरण में अंतर बताए।

प्रश्न-2 अनुवाद के विभिन्न प्रकार पर प्रकाश डालिए।

*****

इकाई–3
अनुवाद के शिल्पगत भेद

संरचना

3.1 भूमिका

3.2 उद्देश्य

3.3 अनुवाद के शिल्पगत भेद

- अविकल अनुवाद
- शब्दशः अनुवाद
- शाब्दिक अनुवाद
- भावानुवाद
- छायानुवाद
- आशु अनुवाद
- डबिंग
- कम्प्यूटर अनुवाद

स्वयं आकलन प्रश्न

3.4 सारांश

3.5 कठिन शब्दावली

3.6 स्वयं आकलन हेतु प्रश्नों के उत्तर

3.7 संदर्भित पुस्तकें

3.8 सात्रिक प्रश्न

3.1 भूमिका

इकाई दो में हमने अनुवाद के विभिन्न प्रकारों भाषान्तरण, सारानुवाद, रूपान्तरण, कार्यालयी, साहित्यिक, ज्ञान–विज्ञानपरक तथा वाणिज्यिक अनुवाद का गहन अध्ययन किया है। इकाई तीन में अनुवाद के शिल्पगत भेद का अध्ययन करेंगे। इसके अंतर्गत हम अविकल अनुवाद, शब्दशः अनुवाद, शाब्दिक अनुवाद, भावानुवाद, छायानुवाद, आशु अनुवाद, डबिंग तथा कम्प्यूटर अनुवाद का विस्तार पूर्वक अध्ययन करेंगे।

आधुनिक भूमंडलीकरण विश्व में और सूचना प्रौद्योगिकी के विस्फोट के युग में विभिन्न भाषाओं में आदान–प्रदान सहज रूप से बढ़ा है। इसलिए अनुवाद की आवश्यकता/मांग बढ़ी है। अनुवाद की प्रकृति और उसके विभिन्न भेदों का अध्ययन, अच्छे अनुवाद के लिए आवश्यक है। अनुवाद के शिल्पगत भेदों में अविकल अनुवाद (शब्दशः और शाब्दिक अनुवाद) की आवश्यकता और कमियां क्या हैं ? भावानुवाद और छायानुवाद क्या है और दोनों में क्या साम्य वेषम्य है, आशु अनुवाद, सामान्य लिखित अनुभव से भिन्न क्या हैं और आज के युग में उसकी क्या आवश्यकता है, डबिंग और कम्प्यूटर अनुवाद का आज क्या महत्व है, इन सब बातों पर इस पाठ में हम विचार करेंगे।

3.2 उद्देश्य

इकाई तीन का अध्ययन करने के पश्चात हम यह जानने में सक्षम होंगे कि –

1. अनुवाद के शिल्पगत भेद क्या हैं ?
2. अविकल अनुवाद क्या है ?

3. शब्दशः अनुवाद क्या है ?

4. शाब्दिक अनुवाद क्या है ?

5. भावानुवाद एवं छायानुवाद क्या है ?

6. आशु अनुवाद क्या है ?

7. डबिंग क्या है ?

8. कम्प्यूटर अनुवाद क्या है ?

3.3 अनुवाद : शिल्पगत भेद

अनुवाद शिल्प अथवा प्रक्रिया के आधार पर अनुवाद दो प्रकार का हो सकता है। जैसे पाठ के आधार पर और प्रभाव के आधार पर। पाठ के आधार पर अविकल अनुवाद (शब्दशः और शाब्दिक) तथा भावानुवाद और छायानुवाद। पाठ के आधार पर अनुवाद पूर्ण या आंशिक, समग्र या परिसीमित हो सकता है। डबिंग और कम्प्यूटर अनुवाद भी इसके ही भेद माने जा सकते हैं।

• अविकल अनुवाद :

अविकल (लिटरल) अनुवाद का अर्थ है मूल पाठ का शब्दशः अनुवाद अथवा शब्द प्रति शब्द अनुवाद। यह शाब्दिक अनुवाद माना जाता है।

• शब्दशः अनुवाद :

इस प्रकार के अनुवाद में मूल पाठ का शब्द-प्रति-शब्द अनुवाद उसी क्रम में किया जाता है जिस क्रम में शब्द स्त्रोत भाषा में दिए गए हों। उदाहरण के लिए 'We have to do this work' (हमें करना है इस काम को), हिंदी की प्रकृति के अनुसार अनुवाद होना चाहिए। 'हमें इस काम को करना है।' इस प्रकार का अनुवाद अटपटा होता है। अनुवादक इसमें अपनी ओर से कोई शब्द जोड़ या घटा नहीं सकता।

• शाब्दिक अनुवाद :

शब्दशः अनुवाद के समान ही शाब्दिक अनुवाद में भी स्त्रोत पाठ में आए सारे शब्दों का अनुवाद किया जाता है परंतु उनका क्रम लक्ष्य भाषा की प्रकृति के अनुसार बदल दिया जाता है। अनुवादक को इस प्रकार के अनुवाद में भी अपनी ओर से शब्द जोड़ने का अधिकार नहीं है। अनुवाद के केंद्र में रहता है परंतु उसे बोधगम्य बनाने के लिए पंक्ति या वाक्य के आधार पर अनुवाद किया जाता है। ऐसे अनुवाद में स्त्रोत भाषा की परछाई स्पष्ट दिखाई देती है।

इस प्रकार के अनुवाद तकनीकी विषयों के तो चल जाते हैं परंतु मुहावरे, लोकोक्तियों अथवा सर्जनात्मक साहित्य के अनुवाद आधे-अधूरे एवं हास्यास्पद हो जाते हैं। उदाहरण के लिए

1. मैं पानी-पानी हो गया - I became water and water

2. मेरा दिल बाग-बाग हो गया - My heart became garden and garden

इस प्रकार यहां अर्थ का अनर्थ हो गया है। इस प्रकार के अनुवाद में मूल भाषा की सभी भाषिक अभिव्यक्तियों का लक्ष्य भाषा में प्राप्त पर्यायों के आधार पर अनुवाद किया जाता है। शाब्दिक अनुवाद की कमियां देखते हुए ड्राइडन ने कहा था ''हम शाब्दिक अनुवाद करें और वह अच्छा भी हो यह लगभग असंभव है। इसमें स्त्रोत भाषा की स्वाभाविकता, लक्ष्य भाषा तक आते-आते नष्ट हो जाती है। ड्राइडन 'लिटरल ट्रांसलेशन' अर्थात शब्दशः और शाब्दिक अनुवाद को अस्वीकार करते हैं। पवित्र बाईबिल के प्रारंभिक अनुवाद शाब्दिक थे जिनका अर्थ समझना कठिन था। ड्राइडन शब्दानुवाद को ''पैरों में रस्सी बांधकर नृत्य करने के समान मानते हैं।''

उपर्युक्त विवेचन के आधार पर हम निम्नलिखित निष्कर्ष पर पहुंचते हैं

(1) लिटरल (अविकल) अनुवाद केवल तकनीकी विषयों में ही उपयोगी है।

(2) साहित्यिक/सांस्कृतिक पाठों के लिए यह बिल्कुल उपयुक्त नहीं है।

(3) ऐसे पाठों पर मूल पाठ की भाषा का गहरा प्रभाव रहता है। इसलिए लक्ष्य भाषा का सौंदर्य नष्ट हो जाता है।

(4) इस प्रकार के अनुवाद निर्जीव होते हैं।

(5) शाब्दिक अनुवाद, कोशगत अनुवाद ही होता है।

शाब्दिक अनुवाद तभी सफल हो जाता है जब स्त्रोत भाषा और लक्ष्य भाषा की संरचना और प्रकृति एक जैसी हो।

- **भावानुवाद :**

भावानुवाद से अभिप्राय ऐसे अनुवाद से है जिसमें स्त्रोत भाषा में दिए पाठ के भाव या अर्थ का अनुवाद करने पर बल दिया जाता है। भाव या अर्थ को स्पष्ट करने के लिए पाठ के वस्तु-तत्व के साथ-साथ उसकी रचना शैली और सांस्कृतिक संदर्भों पर भी नजर रखी जाती है। इस तरह के अनुवाद में भाषा अर्थात् शब्द रचना को अधिक महत्व नहीं दिया जाता। विद्वान इस अनुवाद शैली को ''भावानुवाद'' का नाम देते हैं।

इस प्रकार के अनुवाद में अनुवादक स्त्रोत भाषा की रचना के भाव या अर्थ को सुरक्षित लक्ष्य भाषा में लाने के लिए कुछ शब्द घटा या बढ़ा सकता है। स्त्रोत भाषा के शब्दों या उक्तियों के पर्याय लक्ष्य भाषा में खोजकर लिख सकता है।

इस प्रकार का अनुवाद सर्जनात्मक, साहित्यिक विषयों के लिए उपयोगी होता है। इसके अंतर्गत अर्थ छवियों की प्रधानता रहती है। यह भी कह सकते हैं कि शब्दानुवाद में कृति के शरीर पर ध्यान रहता है परंतु भावानुवाद में उसकी आत्मा पर। दोनों का अंतर निम्न वाक्य के अनुवाद से समझा जा सकता है।

(1) He pocketed the insult.

शब्दानुवाद-उसने अपमान जेब में डाला।

भावानुवाद-वह अपमान पी गया।

भावानुवाद की प्रकृति : इस अनुवाद शैली में स्त्रोत भाषा के शब्द-चयन, शब्द गुम्फन तथा वाक्य विन्यास पर ध्यान न देकर अनुवादक इसमें निहित सूक्ष्मार्थ पर ध्यान देता है और उसका भावानुवाद प्रस्तुत करता है। इसमें मौलिक रचना का सा आनंद आता है। अनेक बार अनुवादक की शैली जो लक्ष्य भाषा में लक्षित होती है, मूल पर भारी पड़ती है और अनुदित रचना मूल से भी बेहतर हो जाती है। भावानुवाद के समय मूल पाठ के अनावश्यक शब्दों को छोड़ दिया जाता है, अनुवादक, भाव स्पष्ट करने के लिए नए शब्द जोड़ देता है। लंबे वाक्यों को छोटे वाक्यों में बांट दिया जाता है। मूलभाव की रक्षा के लिए स्त्रोत भाषा की शैलीगत विशेषताओं-संगीत, लय, बलाघात, व्यंग्यार्थ, लक्ष्यार्थ आदि को यथासंभव लक्ष्य भाषा में उतरने का प्रयास करता है।

भावानुवाद की विशिष्टता : भावानुवाद पढ़ते समय, मूल पाठ का सा प्रभाव पड़ता है और आनंद आता है। भावानुवाद से अनुवाद की अनेक कठिनाइयां दूर होती है। भावानुवाद में सृजनात्मक प्रतिभा प्रकट होती है। इसमें शब्दों की अपेक्षा भाव और अर्थ की वरीयता दी जाती है। भावानुवाद कभी-कभी मूल से बेहतर हो जाता है।

1. भावानुवाद मूल से बेहतर या घटिया हो सकता है क्योंकि इसमें शब्द और वाक्य रचना पर कम ध्यान दिया जाता है। अनुवादक की संकेत ग्रहण क्षमता की परीक्षा इसमें होती है।
2. भावानुवाद एक सर्जनात्मक कार्य है। इसीलिए ड्राइड्न, आचार्य शुक्ल और दिनकर आदि इसे करते आए हैं।
3. समर्थ भावानुवादक अपनी प्रतिभा के बल पर मूल रचना के अनुवाद को मूल से बेहतर बना सकता है।

- **छायानुवाद :**

इस प्रकार का अनुवाद मूल के प्रति किसी प्रकार का आग्रह नहीं करता बल्कि उसकी छाया ही ग्रहण करता है। अनुवादक, मूल रचना को पढ़कर उसका मूल भाव आत्मसात करता है और फिर लक्ष्य भाषा के देशकाल, सांस्कृतिक अनुकूलन करते हुए उसे एक रचना के रूप में प्रस्तुत करता है। इस नयी रचना में मूल रचना की अर्थ छाया

रहती है जिससे उस पर मूल का प्रभाव पहचाना जा सकता है। इस प्रकार छायानुवाद में किसी रचना की कुछ छाया अर्थात् प्रभाव ही ग्रहण किया जाता है। ऐसे अनुवादों में स्थानों, वस्तुओं और व्यक्तियों के नाम और देश काल का देशीकरण कर दिया जाता है। भोलानाथ तिवारी के अनुसार छायानुवाद ऐसा अनुवाद है जो ''बिना मूल से बंधे उसकी छाया लेकर चले।'' छायानुवाद में अनुवादक उसी प्रभाव का पुनः सृजन करता है जो मूल कृति पढ़कर उस पर पड़ता है। छायानुवाद में कथ्य तो वही रहता है किन्तु उसका सामाजिक सांस्कृतिक परिवेश बदल जाता है।

भारतेन्दु हरिशचंद्र ने 'मर्चेण्ट ऑफ वेनिस' का अनुवाद 'दुर्लभ बंधु' शीर्षक से किया। इसमें नगरों के नाम ही नहीं बदले अपितु पात्रों की परिस्थितियों और परिवेश का भी भारतीयकरण कर दिया है। यह भावानुवाद से अधिक उदार और व्यापक, मुक्त अनुवाद शैली का अनुवाद, पाठक को अपने सामाजिक-सांस्कृतिक परिवेश में मूल रचना के भाव और रस तक पहुंचाता है।

छायानुवाद, व्याख्यानुवाद से भिन्न होता है। व्याख्यानुवाद को टीका-लेखन भी कह सकते हैं। इसमें मूल रचना में आए सांकेतिक भावों को अनुवादक स्पष्ट करता जाता है। इस क्रम में वह अपने विचारों को भी उसमें देने के लिए स्वतंत्र होता है।

इस विवेचन से स्पष्ट है कि छायानुवाद में मूल रचना के अर्थ या भाव का तथा शैली का, आभास मात्र होता है। अन्यथा इसे स्वतंत्र रचना माना जा सकता है। छायानुवाद में अनुवादक की प्रतिभा खुलकर सामने आ जाती है।

- **आशु अनुवाद :**

'आशु' का अर्थ है 'शीघ्र' 'तुरंत' आशु अनुवाद का अर्थ हुआ शीघ्र अथवा तुरंत किया गया अनुवाद 'आशु टंकरण' में आशुलिपिक बोली हुई बात को सांकेतिक भाषा में लिखकर उसे टंकित करता है। आशु अनुवाद में वक्ता की बात को स्त्रोता तक स्त्रोत भाषा से लक्ष्य भाषा में अनुदति करके मौखिक रूप से पहुंचाना होता है। आशु अनुवाद, मूलतः मौखिक अनुवाद है। आशु अनुवाद को भोलानाथ तिवारी 'भाषान्तरण' कहते हैं, कैलाशचंद्र भाटिया इसे 'आशु भाषान्तरण' कहते हैं तो सतीश कुमार इसे 'अनुव्याख्या' का नाम देते हैं। ई. विश्वनाथ अय्यर इसे 'वार्तानुवाद' तथा रीतारानी पालीवान इसे 'आशु अनुवादन' कहते हैं। इस प्रकार के अनुवाद के लिए 'आशु अनुवाद' शब्द ही उपयुक्त है।

आशु अनुवादक को 'दुभाषिया' अथवा 'इंटरप्रैटर' भी कहा जाता है। दुभाषिए को वक्ता द्वारा स्त्रोत भाषा में दिए संदेश को, लक्ष्य भाषा में तुरंत अनुदित कर मौखिक रूप से श्रोता तक पहुंचाना पड़ता है। इसलिए वह समतुल्य अनुवाद ही कर पाता है, क्योंकि प्रत्येक भाषा का विशिष्ट परिवेश होता है। अतः उसकी अपनी अनेक ध्वन्यात्मक, शाब्दिक, रूपात्मक, वाक्यात्मक, अर्थ परक, मुहावरे-लोकोक्तिपरक निजी विशेषताएं होती हैं जो लक्ष्य भाषा में तुरंत रूपातंरित करना संभव नहीं हो पाता।''

'आशु अनुवाद' और 'व्याख्यानुवाद' में अंतर है। यदि वक्ता अपने भाषण में संस्कृत या अंग्रेजी का उदधरण देकर उसे हिंदी में समझा देता है तो उसे व्याख्या कहेंगे, अनुवाद नहीं। कक्षा में अध्यापक कविता पाठ करके उसका अर्थ समझाता है तो यह व्याख्या ही कहलाएगा। भले ही अंग्रेजी की कविता को हिंदी में समझाया गया हो।

आशु अनुवाद के प्रकार : सभा सम्मेलनों में वक्ता द्वारा कही गई बात को एक अथवा अधिक भाषाओं में अनुदित कर श्रोताओं तक पहुंचाना तत्काल या आशु अनुवाद कहलाता है। संयुक्त राष्ट्र संघ में ऐसे अनुवाद की व्यवस्था रहती है। दूसरी प्रकार का आशु अनुवाद दो व्यक्तियों के बीच वार्तालाप दुभाषिए के माध्यम से होता है। विभिन्न भाषाएं बोलने वाले राष्ट्र्ध्यक्षों के बीच वार्ता, दुभाषिए के माध्यम से होती है जो बारी-बारी से दोनों की बात, अनुदित करके पहुंचाता है। इस अनुक्रमिक आशु अनुवाद भी कहा जाता है। आशु अनुवादक (दुभाषिए) की विशेषताएं :

आशु अनुवादक, सामान्य अनुवादक से कठिन परिस्थितियों में कार्य करता है। वह न तो किसी से परामर्श कर सकता है, न संदर्भ ग्रंथों से सहायता ले सकता है न ही उसके पास सोचने-विचारने का समय होता है उसे तुरंत धारावाहिक रूप में, प्रभावी अनुवाद करना होता है। दुभाषिएं की अर्हता, क्या हो इस पर विभिन्न विद्वानों ने विचार किया है उसमें निम्नलिखित गुण होने चाहिए।

1. उसमें ध्यानपूर्वक सुनने और सुने हुए समझने और स्मरण रखने की क्षमता होनी चाहिए।
2. उसे स्त्रोत भाषा और लक्ष्य भाषा का समुचित ज्ञान होना चाहिए साथ ही दोनों भाषाओं के सामाजिक-सांस्कृतिक परिवेश का भी उसे पता होना चाहिए।
3. भाषा के सांकेतिक अर्थ को समझना, बलाघात और स्वर के उतार-चढ़ाव के अनुरूप भाव को समझकर उसे अनुवाद करना आना चाहिए।
4. आशु अनुवाद मूलतः भावानुवाद है न कि शब्दानुवाद। इसलिए दुभाषिए में नैसर्गिक प्रतिभा, सृजनक्षमता होनी चाहिए।
5. दुभाषिए का प्रत्युत्पन्न मति होना आवश्यक है। अनेक कठिन परिस्थितियां पैदा हो जाती हैं जिनका समाधान उसे तुरंत खोजना होता है।
6. दुभाषिए में मंच मय न हो तो और उसकी भाषा में विनम्रता, शिष्टता तथा मधुरता रहनी चाहिए।

आशु अनुवाद का स्वरूप और उपयोग : आशु अनुवाद मानव सभ्यता जितना ही प्राचीन है। दो अजनबियों में वार्तालाप का माध्यम जब भी कोई व्यक्ति बना होगा तभी आशु अनुवाद की विधा ने जन्म लिया होगा। आशु अनुवाद के निम्नलिखित गुण हैं।

(1) आशु अनुवाद तत्काल सम्प्रेषण के लिए होता है और मौखिक होता है।
(2) आशु अनुवाद, संस्कृतियों के बीच सेतु का काम करता है।
(3) आशु अनुवाद यथासंभव सरल और बोधगम्य होना चाहिए।
(4) आशु अनुवाद वैश्वीकरण के युग में बाजार की सबसे बड़ी आवश्यकता है।
(5) बहुभाषी समाज में तथा अंतर्राष्ट्रीय मंचों पर इसका प्रयोग होता है।
(6) संसदीय कार्य में आशु अनुवाद आवश्यक है। भारत जैसे देश की संसद में जहां बहुभाषी लोग रहते हैं, आशु अनुवाद उपयोगी है।
(7) व्यापार और तीर्थाटन में सदियों से आशु अनुवादकों की महत्वपूर्ण भूमिका स्वीकार की गई है।

आशु अनुवाद की व्यवहारिक समस्याएं :

(1) हिंदी का मानक रूप स्थिर न होने से आंचलिक शब्दों, उर्दू-फारसी अथवा तत्सम शब्दों की बहुलता से विभिन्न हिंदी रूप प्रचलित हैं।
(2) वक्ता की भाषा शैली, शब्द-प्रयोग तथा उच्चारण विभिन्नता के कारण राजस्थान में विदा करने के लिए 'पधारिए' कहते हैं। जबकि उत्तर प्रदेश में यह शब्द आने पर स्वागत के कहे जाते हैं।
(3) वक्ता द्वारा प्रयुक्त शेयर, श्लोक आदि का अनुवाद कठिन है।
(4) लंबे और जटिल वाक्य-विन्यास का आशु अनुवाद कठिन होता है।

आशु अनुवाद का चमत्कार आज जीवन के हर क्षेत्र में देखा जा रहा है। ज्ञान-विज्ञान की जानकारी, संचार की सुविधाएं तथा साहित्य, संस्कृति का विश्व व्यापी प्रचार आशु अनुवाद के कारण ही संभव हो सका है। सच तो यह है कि आशु अनुवाद विश्व-प्रेम, शक्ति एवं सद्‌भाषा का मूल आधार है।

• डबिंग (ध्वन्यारोपण)

अंग्रेजी शब्द 'डबिंग' का अर्थ है 'ध्वन्यारोपण' अथवा 'नया स्वर भरना'। रिकॉर्ड किए ध्वनि पथ पर किसी अन्य 'ध्वनि पथ' को आरोपित करना ही डबिंग कहलाता है। यह दो प्रकार का होता है। एक तो वह है जब किसी एक भाषा में विज्ञापन रिकॉर्ड होता है। पात्र उस भाषा में अपना भाव अभिव्यक्त करते है। उदाहरण के लिए 'कोलगेट' का विज्ञापन मूलतः अंग्रेजी में रिकॉर्ड किया गया। उसे हिंदी भाषी क्षेत्र में हिंदी में दिखाता है तो विज्ञापन उत्पादक उसी चित्र पर साथ-साथ हिंदी में 'कैप्सन' या शीर्षक देता चलता है। पाठक को एक साथ देखना और पढ़ना पड़ता है। यह

कठिन कार्य है। यदि विज्ञापन बनाने वाला उसके मूल ध्वनि पथ पर हिंदी में रिकॉर्ड किया ध्वनित पथ आरोपित कर देता है। वह पात्र हिंदी बोलता प्रतीत होता है। भले ही उसके ओंठों की गति अंग्रेजी उच्चारण की लगती है। इस प्रकार अंग्रेजी विज्ञापन की डबिंग, हिंदी में हो जाती है।

एक अन्य प्रकार की डबिंग फिल्मों में होती है। दृश्य पहले रिकॉर्ड कर लिए जाते है। जहां कहीं संवाद स्पष्ट न हों अथवा वक्ता पात्र की आवाज़ प्रभावी न हो तो किसी अन्य व्यक्ति की आवाज़, ध्वनि पत्र (साउंड ट्रैक) पर अंकित कर दी जाती है। इस प्रकार का ध्वनि आरोपण भी डबिंग ही कहलाता है।

डबिंग, अत्यधिक कुशलता का कार्य है। रिकॉर्ड किए दृश्य के साथ तो संवाद अंकित होता जाता है वह आशु अनुवाद की तरह होता है। डबिंग करते समय वक्ता के हाव-भाव, ध्वनि-प्रभाव पर भी विशेष ध्यान देना होता है। वक्ता के हाव-भाव के साथ उच्चारित शब्द जितना अधिक मेल खाते हैं, डबिंग उतनी ही अच्छी मानी जाती है। भारत में दक्षिणी भारत की भाषाओं की फिल्में हिंदी में डब होती हैं और हिंदी फिल्में तमिल, तेलगू और मलयालम में डब होती हैं। यह अनुवाद का ही चमत्कार है।

• **कम्प्यूटर अनुवाद :**

आज जीवन के हर क्षेत्र में कम्प्यूटरों का प्रयोग किया जा रहा है। बिजली, पानी, टेलीफोन का बिल हो या रेल, हवाई अथवा जलयान का टिकट बुक करवाना हो, उपग्रहों से जमीन पर सूचना पहुंचानी हो या चित्रों का प्रसारण हो, केलकुलेटर से हिसाब करना हो या पुस्तकें मुद्रित करनी हों सभी जगह कम्प्यूटर का साम्राज्य है। हमारा युग कम्प्यूटर जनित क्रांति का युग है।

(क) **कम्प्यूटर क्या है :** कम्प्यूटर एक ऐसी मशीन है जो आपके और हमारे द्वारा इस्तेमाल किए जाने वाले आंकड़ों, संख्याओं, शब्दों और चित्रों की सूचनाओं को अपने स्मृति कोष (मैमोरी) में संचित करके रखती है। ये सूचनाएं मुख्यत: कुंजीपटल (की बोर्ड) पर टाइप करके इसमें प्रविष्ट की जाती है। कम्प्यूटर की भाषा में इन सूचनाओं को डाटा कहा जाता है। हम इन सूचनाओं से संबंधित जटिल से जटिल प्रश्नों के उत्तर का परिणाम कम्प्यूटर के जरिए तुरंत प्राप्त कर सकते हैं। आप इन आंकड़ों से जो परिणाम या उत्तर प्राप्त करना चाहें आपका आदेश उपयुक्त कुंजी दबाकर कम्प्यूटर कोदे दें। आपका कम्प्यूटर उसमें पहले से भरी सूचनाओं को कच्चे माल की तरह इस्तेमाल करते हुए बड़ी तेज गति से अंदर ही अंदर उन पर कार्य करेगा जैसे जोड़ना, घटाना, बदलना, गिनना, छांटना, क्रम से लगाना, अनुवाद करना आदि क्रियाएं पूरी करेगा।

(ख) **कम्प्यूटर अनुवाद :** कम्प्यूटर का प्रयोग शब्द कोष के निर्माण हेतु किया जाता है। कम्प्यूटर, शब्दकोष निर्माता के लिए एक उपकरण या साधन होता है और लक्ष्य होता है शब्दकोष का निर्माण। लेकिन एक स्थिति ऐसी भी आ जाती है जब कम्प्यूटर विशेषज्ञ को स्वयं, खास प्रयोजनों के लिए शब्दकोष की जरूरत पड़ती है। यहां वह शब्दकोष का प्रयोग एक उपकरण या साधन के रूप में करता है। उसका अंतिम लक्ष्य होता है कम्प्यूटर अनुवाद। कम्प्यूटर अनुवाद के लिए जिस तरह के कोश की जरूरत होती है वह एक अलग तरह का कोश होता है जिसे कम्प्यूटर की भाषा में लेक्सीकॉन (Lexicon) कहते हैं।

(ग) **कम्प्यूटर अनुवाद की प्रकृति :** कम्प्यूटर अनुवाद अभी प्रारंभिक अवस्था में ही है जो भी अनुवाद किया जा रहा है या किया गया है वह सीमित विषय क्षेत्र से संबंध है। जैसे मौसम की जानकारी से संबंधित अनुवाद, डॉक्टर और नर्स के बीच होने वाले चिकित्सा संबंधी संवाद, मशीनों के मेनुअल पर निर्देश और वैज्ञानिक या तकनीकी विषयों का कोई सीमित प्रयोग क्षेत्र।

कम्प्यूटर प्रणाली से ऐसे साहित्य का अनुवाद आज संभव नहीं है जिसमें लक्षणा, व्यंजना या शैली की विशिष्टता हो।

कम्प्यूटर से अधिक से अधिक 80 प्रतिशत सही अनुवाद की ही संभावना रहती है शेष 20 प्रतिशत कार्य अनुवादक को ही करना पड़ेगा। उसे अनुवाद का संपादन, और संशोधन करना पड़ेगा। दूसरे शब्दों में कहें तो कम्प्यूटर, अनुवादक का सहायक है। वह अनुवादक का स्थान नहीं ले सकता यद्यपि उसमें कृत्रिम बुद्धिमत्ता रहती है।

कम्प्यूटर की अपनी कोई बुद्धि नहीं होती। वह वही काम कर सकता है जिसकी जानकारी उसमें भर दी जाती है। भाषा संबंधी नियमों की जानकारी कम्प्यूटर में भरी जाती है, सूत्रों के रूप में। कम्प्यूटर से अनुवाद करवाने के लिए अब उसकी प्रक्रिया को अपनाया जाता है जो प्रक्रिया मानव अनुवादक की होती है। उदाहरण के लिए मानव अनुवादक की तरह कम्प्यूटर में भी दो भाषाओं के बोध की क्षमता उत्पन्न की जाती है। यह भी क्षमता उत्पन्न की जाती है कि वह दोनों भाषाओं के वाक्यों की रचना कर सके। कम्प्यूटर के संदर्भ में इसका अर्थ यह हुआ कि

(क) कम्प्यूटर किसी दिए हुए पाठ को समझ सके।

(ख) वह लक्ष्य भाषा में सही वाक्य की रचना कर सके।

(ग) उसमें दो भाषाओं के शब्दों, वाक्यों, अर्थों आदि के बीच समान-असमान तत्वों का विश्लेषण करने की क्षमता हो।

(घ) वह स्त्रोत भाषा के शब्दों, वाक्यों तथा अभिव्यक्तियों आदि के लिए लक्ष्य भाषा में समतुल्य रचनाओं का चयन कर सही अनुवाद प्रस्तुत कर सके। उदाहरण के लिए, अंग्रेजी में समान दिखने वाले इन तीन वाक्यों में 'Have' का अनुवाद हिंदी में अलग-अलग तरह से होगा। यह जानने की क्षमता कम्प्यूटर में हो

(1) I have a house मेरे पास एक घर है।

(2) I Have a daughter मेरी एक लड़की है।

(3) I have fever मुझे ज्वर चढ़ा है।

कम्प्यूटर शब्दकोश-लेक्सीकॉन : (Lexicon) कम्प्यूटर अनुवाद के लिए कम्प्यूटर को जिस प्रकार के विशिष्ट शब्द कोश की जरूरत होती है उसे 'लेक्सीकॉन' कहते हैं। लेक्सीकॉन में शब्द के संबंध में सूत्र रूप में वह सभी जानकारी होती हैं जो कम्प्यूटर को भाषा के वाक्यों को समझने और दूसरी भाषा में उसका अनुवाद करने के लिए जरूरी होतीहै। इस प्रयोजन के लिए कम्प्यूटर को शब्द के संबंध में कम से कम चार प्रकार की जानकारी की जरूरत रहती है। यह जानकारी सामान्य कथन के रूप में न होकर सूक्ष्म नियमों, उपनियमों तथा अपवादों के रूप में संबंध होती है यथा

(क) शब्द संरचना संबंधी जानकारी : इसके अंतर्गत शब्द संरचना कोटियां (जैसे संज्ञा, सर्वनाम आदि) और उनकी आंतरिक संरचना के नियमों का सूत्रबद्ध वर्णन शामिल है। ये सूचनाएं सामान्य व्याकरण या शब्दकोशों में एक सीमा तक उपलब्ध होती है लेकिन उन्हें फार्मूलों के अनुसार सूत्रबद्ध करते हैं।

(ख) अर्थ संबंधी जानकारी : शब्दकोश में शब्दों का अर्थ दिया होता है परंतु उनका प्रयोग कहां, कैसे होगा यह नहीं बताया जाता। कम्प्यूटर में 'देहांत' का अर्थ 'मृत्यु' देते समय जोड़ना होगा (मनुष्य) क्योंकि 'सोहन का देहांत हो गया' प्रयोग शुद्ध है परंतु 'चिड़िया का देहांत हो गया' अशुद्ध है इसलिए कम्प्यूटर में 'देहांत' (मानव) निर्देश देना पड़ेगा।

(ग) वाक्य विन्यास संबंधी जानकारी : व्याकरण की सामान्य पुस्तकों मे कई प्रकार के वाक्यों की संरचना का वर्णन मिलता है जैसे अकर्मक, सकर्मक, द्विकर्मक वाक्य लेकिन कम्प्यूटर को इस सूचना की ज्यादा जरूरत है कि कौन सा शब्द वाक्य की रचना और प्रकार को नियंत्रित करने की क्षमता रखता है, वाक्य में किस शब्द की क्या आकांक्षा है, कौन सी क्रिया किस प्रकार के कर्म, कर्त्ता या पात्रों की अपेक्षा करती है। उदाहरण के लिए 'चौंका' क्रिया अकर्मक वाक्य और सजीव कर्म की अपेक्षा रखती है, प्रथा ''वह चौंक गया, प्रयोग गलत है।'' लेक्सीकॉन में सभी क्रियाओं के सामने उनके सामान्य अर्थ के साथ-साथ वाक्य संरचना संबंधी लक्षण 'कर्त्ता+को' भी दिया जाता है जिससे कम्प्यूटर को संकेत मिले कि इन क्रियाओं के साथ 'कर्त्ता+को' वाले वाक्यों का प्रयोग होता है।

(घ) **संदर्भ/व्यवहारिक ज्ञान संबंधी जानकारी :** एक शब्द का अलग-अलग संदर्भों में अलग-अलग अर्थ हो सकता है। उदाहरण के लिए 'Post' शब्द का अर्थ 'डाक' भी हो सकता है और 'पद', 'खंभा तथा चौकी भी।' वाक्य में इस्तेमाल के आधार पर पाठक संदर्भ में पूर्व ज्ञान के कारण शब्द का ठीक जगह पर ठीक अर्थ लगा लेता है, लेकिन कम्प्यूटर जिसके पास न पूर्ण ज्ञान है न संदर्भ की जानकारी वह कैसे अर्थ का निर्धारण करेगा, यह समस्या कम्प्यूटर विशेषज्ञों के सम्मुख है। इसीप्रकार 'Please bring the spriret' का अर्थ है 'स्पिरिट' लाइए लगेगा या फिर 'प्रेतात्मा लाइए' एक कम्प्यूटर कैसे समझेगा ? संदर्भ और व्यवहारिक ज्ञान की जानकारी कम्प्यूटर में भर पाना बड़ी चुनौती है। यही कारण है कि कम्प्यूटर कृत अनुवाद का संपादन/संशोधन, मनुष्य को करना पड़ता है।

कम्प्यूटर द्वारा किए अनुवाद/मशीनी अनुवाद का मूल्यांकन :

1950 से ही मशीनी अनुवाद की गुणवत्ता पर प्रश्न चिन्ह लगता रहा है। कम्प्यूटर अनुवाद को 95 प्रतिशत यथातथ्य होना चाहिए अर्थात मूल पाठ के प्रति निष्ठा और लक्ष्य भाषा पाठ की सरसता और बोध गम्यता दोनों ही अनिवार्य माने गए हैं। यह यथातथ्यता अर्थपरक, निहितार्थपरक, संरचनात्मक, शाब्दिक और आयामात्मक होनी चाहिए। वर्तमान में अर्थपरकता पर अधिक जोर दिया जाता है। अन्य प्रकार की यथातथ्यता अब बेमानी हो गई है।

अनुवाद भी कम्प्यूटर प्रणालियां अनुदित पाठ की गलतियों का पूरा पता नहीं लगा सकती इसके लिए मानव अनुवादक को मूल पाठ और अनुदित सामग्री का मिलान कर उसका संपादन, संशोधन करना पड़ता है। मौजूदा कम्प्यूटर प्रणालियां खूब गलतियां करती हैं जिनमें गंभीर गलतियां भी रहती हैं। यही कारण है कि कम्प्यूटरकृत, अनुवाद मानव अनुवादक का सहायक बन सकता है, उसका स्थान नहीं ले सकता। अभी तक कोई मशीन ऐसी नहीं बनी जो मानवीय मस्तिष्क का स्थान ले सके। हर पाठ/विषय का पूर्ण स्वचालित अनुवाद अभी भी सपना बना है।

अनुवाद विनिर्देश (Translation Specification) मशीनी अनुवाद का एक महत्वपूर्ण धारक है। कुछ क्षेत्रों में यह बहुत उपयोगी होते हैं जैसे मौसम संबंधी अनुमानों के प्रसारण में। मौसम रिपोर्ट का अनुवाद लगभग पूरा ही कम्प्यूटर पर लिया जाता है। अनुवादक द्वारा संपादन कम ही अपेक्षित होता है। इसी तरह तकनीकी विधिक, साहित्यिक अनुवादों में भी मशीनी अनुवाद की स्थिति भिन्न-भिन्न रहती है। तकनीकी अनुवाद में पाठ अक्सर सूचनात्मक होता है। इसमें शब्दावली की स्थिरता तथा वाक्य विन्यास सरल रहता है। इसलिए एक सीमा तक मशीनी अनुवाद सहायक होता है। विधिक अनुवाद में केवल शब्दों और पदबंधों के पर्याय प्रस्तुत कर देना पर्याप्त नहीं होता, वाक्याशों और वाक्यों के पर्याय सुनिश्चित और स्थिर करने होते हैं। स्त्रोत भाषा और लक्ष्य भाषा की विधि व्यवस्थाओं के बीच भेदों का संतुलन भी अनुवाद के दौरान करना होता है।

साहित्यिक अनुवाद में कथन के साथ-साथ शैली का भी महत्व होता है। साहित्यिक अनुवाद, पुर्नसृजन होता है। इसलिए कम्प्यूटर द्वारा संभव नहीं होता। साहित्य की सांकेतिकता, ध्वन्यात्मकता, काव्यानुवाद में उसकी छंदात्मकता आदि को कम्प्यूटर अनुवाद में पकड़ पाना संभव नहीं। इसी प्रकार व्यवसाय परक अनुवाद भी मनुष्य ही ढंग से कर सकता है, कम्प्यूटर नहीं। मशीनी अनुवाद का उद्देश्य, मनुष्य की अनुवाद क्षमता बढ़ाता है। कम्प्यूटर उसे त्वरित गति से शब्दावली पर्याय प्रदान करके उसका श्रम बचा सकता है।

प्रस्तुत पाठ में हमने अनुवाद के शिल्पगत भेदों या प्रसारों का अध्ययन किया है। इस अध्ययन में निम्नलिखित बातें सामने आई हैं-

(1) शिष्यगत अथवा प्रक्रिया परक भेदों में 'अविकल अनुवाद' अर्थात शब्दशः अनुवाद और 'शाब्दिक' अनुवाद आते हैं।

(2) भावानुवाद और छायानुवाद अविकल अनुवाद से भिन्न पुर्नसृजन परक अनुवाद है जिनका प्रयोग साहित्यिक कृतियों के अनुवाद में किया जाता है। दोनों मे सूक्ष्म अंतर भी है और समानताएं भी हैं।

(3) पाठ के आधार पर अनुवाद पूर्ण या आंशिक तथा समग्र अथवा परिसीमित हो सकते है। पाठ संख्या एक में इनका परिचय दिया गया है।

(4) शिल्प की दृष्टि से आशु अनुवाद भिन्न प्रकार का है। यह तुरंत किया जाने वाला मौखिक अनुवाद है।

(5) अनुवाद का एक अन्य रूप 'डबिंग' अर्थात 'ध्वन्यारोपण' है। इसमें भी आशु अनुवाद की तरह वक्ता के उच्चारण के साथ-साथ लक्षित भाषा में सामग्री दी जाती है।

(6) कम्प्यूटर अनुवाद अथवा मशीनी अनुवाद, नए युग का अनुवाद है। मशीनी अनुवाद, मानवकृत अनुवाद का स्थानापन्न नहीं हो सकता, उसका सहायक अवश्य हो सकता है।

स्वयं आकलन प्रश्न

प्र.1 ''मूल की शैली की भाषिक विशेषताओं का लक्ष्य पाठ की शैली में संगुफन उचित विस्थापन की प्रक्रिया से ही संभव है।'' ये विचार किस चिंतक के हैं?

प्र.2 किस प्रकार के निबंधों का अनुवाद पूर्णत: एक सृजनात्मक प्रक्रिया होती है।

3.4 सारांश

अनुवाद एक ऐसा शिल्प है, जिसमें एक भाषा में व्यक्त संदेश के स्थान पर दूसरी भाषा में उसी संदेश को प्रस्तुत करने का प्रयास किया जाता है। अनुवाद एक संबंध का नाम है, जो दो या दो से अधिक पाठों के बीच होता है। ये पाठ समान स्थिति में समान प्रकार्य संपादित करते हैं। इसलिए अनुवाद एक कला है। यह साधना है और विज्ञान भी है। इसे जो साथ ले गया वह मूल रचनाकार के साथ अमर हो जाता। यह न तो भाषांतर है और न ही रूपांतर। सही अर्थों में यह किसी सृजन का भाषांतर के साथ-साथ पुर्नसृजन है।

3.5 कठिन शब्दावली

व्यापक - विस्तृत

सीमित - मात्रा में नियत

रूपांतरण - संपूर्ण व्यक्तित्व को बदलने का उपक्रम

संदर्भ - वह वर्णित प्रसंग

प्रतीकार्थ - सांकेतिकता

3.6 स्वयं आकलंन हेतु प्रश्नों के उत्तर

उ.1 एन्टन पापोविच

उ.2 ललित निबंध

3.7 संदर्भित पुस्तकें

1. डॉ. गणेश गुप्ता (सं.) ज्ञान बोध, भारतीय ज्ञान परिषद, दिल्ली।

2. डॉ. एन. ई. विश्वनाथ अयर, अनुवाद कला, प्रभात प्रकाशन, दिल्ली।

3. डॉ. पुरन चंद टंडन, अनुवाद साधना, अभिव्यक्ति प्रकाशन, दिल्ली।

3.8 सात्रिक प्रश्न

प्रश्न-1 अनुवाद के शिल्पगत भेदों का विस्तापूर्वक विवेचन कीजिए ?

प्रश्न-2 भावानुवाद, छायानुवाद और आशु अनुवाद का विस्तार से परिचय दीजिए।

*****

इकाई-4
साहित्यिक अनुवाद के प्रमुख रूप

संरचना

4.1 भूमिका

4.2 उद्देश्य

4.3 साहित्यिक अनुवाद का स्वरूप

4.3.1 साहित्यिक अनुवाद के प्रमुख रूप

- काव्यानुवाद
- कथानुवाद
- नाट्यानुवाद

स्वयं आकलन प्रश्न

4.4 सारांश

4.5 कठिन शब्दावली

4.6 स्वयं आकलन हेतु प्रश्नों के उत्तर

4.7 संदर्भित पुस्तकें

4.8 सात्रिक प्रश्न

4.1 भूमिका

इकाई तीन में हमने अनुवाद के विभिन्न शिल्पगत भेदों का गहन अध्ययन किया है। इकाई चार में हम साहित्यिक अनुवाद के स्वरूप तथा साहित्यिक अनुवाद के प्रमुख रूपों का अध्ययन करेंगे। इसके अन्तर्गत काव्यानुवाद, कथानुवाद तथा नाट्यानुवाद का विस्तारपूर्वक अध्ययन करेंगे।

4.2 उद्देश्य

इकाई चार का अध्ययन करने के पश्चात् हम यह जानने में सक्षम होगें कि -

1. साहित्यिक अनुवाद का स्वरूप क्या है ?
2. साहित्यिक अनुवाद के प्रमुख रूप क्या है ?
3. काव्यानुवाद क्या है ?

4 कथानुवाद एवं नाट्यानुवाद क्या है ?

विश्व के विभिन्न देशों में समय-समय पर श्रेष्ठ साहित्यिक रचनाओं का सृजन हुआ। यदि कोई भारतीय ग्रीक और लैटिन में रची होमर 'की इ्लियड और ओडेसी' तथा वर्जिल की पढ़ना चाहता है या फिर अंग्रेजी में रचित शेक्सपीयर के नाटकों का आनंद लेना चाहता है तो उसे या तो इन भाषाओं में निपुणता प्राप्त करनी होगी या फिर वह इन रचनाओं के अनुवाद के सहारे इनका आनंद ले सकता है। किसी व्यक्ति के लिए अपने जीवन में विश्व की सारी भाषाएं सीख पाना असंभव है। इसलिए अनुदित रचनाओं का आनंद लेना ही एकमात्र मार्ग रह जाता है। साहित्य, विश्व संस्कृतियों का दर्पण है और विश्व के लोगों को साथ लाने का सशक्त माध्यम रहा है। सारी विभिन्नताओं के पश्चात

मनुष्य मात्र के मूल भाव प्रेम, घृणा, क्रोध, ममता, उदारता, कठोरता, कृपणता, क्रूरता सर्वत्र समान है। साहित्य का संबंध सदा से भावजगत से रहा है। साहत्यिक कृतियों का अनुवाद सदा से होता आया है। पंचतंत्र की कथाएं मध्य एशिया से होती हुई यूरोप तक पहुंची और 'अरेबियन नाइट्स' की प्रेम और साहस भरी कथाएं आजभी हमारा मनोरंजन करती है। साहित्य, मनोरंजन, शिक्षण और मार्गदर्शन का कार्य करता है। इसलिए विश्व का श्रेष्ठ साहित्य सभी को उपलब्ध हो यह आवश्यक है। इस आवश्यकता की पूर्ति अनुवाद के माध्यम से ही संभव है। साहित्यिक कृतियों का अनुवाद जितना आवश्यक है उतना ही दुष्कर भी है। साहित्यिक अनुवाद शब्दानुवाद न होकर भावानुवाद, छायानुवाद अथवा मुक्तानुवाद होता है। इसलिए सर्जनात्मक अनुवाद का पुर्नसृजन कहलाता है। इसमें अनुवादक में साहित्यिक प्रतिभा और साहित्य प्रेमी होने का गुण होना आवश्यक है। साहित्यकार से आत्मीकरण आवश्यक है। प्रस्तुत पाठ के माध्यम से छात्र जान पाएंगे कि साहित्यिक अनुवाद क्या है (2) साहित्यिक अनुवाद में किस प्रकार की कृतियां ली जाती है। (3) साहित्य अनुवाद के अंतर्गत, काव्यानुवाद का क्या स्वरूप है (4) काव्यानुवाद में क्या कठिनाइयां आती हैं और उनसे कैसे निपटा जाता है। कथानुवाद का स्वरूप क्या है, नाटयानुवाद में भाषातंरण किस तरह होता है।

4.3 साहित्यिक अनुवाद का स्वरूप :

जॉर्ज स्टेनर ने अपनी पुस्तक 'आफटर बेवेल' में कहा है कि हर सृजनात्मक लेखक और अनुवादक, रचना का आलोचक और विश्लेषक भी होता है। अनुवादक जब पाठक के रूप में मुंशी प्रेम चंद का गोदान पढ़ता है तो वह साथ ही साथ उसका विश्लेषण भी करता चलता है। हर अनुवादक रचना का विश्लेषक भी होता है।

साहित्य का अनुवादक कृति का अध्ययन करते समय विभिन्न भाषिक प्रणालियों की जटिल व्यवस्था एवं मानव संस्कृति की जटिल व्यवस्था पर आश्रित रहता है। संपूर्ण रचना की परख किए बिना अनुवादक केवल भाषान्तरण नहीं कर सकता क्योंकि यह अधूरा और अटपटा होगा। अनुवादक स्त्रोत भाषा के अर्थ को लक्ष्य भाषा के अर्थ में बदलता है। यदि शब्द और अर्थ को अविभाज्य मान लिया जाए तो एक भाषा का शब्द, दूसरी भाषा में जा नहीं सकता उसका समतुल्य शब्द ही खोजा जा सकता है।। इसलिए कोई भी साहित्यिक अनुवाद संपूर्ण नहीं हो सकता। वास्तव में अनुवादक तभी किसी साहित्यिक रचना का सही अनुवाद कर सकता है जब अर्थग्रहण, अर्थान्तरण तथा अर्थ-संप्रेषण की प्रक्रिया में मूल कृति को भाषिक-सांस्कृतिक फ्रेमवर्क से परिचित हो। अनुवादक द्वारा स्त्रोत और लक्ष्य भाषा की परख, लेखकीय अभिप्राय को आत्मसात करने की क्षमता, मुहावरों-लोकक्तियों के आशय को समक्ष उनके समकक्ष लक्ष्य भाषा के मुहावरे लोकोक्तियां खोजना, देशज एवं आंचलिक शब्दावली के समकक्ष लक्ष्य भाषा में शब्दावली खोजना, अलग-अलग संबंध सूचक एवं रंचा सूचक शब्दों की समकक्ष शब्दावली लक्ष्य भाषा में खोजना, साहित्यिक अनुवादक के लिए कठिन कार्य रहते हैं। सामाजिक विज्ञानों, विज्ञान तथा दर्शन आदि में तकनीकीशी शब्दावली और अभिधात्मक शैली रहती है परंतु साहित्यक में लक्षण और व्यंजनापरक शैली रहती है जिसका अनुवाद कठिन है।

सर्जनात्मक साहित्य के अंतर्गत गद्य और पद्य में रखी जाने वाली वे सभी रचनाएं आ जाती है। जिनमें विचार की अपेक्षा भाव, तथ्य की अपेक्षा कल्पना, अभिधात्मक शैली की अपेक्षा लक्षणा-व्यंजनापरक सांकेतिक, विंबात्मक एवं प्रतीकात्मक शैली का अनुसरण किया जाता है। पद्य में प्रबंध-काव्य और मुक्तक काव्य आता है। गद्य में कहानी, उपन्यास, नाटक, आत्मकथा, जीवनी, रिपोर्ताज डायरी आदि को लिया जा सकता है। काव्य का अनुवाद गद्य के अनुवाद से सरल माना जाता है क्योंकि काव्य में सूक्ष्म अर्थ-छायाएं, प्रतीक और बिम्ब रहते है और इसमें सांस्कृतिक परिवेश भी अधिक अनुस्यूत रहता है। साहित्यिक अनुवाद की प्रक्रिया को निम्नलिखित आलेख द्वारा प्रस्तुत किया जा सकता है-

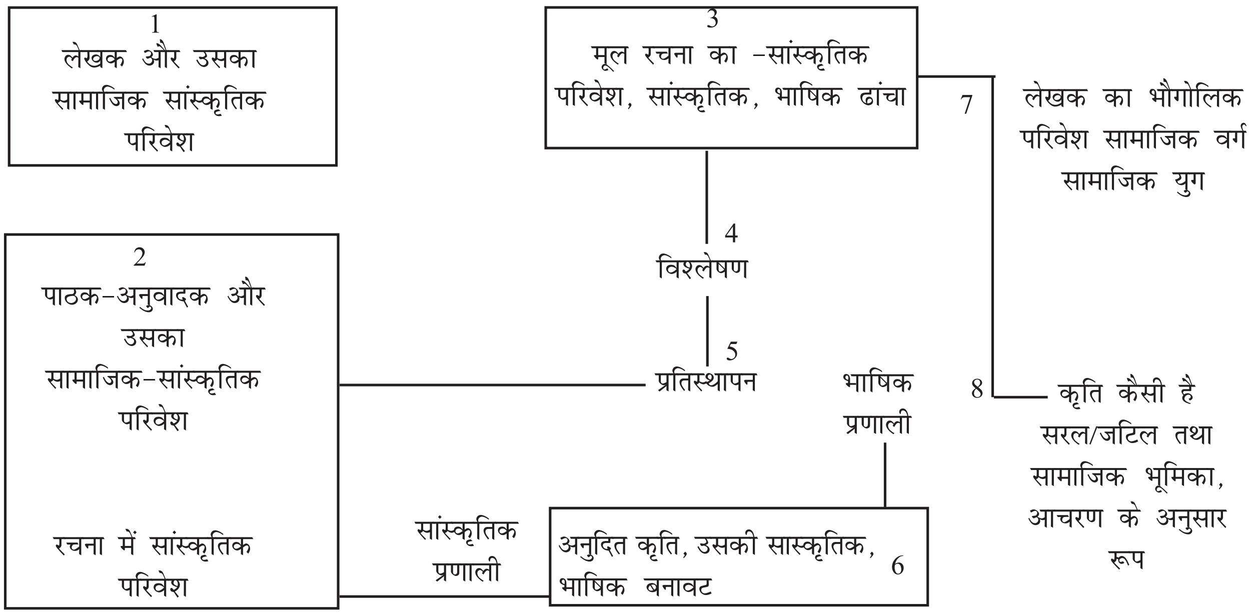

(1) किसी भी रचना का अनुवाद करने से पूर्व अनुवादक उसके रचयिता के सामाजिक-सांस्कृतिक परिवेश को समझकर, रचना में व्यक्त उसके अंश खोजता है।।

(2) पाठक और अनुवादक का सामाजिक-सांस्कृतिक परिवेश, प्राय लक्ष्य भाषा का परिवेश होता है।

(3) अनुवादक को विदेशी स्त्रोतभाषा से अपनी मातृभाषा (लक्ष्य भाषा) में अनुवाद सरल रहता है। मूल रचना का सामाजिक-सांस्कृतिक परिवेश, उसकी भाषिक संरचना को उसे समझना पड़ता है।

(4) मूल रचना की सांस्कृतिक/भाषिक संरचना का विश्लेषण कर लक्ष्य भाषिक की भाषिक प्रणाली तय करनी पड़ती है।

(5) तदनन्तर मूलकृति का अनुवाद प्रस्तुत किया जाता है।

(6) मूल रचना और अनुदित कृति में यथासंभव साम्य स्थापित किया जाता है। अनुवाद इस बात पर भी निर्भर करता है कि लेखक (मूल रचना) का देशकाल कैसा था और कृति की संरचना सरल है अथवा जटिल

(7 और 8) अब हम काव्यानुवाद पर विचार करेंगे।

4.3.1 साहित्यिक काव्यनुवाद के प्रमुख रूप :

काव्य मूलतः भावात्मक अर्थात अनुभूति प्रधान होता है जिसमें कल्पना शक्ति के प्रयोग से विम्बो, प्रतीकों के प्रयोग द्वारा सरस रचना प्रस्तुत की जाती है। इसमें संदेश या विचार भी निहित रहता है परंतु यह उपदेश या भाषण की तरह सपाट न होकर सूक्ष्म रहता है। कविता की सबसे बड़ी विशेषता उसकी छन्दात्मकता, ध्वन्यात्मकता है। 'कविता श्रेष्ठतम शब्दों का श्रेष्ठतम विनियोजन है' परंतु अनुवाद में लक्ष्य भाषा के वैसे ही ध्वन्यात्मक उपलब्ध न होने पर समतुल्य शब्दों से काम चलाना पड़ता है। मूल रचना के कवि के भावात्मक स्तर और अभिव्यक्ति कौशल में उतार पाना अत्यधिक कठिन है। कविता के संदेश से अधिक महत्व उसके कलात्मक सौंदर्य का होता है। काव्य का सौंदर्य, विशिष्ट शब्द और छन्द रचना पर आधारित होता है। दूसरे काव्य में सामाजिक-सांस्कृतिक परिवेश गहराई से जुड़ा होने के कारण लक्ष्य भाषा में समतुल्य परिवेश निर्मित कर पाना कठिन होता है।

काव्य अनुवादक के लिए यह आवश्यक है कि वह रचना के माध्यम से कवि से वादत्म्य स्थापित करें और उसी भावभूमि पर पहुंचने का प्रयास करे जिस पर पहुंचकर रचना की गई है। यह पर काया प्रवेश जैसा दुष्कर कार्य है परंतु ऐसा किए बिना काव्य का सफल अनुवाद संभव नहीं।

काव्य का अनुवाद करते समय अनुवादक से अपेक्षित है कि वह काव्य के मूलभाव को पकड़ने का प्रयास करे। यह तभी संभव है जब अनुवादक कवि हृदय हो, रसज्ञ हो और रचना के माध्यम से कवि से तादान्मय स्थापित कर पाए। इसके लिए मूल तथा लक्ष्य भाषा की पकड़ भी आवश्यक है। अनुवादक एक रसज्ञ पाठक की तरह रचना को पढ़कर उसका अर्थ ग्रहण करता है और उसका काव्यशास्त्रीय अर्थ समझने का प्रयास करता है। इस गहन अध्ययन के पश्चात रस की दृष्टि से रचना का अध्ययन किया जाता है क्योंकि रसात्मक होना ही काव्य की पहचान है। स्त्रोत भाषा में उपलब्ध सामग्री में विद्‌यमान विम्बो, प्रतीकों, अलंकारों आदि की परोक्ष अभिव्यक्ति के अर्थ के परतें अपने आप खुलने लगती हैं। इस रसात्मक अभिव्यक्ति को लक्ष्य भाषा में उतरने के लिए अनुवादक के मन में उपयुक्त शब्द-पर्याय उभरने लगते हैं जिनमें से अनुवादक उपयुक्त शब्दों का चयन करता है। मूलभाव को सही ढंग से अभिव्यक्त करने के लिए शब्द-गुम्फन व अभिव्यक्तिकरण के पश्चात इसका अनुशीलन किया जाता है। इसके पश्चात् भावानुशीलन का सोपान रहता है। तदुपरांत इसे गद्‌य में प्रस्तुत किया जाता है। तत्पश्चात् अनुवादक उसे उपयुक्त छन्द और लय में बांधकर कविता में प्रस्तुत करता है।

काव्यानुवाद, भावानुवाद या छायानुवाद के रूप में होता है। शब्दानुवाद से काव्य तत्व नष्ट हो जाता है। शैली के स्तर पर मूल रचना शब्दों, पदों, बिम्बों, प्रतीकों, अलंकारों, छन्दों, सांस्कृतिक तत्वों आदि से सगुम्फित होती है। काव्यानुवाद करते समय अनुवाद में इन विशेषताओं की झलक मिलने पर ही काव्यानुवाद सफल माना जाएगा। श्री अरविंद का मत है कि ''काव्यानुवाद का कार्य मूल के शब्दों को अनुवाद में उतारना मात्र नहीं है बल्कि उसके विम्ब, काव्य सौंदर्य एवं शैली की विशेषताओं की भी पुनर्रचना करना है।'' अनुवादक नीडा का कथन है कि ''अर्थ और शैली के स्तर पर लक्ष्य भाषा में निकटतम, स्वाभाविक तथा तुल्यार्थक उपादान प्रस्तुत करना अनुवाद है। अनुवादक को मूल काव्य और कवि से तादात्म्य स्थापित करना पड़ता है तभी वह रचना की आत्मा, रस तक पहुंच पाता है। फिटजराल्ड का मानना हैं''किसी कृति को जीवंत बनाने के लिए आवश्यक है कि अनुवादक पहले उसे आत्मसात करें और फिर उसका पुर्नसृजन करें। साहित्य-अनुवाद मूलतः पुर्नसृजन ही है।''

काव्यानुवाद में अनुवादक का व्यक्तित्व महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। काव्यानुवाद में अनुवादक लक्ष्य भाषा की प्रकृति के अनुरूप है। अनुवाद करता है। यह प्रक्रिया बिडम्बनापूर्ण है। पद्‌य के बंधन के कारण अनुवादक न तो मूल भावों की रक्षा कर पाता है और न अनुदित रचना के शैलीगत सौंदर्य को बचा पाता है। भाषा और संरचना पर ध्यान देने से भाव नहीं आ पाते और भावों का अनुवाद करने पर, व्याकरण साथ छोड़ देता है।

- **काव्यानुवाद में आने वाली कठिनाइयां :**

काव्यानुवाद में कठिनाई भाषिक और भावात्मक दोनों स्तर पर होती है। भाषा संरचना के आधार पर कठिनाइयां हैं

1. **शब्द चयन :** काव्य अत्यधिक वैयक्तिक भावों को अभिव्यक्त करता है। इसलिए शब्द चयन भी सांस्कृतिक दृष्टि से गहरे अर्थ वाले, सांकेतिक और ध्वन्यात्मक होते हैं। शब्दानुवाद प्राय असफल रहता है। मूल के अनुरूप यति, विराम का उपयोग करना पड़ता है ताकि स्वराघात और लहजे को भी अनुवाद में पकड़ा जा सके। लाक्षणिक प्रयोगों का सही अर्थ जानना आवश्यक है।
2. **बिम्ब चयन :** बिम्ब अधिकतर सांस्कृतिक होते हैं अथवा सार्वभौमिक। सार्वभौतिक बिम्बों का अनुवाद सरल है परंतु सांस्कृतिक बिम्बों का अनुवाद कठिन है। भारतीय संस्कृति में उल्लू, मूर्खता का सूचक है। सांस्कृतिक परिवेश को समझे बिना अनुवाद के समय अर्थ का अनर्थ हो सकता है।
3. **छंद अनुसरण :** काव्य में छंदों का महत्व होता है। प्रत्येक भाषा की अपनी लय रहती है जिसके अनुसार छंद विधान हुआ करता है। अनुवादक को लक्ष्य भाषा में मूल के निकटतम छंद खोजना, पड़ता है जो कठिन कार्य है।
4. **अलंकार चयन :** प्रत्येक समाज का सौंदर्यबोध एक सा नहीं होता। काव्य अलंकार भी प्रत्येक भाषा में विशिष्ट होते हैं। अनुवादक को अलंकारों की पुनर्रचना के लिए बहुत प्रयास करता पड़ता है।
5. **ध्वनि सामंजस्य की समस्या :** काव्य में ध्वन्यात्मक प्रभाव विशेष महत्व के होते हैं। स्त्रोत भाषा में व्यक्त

ध्वनियां लक्ष्य भाषा में खोज पाना, कठिन कार्य है। चिड़ियों की चहचहाट, झरनों की कल-कल, छल-छल से जो प्रभाव पैदा होता है। वह एंबुलैंस या फायर ब्रिगेड के हार्न से नहीं होता। अनुवादक के लिए ध्वनि प्रभावों का उचित संयोजन करना कठिन होता है।

6. **काव्यार्थ का अनुवाद :** कविता में शब्दों में जो कहा जा रहा है, काव्यार्थ उससे कहीं अलग हो सकता है। काव्यार्थ को अनुवादक आत्मसात कर लक्ष्य भाषा में रचना है। यह अत्यधिक कठिन कार्य है।

7. **अकविताओं का अनुवाद :** अकविताओं की संरचना ऐसी होती है कि उसके शब्दार्थ का विशेष महत्व नहीं होता, संकेतार्थही मुख्य होता है। उदाहरण के लिए रघुवीर सहायक की प्रस्तुत कविता का अंश देखिए-

‘अगर कहीं मैं तोता होता
तोता होता तो क्या होता
तोता होता
होता तो फिर
होता फिर क्या
होता क्या मैं होता तोता
तोता तोता तोता तोता
तो तो तो तो ता ता ता
बोल पट्ठे सीताराम।’

इस कविता का अनुवाद असंभव है। यही कारण है कि कविता को प्रायः अननुवादय माना जाता है।

8. **काव्यानुवादक के गुण :** काव्यानुवाद करना एक कठिन कार्य है। काव्यानुवाद में परकाया प्रवेश की क्षमता होनी चाहिए ताकि अनुवादक उसी भावात्मक स्तर को पा सके जो मूल भाव ने प्राप्त किया था। वह कवि हृदय होना चाहिए ताकि काव्यार्थ को ग्रहण कर सकें। कविता में अनुवाद, समतुल्य तभी होता है जब वह पुर्नसृजन हो। पुर्नसृजन के लिए अनुवादक में काव्य-प्रतिभा होनी चाहिए। यही कारण है कि काव्यानुवाद प्रायः कवियों ने किए हैं। हरिवंश राय बच्चन द्वारा उमर खैययाम की रूवाइयोंका अनुवाद श्रेष्ठ वन पड़ा है। अनुवादक के लिए यह आवश्यक है कि वह न केवल स्त्रोत और लक्ष्य भाषा में निष्णत हो बल्कि उसे दोनों भाषाओं के सामाजिक-सांस्कृतिक परिवेश का भी अच्छा ज्ञान होना चाहिए। काव्यानुवाद का व्यक्तित्व उसके द्वारा किए अनुवाद का अभिन्न अंग बन जाता है। इसलिए अनुवाद, पुर्नसृजन बन जाता है।

काव्यानुवाद में आने वाली कठिनाइयों को देखकर ही संभवतः फारेस्ट स्मिथ ने ‘स्वादहीन स्ट्राबरी’ को उल्टी तरफ से देखना मानते हैं। कुछ अनुवादक काव्य अनुवाद को ‘प्रपंच’ मानते हैं और कुछ इसे कभी न सुलझने वाली पहले की संज्ञा देते है।

• कथा-साहित्य के अनुवाद का स्वरूप :

कथा साहित्य में कहानी और उपन्यास दोनों आ जाते हैं। साहित्य की अन्य विधाओं की तरह इनमें भी भाषा का लाक्षणिक और सांकेतिक छन्दात्मक प्रयोग होता है। इसलिए शब्दानुवाद यहां काम नहीं आता। लाक्षणिक अभिव्यक्ति का अभिधात्मक शाब्दिक अनुवाद करने पर उसका चमत्कार नष्ट हो जाता है। अनुवादक लक्ष्य भाषा में किसी समानन्तर अर्थ वाले बिम्ब अथवा शब्द प्रयोग को खोज उसका प्रयोग करता है। यदि यह संभव न हो तो भावानुवाद और व्याख्यानुवाद का सहारा लेता है। इस प्रकार अनुवादक प्रभाव भी समानता प्राप्त करता है। प्रभाव साम्य वाले शब्द-प्रयोग का उदाहरण देखिए। 'One trick cannot serve twice' तीसरा उपाय मुक्त अनुवाद का है जिसमें शब्दों में व्यक्त भाव का ही अनुवाद किया जाता है यथा 'Wooden Face' का अनुवाद ‘भावहीन चेहरा’ किया जाएगा।

कथा साहित्य में शीर्षक का अनुवाद : प्रत्येक रचना के केंद्र भाव, विचार चरित्र आदि का परिचय प्राय: शीर्षक में मिलता हैं। शीर्षक के अनुवाद में कठिनाई आती है। उदाहरण के लिए पंजाबी लेखिका अमृता प्रीतम के अनुवाद 'पिंजर' के शीर्षक का अनुवाद खुशवंत सिंह ने किया है 'स्केलेटन' न कि 'the cage' इसी प्रकार राजेंद्र सिंह वेदी के प्रसिद्व उर्दू उपन्यास 'एक चादर मैली सी' का अनुवाद 'ए बेड कवर लुकिंग डर्टी' न करके दूसरा शीर्षक दिया 'I take this Women' यह शीर्षक मूल कथ्य से जुड़ा है। कथा साहित्य में अनुवादक द्वारा अर्थग्रहण, अर्थान्तरण और अर्थ-संप्रेषण की प्रक्रिया सजग रहती है। इस प्रक्रिया में मूल कृति के भाषिक सांस्कृतिक फ्रेम से परिचित होकर ही अनुवाद संभव होता है। उपन्यास साहित्य में जीवन का समग्र चित्र रहता है इसलिए सामाजिक-सांस्कृतिक फ्रेम को समझने का महत्व भी अधिक रहता है। अनुवाद में अनुवादक का अपना भाषिक-सांस्कृतिक फ्रेम क्रियाशील रहता है परंतु इसका यह अर्थ नहीं कि मूल का अर्थ बदल जाता है। वास्तव में अनुदित पाठ, मूल पाठ का सह पाठ बनकर आता है नहीं तो अर्थ का संप्रेषण संभव न होता।

स्त्रोत भाषा की सामग्री का प्रतिस्थापन लक्ष्य भाषा में : कथा साहित्य में स्त्रोत भाषा की सामग्री का लक्ष्य भाषा में प्रतिस्थापन होता है। यह प्रतिस्थापन अर्थपरक, बुद्धिसंगत, तदनुरूपता के अनुसार होता है तभी अर्थ स्पष्ट हो पाता है और अनुदित कृति सहपाठ बन पाती है। इस प्रकार अनुवाद में मूलपाठ के विश्लेषण की क्रिया कहीं न कहीं चलती रहती है। साहित्यिक अनुवाद में अनुवादक का अपना सामाजिक सांस्कृतिक संदर्भ काम करता है और उस युग का भी प्रभाव पड़ता है जिसमें अनुवादक रहता है। स्त्रोत और लक्ष्य भाषा का सच और अर्थ भी एक जैसा नहीं होता इसलिए अनुवाद में थोड़ी भिन्नता रहती है।

लेखकीय अभिप्राय का अनुवाद : अनुवादक के लिए यह आवश्यक है कि वह लेखकीय अभिप्राय को समझकर अनुवाद करे (विभूति भूषण वन्दोपाध्याय अपने उपन्यास 'पाधरे पांचाली' में जीवन को कभी समाप्त न होने वाली यात्रा के रूप में अंकित करना चाहते हैं। उस उपन्यास का अनुवाद करते समय टी डब्ल्यू क्लार्क और तारापद मुखर्जी इसे दुर्गा और उसके माता-पिता द्वारा गांव छोड़ने के चरमोत्कर्ष पर समाप्त मान लेते हैं। वास्तव में लेखक उपन्यास में कोई चरमोत्कर्ष नहीं देता।

लोप और संयोजन : प्रतिभाशाली अनुवादक को यह छूट दी जा सकती है कि वह लेखकीय अभिप्राय को स्पष्ट करने के लिए रचना में कुछ जोड़ दे और अभिप्राय को धुंधला करने वाले अंश छोड़ दें। इस क्रिया को संयोजन और लोप की प्रक्रिया कहते हैं। कविता मे अर्थ की इकाई, पंक्ति का वाक्य होता है जबकि कथा में अर्थ की इकाई प्रसंग विशेष होता है इसलिए इसमें लोप और संयोजन सरल होता है।

संकेत शब्दों का अनुसार : हर कहानी में कुछ संकेत शब्द होते हैं जो कहानी की केंद्रीय चेतना को व्यक्त करते हैं। अनुवादक को कहानी के पाठ का इस दृष्टि से विश्लेषण कर लेनी चाहिए कि उनमें से किन भाषिक इकाइयों की भूमिका केंद्रीय है और कौन सी हाशिये पर है। प्रेम चंद की कहानी शतरंज के खिलाड़ी की केंद्रीय पंक्ति अंत में आती है जहां लेखक दोनों मित्रों के लड़ मरने पर टिप्पणी करता है कि उनमें वीरता की कमी न थी परंतु देश प्रेम का भाव जागृत न होने के वे अवध को लुटता देख सके और अवध के नबाव के बंदी बनाए जाने पर भी आराम से शतरंज खेलते रहे।

मूल निष्ठा आवश्यक : साहित्यिक अनुवाद पुर्नसृजन होता है परंतु कथा साहित्य में इसके लिए कम अवसर रहता है कथानुवाद करते समय मूल-निष्ठा आवश्यक रहती है। जबकि नाटक और कविता में मूल से कुछ भिन्न सृजन आवश्यक हो जाता है।

परिवेश का सजीव एवं रोचक अनुवाद : कथा साहित्य मूलत: वर्णानात्मक होता है इसलिए रचना को रोचक और आकर्षक बनाए रखने के लिए सजीव बनाए रखना अनुवादक की विवशता है। कथा साहित्य में मूल कृति के सांस्कृतिक परिवेश का लक्ष्य भाषा में पुन: सृजन किया जाता है। इस दृष्टि से अनुवादक की समस्या मूल कृति के परिवेश के अनुसार ही कम या ज्यादा होती है। यह परिवेश आंचलिक, ग्रामीण, शहरी अथवा विदेशी भी हो सकता है। आंचलिक रचना के अनुवाद में अनुवादक को आंचलिक शब्दों के प्रयोग में सावधान रहना चाहिए।

• **कथानुवाद की कठिनाइयां :**

भाषा-प्रयोग विषयक सावधानी : कथा साहित्य में प्रयुक्त भाषा के विविध रूपों के विषय में अनुवादक को सावधान रहना चाहिए। मुहावरों एवं लोकोक्तियों का लक्ष्य भाषा में अनुवाद करते हुए लक्ष्य भाषा में समतुल्य, समानार्थक मुहावरों की खोज करनी चाहिए। देशज शब्दावली का अनुवाद भाव और अर्थ को समझकर करने से कथाकार अनेक स्थलों पर भावात्मक गद्य का सृजन कर सकता है। इस तरह के गद्य या प्रयोग, काव्यानुवाद की तरह किया जाना चाहिए। कथाकार अनेक स्थलों पर सूत्र वाक्यों का सृजन करता है जिनका शब्दानुवाद के स्थान पर भावानुवाद अपेक्षित है।

सांस्कृतिक शब्द जैसे मंगलसूत्र, पवित्रता, गोदान आदि का भावानुवाद देकर कोष्ठक में मूल शब्द दे दिया जाना चाहिए।

रंगों के नाम भी संस्कृति सापेक्ष होते हैं। गाजवी, उन्नावी तोतिया जैसे रंगों के नाम सोचकर अनुदित करने चाहिए। नाते-रिश्तों के नाम भी संस्कृति सापेक्ष होते हैं जैसे चाचा, मामा, ताया, देवर आदि। लक्ष्य भाषा में हो सकता है उचित शब्द न हो। यह स्थिति गालियों की है। यदि कथा में स्थानीय भाषा में गालियां दी गई हैं तो उनका अनुवाद समस्या बन सकता है। उच्चारण के कारण भी अनुवादक को कठिनाई आती है। दक्षिण में 'सीता' को सीधा,'श्री' को 'थिरू' पुकारा जाता है।

• **नाट्यनुवाद :**

आधुनिक युग में पाश्चात्य नाटकों का अनुवाद भारतेन्दु से ही प्रारंभ हो गया था। हिंदी में गुजराती, मराठी और बांग्ला से ही नाटक अनुदित नहीं हुए बल्कि अंग्रेजी, जर्मन, फ्रेंच और रसियन भाषा से भी अनुदित हुए। हिंदी में अब्राहम अल्काजी, कारन्त, सत्यदेव दूबे, मोहन महर्षि और रणजीत कपूर जैसे कलाकार नाटक के विकास में लगे हैं। अंग्रेजी में शेक्सपीयर के नाटकों के अतिरिक्त इब्सन, काफ्का, कायू, सार्त्र लोरका, आयोनस्वी, बेख्त, चेखव, गोर्की, ओनील, टेनिस विलियम और जॉन आस्वोर्न आदि विशेदी नाटककारों के नाटक हिंदी में अनुदित हुए।

हिंदी कहानियों के अनेक नाट्य रूपान्तरण खेले जाते रहे हैं। मन्नू भंडारी के 'महाभोज' अज्ञेय का 'अपने-अपने अजनबी' कृष्णा सोवती का 'मित्रों मरजानी' जैसे उपन्यासों का नाट्य रूपातंरण किया गया।

नाटक की विशिष्टता : सर्जनात्मक कृति के रूप में नाटक कविता, कहानी से भिन्न इसलिए है क्योंकि यह दृश्य श्रव्य विधा है इसका मंचन होता है और इसे मौखिक रूप से संप्रेषित किया जाता है। कुछ पाठ्यनाटक भी लिखे जाते रहे हैं परंतु उन्हें संवाद प्रधान कहानी या लघु उपन्यास ही कहना चाहिए। यदि उनका मंचन संभव नहीं है। रंगशाला में प्रेक्षक नाटक देखने आता है तो यह अपेक्षा नहीं की जाती कि वह शब्दकोश साथ लाए। इसलिए नाटक की भाषा सरल, बोधगम्य होनी चाहिए। नाटक के अनुवाद की प्रक्रिया अन्य साहित्यिक अनुवादों से भिन्न होती है क्योंकि नाटक देखने के लिए होता है जबकि अन्य विधाएं पाठ्य होती हैं। नाट्य अनुवाद में मूल समस्या मूल नाटक के बिम्ब को दूसरी भाषा में उसी तरह या नज़दीकी बिम्ब के द्वारा सुरक्षित रखने की है। इस तरह मूल नाटक की संपूर्ण अर्थवत्ता को सुरक्षित रखे हुए ही अनुवाद करना होता है। अन्य विधाओं में वर्णनात्मकता पर बल दिया जाता है। नाटक में संवेदनात्मकता पर। नाट्यानुवाद की समस्या का मूल कारण स्त्रोत भाषा की भावगत और शिल्पगत विशेषताएं होती हैं। सामान्य अनुवाद में स्त्रोत भाषा की रचना को अनुवादक, लक्ष्य भाषा में उतारता है जबकि नाट्यानुवाद में भाषायी तत्वों के अतिरिक्त कई अन्य प्रकार के नाटकीय तत्वों का भी ध्यान रखना होता है। नाटक में लिखित और अभिनयात्मक पक्षों में अंर्तद्वद्व रहता है। नाटक के लिखित पक्ष में नाटकीय संकेत, मंचीय तत्व और गति संबंधी तत्व निहित रहते हैं। अनुवादक केवल लिखित कृति का ही अनुवाद कर पाता है। मंचन में नाटक का स्वरूप बदल जाता है।

नाट्यानुवाद की विधियां : नाटकों का अनुवाद कविता के अनुवाद की तरह ही कठिन है। नाटकों में अनेक बातें मूल अभिनय से, मौन रहकर, संवादों के बीच-बीच मौन रहकर भी प्रकट की जाती है जिसका अनुवाद संभव नहीं है। नाटक में पात्रों का अभिनय, शब्दों से अधिक अर्थ देता है। एक कटाक्ष, हाथ की एक गति, आंख को नचाकर या

भौंह टेढी करके जो बात कही जाती है वह शब्द से नहीं। नाटक अपनी सार्थकता और संपूर्णता, मंचन में ही प्राप्त करता है। अनुवादक के हाथ में इन मंचीय उपकरणों का अनुवाद करने का कोई मार्ग नहीं होता।

नाटकों का अनुवाद करते समय मुख्य रूप से पांच विधियों का अनुसरण किया जाता है। वह नाटक को पाठ्य कृति मानकर ही अनुवाद करता है और उसके अभिनय पक्ष की उपेक्षा करता है। ऐसे नाटक केवल पढ़े जाते हैं, मंचित नहीं हो पाते। यह नाट्यानुवाद की पुरानी और सरल विधि है।

दूसरी विधि है स्रोतभाषा की। सांस्कृतिक पृष्ठभूमि को आधार मानकर अनुवाद करना। इस प्रकार के अनुवाद का लक्ष्य वैचारिक परिवर्तन लाना होता है। इटली के नाटककार डोरियो के नाटक 'एक्सीडेंटल डेन ऑफ एन एनार्किस्ट' का अंग्रेजी में मंचन किया गया तो यह पुलिस राजनीति में व्याप्त भ्रष्टाचार पर एक तीखा व्यंग्य बन गया। हिंदी में अनुदित नाटक ''मैंने महात्मा गांधी को नहीं मारा'' तथा 'खामोश' अदालत चाल है। जैसे नाटक वैचारिक परिवर्तन के लिए लिखे गए। भारतेन्दु का नाटक 'अंधेर नगरी' ब्रिटिश राज पर करारा व्यंग्य है और व्यवस्था परिवर्तन की ओर संकेत करता है।

तीसरी विधि नाटक की अभिनेयता का अनुवाद करने की है। रंगमंचीय तत्वों को दृष्टिगत रखते हुए अनुवाद करते समय अनुवादक लक्ष्य भाषा के अभिनेता को ध्यान में रखकर अपनी भाषा में स्वराघातों और अन्य संवादों का उच्चारण सहजता और सुगमता से कर सके। स्रोत भाषा के जटिल अंशों का यथासंभव सरलीकरण कर दिया जाता है।

चौथी विधि काव्य नाटक की स्रोतभाषा में प्रयुक्त काव्य-शैली का अन्य शैलियों में अनुवाद करना। जब किसी मूल कृति की काव्य शैली को लक्ष्य भाषा में उतारना संभव नहीं होता तब गद्य-काव्य अथवा मुक्त छंद में अनुवाद करना ही एकमात्र उपाय रहता है। काव्यानुवाद करना कठिन होता है। इसलिए नाटक में आए काव्यात्मक अंशों की शैली बदलनी आवश्यक है।

पांचवीं विधि सहयोग प्रेरित अनुवाद की है। स्रोतभाषा और लक्ष्य भाषा के लेखक और अनुवादक आपस में सहयोग कर सकते हैं। इनमें से एक व्यक्ति दोनों भाषाओं का जानकार भी हो सकता है। इसमें निर्देशक और अभिनेताओं की सहायता भी लेनी पड़ सकती है। इस पद्धति से हुए अनुवाद में अभिनेयता के गुण जिसे लिखित कृति में जोड़ा जा सकता हो की ओर ध्यान दिया जाता है और अनुवादक को कृति के लिखित तथा मौखिक पक्षों को एक साथ लेकर चलना होता है। बैसनेट का कहना है कि नाट्यानुवाद की सबसे संतोषजनक पद्धति नाटक-कंपनी और उस नाटक के खेलने वाले पात्रों का सहयोग प्राप्त करने की है।

नाट्यानुवाद में कठिनाईयां : नाटक के अनुवाद का मुख्य उद्देश्य सफल मंचन होता है। इसलिए नाटक का अनुवाद करते हुए भी अनुवादक के मन में सम्मानित दर्शक को धारण करना पड़ता है। यहां भी स्थिति वहीं होती है कि मूल पाठ जितना अच्छा लिखा होगा और जितना महत्वपूर्ण होगा, अनुवादक दर्शक के ख्याल से इसके साथ उतनी ही कम छूट ले पाएगा। इसके अलावा कथा-साहित्य की अपेक्षा एक अतिरिक्त कठिनाई यह भी रहती है कि वह अस्पष्ट या अनेकार्थक प्रयोगों या सांस्कृतिक प्रसंगों का न भाष्य कर सकता है, न ही स्थानीय रंग देने के लिए उसे शब्दों का लिप्यंतरण करने की सुविधा होती है। उसकी पाठ्य सामग्री व वर्णनात्मक होती है न ही व्याख्यात्मक वह नाटकीय होती है, जिसमें बल, कार्य पर रहता है।

नाटक के पाठ में एक तरह का अंतर्पाठ भी होता है। शाब्दिक अर्थ और इस 'वास्तविक मुद्दे' के बीच के अंतर को समझना, अनुवादक के लिए आवश्यक है। यह कहा जाता है कि नाट्य रचना का निहितार्थ समझना अच्छे अनुवाद के लिए आवश्यक है। उदाहरण के लिए दुष्सन के पात्र कहते कुछ हैं परंतु उनका अभिप्राय कुछ और ही होता है।

नाट्यानुवाद में एक समस्या प्राचीनकाल से जुड़े नाटकों के अनुवाद की है। पात्र सैकड़ों वर्ष पुराने हो सकते हैं परंतु उन्हें अभिनीत करने वाले पात्र और देखने वाले दर्शक वर्तमान से जुड़े होते हैं। प्राचीन पात्र अपने समय के अनुकूल भाषा और शिष्ट्राचार का अनुसरण करेंगे। अनुवादक चाहेगा कि उसके पात्र सजीव लगें।

शब्द समूह, सामाजिक वर्ग, शिक्षा और विशेष रूप से पात्रों के मिजाज में समय के अंतराल ने खाई पैदा कर दी है उसे ध्यान में रखते हुए अनुवाद की भाषा को कुछ ऐसा रूप देना होगा कि उसके पात्र पुराने ढर्रे की किताबी भाषा बोलते प्रतीत होते हैं।

नाटक के अनुवाद के संदर्भ में यह प्रश्न भी अनुवादक के मन में रहता है कि अनुवाद मनोरंजन के लिए है अथवा विद्वतापूर्ण गंभीर अध्ययन और रंगमंच पर प्रस्तुति के लिए किया जाए। दूसरा पक्ष ही अधिक ध्यान में रहना चाहिए। अनुवाद के पाठ्य और अभिनेय रूप में कोई अंतर नहीं होना चाहिए। विद्वानों के लिए यथावश्यक, यथास्थान टिप्पणियां जोड़ी जानी चाहिए। विशेष सांस्कृतिक, लाक्षणिक प्रयोगों, संदर्भों, व्यक्ति नामों की जहां तक संभव हो अनुदित पाठ में ही व्याख्या कर देनी चाहिए।

जब एक स्रोत भाषा के नाटक का अनुवाद किसी लक्ष्य भाषा की संस्कृति में होता है तो वह अनुवाद न रहकर रूपांतर हो जाता है।

नाटकों में बोलियों का प्रयोग होता है जिनका अनुवाद करना कठिन होता है। बोलियों का प्रयोग पात्र की सामाजिक स्थिति, शैक्षिक योग्यता बताने के लिए भी हो सकता है और स्थानीय संस्कृति से जोड़ने के लिए भी। अनुवादक, लेखक का प्रयोजन समझकर ही अनुवाद करें। यह भी संभव है कि अनुवादक बोली को सामान्य भाषा में देना ही उचित समझे। स्थानीय प्रयोगों और बोलियों के प्रयोग और उनके अनुवाद के विषय में पक्के नियम नहीं बना सकते।

नाटक का अनुवाद करते समय अनुवादक को छोटे, सहज और सरल वाक्यों का प्रयोग करना चाहिए क्योंकि इसी से नाटक अधिक अभिनेय बनेगा। नाटक की दो विशेषताएं हैं बोधगम्यता और संवेदनक्षमता। नाटक में अनावश्यक का लोप अपने विवेक के अनुरूप अनुवादक कर सकता है। यथावश्यक कुछ जोड़ भी सकता है। कथ्य को अक्षुण्ण बनाए रखने का दायित्व अनुवादक पर रहता है। नाटक में संकलन त्रय अर्थात स्थान, समय और कार्य की एकता का रहता है। अनुवादक को इसे भंग नहीं करना चाहिए। नाटक में संबोधनों का अनुवाद बड़ी समस्या है। अपने से बड़ों को संबोधित करने के तरीके हर संस्कृति में अलग होते हैं। भारतीय नाटकों में श्रीमान, नाथ, कुमार, देवी-देवि, आर्यपुत्र आदि संबोधन रहते हैं। अपने से बड़ों को उनकी उपस्थिति में नाम से पुकारना अशिष्ट्रता माना जाता है। इसी प्रकार Good Morning, Good Evening, Good Night जैसे अभिवादनों को भारतीय परंपरा में ढालने में भी कठिनाई आती है। ये संस्कृति सापेक्ष अभिवादन होते हैं। संस्कृति की भिन्नता के कारण संबोधन और अभिवादन के संबंध समानार्थी शब्द की तलाश कठिन काम है। नाट्य परंपराओं की भिन्नता को समझकर, भाव एवं रस की व्यंजना पर भी अनुवादक को ध्यान देना चाहिए। सांस्कृतिक परिवेश का मामूली सा अनुकूलन किया जा सकता है परंतु अधिक छेड़छाड़ अनुवाद को रूपांतर बना देती है।

प्रस्तुत पाठ में हमने साहित्यिक अनुवाद के अंतर्गत साहित्य की तीन महत्वपूर्ण विधाओं पर विचार किया है जिसका सार निम्न रूप में दे सकते हैं।

(1) साहित्यिक अनुवाद, शब्दानुवाद न होकर पुनर्सृजन होता है। यह भावानुवाद, छायानुवाद अथवा मुक्तानुवाद का रूप ले सकता है। अनुवादक का सहृदय होना, दोनों भाषाओं (स्रोत और लक्ष्य) में पारंगत होना तथा काव्य प्रतिभा युक्त होना आवश्यक है।

(2) काव्य का अनुवाद अन्य विधाओं की अपेक्षा अधिक कठिन है क्योंकि काव्य-चेतना शब्द आधारित रहती है जबकि अन्य विधाओं में अर्थ संदर्भ या प्रसंग पर अधिक निर्भर करता है। काव्य में लाक्षणिक तथा व्यंजनात्मक प्रयोग अधिक होते हैं। काव्यानुवाद में अनुवादक का व्यक्तित्व अधिक प्रभाव डालता है।

(3) कथा साहित्य में कहानी और उपन्यास मुख्य रूप से आते हैं। कथा साहित्य के अनुवाद में लेखकीय अभिप्राय की समझ, मूल आशय पर विचार आवश्यक होता है। उपन्यास में सामाजिक, सांस्कृति संदर्भ व्यापक रूप से आते हैं। अनुवादक को उन पर विशेष ध्यान देना होता है। इनमें मूल निष्ठा आवश्यक होती

है यद्यपि लेखकीय अभिप्राय को अधिक स्पष्ट करने के लिए लोप और संयोजन की विधि भी अपनाई जाती है। मूल सामग्री का प्रतिस्थापन लक्ष्य भाषा में किया जाता है।

(4) नाटक एक समन्वित विधा है जिसमें लिखित पाठ, मंच विधान, नृत्य-संगीत, अभिनय, प्रकाश व्यवस्था आदि मंचीय उपादान मिलकर नाटकों को पूर्णता देते हैं। नाटक के अनुवाद के समय सामाजिक-सांस्कृतिक परिवेश को स्थान और काल के अनुसार बदलना आवश्यक होता है जिनकी जीवन-दृष्टि निश्चित स्थान और काल से प्रभावित रहती है। नाटयानुवाद में सांकेतिकता भी रहती है साथ ही तुरंत संप्रेषणीयता का दबाव भी रहता है।

स्वयं आकलन प्रश्न

प्र.-1 'दि आर्ट आफ ट्रांसलेशन' नामक पुस्तक के रचयिता कौन है ?

प्र.-2 अनुवाद-प्रक्रिया में अनुदित पाठ का अंतिम स्वरूप कब सामने आता है ?

4.4 सारांश

साहित्यिक कृतियों का अनुवाद अत्यंत महत्वपूर्ण हैं क्योंकि यह विभिन्न संस्कृतियों को साहित्य के माध्यम से इतिहास को अनुभव करने और समझने का अवसर देता है। यह शब्दों के माध्यम से अनुभवों को पोषित करने में मदद करता है और लोगों को उनके विश्व परिप्रेक्ष्य को समझने और व्यापक बनाने में मदद करता है। वह विकल्प है- अनुवाद। अनुवाद दो भाषाओं के बीच की दूरी दूर कर साहित्य रसास्वादन का मार्ग सुगम बना देता है जिससे भाषा की अज्ञानता की बाधा दूर हो जाती है। अनुवाद के माध्यम से दूसरी भाषाओं के साहित्य को पढ़ना, समझना, सरल हो जाता है। इस प्रकार ज्ञानार्जन के साथ-साथ रसास्वादन की अनुभूति भी होती है।

4.5 कठिन शब्दावली

अंतरभिमुखी - आत्मकेन्द्रित

उपादान - ग्रहण

उच्चारित - उच्चरित

गद्यानुवाद - किसी कृति का गद्य में होने वाला अनुवाद

धर्मी - धर्मशील

4.6 स्वयं आकलन हेतु प्रश्न के उत्तर

उ. थियोडर सेवरी

उ. अनुदित पाठ के समायोजन के बाद

4.7 संदर्भित पुस्तकें

1. रवीन्द्रनाथ श्रीवास्तव और कृष्ण कुमार गोस्वामी, अनुवाद : सिद्धान्त और समस्याएं आलेख प्रकाशन, दिल्ली।
2. कैलाश चन्द्र भाटिया, अनुवाद कला : सिद्धान्त और प्रयोग, तक्षशिला प्रकाशन, दिल्ली।
3. सुरेश कुमार, अनुवाद सिद्धान्त की रूपरेखा, वाणी प्रकाशन, दिल्ली।

4.8 सात्रिक प्रश्न

प्रश्न-1 साहित्यिक अनुवाद के स्वरूप सहित उसके प्रमुख रूपों पर प्रकाश डालिए?

प्रश्न-2 काव्यानुवाद और कथानुवाद का विस्तारपूर्वक विवेचन कीजिए?

प्रश्न-3 नाट्यानुवाद के स्वरूप पर विस्तापूर्वक प्रकाश डालिए?

*****

इकाई–5
काव्यानुवाद

संरचना

5.1 भूमिका
5.2 उद्देश्य
5.3 काव्यानुवाद का स्वरूप
5.3.1 काव्यानुवाद की प्रक्रिया
5.3.2 काव्यानुवाद के प्रकार
5.3.3 काव्यानुवाद की समस्याएँ
स्वयं आकलन प्रश्न
5.4 सारांश
5.5 कठिन शब्दावली
5.6 स्वयं आकलन हेतु प्रश्नों के उत्तर
5.7 संदर्भित पुस्तकें
5.8 सात्रिक प्रश्न

5.1 भूमिका

इकाई चार ने हमने साहित्यिक अनुवाद के स्वरूप तथा साहित्यिक अनुवाद के प्रमुख रूपों का गहन अध्ययन किया है। इकाई पांच में हम काव्यानुवाद के स्वरूप, काव्यानुवाद की प्रक्रिया, काव्यानुवाद के प्रकार तथा काव्यानुवाद की समस्याओं का विस्तारपूर्वक अध्ययन करेंगे।

5.2 उद्देश्य

इकाई पांच का अध्ययन करने के पश्चात हम यह जानने में सक्षम होंगे कि –

1. काव्यानुवाद का स्वरूप क्या का है ?
2. काव्यानुवाद की प्रक्रिया क्या है ?
3 काव्यानुवाद के प्रकार क्या हैं ?
4. काव्यानुवाद की समस्याएँ क्या हैं ?

5.3 काव्यानुवाद का स्वरूप

कविता साहित्य की सर्वाधिक सृजनशील विधा है। मानव मन के अनुभूतिजन्य शब्दों के विस्फोट से ही कविता का जन्म होता है। कविता वास्तव में एक भावात्मक अभिव्यक्ति होती है जिसके माध्यम से लेखक अपनी व्यक्तिगत अनुभूति को व्यष्टिगत रूप में व्यक्त करते हुए समष्टिगत भाव प्रदान करता है। साहित्य में कविता कवि की भावनाओं की सतत् प्रवाह होती है, इसलिए उसकी अनुभूति एवं संरचनात्मक अद्वितीयता के कारण ही कहा जाता है कि कविता का अनुवाद संभव नहीं होता है। किन्तु इस प्रकार की धारणा अतिशयोक्ति ही प्रतीत होती है। विश्वस्तर पर अनेक कालजयी कृतियों के सफल अनुवाद आज हमारे सामने हैं। यदि कोई प्रतिभावान कवि–अनुवादक अपने पूरे मनोयोग से अनुवाद कर्म में प्रवृत होता है, तो वह सृजनात्मकता का प्रतिनिधित्व करने वाला सफल अनुवाद कर सकता है। दरअसल, कविता का अनुवाद करने के लिए अनुवादक के लिए साहित्य–रस का आनन्द ले सकने वाला हृदय चाहिए और सृजन की बेजोड़ प्रतिभा चाहिए। इन दोनों के उपलब्ध होने की स्थिति में काव्यानुवाद की सफलता की संभावनाएँ बढ़ती चली जाती हैं। इसका एक अच्छा उदाहरण फिट्ज्जेराल्ड द्वारा किया गया उमर खैय्याम की रुबाइयों का अनुवाद

है और फिर उनका हिन्दी में हरिवंशराय बच्चन द्वारा किया गया अनुवाद है। लगता ही नहीं कि वह अनुवाद किया गया है। वास्तव में काव्यानुवाद की प्रक्रिया एक रसात्मक प्रक्रिया है, जिसमें से गुजरने के बाद ही कोई सहृदय अनुवादक सबल अनुवाद कर पाता है।

काव्यानुवाद में अनुवादक द्वारा सर्वप्रथम स्रोत भाषा की सामग्री का सतही दृष्टि से अध्ययन किया जाता है और उसका सामान्य अर्थ ग्रहण किया जाता है। काव्यशास्त्रीय अर्थ समझा-परखा जाता है। इस गहन अध्ययन के पश्चात् पाठ्यसामग्री का रस की दृष्टि से अध्ययन किया जाता है, क्योंकि काव्य स्वभाव से ही सम्पूर्ण होता है। यदि रस ही नहीं तो काव्य कैसा? रसानुभूति प्रथम आवश्यकता बन जाती है। तत्पश्चात् काव्य के समग्र अर्थ को ग्रहण करने का भरपूर प्रयास किया जाता है। इस समग्र अर्थ में स्त्रोत भाषा की सामग्री में विद्यमान बिम्बों, प्रतीकों अलंकारों आदि की परोक्ष अभिव्यक्ति अर्थ की परतें भी स्वत: खुलती चलती हैं। इस रस-सम्मत अर्थ की अभिव्यक्ति करने के लिए नए उपयुक्त शब्दावली का चयन करना होता है, उचित पर्याय ढूंढने होते हैं। मूलभाव को सही ढंग से अभिव्यक्त करने के लिए शब्द-गुंफन की प्रक्रिया अपनायी जाती है। अभिव्यक्तिकरण के पश्चात इसका अनुशीलन किया जाता है। इससे अगला चरण भावानुशीलन का होता है। तदुपरान्त इसे गद्य रूप में प्रस्तुत किया जाता है। यदि इसे पद्य रूप में प्रस्तुत करना हो तो पुन: इस प्रक्रिया का एक चरण और बढ़ जाता है, तब जाकर काव्यानुवाद संभव हो पाता है।

अनुवाद के संदर्भ में यह एक महत्त्वपूर्ण तथ्य है कि मौलिक रचना और अनुदित रचना में एक मूलभूत अंतर होता है। ऐसा इसलिए क्योंकि मौलिक रचना में मूल रचनाकार का सब कुछ अपना होता है, किन्तु अनुवाद में ऐसा नहीं है। वस्तुत: अनुदित रचना में कुछ सीमा तक सब कुछ अपना होते हुए भी उसकी आत्मा पराई ही रहती है। इस कारण अनुदित रचना को मौलिक रचना के बिल्कुल बराबर तो नहीं माना जा सकता। किन्तु हां, उसे पुनर्रचित रचना कहने में भी कोई हिचकिचाहट नहीं होती है। सृजनात्मक साहित्य का अनुवाद वास्तव में अपने आप में एक पुनर्सृजन की प्रक्रिया ही है। यूँ तो साहित्य की सभी विधाओं पर यह बात लागू होती है, किन्तु काव्यानुवाद पर यह कुछ अधिक ही लागू होती है। साहित्य की सभी विधाओं पर कलात्मक सृजन का अभाव होते ही वह निर्जीव, प्रभावहीन एवं सौन्दर्यविहीन हो जाता है। इस संदर्भ में फिट्ज्ज़ेराल्ड का यह मत विशेष महत्त्व रखता है कि अनुवाद को यथासंभव सजीव बनाना चाहिए, क्योंकि जीवित कुत्ता मरे शेर से कहीं अच्छा होता है। इसलिए अनुवाद को यदि सफल बनाना है तो उसमें मूल रचना का सौन्दर्य जितना अधिक अनुदित रचना में आएगा, उतना ही वह सफल अनुवाद कहलाएगा। निश्चित ही यह एक श्रमसाध्य व्यापार है। जो अनुवादक मूल रचना के सामान्य अर्थ को संप्रेषित करने तक ही सीमित है, उसे सफल अनुवादक नहीं कहा जा सकता। शैली के स्तर पर मूल रचना शब्दों, पदों, वाक्यों, बिम्बों, प्रतीकों, अलंकारों, छंदों, सांस्कृतिक तत्वों आदि से सुगुंफित होती है। इन तत्वों के कारण ही वह रचना एक सामान्य रचना की कोटि से विशेष रचना की कोटि में रखी जाती है। इसलिए अनुवाद में भी ये सभी विशेषताएँ यथासंभव अवतरित की जानी चाहिए तभी वह सफल काव्यानुवाद कहलाएगा। इन्हीं शैलीगत विशेषताओं को लक्ष्य भाषा में उतारने के कारण ही काव्यानुवाद को पुन:सृजन की प्रक्रिया कहा गया है। श्री अरविन्द का मत है कि काव्यानुवाद का कार्य मूल शब्दों को अनुवाद में उतारना मात्र नहीं है, बल्कि उसके बिम्ब, काव्य-सौन्दर्य एवं शैली की विशेषताओं की भी पुनर्रचना करना है। अत: यह आवश्यक हो जाता है कि काव्यानुवाद कवि की मानसिकता एवं प्रतिभा रखने वाला अनुवादक ही करे।

काव्यानुवाद का कार्य एक जटिल कार्य है, क्योंकि मूलभाषा की साहित्यिक संवेदना अपनी प्रकृति में इतनी विशिष्ट होती है कि उसका दूसरी भाषा में अवतरण प्राय: असंभव-सा होता है। इसी कारण स्रोत भाषा और लक्ष्य भाषा में भाव एवं शैली के आधार पर अंतर काव्यानुवाद की स्वाभाविक प्रक्रिया का परिणाम है जो आधुनिक अनुवाद-चिंतन के संदर्भ में काव्यानुवाद की उस संकल्पना को दर्शाता है जिसे पुन:सृजन कहा जाता है। काव्यानुवाद की प्रक्रिया में मूल संवेदना और संप्रेषणीयता की अनिवार्यता के कारण अनुवादक पुन:सर्जक बनता है इस संदर्भ में नीडा का यह विचार महत्त्वपूर्ण है कि अर्थ और शैली के स्तर पर लक्ष्य भाषा में निकटतम, स्वाभाविक तथा तुल्यार्थक उपादान प्रस्तुत

करना अनुवाद है। एक ही मूलपाठ के दो अनुदित सहपाठों में इसलिए आधारभूत कथ्य के स्तर पर समानता दिखाई देती है और अभिव्यक्ति के स्तर पर भिन्नता। काव्यानुवाद में मूल कवि द्वारा अभिव्यक्त विचारों और भावों को सुरक्षित रखते हुए कविता का लक्ष्य भाषा में पुन:सृजन किया जाता है। यहाँ यह उल्लेखनीय है कि पुन:सृजन का यह सिद्धान्त सभी काव्यानुवादों में समान नहीं होता है, क्योंकि भिन्न-भिन्न कवियों की भिन्न वर्णन-विधि या रचना-शैली के लिए अनुवाद-प्रक्रिया अपनानी पड़ती है।

काव्यानुवाद

कविता के अनुवाद को लेकर विद्वानों में काफी विवाद चल रहा है। कुछ लोगों की धारणा है कि काव्यानुवाद असंभव है तथा यह नहीं हो सकता। वास्तव में कविता का अनुवाद करना बहुत कठिन है, लेकिन वह असंभव है यह नहीं कहा जा सकता। क्योंकि विश्व में अब तक कई हजार कविताओं में अनुवाद हुए हैं।

काव्यानुवाद का मुख्य लक्ष्य है, विश्व की अमर कृतियों को विश्व के पाठकों तक पहुँचाना। अनुवादक की दृष्टि से अगर देखें तो कहना होगा कि, ज्ञान के साहित्य का अनुवाद प्रबुद्ध मानव के बौद्धिक विकास के लिए जितना उपयोगी है, काव्य आदि रागात्मक साहित्य का अनुवाद भी उसकी अंतवृत्तियों की समृद्धि एवं परिष्कार के लिए उतना ही महत्वपूर्ण है और काव्यानुवाद इसी ढंग से बहुत उपयोगी भी है। यही कारण है कि प्रत्येक युग का साहित्यकार विविध बाधाओं, कठिनाइयों से जूझता हुआ भी विभिन्न भाषाओं की अमर रचनाओं का रूपांतर उन्हें अपनी भाषा (स्रोत भाषा) के सहृदय समाज को सौंपने का महान कार्य करता है। वास्तव में यह अनुवादक का पुण्य-कर्म ही है, जो पाठक वर्ग को उपकृत करता है।

काव्यानुवाद आज मात्र कविता के अनुवाद के लिए प्रयुक्त होने वाला शब्द है। साहित्य की महत्वपूर्ण विधा है काव्य और काव्य का अनुवाद रसिकों, विद्वानों तथा अनुवादकों के बीच लंबे समय से विवाद का विषय बन रहा है। कविता के अनुवादक को इसी तरह के कई प्रश्नों के कारण निरुत्साहित किया जाता रहा, उसे तिरस्कृत भी किया जाता रहा। किंतु फिर भी काव्यानुवाद की यह मात्रा निरंतर गतिमान और प्रवाहमान रही।

कविता की रचना प्रक्रिया की विविध जटिलताओं को अच्छी तरह से समझनेवाला सहृदय ही कविता का उत्तम अनुवाद कर सकता है। काव्य अनुवादक दो भाषाओं, दो संस्कृतियों और दो पृष्ठभूमियों के बीच पुल का निर्माण करता है। वह दो संस्कृतियों के बीच साक्षात्कार का माध्यम बनता है। उसकी इसी दूसरी भूमिका के कारण कालिदास, होमर, शेक्सपियर आदि बहुत से महान कवियों की अंतर्राष्ट्रीय ख्याति संभव हो सकी है। इससे हमें यह मालूम होता है कि आज की दुनिया में काव्यानुवाद बहुत प्राधान्य है और शायद इसी कारण से कविता के अनुवाद की बहुत सी समस्याएँ है। इन समस्याओं के कारण कविता का अनुवाद करते समय कभी कभी अपूर्णता जरूरी होती है। शायद इसको मुख्य कारण मानकर इस प्रकार की बातें कही गई है-

1. Traduttori traditori अनुवादक वंचक होते है एक इतालवी कहावत ।
2. Translation of a literary work is as taste less as a stewed strawberry H. De Forest Smith.

एक कविता को अनुवाद करते समय मूल कवि की आत्मा में प्रवेश करना पड़ता है। यह काम एक अत्यंत संवेदनशील अनुवादक ही कर सकता है।

5.3.1 काव्यानुवाद की प्रक्रिया

किसी भी काव्यानुवादक से पूछने पर यही ज्ञात होता है कि काव्य के अनुवाद की प्रक्रिया अत्यंत जटिल है। काव्यानुवादक सृजन की दोहरी प्रक्रिया से गुजरने के बाद भी सामान्यत: इसी निष्कर्ष पर पहुंचता है कि उत्कृष्ट स्तर वाले साहित्यिक गौरव ग्रंथों का अनुवाद मूल की कला और सौंदर्य को उपयुक्त रूप में अक्षुण्ण रखते हुए लगभग असंभव कार्य है। गद्य साहित्य का अनुवाद तो फिर भी समतुल्यता की कसौटी पर कुछ संभव हो पाता है किन्तु काव्य का अनुवाद तो पूर्णत: यथावत् या समतुल्य कर पाना असंभव ही है। काव्य में शब्दों के भीतर बसा संस्कारगत निहितार्थ

तो महत्त्वपूर्ण होता ही है. उनकी ध्वन्यात्मकता, काव्यगत भाव एवं विचारों का यथावत् रूपांतरण तथा कविता या रचना का संरचनात्मक-वैशिष्ट्य भी अत्यंत विचारणीय होता है। कविता का संगीत, उसका विशिष्ट संस्कार, परिवेश तथा भाव और रस का सम्मिश्रण-सभी कुछ अनुवादक के समक्ष चुनौती बन कर उभरता है। अत: काव्यानुवाद में समतुल्यता आदर्श मात्र होती है, अन्यथा वह दु:साध्य और दुर्गम ही है। अब हम काव्यानुवाद की प्रक्रिया के चार चरणों की संक्षेप में समीक्षा करते हैं।

● शब्द संस्कार एवं शब्द चयन

किसी भी भाषा के शब्दों की अपनी विशिष्ट प्रकृति होती है जिसमें उनके एक या एकाधिक अर्थों को या उनकी बहुस्तरीय छायाओं को देखा जाता है। जैसे -

रहिमन पानी राखिए, बिन पानी सब सून,
पानी गए न ऊबरे, मोती, मानस, चून।

रहीम के इस दोहे में काले मोटे शब्द ''पानी'' के तीन अर्थ हैं जिन्हें मोती, मानस तथा चून के परिप्रेक्ष्य में देखना आवश्यक है। मोती के परिप्रेक्ष्य में यह चमक या आभा है, मानस के परिप्रेक्ष्य में यह इज्जत या सम्मान है तथा चून के परिप्रेक्ष्य में यह जल है। इन तीनों के लिए पानी अत्यंत महत्त्वपूर्ण है। परन्तु ''पानी'' शब्द के इन संस्कारगत अर्थों को संदर्भ विशेष में ही समझा जा सकता है। इसी प्रकार सभी शब्दों के भीतर निहित उनके संस्कारगत अर्थ को देख-समझ कर ही अनुवाद किया जाना चाहिए। जैसे ''जल'' पूजा के लिए प्रयुक्त होता है और ''पानी'' सामान्य बोलचाल में पीने के लिए। ''अक्षत'' पूजा में काम आने वाले चावल हैं जबकि सामान्यत: ''चावल'' की संकल्पना भिन्न है।

इसी आधार पर अनुवादक को शब्द का चयन भी करना चाहिए। यह वास्तव में काव्यानुवाद की निजी क्षमता पर ही निर्भर करता है। इसे हम पिछले भाग में उमर खैयाम की रूबाइयों के विविध अनुवादकों की चर्चा करते हुए देख भी चुके है। वहां प्रत्येक अनुवादक ने अपनी वैचारिक एवं भावात्मक प्रकृति के आधार पर शब्द चुने हैं। शब्द बोलचाल की भाषा के हों या साहित्यिक, शब्द-मैत्री का ध्यान कैसे रखा जाए। शब्दानुवाद किया जाए या भावानुवाद, शब्द की भीतरी शक्ति को किस गहराई से समझा और आंका जाए- आदि कितने ही प्रश्नों पर विचार कर अनुवादक को अपनी यात्रा तय करनी होती है। हर शब्द का अपना एक इतिहास, परिवेश, परंपरा और आवेग होता है। इन सब को देख-विचार कर ही अनुवादक उन्हें चुनता है।

● कथ्य-निर्वाह : अनुभूति एवं विचार के परिप्रेक्ष्य में

कथ्य काव्य का मूल या प्राण होता है। कवि अपनी चित्र-वृत्ति को व्यक्त करने के लिए अनेक विषयों, प्रसंगों, चरित्रों, घटनाओं, व्यक्तियों और परिवेशों का उपयोग कर अपनी मंतव्य सामने लाता है। इन सभी के सम्मिश्रण से वह कृति निर्माण कर सृजक या कवि कहलाता है। अत: कथ्य के अंतर्गत स्थूलत: कथा - तत्त्व चरित्र-चित्रण विचार तत्त्व तथा भाव तत्त्व प्रधान होते हैं। काव्यानुवादक को काव्य कृति के इन चारों तत्त्वों का पूरी सावधानी से रूपांतरण करना होता है। भाव और विचार की समतुल्य प्रस्तुति तो काव्यानुवादक के लिए एक खास चुनौती बन कर उभरती है। मैथिलीशरण गुप्त द्वारा किए गए फीट्ज़्ज़ेरल्ड की अंग्रेजी रूबाइयों के अनुवाद में से एक उदाहरण प्रस्तुत है जहां मूल का विचार तत्त्व पूरी तरह से सुरक्षित रखा गया है -

मूल: Here with a hoaf of bread beneath the Bough
A Flask of wing, a Bilk of verse and Thou
Beside me singing in the wilderness
And wilderness is Paradise enow.

अनुवाद –

इस तरू तले कहीं खाने को रोटी का टुकड़ा हो एक
पीने को मधु पात्र पूर्ण हो करने को हो काव्य–विवेक
तिस पर इस सन्नाटे में तुम बैठ बगल में गाती हो
तो नंदन–सम इसी विजन में मुझे स्वर्ग का हो अभिषेक।

इसी प्रकार ''वर्डसवर्थ'' की मूल कविता के विचार तत्व को अनुवादक श्री यतेन्द्र कुमार ने बहुत खूबी से रूपांतरित किया है। बालक का बड़ा होते जाना तथा विषयता के तंतुजालों का उसके चारों तरफ बढ़ते जाना, कवि के वैचारिक धरातल से परिचय कराता है –

मूल : Heaven lies about us in our infancy
Shades of the prison-house begin to close
upon the growing Boy

अनुवाद –

बसता स्वर्ग हमारे चारों ओर हमारी शैशव वय में
कारागृह को छायाएँ लगती है घिरने,
ज्यों–ज्यों वह कैशोर्य रूप में लगता बढ़ने।

श्री यतेन्द्र कुमार

इसी प्रकार भावों और मनोवेगों को, रसास्वादन करती मानवीय सहृदयता को तथा मार्मिक स्थलों की भावपूर्ण प्रस्तुति को रूपांतरित करना भी दु:साध्य कार्य है। हिंदी में अनुवादकों ने इस दिशा में सामान्यत: कृतिकारों के भाव–सरोवर में अवगाहन करते हुए तुल्य–रस–स्थिति के सृजन को ही अपनाया है। कीट्स के काव्य लोक में भाव–विचरण करने वाले अनुवादक कवि श्री यतेन्द्र कुमार का यह अनूदित उदाहरण– द्रष्टव्य है जहां वे प्रेम की कोमल भावनाओं को बारीकी से पकड़ने का सफल प्रयास करते है –

मूल: With every morn their love grew ten derer,
With every eye deeper and tenderer still
He might not in house, field or garden stir,
But his full shape would all seeing fill.

अनुवाद

हर प्रभात के साथ प्रेम उनका होता था कोमलतर,
हर संध्या के साथ, और गंभीर, और भी यह कोमल,
चाहे घर में, या कि खेत, उपवन में ही वह रहा विहर,
प्रिया–मूर्ति ही उसके नयनों के समक्ष रहती प्रतिपल।

– श्री यतेन्द्र कुमार

अत: हर्ष, शोक, उल्लास, उन्माद, चिंता, लज्जा तथा पीड़ा आदि कई मर्मस्पर्शी भावों का आत्मीकरण करके ही दूसरी भाषा में रूपान्तरण किया जा सकता है। तभी अनुवादक मूल की सी भाव–प्रतिभा का प्रतिस्थापन कर पाता है।

- **संरचनात्मक वैशिष्ट्य**

काव्यानुवाद के अंतर्गत अनुवादक को लक्ष्य एवं स्त्रोत भाषा के संरचनात्मक गठन का भी पूरा ध्यान रखना होता है। प्रत्येक भाषा की अपनी एक विशिष्ट संरचना होती है और उसी आधार पर कवि या साहित्यकार सृजन करता है। अनुवाद में अधिकांशत: यह संरचनात्मकता बाधक बनती है। इस विषय पर विस्तार से चर्चा हम खंड–3 में

''अंग्रेजी-हिंदी वाक्य संरचना'' के अंतर्गत कर चुके हैं। परन्तु यहां संक्षेप में यह दोहराना अनुचित न होगा कि हिंदी की वाक्य संरचना- कर्ता+कर्म+क्रिया को क्रम-व्यवस्था पर आधारित है। अत: तो अंग्रेजों की सामान्यत: कर्ता + क्रिया + कर्म पर आधारित होती है। अत: अनुवादक को शाषिक संरचना के वैशिष्ट्य का पूरा ध्यान रखना चाहिए। भाषा की प्रकृति अगर अनुवाद में बदलती हुई जान पड़े तो सौन्दर्य, क्षीण होने लगता है। इसी प्रकार विरामादि चिन्हों को प्रकृति एवं स्थिति का भी अनुवादक को पूरा ध्यान रखना चाहिए। दो भाषाओं की संरचनागत भिन्नता कविता के सूक्ष्म अर्थ तथा भाव दृष्टि को प्रभावित करती है और इसी दिशा में अनुवादक को सावधानी बरतनी होती है।

• आगत शब्दों का अनुवाद

काव्यानुवादक को कविता में आए विदेशी शब्दों, पदबंधों या उपवाक्यों आदि का अनुवाद भी अत्यंत सोच-समझ कर तथा रच-पच कर ही करना चाहिए। अंग्रेजी शब्दों, वाक्यांशों या मुहावरों का प्रयोग अनुवाद के माध्यम से करना अत्यंत जटिल कार्य है। हालांकि हिंदी में ऐसे बहुत से प्रयोग किए भी गए है तथा वे मान्य एव प्रचलित भी हुए हैं। यथा-

Golden Touch-सुनहले स्पर्श, Broken heart - भग्न-हृदय, Golden dream-स्वर्ण स्वप्न, Heavenly light-स्वर्गीय प्रकाश, Dreamy smile स्वप्निल मुस्कान तथा Silvery-रूपहले आदि।

इसी तरह हिंदी कविता में बहुत से अंग्रेजी प्रयोगों को यथावत् रखने के उदाहरण भी देखने को मिलते हैं। ऐसी स्थिति जब होती है जब अनुवादक मूल शब्द का लक्ष्य भाषा में उत्तम प्रतिशब्द नहीं ढूंढ या बना पाता तो वह उसे उसी प्रचलित रूप में प्रयुक्त कर देता है। यथा- ''उसकी फाइल सी भरी आँखों में'', 'अस्थिर मन सा रेलवे का एक वेटिंग रूम''। तथा ''यदि स्त्रियां शिक्षा पाती तों, परदा सिस्टम होता दूर''- इसी तरह के प्रयोग हैं।

5.3.2 काव्यानुवाद के प्रकार

काव्यानुसार पुनर्सृजन है, इसमें संदेह नहीं। किन्तु यहां पुनर्सृजन से तात्पर्य पूर्णत: मौलिक रचना से न होकर यथासंभव मूल के निकट पहुंचने या रहने का प्रयास भी है। काव्यानुवाद की प्रक्रिया में अनुवादक पहले चरण में पाठक प्रतिपाद्य को ग्रहण करता है और फिर उस भाव को लक्ष्य भाषा में सम्प्रेषित कर दोहरी यात्रा तय करता है। काव्य में मात्र भाषा के ही अनुवाद की समस्या मुख्य नहीं होती उसका शब्द-चयन, अलंकार विधान, छन्द योजना, लाक्षणिक एवं नाद-सौन्दर्य आदि कई चुनौतियां अनुवादक के सामने खड़ी रहती हैं। इस आधार पर कविता का अनुवाद भी कई प्रकार का हो जाता है। जहां मात्र शब्दों के अनुवाद का प्रयास रहा हो वहाँ शब्दानुवाद या ''शाब्दिक अनुवाद'' जहां ध्वनि व्यवस्था पर विशिष्ट ध्यान दिया गया हो वहां ''स्वनिमिक अनुवाद'', जहां छंदों को भाव से अधिक महत्व दिया गया हो वहां ''छंदानुवाद'', जहां कविता को गद्य में रूपांतरित कर दिया गया हो वहां ''कविता का गद्यानुवाद'' तथा इसी प्रकार ''तुकांत अनुवाद'', ''पुनर्व्याख्यात्मक अनुवाद'', ''भावानुवाद'' और ''मुक्तछंदपरक अनुवाद'' आदि काव्यानुवाद के प्रमुख प्रकार माने जा सकते हैं। किन्तु कविता के क्षेत्र में सर्वमान्य धारणा यही रही है कि ''भावानुवाद'' ही उत्तम अनुवाद होता है। अंग्रेजी से हिंदी में शैली, वर्डसवर्थ तथा कीट्स आदि के काव्य को सफलता से प्रस्तुत करने वाले अनुवादक श्री यतेन्द्र कुमार का भी यही मानना है कि - भावानुवाद की पद्धति एक प्रकार से मूल रचना के समांतर नवीन-सृजन (Paralled recreation) है, दोनों (मूल और अनूदित) एक न होकर एस-सी होती है। यह एकता भाव-सामग्री की दृष्टि से होती है। इसमें एक आशंका यह होती है कि अधिकतर मूल कवि के रचनात्मक स्वरूप का जिज्ञासु पाठक के लिए कोई अनुमान नहीं हो पाता। तथा मूल कवि की ऐसी देन से जिससे हमारी कविता की अलंकृति और अभिव्यंजना-समृद्ध हो सकती है, हम वंचित रह जाते हैं। यह सच है कि ऐसी वस्तु का बाहुल्य नहीं होता क्योंकि दोनों के समय और समाज के परिवेश भिन्न होते हैं, तो भी ऐसे कुछ मुहावरे, बिम्ब, छन्द तथा अन्यान्य उपकरण जिनमें मूल कवि के व्यक्तित्व का सार्वजनिक रूप प्रकट होता है, अवश्य अनुकूल होने चाहिए।

होल्म्स के प्रारूप को स्वीकार करते हुए डॉ.जी. गोपीनाथन जी काव्यानुवाद के निम्न प्रकार बताते हैं -

1. पद्यानुवाद
2. लयात्मक गद्यानुवाद
3. गद्यानुवाद
4. स्वतंत्र गद्यानुवाद
5. अनुकरण
6. कविता से प्रभावित कविता
7. प्रत्तिध्वनि अनुवाद
8. आलोचना/आस्वादन
9. व्याख्या/टीका

इनमें से पद्यानुवाद, लयात्मक गद्यानुवाद एवं गद्यानुवाद वास्तविक काव्यानुवाद के रूप है। स्वतंत्र गद्यानुवाद, अनुकरण, कविता से प्रभावित कविता एवं प्रतिध्वनि अनु:सृजन के रूप हैं, जबकि व्याख्या, टीका, आलोचना आस्वादन आदि गद्य में व्याख्या के रूप हैं।

5.3.3 काव्यानुवाद की समस्याएँ

(क) स्रोत भाषा के सभी शब्दों की लक्ष्य भाषा में समान अभिव्यक्ति की समस्या।

साहित्यकार अपनी रचनाओं में शब्दों का प्रयोग चुनकर करता है। कवि कविता लिखने में और भी अधिक चयन करता है। वह जिन शब्दों का प्रयोग करता है, वे शब्द प्राय: अपना कोशीय अर्थ या सामान्य अर्थ के अतिरिक्त अपनी ध्वनि से कुछ और अर्थ भी देते हैं। ध्वनि और अर्थ का यह संबंध उन चुने हुए शब्दों की विशेषता होती है और इनके कारण कविता में एक विशेष जीवंतता आ जाती है। अनुवाद में प्राय: उस शब्द का प्रतिशब्द कोशीय अर्थ ही दे पाता है, ध्वनि या वर्ण मैत्री आदि के स्तर का अनुवाद इसलिए संभव नहीं हो पाता है। हर भाषा में इस प्रकार के शब्द होते ही नहीं जिनमें अर्थ और ध्वनि का यह संबंध हो। मान लें, किसी हिंदी कविता में 'बिजली' शब्द आया है। स्पष्ट ही बिजली में तेज़ी और उसके स्थान पर अंग्रेजी में thunder या thunder bolt रखें तो इनमें 'कड़क' है और lightning रखें तो 'चकाचौंध' है। इस तरह काव्य भाषा में ये शब्द बिजली के पर्याप्त नहीं है, यद्यपि सामान्य भाषा में है। इसका आशय यह हुआ की इन शब्दों के द्वारा अनुवाद करने की मूल की तेजी और तरलता चली गई और नये तत्व कड़क या चकाचौंध की वृद्धि हो गई। अर्थात् कुछ घट गया और कुछ बढ़ गया।

हर भाषा के हर शब्द का अपना अर्थ बिम्ब होता है, जो सांस्कृतिक, भौगोलिक तथा सामाजिक पृष्ठभूमि से संबंध होता है। दूसरी भाषा का उसी का समानार्थी शब्द उस पृष्ठभूमि से युक्त न होने के कारण वैसा अर्थ बिम्ब नहीं उभार सकता। अंग्रेजी कवि की कविता में प्रयुक्त spring शब्द का ठीक प्रति शब्द हिंदी में वसंत इसलिए नहीं हो सकता कि अंग्रेजी भाषा के मन में स्प्रिंग का चित्र है, जो भारतीय वसंत के चित्र से सर्वथा भिन्न है। रूस का जाड़ा और अरब का जाड़ा एक नहीं हो सकता, न भारत की गर्मी और फ्रांस की गर्मी। काव्यभाषा में प्रयुक्त ऐसे शब्दों का प्रतिनिधित्व इसलिए किसी भी दूसरी भाषा के समानार्थी शब्दों द्वारा कदापि नहीं किया जा सकता।

(ख) अलंकारों की समस्या

काव्य प्राय: अलंकार प्रधान होता है, किंतु एक भाषा के अलंकारों की दूसरी भाषा में ठीक-ठीक उतार पाना कठिन और कभी-कभी तो असंभव हो जाता है। ज्यों तो अर्थालंकार की उपमानों की असमानता के कारण कभी-कभी अनुवाद में कठिनाई उत्पन्न करते हैं। उदा- वह उल्लू जैसा है, में उल्लू मूर्खता का प्रतीक है, किंतु इसका अंग्रेजी अनुवाद करना हो और उल्लू के स्थान पर अर्थ कोशीय रख दे तो काम नहीं चलेगा, क्योंकि अंग्रेजी में उल्लू बुद्धिमान माना जाता है।

किंतु अनुप्रास आदि शब्दालंकारों में तो यह कठिनाई और भी बढ़ जाती है। 'कनक कनक ते सौगुन' का किसी भाषा में तब तक अनुवाद नहीं हो सकता जब तक उस भाषा में कोई ऐसा शब्द न हो जिसका अर्थ 'सोना' तथा 'धतूरा' दोनों हो।

(ग) छंदों का अनुवाद

कविता छंदबद्ध होती है और हर छंद की अपनी गति होती है, अत: उसका अपना प्रभाव भी होता है। साथ ही उसका एक सीमा तक कविता के भाव से संबंध भी होता है। भारतीय भाषाओं में एक प्रकार के छंद हैं, तो फारसी आदि में दूसरी तरह के और यूरोपीय भाषाओं में तीसरी तरह के। ऐसी स्थिति में दो ही रास्ते अनुवादक के सामने हैं- या तो लक्ष्य भाषा में प्राप्त उपयुक्त छंद में अनुवाद कर दे, पर ऐसा करने से मूल छंद का सारा प्रभाव समाप्त हो जाएगा, या फिर वह स्रोत सामग्री के छंद में ही अनुवाद करें। किंतु इसमें भी बात नहीं बनेगी। यदि ऐसे करें तो भी, लक्ष्य भाषा-भाषी पर अनभ्यस्त होने के कारण वह प्रभाव नहीं डाल पाएगा। मूल छंद का जो प्रभाव मूल भाषा-भाषियों पर पड़ता है, अनुवादक किसी भी तरह से लक्ष्य भाषा-भाषी पर नहीं डाल सकता।

(घ) काव्यानुवाद में अनुवादक का व्यक्तित्व

कवि हृदय ही काव्यानुवाद के साथ न्याय कर सकता है, क्योंकि कविता का अनुवाद अन्य अनुवादों से भिन्न होता है कि वह एक प्रकार से पुनर्रचना होता है। इसी कारण एक व्यक्ति द्वारा किया गया काव्यानुवाद दूसरे व्यक्ति से भिन्न होता है। हर काव्यानुवादक उस मूल का अपने-अपने ढंग से संस्करण प्रस्तुत करता है। उदाहरण के लिए, उमर खैयाम की एक रुबाई कुछ अनुवादों के साथ देख सकते हैं। कई अनुवाद हिंदी में उपलब्ध हैं, पर एक-एक भिन्न।

काव्यानुवादक सफल अनुवाद नहीं कर सकता, तो फिर सभी प्रकार के कवियों की सभी प्रकार की रचनाओं के एक व्यक्ति द्वारा अनुवाद किए जाने का तो प्रश्न ही नहीं उठता। इस रूप में विशिष्ट काव्य रचना का अनुवाद भी विशिष्ट काव्य-रचना की तरह ही विशिष्ट मूडनिष्ठ होता है।

(ङ) एक भाषा की काव्य-रचना अर्थात अभिव्यक्ति दूसरी भाषा में लाना मुश्किल है।

हर कवि भाषा विशेष का ही होता है, केवल उसी भाषा में कहा जा सकता है और उसी रूप और अर्थ में कहा जा सकता है। उसकी महानता मूल रचना में होती है और मूल को पढ़कर ही हमें उसकी महानता के दर्शन हो सकते हैं।

कवि जो कहता है उसके सौंदर्य हमें उसी भाषा में अच्छे लगते हैं। किसी दूसरी भाषा में अनुवाद करने से ये छूट जाता है। कितने अच्छे अनुवादक हो, अपूर्णता थोड़ी जरूर होती है।

(च) कविता की शैली

एक भाषा की कविता को दूसरी भाषा में अनुवाद करते समय उसकी काव्यशैली जरूर नष्ट हो जाती है। इस बात पर बहुत अधिक चर्चा होती रहती है। अनुवादक मूल कृति की शैली को यथावत् या समतुल्य बनाए रखने में पूर्णत: सफल नहीं हो पाता। यह उसकी अपनी सीमा भी है और विषय की भी सीमा है। काव्यशैली का अनुवाद अधिक असाध्य साधना इसी कारण से होता है।

स्वयं आकलन प्रश्न

प्रश्न-1 शिक्षा मंत्रालय के अधीन 'वैधानिक तथा तकनीकी शब्दावली बोर्ड' की स्थापना कब हुई ?

प्रश्न-2 हिन्दी में वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली के निर्माण के लिए कौन सा वर्ष 'युग वर्ष' साबित हुआ?

5.4 सारांश

काव्यानुवाद करते समय इस बात का भी ध्यान रखना होता है कि लोक-काव्य की भाषा (बोली) परिनिष्ठित या मौजी - धुली नहीं होती, उसमें सरलता, सहजता के साथ एक प्रकार का बीहड़पन एवं खुदरापन भी होता है। आवश्यक हुआ तो शीर्षक, पात्रों और स्थलों के नाम में भी बदलाव किया जाता है। भोलानाथ तिवारी काव्यानुवाद को

किसी कविता का यथा संभव निकटतम समतुल्य रखने पर जोर देते हुए कहते हैं कि काव्य कला अन्ततः उन शब्दों पर निर्भर होती है जिनके द्वारा उनकी अभिव्यक्ति होती है और यहाँ शब्द केवल अर्थ का भाववाहक नहीं होता, उसकी अपने आप में कुछ सत्ता-महत्ता होती है, उसकी अपनी ध्वनि होती है।

5.5 कठिन शब्दावली

संयोजन - योजनापूर्ण प्रबंधन

पारंगत - जिसने पार पा लिया हो

लाक्षणिक - लक्षणों का जानकार

व्यंजनात्मक - व्यंजना युक्त

प्रतिस्थापन - बदले में रखा हुआ

5.6 स्वयं आकलन हेतु प्रश्नों के उत्तर

उ.1 सन् 1950

उ.2 सन् 1960

5.7 संदर्भित पुस्तकें

1. डॉ. नगेन्द्र (पं), अनुवाद विज्ञान, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली।
2. वासुदेव चन्द्र भाटिया, हिन्दी अनुवाद : सिद्धांत और प्रयोग, भारती भवन, पटना।
3. डॉ पूरन चन्द टंडन, अनुवाद साधना, अभिव्यक्ति प्रकाशन, दिल्ली।

5.8 सात्रिक प्रश्न

प्रश्न-1 काव्यानुवाद के स्वरूप तथा प्रक्रिया का विस्तारपूर्वक कीजिए ?

प्रश्न-2 काव्यानुवाद के प्रकारों का विवेचन कीजिए ?

प्रश्न-3 काव्यानुवाद की समस्याओं पर प्रकाश डालिए ?

*****

इकाई-6
कथानुवाद

संरचना

6.1 भूमिका

6.2 उद्देश्य

6.3 कथानुवाद

6.3.1 कथानुवाद का स्वरूप

6.3.2 कथानुवाद की समस्याएँ

स्वयं आकलन प्रश्न

6.4 सारांश

6.5 कठिन शब्दावली

6.6 स्वयं आकलन प्रश्नों के उत्तर

6.7 संदर्भित पुस्तकें

6.8 सात्रिक प्रश्न

6.1 भूमिका

इकाई पाँच में हमने काव्यानुवाद के स्वरूप काव्यानुवाद की प्रक्रिया, काव्यानुवाद के प्रकार तथा काव्यानुवाद की समस्याओं का गहन अध्ययन किया है। इकाई छः में हम कथानुवाद, कथानुवाद के स्वरूप तथा कथानुवाद की समस्याओं का विस्तारपूर्वक अध्ययन करेंगे।

6.2 उद्देश्य

इकाई छः का अध्ययन करने के पश्चात हम यह जानने में सक्षम होंगे कि -

1. कथानुवाद क्या है ?
2. कथानुवाद का स्वरूप क्या है ?
3. कथानुवाद की प्रमुख समस्याएँ क्या हैं ?

6.3 कथानुवाद

साहित्य का हमारे समाज और संस्कृति से गहरा जुड़ाव होता है। कथा साहित्य में समाज और संस्कृति का प्रतिबिम्बन हमारे साहित्य में देखने को मिलता है। कथा साहित्य में समाज का व्यापक चित्र प्रस्तुत करते हुए कथाकार समाज के विविध रीति-रिवाजों और परम्पराओं का भी अंकन सहज ही हो जाता है। कथा- साहित्य का अनुवाद करते हुए अनुवादक को स्रोत भाषा और लक्ष्य दोनों के समाज संस्कृति और जनता की चित्तवृतियों का विशेष ध्यान रखना होता है। किसी भी रचनाकार के साहित्यिक परम्परा को भलीभांति जाने समझे बिना हम उसकी रचनाओं के मर्म को नहीं समझ सकते और अगर हम रचना के मर्म को नहीं समझ सकेंगे तो उसका अनुवाद प्रभावी नहीं होगा।

कथा माहित्य में व्यापक जीवन की अभिव्यक्ति होती है। इसीलिए कथा साहित्य का अनुवाद अधिक चुनौतीपूर्ण होता है। समाज, संस्कृति, परिवेश और सामाजिक क्रियाओं-प्रतिक्रियाओं के सूक्ष्म अन्वेषण की आवश्यकता कथा-अनुवाद में होती है अनुवादक का उत्तरदायित्व साहित्यकार से अधिक चुनौतीपूर्ण और व्यापक होता है। अनुवाद के लिए भाषाओं का सूक्ष्म अध्ययन तो अपेक्षित है ही साथ ही साथ रचनाकार के रूचि-अभिरुचि का भी ध्यान रखना आवश्यक होता है। अनुवाद मूलतः पुर्नसृजन है। साहित्य के मूल मर्म को समझना आसान नहीं होता, इसके लिए जिस भाषा में कृति है उस भाषा संस्कृति को जानना और जीना आवश्यक ही नहीं अपरिहार्य होता है। इसके साथ-साथ स्रोत

भाषा को भी उसके समग्रता में जानना अपेक्षित है। प्रेमचन्द की प्रसिद्ध कहानी है- 'पूस की रात' जिसका अंग्रेजी में अनुवाद 'Winter's Night शीर्षक से किया गया है। यहाँ यह बात ध्यान देने की है पूस के महीने में उत्तर भारत कड़ाके की ठण्ड पड़ती है इसके स्थान पर यदि अनुवादक सीधे पूस के अंग्रेजी महीने का नाम बताता तो कहानी का मूल अनुदित नहीं हो पाता। कथा साहित्य के अनुवादक में इसी भाव सम्प्रेषण अपेक्षा होती है।

अनुवाद अपने आप में एक विशिष्ट कर्म है, इसके लिए भाषा के साथ-साथ संस्कृति, समाज और सभ्यता के सूक्ष्म तत्वों को बारीकी से जान और समझकर ही अनुवाद करना चाहिए जिससे हम स्रोत भाषा की सामग्री को हुबहू लक्ष्य भाषा में संप्रेषित कर सकें। कथा अनुवादक को अनुवाद करते समय निम्नलिखित बातों का विशेष ध्यान रखना चाहिए -

1. स्रोत भाषा का पूर्ण ज्ञान
2. लक्ष्य भाषा का पूर्ण ज्ञान
3. रचनाकार के समाज और जीवन के विविध संदर्भो का अध्ययन
4. दोनों भाषाओं के साथ-साथ समाज और संस्कृति का गहन अध्ययन
5. पात्र-परिवेश के सूक्ष्म तत्वों का विश्लेषण एवं विवेचन

6.3.1 कथानुवाद का स्वरूप

आज के युग में कथा-साहित्य का अनुवाद अन्य साहित्यिक विधाओं की तुलना में अधिक लोकप्रिय हो रहा है। प्रत्येक देश के पाठक आज दूसरे देशों के साहित्य एवं संस्कृति से परिचित होना चाहते हैं। यह सब अनुवाद के माध्यम से ही संभव है। पाठकों की इस जिज्ञासा के कारण ही किसी देश के लेखक की रचनाओं को पढ़ने का सुअवसर प्राप्त होता है। आज देखने में आ रहा है कि उपन्यास तथा कहानियों के अच्छे अनुवादों की बहुत मांग है। हेमिंग्वे, समरसेट मॉम, ओ हेनरी, काफ़्का, आदि की कहानियों के अनुवाद अत्यन्त लोकप्रिय हुए हैं। इसी प्रकार टॉलस्टॉय, दोस्तोवस्की, चेखव, जोला, बाल्जाक, तुर्गनेव आदि लेखकों के उपन्यासों तथा कहानियों के अनुवाद भी बड़े चाव से पढ़े जाते हैं। पाश्चात्य लेखकों के अतिरिक्त भारतीय लेखकों का साहित्य भी भारत और विदेशों में अत्यधिक लोकप्रिय हो रहा है। उदाहरण के लिए-प्रेमचन्द, टैगोर, बंकिमचन्द्र, शरत्चन्द, अन्नपूर्णा महाश्वेता, भीष्म साहनी, अमृता प्रीतम, मोहन राकेश, तकषी, मुल्कराज आनन्द, राजा राव, आर. के. नारायण, अनीता देसाई, आदि लेखकों की कहानियाँ भी अनुवाद के माध्यम से आज विश्व साहित्य का अभिन्न अंग बन चुकी हैं।

कहानी की विशिष्टता कथा-तत्त्व और उसके कहने की शैली पर निर्भर है। कहानियों की शिल्प-रचना ही अत्यन्त सूक्ष्म एवं जटिल होती है। उपन्यास और कहानी के अनुवाद में शैली और शिल्प की सूक्ष्मताओं, अर्थ-छायाओं, कथाकार का व्यंग्य, प्रतीकात्मक एवं काव्यात्मक प्रयोग आदि पर बहुत अधिक ध्यान देना पड़ता है। शैली एवं शिल्प के सूक्ष्म तत्त्वों के अध्ययन के लिए मूल लेखक की अन्य रचनाओं तथा उसके व्यक्तित्व से भी परिचित होना कभी-कभी आवश्यक होता है। लेखक के सामाजिक एवं दार्शनिक चिंतन की पृष्ठभूमि को समझना भी अत्यन्त आवश्यक है। सामाजिक एवं दार्शनिक कहानियों के संदर्भ में अनुवादक का काम भी जटिल बन जाता है। दार्शनिक, मिथकीय परिकल्पनाओं एवं परिभाषिक एवं सांकेतिक शब्दों की अर्थ छटाओं का संकेत भी अनुवादक को देना होगा। उपन्यास-कला एवं शिल्प-विधान का अच्छा ज्ञान अनुवादक के लिए सहायक होता है। इससे स्पष्ट है कि कहानी का अनुवाद उतना आसान कार्य नहीं बल्कि अनुवादक को एक कलात्मक दायित्व निभाना होता है।

कहानी के अनुवाद में देश काल और संस्कृति का विशेष महत्त्व होता है इस सम्बन्ध में प्रभाकर माचवे लिखते हैं- **''पहले से ही यह मानकर चलना पड़ता है कि अनुवादक को दोनों भाषाओं पर पूर्ण अधिकार होने के साथ-साथ मूल संस्कृति में वर्णित पात्रों तथा घटनाओं के माध्यम से अभिव्यक्त किये गये सांस्कृतिक तथा आस्था सम्बधी प्रत्यादर्शों से परिचित होना आवश्यक है। अनुवादक अथवा रूपान्तरकार प्रायः मूल रचना में वर्णित स्थितियों के लिए लगभग उनसे मिलती-जुलती स्थितियों का वर्णन कर देते हैं और यहाँ तक कि**

अनुवाद करते समय मूल कृति में आये नामों और रीति-रिवाजों के वर्णनों में भी परिवर्तन कर देते हैं। अनुवाद सम्बन्धी ये पद्धतियाँ अनुवाद की प्रमुख समस्या का समाधान तो करती नहीं बल्कि समस्या से पलायन ही कराती है'' चूँकि कहानी-साहित्य जनजीवन का चलता हुआ छायांकन होता है, इसलिए जनता के रीति-रिवाज, जीवन-मूल्य, आस्थाएँ, त्योहार-पर्व, परिवेश, वनस्पतियाँ, सांस्कृतिक स्थान एवं वस्तुएँ आदि का भी उसमें विशिष्ट महत्त्व होता है। ऐसे स्थानों पर शब्दानुवाद या यांत्रिक ढंग के अनुवादक की अपेक्षा ऐसे अनुवाद की आवश्यकता होती है, जो स्रोत भाषा की संस्कृति एवं परिवेश को लक्ष्य पाठ में पुन:सृजन द्वारा प्रत्यक्ष करा सकें। अन्य भाषाओं के कहानी साहित्य के अध्ययन में वहाँ की सांस्कृतिक विशिष्टताओं का ज्ञान भी निहित रहता है, इसलिए सांस्कृतिक विशिष्टताओं का अन्तरण अनिवार्य है। परन्तु इस प्रक्रिया में सहजता हो, इसका भी ध्यान रखना आवश्यक है क्योंकि कहानी साहित्य का अध्ययन मूलत: सांस्कृतिक ज्ञान के लिए नहीं बल्कि कथा-रुचि के कारण ही होता है। सांस्कृतिक विशिष्टताओं का ज्ञान आनुषंगिक, किन्तु महत्त्वपूर्ण उपलब्धि है, जो पाठक के सांस्कृतिक क्षितिज को विकसित करता है।

कहानी के अनुवाद में भाषा कि जटिल समस्याएँ नाना प्रकार से सामने आती हैं। पात्र-नामों के मूल उच्चारण एवं लक्ष्य भाषा में अनुलेखन से लेकर आंचलिक शब्द प्रयोगों के लिए समान शब्दों के चुनाव तक की समस्याएँ, भाषा की समस्याएँ ही हैं। पात्रनामों के अनुलेखन में रूसी, फ्रेंच आदि भाषाओं से भारतीय भाषाओं में अनुवाद करते समय समस्याएँ विशेष रूप से उत्पन्न हो जाती हैं। प्राकृतिक उपादानों, स्थान एवं व्यक्ति नामों के लिप्यंतरण ओर ध्वन्यनुकूलन की समस्याएँ इस दृष्टि से महत्त्वपूर्ण हैं कि पाठक अक्सर इन नामों के अजनबीपन से परेशान हो जाते हैं। इसलिए जहाँ तक हो सके इन नामों का स्रोत भाषा की ध्वनि के अनुकूल बनाना आवश्यक है। वारान्निकोव जैसे रूसी विद्वानों को शिकायत है कि अंग्रेजी से भारतीय भाषाओं में अनुदित रूसी उपन्यासों में व्यक्तिनाम बड़े अटपटे और अजनबी बन गये हैं। उनका सुझाव है कि मूल रूसी से इन नामों का लिप्यंतरण किया जाय तो ज्यादा प्रामाणिक और सहज होगा। आंचलिक शब्दों, स्थानीय रंग से युक्त मुहावरों आदि के अनुवाद की कठिनाइयां आंचलिक उपन्यासों में ही नहीं अन्य तरह के उपन्यासों में प्राय: मिलती हैं। आंचलिक शब्दावली के लिए उपर्युक्त समान आंचलिक प्रयोगों की तलाश अनुवादक की भाषिक क्षमता के लिए एक चुनौती है। कहानी-साहित्य की भाषा जनभाषा के करीब होती है। कहानी भाषा शैली की इन परम्पराओं और जीवंत मुहावरों को पकड़ना भी अनुवाद की सफलता एवं पठनीयता के लिए अनिवार्य है। कहानी-साहित्य की कला प्राय: उसकी सृजनात्मक भाषिक संरचना पर निर्भर है। अत: अनुवादक के लिए भाषा के लिए सृजनात्मक प्रयोग की आवश्यकता होती है। स्पष्ट है भाषा के इस सृजनात्मक प्रयोग की क्षमता पर ही कहानी-साहित्य की कलात्मकता निर्भर है।

6.3.2 कथानुवाद की समस्याएँ

कहानी अनुवाद की प्रमुख समस्याएँ निम्नलिखित हैं-

1. सांस्कृतिक परिवेश का पुन:सृजन- सांस्कृतिक परिवेश का पुन:सृजन कहानी अनुवाद की सर्वप्रथम एवं मूलभूत समस्या मूल रचना के सांस्कृतिक परिवेश का लक्ष्य भाषा में पुन:सृजन है। नाट्यानुवाद की भांति उपन्यास तथा कहानी के अनुवाद में भी अनुवादक को मूल रचना की सांस्कृतिक पृष्ठभूमि और मूल लेखक की मनोभूमि का पर्याप्त ज्ञान होना अति आवश्यक होता है। अनुवादक की समस्या मूल रचना के परिवेश के अनुसार ही कम-ज्यादा होती है। यह परिवेश विदेशी, भारतीय, आंचलिक आदि हो सकता है, परिवेश अगर विदेशी और आंचलिक है तो समस्या अधिक होती है और यदि भारतीय है तो समस्या कम होती है। मूल कृति के विदेशी वातावरण को अनुवाद में सुरक्षित रखने के लिए अनुवादक को दोनों समाजों एवं संस्कृतियों का गहन अध्ययन करना पड़ता है। विदेशी-संदर्भ में दोनों संस्कृतियाँ एक-दूसरे से इतनी घुली-मिली नहीं होती जबकि भारतीय संदर्भ में यह अन्तर अपेक्षाकृत कम हो जाता है।

(क) विदेशी सांस्कृतिक परिवेश-मूल कृति के परिवेश का पुन:सृजन करने से सन्दर्भ में पहला भेद विदेशी संस्कृति के परिवेश का है। विदेशी रचनाओं के वातावरण को हिन्दी में पुन:सृजित करना वास्तव में एक कठिन कार्य है। चिनुआ अचेवे अफ्रीका के प्रख्यात रचनाकार हैं। उनकी कहानियों में अफ्रीका जैसे नितान्त भिन्न सांस्कृतिक

वातावरण को पुनः सृजित करना एक टेढ़ी खीर है। एक-एक पंक्ति को समझने में अत्यधिक परिश्रम की आवश्यकता पड़ती है। उस पर भाषा-शैली की बारीकियाँ कठिनाई को भी और भी बढ़ा देती हैं। उनकी कहानी 'Uncle Ben's Choice' का एक अंश यहाँ प्रस्तुत है-

"It was one New Year's Eve like this. You know how New Year can pass Christmas for jollity for we end-of-month people. By Christmas Day the month has reached twenty-hungry but on New Year your pocket is heavy. So that day I went to the club."

"When I see you young men of now a days say you drink. I just laugh. You don't know what drink is. You drink one bottle of beer or one shot of whisky and you begin to howler like craze-man. That night I was taking it easy or White Horse, all that are desirous to pass from Edinburgh to London or any other place on their road let them repair to the White Horse Cellar God Alnighty"

One thing with me is I never mix my drinks. The day I went to drink whisky I know that is whisky day; if I want to drink beer tomorrow then I know it is beer day; I don't touch any other thing, That night I was on White Horse. I had one roasted chicken and a tin of Guinea Gold, Yes I used to smoke in those days.

प्रस्तुत आवरण में अंकल बेन द्वारा क्रिसमस एवं नववर्ष के अवसर पर खाने-पीने, मौजमस्ती मनाने का वातावरण चित्रित किया गया है। इसमें कई ऐसे वाक्यांश हैं जिन्हें अनुवादक को अफ्रीका के सांस्कृतिक परिवेश को गहराई से समझते हुए उसे हिन्दी में अवतरित करना होगा। उदाहरण के लिए, You Know how New Year can pass Christmas for jollity for we end - of - month people' में वेतनभोगी वर्ग की समस्या निहित है। क्रिसमस से पहले ही जेव खाली हो चुकी होती है और नववर्ष पर वेतन मिलने के कारण जेब भरी हुई होती है। इस बात को समझकर इसका यही अनुवाद किया जा सकता है। By Christmas Day the month has reached twenty-hungry but on New Year pocket is heavy' में भी यही भाव निहित है। यहाँ 'twenty hungry' आर्थिक तंगी का सूचक है। That night I was taking it easy on White Horse 'White Horse के अर्थ को समझे बिना किया गया अनुवाद इस प्रकार होगा- 'उस रात में सफेद घोड़े पर सवार होकर मजे में था जोकि नितान्त हास्यास्पद है। वास्तव में व्हाइट हार्स' मदिरा के ब्रांड का नाम है। इसलिए इसका अनुवाद 'उस रात में व्हाइट हार्स पी रहा था।' 'All that are desirous to pass from Edinburgh to London or any other place on their road, let them repair to the White Horse Cellar- इन पंक्तियों में वक्ता की टोन में अचानक परिवर्तन हो गया है, गद्य से पद्य में। इस परिवर्तन को अनुवाद की भाषा में भी झलकना चाहिए। शराब की बोतल पर लगे लेबल में घोड़ा गाड़ी में जुता हुआ सफेद घोड़ा किसी दूरगामी यात्रा का सूचक है। मदिरापान करने के बाद वक्ता स्वयं उस पर सवार है और अपने साथियों को भी निमन्त्रण दे रहा है। लन्दन से एडिनबरो तक कि यात्रा का प्रसंग पुरातन अंग्रेजी का नमूना है। वास्तव में यहाँ वक्ता अनौपचारिक ढंग से अपने साथियों को व्हाइट हॉर्स की चुस्की लगाने के लिए कह रहा है। 'repair to the White Horse Celler' से अभिप्रायः मदिरालय से है। अतः इसका अनुवाद करते समय अनुवादक को इन सब बातों की ओर ध्यान देने की आवश्यकता है। इन पंक्तियों का अनुवाद 'वे सभी जो एडिनबरो से लन्दन तक सफर करना चाहते हैं, या कहीं और, आने दो उन्हें व्हाइट-हार्स के मयखाने मैं'। 'I had one roasted chicken and a tin of Guinea Gold में गिन्नी गोल्ड के विषय में जानकारी हासिल करना जरूरी हो जाता है। अन्यथा इसका अनुवाद 'सोने का सिक्का' आदि कर दिया जाएगा जोकि सर्वथा अनर्थ ही होगा। 'गिन्नी गोल्ड' सिगरेट के सिगरेट के एक ब्रांड का इसलिए इसका अनुवाद 'मैंने एक रोस्ट चिकन और गिन्नी गोल्ड सिगरेट का टिन भी लिया' ही करना होगा।

(ख) भारतीय संस्कृति का परिवेश–मूल कृति के वातावरण को लक्ष्य भाषा में पुन:सृजित करने के संदर्भ में दूसरा भेद भारतीय संस्कृति के परिवेश से जुड़ा है। निश्चय ही विदेशी परिवेश की तुलना में भारतीय परिवेश को लक्ष्य भाषा में उतारना आसान होता है। किन्तु यह इस बात पर निर्भर करता है कि अनुवादक को दोनों भाषाओं व संस्कृतियों का कितना ज्ञान है और इन दोनों में कितनी दूरी है। यह दूरी जितनी कम होगी, अनुवाद उतना ही आसान होगा और यह दूरी जितनी अधिक होगी अनुवाद उतना ही कठिन होता जाएगा। राजेन्द्र सिंह बेदी द्वारा उर्दू में लिखे गए उपन्यास एक 'चादर मैली' सी का अनुवाद यदि हिन्दी, पंजाबी, या फिर किसी अन्य उत्तर भारत की भाषा में किया जाए तो समस्या इतनी विकट नहीं होगी, क्योंकि इनके रीति-रिवाज़ों में काफी हद तक समानता पाई जाती है। लेकिन यदि इसका अनुवाद मलयालम, तमिल, कन्नड़ में किया जाए या फिर किसी विदेशी भाषा में किया जाए तो अनुवाद उतना ही कठिन होता जाएगा। इस उपन्यास में 'मैली चादर' का संबंध बड़े भाई की विधवा का छोटे भाई से ब्याह कर देने से संबंधित है। यह अन्तर भारत के कुछ हिस्सों में काफी प्रचलित है। 'चादर' का प्रयोग विधवा को आंशिक सुरक्षा प्रदान करने के लिए और 'मैली' का प्रयोग भावनात्मक एवं आर्थिक स्तर पर असुरक्षा का भाव संप्रेषित करने के लिए किया जाता है। इस उपन्यास के शीर्षक का अनुवाद किसी भी लक्ष्य भाषा में करते समय इस सामाजिक प्रथा की विवशता के भाव को संप्रेषित नहीं किया जा सकेगा। भारतीय भाषाओं में तो फिर भी काम चल सकता है, किन्तु विदेशी भाषा में कठिनाई होगी। इसी प्रकार रानो और मंगल का संबंध पहले माँ–बेटे का था, किन्तु अब उन्हें पति-पत्नी की भूमिका निभानी पड़ेगी। इसके कारण जो द्वन्द्ध होगा उसे संप्रेषित करने में भी पहले जैसी ही समस्या सामने आएगी। एक अन्य शब्द 'सौत' में निहित बहु-विवाह का भाव भी ऐसी ही समस्या उत्पन्न करता है। यद्यपि अनेक समाजों में बहुविवाह की प्रथा प्रचलित है, किन्तु 'सौत' में निहित प्रतिद्वंद्वता, ईर्ष्या एवं अधिकार जैसे सूक्ष्म भावों को अनुवाद में सुरक्षित रखते समय भी समस्या होगी। भारतीय पाठक तो फिर भी इस भाव को पकड़ ही लेगा, किन्तु विदेशी पाठक के लिए कठिनाई हो सकती है। इसी उपन्यास में कई ऐसे वाक्यांश हैं जिनका अनुवाद भारतीय पाठकों के लिए समझना आसान है, किन्तु विदेशी पाठकों के लिए कठिन। उदाहरण के लिए, 'सब खिली कपास की तरह', 'गरीब की जोरू सब की भाभी', 'पीछे कोई न रहा', 'महाभारत शुरु हो गई', 'मरियम', 'पंचों में परमेश्वर' आदि का अनुवाद भारतीय भाषाओं में किया जाए तो अनुवादक और पाठक दोनों के लिए सुविधा रहेगी। इनमें प्रथम एवं द्वितीय वाक्यांशों का अनुवाद तो सहज है, जैसे 'Like a field of cotton flowers' और 'a poor man's wife is everyone's sister-in-law', किन्तु तीसरे वाक्यांश में समस्या आएगी, क्योंकि परम्परा को पूर्णत: लक्ष्य भाषा में नहीं उतारा जा सकता, जिससे उसका अर्थ समझने में कठिनाई होगी। इसका अनुवाद यदि– 'the past simply ceased to exist' किया जाए तो उसमें विवाहित स्त्री का अपने मायके पर निर्भर रहने का भाव नहीं आ पाया है। 'पीछे' के पयार्य 'past' में यह अर्थछवि छूट गई हैं। ऐसे ही अगले तीन वाक्यांशों का अनुवाद अंग्रेजी के समतुल्य पर्यायों के चयन से संभव हो सकता है–'a veritable bedlam was let loose; 'Holy Mother', 'Five elders are the voice of God' कहना न होगा कि वातावरण के पुन: सृजन में शब्दों का महत्वपूर्ण योगदान रहता है, अत: इनका चुनाव वातावरण की दृष्टि से सावधानीपूर्वक करना चाहिए।

(ग) आंचलिक परिवेश–मूल कृति के वातावरण को लक्ष्य भाषा में पुन:सृजित करने के संदर्भ में तीसरा भेद आंचलिक पृष्ठभूमि वाली रचनाओं के अनुवाद से संबंधित है। आंचलिक उपन्यासों व कहानियों की लेखन-प्रक्रिया एवं सांस्कृतिक शब्दावली अत्यंत सूक्ष्म एव जटिल होती है। इन रचनाओं के अनुवाद में शैली और शिल्प की सूक्ष्मताओं, अर्थ-छायाओं और लेखक के प्रतीकात्मक एवं कांव्यात्मक प्रयोगों पर बहुत ध्यान दिया जाना चाहिए। इस संदर्भ में तत्संबंधित अंचलों के लोक-जीवन का निकटतम परिचय और स्थान विशेष की पृष्ठभूमि का ज्ञान होना जरूरी है। इसके अलावा अनुवादक को मिथकीय, दार्शनिक व सामाजिक परिकल्पनाओं एवं सांकेतिक शब्दों की अर्थछायाओं का संकेत भी देना जरूरी हो जाता है वरना लक्ष्य भाषा के पाठक के लिए उसे हृदयंगम करना कठिन हो जाता है और अनुवादक के लिए भी अनुवाद करना एक कठिन कार्य बन जाता है। आंचलिक रचनाओं की भाषा क्षेत्र विशेष की

संस्कृति का प्रतीक होता है। समानार्थी प्रतीक लक्ष्य भाषा में मिल पाना आसान बात नहीं होता, क्योंकि प्रदेश विशेष के जन–जीवन का अपना विशेष महत्व होता है। इस संबंध में लियोनार्ड फार्स्टर का प्रतीकवादी सिद्धांत बहुत महत्वपूर्ण है। आंचलिक रचनाओं के अनुवाद की समस्या का भाषा के स्तर पर भी समाधान ढूंढना होता है। पात्रों के नामों के उच्चारण से लेकर आंचलिक शब्द–प्रयोगों तक कि समस्याओं को सुलझाना वास्तव में एक श्रमसाध्य कार्य है। उदाहरण के लिए 'मैला आंचल' के मेरीगंज की फुलिया, 'पानी के प्राचीर' के पांडे पुरवा का नीरू, 'बूँद और समुद्र' के लखनऊ की वनकन्या, 'ब्रह्मपुत्र' के दिसांगमुख की आरती, 'चेम्मीन' के नीकुन्नग समुद्र तट का पलनी आदि पात्र अपने प्रदेश विशेष की विशिष्टताओं से पूरिपूर्ण है। ऐसे पात्रों और उनकी भाषा के लक्ष्य भाषा में समानार्थी स्थितियों में प्रस्तुत करते समय अनुवादक को एक सृजनात्मक दायित्व निभाना पड़ता है।

(2) भाषा प्रयोग–कथा–साहित्य के अनुवाद की समस्याओं के संदर्भ में दूसरी समस्या भाषा–प्रयोग के स्तर पर है। यह विधा चूंकि वर्णनात्मक विधा है इसलिए इसमें पठनीयता का गुण सर्वोपरि होना चाहिए। पठनीयता में रोचकता का गुण अति आवश्यक होता है ओर रोचकता के लिए भाषा का प्रवाह भी अच्छा होना चाहिए। इसके लिए यथासंभव मुहावरों एवं लोकोक्तियों का काफी प्रयोग करना चाहिए। लम्बे वाक्यों को छोटे–छोटे वाक्यों में तोड़ने से भी प्रवाह में गति आती है। जटिल संरचनाओं का साधारणीकरण करने से भी प्रवाह में वृद्धि होती है। कहानी के अनुवाद के कुछ उदाहरण यहाँ देना चाहूँगा। रस्किन बान्ड की कहानी 'द काईट मेकर' से एक गद्यांश प्रस्तुत है–

"The old man remained dreaming in the sun.His Kite shop had gone . The permises have been sold many years ago to a junkdealer but he still made kites for his own amusement grandson and as playthings for his grandson, Ali Not many peoplebought kites these days . Adults disdained them and children preferred to spend their money all the movies . Moreover there were few open spaces left for flying kites. The city had swallowed up the green maiden which had stretched from the old fort walls to the river bank. But the old man remembered a time when when grown ups flew kites from the maidan, and great battles were fought, the kites swerving and swooping in the sky, tangling with each other, until the string of one was cut then beaten but liberated kite would float away into the blue unknown. There was a good deal of betting and money frequently changed hands."

प्रस्तुत गद्यांश के सामान्य अनुवाद का नमूना निम्नलिखित है–

''बूढ़ा आदमी धूप में सपने देखता रहा। उसकी पतंगों की दुकान चली गई थी, उसे कई वर्ष पूर्व कबाड़ी के यहाँ बेच दिया गया था। लेकिन वह अभी अपने मनोरंजन के लिए और अपने पोते अली के खेलने के लिए पतंगें बनाता था। आजकल बहुत सारे लोग उससे पतंगें नहीं खरीदते थे। बड़े लोग उनसे घृणा करते थे और बच्चे अपने पैसे सिनेमा पर खर्च करना अच्छा समझते थे। इसके अतिरिक्त पतंगें उड़ाने के लिए बहुत कम खुले स्थान रह गए थे। शहर उन हरे मैदानों को निगल गया था जो पुराने किले की दीवारों से नदी के किनारे तक फैला हुआ था, किंतु बूढ़े आदमी को वह समय याद था जब बड़े लोग मैदान पर पतंगें उड़ाते थे, महान युद्ध लड़े जाते थे, पतंगें आकाश में हिलती रहती थीं, वे एक दूसरे से उलझ जाती थी, जब तक कि एक का धागा न कट जाए। फिर पिटी हुई व स्वतंत्र पतंग नीले व अनजाने स्थान पर तैर कर चली जाती थी। वहाँ बहुत सारी शर्ते लगती थीं, और पैसा प्रायः हाथ बदलता था।''

इस अनुवाद में सफल अनुवाद के अनेक गुण गायब हैं। कुछ भी सृजनात्मक नहीं है इसमें, बस शब्दानुवाद पर ही निर्भर किया गया है। ऐसा अनुवाद न ही किया जाए तो अच्छा। कुछ स्थलों पर सुधार की गुंजाइश इस प्रकार है –

	मूल	सामान्य अनुवाद	प्रस्तावित अनुवाद
(i)	remained dreaming in the sun	धूप में सपने लेता रहा	धूप में बैठा सपने लेता रहा
(ii)	shop had gone	दुकान चली गई थी	दुकान जाती रही थी
(iii)	Adults disdained them	बड़े लोग इनसे घृणा करते थे	युवा लोग उनसे घृणा करते थे
(iv)	The city had swallowed up	शहर निगल गया था	शहर में विलीन हो गया था
(v)	great battles were fought	महान युद्ध लड़े जाते थे	पतंगबाजी के बड़े-बड़े मुकाबले हुआ करते थे
(vi)	beaten but liberated kite	पिटी हुई और स्वतंत्र पतंग	हारी हुई और काटी हुई पतंग
(vii)	string was cut	धागा कट जाता	डोर कट जाती
(viii)	The blue unknown	नीले व अनजाने स्थान पर	नीले आकाश में
(ix)	changed hands	हाथ बदले	आदान-प्रदान किया

इन वाक्यांशों के अनुवाद को ध्यान में रखकर किया गया अनुवाद निश्चय ही रोचक, प्रवाहमयी एवं सहज होगा।

(3) सही पर्यायों का चयन-कहानी के अनुवाद की तीसरी समस्या अर्थ के स्तर पर ही सही पर्यायों व वाक्यांशों के चयन की है। इस संदर्भ में कुछ उदाहरण सॉमरमट मॉम की कहानी **'द एंट एण्ड द ग्रासहापर'** से प्रस्तुत है।

	मूल	सामान्य अनुवाद	प्रस्तावित अनुवाद
(i)	Philander	इश्कबाजी	गुलछर्रे उड़ाना, रंगरलियां मनाना
(ii)	black sheep of society	समाज का कलंक	गद्दार, समाज का दुश्मन, समाजद्रोही
(iii)	held out my hand	हाथ बढ़ाया	नमस्ते की
(iv)	saving your presence	तुम्हारी उपस्थिति बचाते हुए	अगर बुरा न मानें, गुस्ताखी माफ हो, (प्राचीन अंग्रेजी में प्रचलित)
(v)	Leborious summer	अध्यावसायी, कठोर ग्रीष्म ऋतु	झुलसाने वाली गर्मी का मौसम
(vi)	He found him shaking cocktail	कॉकटेल हिलाते हुए	कॉकटेल तैयार करते हुए
(vii)	band box	....	बैन्ड बाक्स
(viii)	box seat	....	बाक्स-सीट

स्पष्ट है कि गलत पर्यायों के चयन के अनुवाद पर कितना बुरा प्रभाव पड़ता है।

(4) लक्ष्य भाषा में मुहावरों का प्रयोग-इस संदर्भ में चौथी समस्या लक्ष्य भाषा में मुहावरों एवं लोकोक्तियों के प्रयोग के स्तर पर है। भाषा को प्रवाहमयी, सहज और बोधगम्य बनाने में इनका बहुत बड़ा हाथ होता है। इसलिए स्त्रोत भाषा में सामान्य भाषा का प्रयोग होने पर भी अनुवादक को उपन्यासों एवं कहानियों के अनुवाद में यथासंभव मुहावरों और लोकोक्तियों का प्रयोग करना चाहिए। कुछ उदाहरण यहां प्रस्तुत हैं-

	मूल	सामान्य अनुवाद	प्रस्तावित अनुवाद
(i)	I could not make out anything	मैं कुछ नहीं समझ सका	मेरे पल्ले कुछ नहीं पड़ा
(ii)	Better you get your daughter married	अच्छा होगा यदि तुम अपनी लड़की की शादी कर दो	अब तुम्हें बेटी के हाथ पीले कर देने चाहिए।
(iii)	I have not devoid of manly fortitude	मैं पौरूष से वंचित नहीं हूं	मैंने हाथों में चूड़ियाँ नहीं पहन रखी हैं।

स्वयं आकलन प्रश्न

प्रश्न-1 आज के युग में किस साहित्य का अनुवाद अन्य साहित्यिक विधाओं की तुलना में अधिक हो रहा है।

प्रश्न-2 कालिदास के 'अभिज्ञान शाकुंतलम' का अंग्रेजी में अनुवाद किसने और कब किया ?

6.4 सारांश

किसी भाषा के कथा–साहित्य का किसी अन्य भाषा में कथा–साहित्य के रूप में अनुवाद को कथानुवाद के रूप में अनुवाद को कथानुवाद के रूप में रखा जा सकता है। इसके अंतर्गत रेखाचित्र, निबंध, संस्मरण आदि अन्य विधाओं के भी कथासाहित्य के रूप में अनुवाद हो सकते है। कथा साहित्य जीवन की अभिव्यक्ति है और उसका अनुवाद उनकी अर्थ बहुलता को विस्तार देकर समय के लम्बे अंतराल में उसे प्रासंगिक बनाए रखता है। यही अर्थ बहुलता अन्य भाषा में उस रचना की मान्यता का आधार भी बनता है। पृष्ठभूमि को ठीक से समझना भी अनिवार्य है और सुविधाजनक है।

6.5 कठिन शब्दावली

संप्रेषण – स्थानांतरित करना

तथ्यपरक – तथ्यात्मक

स्थिरीकरण – स्थिर करना

लाक्षणिक– लाक्षणिक संबंधी

औपचारिक– उपचार संबधी

6.6 स्वयं आकलन प्रश्नों के उत्तर

उ.1 कथा साहित्य का अनुवाद

उ.2 विलियम जोंस 1789 में

6.7 संदर्भित पुस्तकें

1. डॉ. रवीन्द्रनाथ श्रीवास्तव और कृष्ण कुमार गोस्वामी, अनुवाद : सिद्धांत और समस्याएँ, आलेख प्रकाशन, दिल्ली।
2. सुरेश कुमार, अनुवाद सिद्धान्त की रूपरेखा, वाणी प्रकाशन, दिल्ली।
3. डॉ. नगेन्द्र (से), अनुवाद विज्ञान, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली।

6.8 सात्रिक प्रश्न

प्रश्न–1 कथानुवाद के स्वरूप को विस्तारपूर्वक स्पष्ट कीजिए।

प्रश्न–2 कथानुवाद के स्वरूप सहित समस्यायों पर प्रकाश डालिए।

*****

इकाई-7
नाट्यानुवाद

संरचना

7.1 भूमिका

7.2 उद्देश्य

7.3 नाट्यानुवाद का स्वरूप

7.3.1 नाट्यानुवाद की प्रक्रिया

7.3.2 नाट्यानुवाद की समस्याएँ

स्वयं आकलन प्रश्न

7.4 सारांश

7.5 कठिन शब्दाबली

7.6 स्वयं आकलन हेतु प्रश्नों के उत्तर

7.7 संदर्भित पुस्तकें

7.8 सात्रिक प्रश्न

7.1 भूमिका

इकाई छः में हमने कथानुवाद के स्वरूप एवं कथानुवाद की समस्याओं का गहन अध्ययन किया है। इकाई सात में हम नाट्यानुवाद के स्वरूप, नाट्यानुवाद की प्रक्रिया तथा नाट्यानुवाद की समस्याओं का विस्तारपूर्वक अध्ययन करेंगे।

7.2 उद्देश्य

इकाई सात का अध्ययन करने के पश्चात् हम यह जानने में सक्षम होगें कि –

1. नाट्यानुवाद क्या है ?
2. नाट्यानुवाद का स्वरूप क्या है ?
3. नाट्यानुवाद की प्रक्रिया क्या है ?
4. नाट्यानुवाद की समस्याएँ क्या है ?

7.3 नाट्यानुवाद का स्वरूप

भारत में नाट्यानुवाद की वर्तमान स्थिति पर दृष्टि डालने से ज्ञात होता है कि आजकल हिंदी में जितने नाटक रंगमंच पर अभिनीत हो रहे हैं, उनमें अधिकतर अनुवाद हैं। हमारी भाषा में नाटक लिखें तो जा रहे हैं लेकिन उनके मंचन की तरफ विशेष ध्यान नहीं दिया जाता है। रंगमंच के लिए नाटक लिखने के लिए यह आवश्यक है कि रंगमंच की जो संस्था है वह नाटक के लेखक, उसके पात्रों और उसके निर्देशक से अपेक्षित तालमेल स्थापित करें। किंतु ऐसा हो नहीं पा रहा है। इस संदर्भ में अनेक रंगकर्मियों की शिकायत है कि हिन्दी नाटक में मौलिकता की कमी प्रायः अखरती है और इसने हिन्दी नाटक को बहुत नुकसान पहुँचाया है। हिन्दी नाटक अधिकतर अनुवादों पर टिका हुआ है। अतः यह निर्विवाद कहा जा सकता है कि हिंदी-रंगमंच के विकास में अनुदित नाटकों का विशेष योगदान है। विदेशी एवं भारतीय भाषाओं के अनेक नाटक हिन्दी में अनुवाद के माध्यम से ही आये हैं।

ऐसे अनुदित नाट्क पाठ्यानुवाद कहलाते हैं। किन्तु जो पढ़ने और रंगमंच दोनों में सफल होते हैं, उन्हें नाट्यानुवाद कहते हैं। 'नाटक दृश्यकाव्य होने के नाते रंगमंच पर ही पूर्ण होता है। केवल पढ़ने के लिए लिखा हुआ नाटक वस्तुतः एक शैली का उपन्यास या गप्प है।

नाट्यानुवाद– किसी भी नाट्य कृति का नाटक के रूप में ही अनुवाद करना नाट्यानुवाद कहलाता है। नाटक रंगमंचीय आवश्यकताओं एवं दर्शकों को ध्यान में रखकर लिखा जाता है। अत: इसके अनुवाद के लिए अभ्यास की आवश्यकता होती है। संस्कृत के नाटकों के हिन्दी अनुवाद तथा शेक्सपियर के नाटकों के अन्य भाषाओं में किए गए अनुवाद इसके उत्कृष्ट उदाहरण है।

कथा अनुवाद– कथा अनुवाद के अन्तर्गत कहानियों एवं उपन्यासों का कहानियों एवं उपन्यासों के रूप में ही अनुवाद किया जाता है। विश्व प्रसिद्ध उपन्यासों एवं कहानियों के अनुवाद काफी प्रचलित एवं लोकप्रिय हैं। **मोपासाँ** एवं प्रेमचन्द की कहानियों का दुनिया को विभिन्न भाषाओं में अनुवाद हुआ है। रूसी उपन्यास 'माँ', अग्रेजी उपन्यास 'लैडी चैटर्ली का प्रेमी' तथा हिन्दी के 'गोदान', 'त्यागपत्र' तथा 'नदी के द्वीप' के विभिन्न भाषाओं में अनुवाद हुए हैं।

अन्य साहित्यिक विधाओं के अनुवाद–अन्य साहित्यिक विधाओं के अन्तर्गत रेखाचित्र, निबन्ध, संस्मरण, रिपोर्ताज, डायरी एवं आत्मकथा आदि के अनुवाद आते हैं। प. जवाहर लाल नेहरू की कृति 'डिस्कवरी ऑफ इंडिया तथा महात्मा गांधी एवं हरिवंशराय बच्चन की आत्मकथाओं के विभिन्न भाषाओं में किए गए अनुवाद इसी श्रेणी के अन्तर्गत आते हैं।

अनुवाद हर विधा का अलग–अलग प्रकार से होता है और हर विधा की अपनी एक विशेषता है। इसी विशेषता के कारण उसकी अनुवाद–प्रक्रिया भी अलग–अलग हो जाती है। कविता का अनुवाद अत्यंत कठिन है, बल्कि कहना चाहिए कि असंभव सा है। अनुवादक को मूल लेखक की मानसिकता से तारम्त्य स्थापित करना पड़ता है, जो एक कठिन कार्य है और जिसे एक कवि अनुवादक ही कर सकता है। इसी प्रकार कहानी का अनुवाद करते समय कहानी के इंडियम को ध्यान में रखना होता है। ऐसे ही नाटक का अनुवाद करना भी उतना ही कठिन है जितना कि नाटक लेखन का काम। दरअसल नाटक से जुड़ा हुआ व्यक्ति ही नाटक का अनुवाद कर सकता है। नाटक के अनुवादक के लिए रंगमंच का व्यावहारिक ज्ञान होना अत्यन्त आवश्यक है। नाटक में बहुत सारी तकनीकी बातें होती हैं जिन्हें अनुवादक को जानना जरूरी हो जाता है अन्यथा वह अनुवाद कर नहीं सकेगा। नाटक में भी रंगमंच, टी. वी., रेडियो आदि के लिए अनुवाद अलग–अलग होगा। इन सबकी तकनीकी जरूरतें अलग–अलग होने के कारण नाटक की अनुवाद–प्रक्रिया भी अलग हो जाती है। नाटकों की अनुवाद–प्रक्रिया निश्चित रूप से साहित्य की अन्य विधाओं से भिन्न होती है, क्योंकि नाटक तो देखा जाता है और अन्य विधाएँ पढ़ी जाती हैं।

7.3.1 नाट्यानुवाद की प्रक्रिया

अनुवाद का अर्थ, रचना–संस्कृति को पुन: सृजित करना है। किसी भी रचना का अनुवाद करते समय दो सवाल सहज ही सामने आते हैं, पहला तो यह कि इस रचना का अनुवाद क्यों? दूसरा, उस रचना का अनुवाद कैसे? यानी पहला सवाल रचना के चुनाव और दूसरा अनुवाद की प्रक्रिया से जुड़ा हुआ है। यह भी सच है कि बीसवीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में जितनी रचनाओं का अनुवाद हिन्दी या अन्य भारतीय भाषाओं में हुआ है, इससे पहले कभी नहीं हुआ। स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान लेखक जहाँ अपनी संस्कृति की जड़ों को पहचान रहा था अपने ढंग से उसे पुनर्व्याख्यायित कर रहा था, वहीं पचास के बाद लेखक ने विश्व–साहित्य को पहले से कहीं ज्यादा व्यापक स्तर पर देखने–परखने की कोशिश की। यह कोशिश इक्का–दुक्का स्तर से शुरू होकर बड़े पैमाने पर होने लगी और विश्व के अनेक देशों का साहित्य हिन्दी माध्यम से हमारे सामने आने लगा। अनुवाद, भावानुवाद, पुन: सर्जन या रूपांतर की प्रक्रिया पर भी बात होने लगी। जाहिर है कि अधिक से अधिक देशों के साहित्य को जानने की ललक एक स्वागत योग्य बात थी, पर इसके साथ सबसे बड़ी समस्या भाषा की थी। प्राय: यह माना जाता है कि साहित्य की मूल भाषा से किया गया अनुवाद या पुन: सर्जन मूल के सबसे ज्यादा नज़दीक होता है और सीधे मूल भाषा (स्रोत भाषा) से ही लक्ष्य भाषा में अनुवाद होना चाहिए। एक ओर तो अधिक से अधिक साहित्य जानने की ललक, इसी बहाने दूसरे देशों के परिवेश उनके लोगों की धड़कनें, उनके जीवन–मूल्यों को जानने–समझने परखने की इच्छा और दूसरी ओर भाषा का व्यवधान। कुछ साल पहले तक ही देखें तो प्राय: उन्हीं कृतियों का अनुवाद संभव हुआ है जो अंग्रेजी में उपलब्ध थीं ओर अंग्रेजी

में तो पश्चिमी देशों ओर पश्चिम के भी पूँजीवादी, सामंतवादी देशों का साहित्य ही उपलब्ध रहा तथा शेक्सपियर, बर्नार्डशा या इब्सन जैसे लेखकों का ही अनुवाद बार-बार हुआ। अंग्रेजी के माध्यम से ही अमेरिकी साहित्य भी हिन्दी में आने लगा। कुछ अनुवाद ओर कुछ रूपांतर के बहाने कविता के अनुवाद के बाद सर्वाधिक अनुवाद या रूपांतर नाटकों का हुआ। यह संभवतः इसलिए कि इस सदी में छठे दशक के आरंभ से हिन्दी रंगमच एक रंगांदोलन के रूप में विकसित होने लगा था।

पश्चिमी पूँजीवादी देशों के साहित्य का अनुवाद कम, रूपांतर अधिक हुआ, कारण है वहाँ और यहाँ के परिवेश में अंतर, वहाँ के जीवन-मूल्यों और भारतीय जीवन-मूल्यों में बड़ा फर्क है। आदमी की मूल-वृत्तियों में कोई अंतर न होते हुए भी सामाजिक स्तर पर उनकी अभिव्यक्ति में अंतर है। जो बात अमेरिकी समाज में स्वीकार्य है, वह हमारे यहाँ एक सामाजिक या नैतिक मूल्य के रूप में स्वीकार नहीं हुई। उदाहरण के लिए, यूजीन ओ नील के त्रासद नाटकों की बात की जा सकती है। अकेलेपन की त्रासदी, घोर व्यक्तिवादिता, नैराश्य आदि हमारे समाज में आज भी स्वीकृत मूल्य नहीं है। यह अलग बहस की बात हो सकती है लेकिन यह सच है कि भारतीय समाज आज भी उसी साहित्य को ज्यादा खुले मन से स्वीकार करता है जो आदमी की रुचियों को परिमार्जित और परिसंस्कारित करके उदात्त मूल्य की ओर ले जाता है, उसे समाज के साथ जोड़ता है। यही कारण है कि पिछले तीस सालों में भारतीय और खासकर हिन्दी का लेखक समाजवादी देशों या फिर अफ्रीकी साहित्य के प्रति ज्यादा आकृष्ट हुआ है। वह पश्चिमी यूरोप की अपेक्षा पूर्वी यूरोप से अधिक जुड़ा है। इधर रूसी तथा चीनी साहित्य भी अनुवाद के माध्यम से सामने आया है जिसकी लंबी तालिका अलग से बनाई जा सकती है।

समाजवादी देशों के साहित्य से जुड़ने का मुख्य कारण यह रहा है कि वहाँ के जीवन-मूल्य हमारे जीवन-मूल्यों के करीब बैठते हैं, मानवीय स्तर पर बेहतर विश्व की संकल्पना को साकार करने के लिए यह व्यवस्थाएँ ज्यादा तत्पर और ईमानदार नज़र आती हैं। पूँजीवादी व्यवस्था में पनपे छोटे-छोटे स्वार्थ यहाँ संघात का कारण नहीं बनते, बल्कि यहाँ का साहित्य मानवीय स्तर पर बड़े सवालों से जूझता है। वैसे ही जैसे भारतीय साहित्यकार जूझ रहा है। इसलिए हिन्दी लेखकों का इस ओर आकृष्ट होना बहुत ही स्वाभाविक रहा है।

समाजवादी या अफ्रीकी देशों के साहित्य के अनुवाद या रूपांतर में सबसे बड़ी कठिनाई भाषा की रही है। इसे भी लेखकों ने अंग्रेजी के माध्यम से यह सोचकर हल किया है कि क्या इतने विपुल साहित्य से हम इसलिए दूर रहे है कि हम वह भाषा नहीं जानते। कोई आखिर कितनी भाषाएँ सीख सकता है? आज भारतीय साहित्य की केंद्रीय भाषा हिन्दी बन गई है। किसी भी रचना का हिन्दी में अनुवाद होते ही, उसका अन्य भारतीय भाषाओं में अनुवाद सुलभ हो जाता है, ठीक इसी तरह से अंग्रेजी में किसी कृति के उपलब्ध होने से वह अन्य भाषाओं में भी उपलब्ध हो जाती है। इस प्रक्रिया में हम स्रोत भाषा से दूर जरूर होते हैं पर इन जीवन-मूल्यों पर बेहतर पकड़ होने के कारण हम मूल के आसपास ही होते है। किसी भाषा के ज्ञान के अभाव में उस भाषा के लेखक के साथ बैठकर और एक दुभाषिया बिठाकर अनुवाद में संभवतः बेहतर परिणाम प्राप्त किए जा सकते है। ऐसा कितने लोगों के लिए संभव होता है। कभी लेखक ही उपलब्ध नहीं, तो कभी दूरियों के कारण यह संभव नहीं हो पाता।

जब मुझे बल्गारिया कि कुछ कविताओं के अनुवाद का अवसर मिला, तब अकविता का एक बल्गारिया विशेषांक निकल रहा था, उसी के लिए मैंने कुछ कविताओं का चुनाव करके अनुवाद किया। मेरे साथ विनोद शर्मा भी थे, हम दोनों अनुवाद करते, एक दूसरे को सुनाते और जहाँ संभव होता, सुझाव देते। इस अनुवाद प्रक्रिया में कई उलझनें भी सामने आईं। कविता के कुछ बिंब एवं प्रतीक अजनबी से लगे पर उन्हें जल्दी ही हमने आत्मसात कर लिया। इस प्रक्रिया से हमने यह भी सीखा कि हम एक भाषा से दूसरी भाषा में सीधा-सीधा अनुवाद नहीं कर रहे, बल्कि पूरी की पूरी कविता को फिर से रच रहे हैं। अपनी कविता रचने में जो सुख मिलता है, वैसा ही सुख हमें इन कविताओं के अनुवाद में भी मिला था। इसी से लगा कि यह कोई भाषांतर नहीं बल्कि खुद को रचना लोक में उतारना है और एक रचना को अपनी भाषा में पुनःसर्जित करना है। संभवतः इसीलिए उन्हें पसंद भी किया गया।

इससे पूर्व में पीटर शेफर के नाटक–'ब्लेक कामेड़ी' का रूपांतर कर चुका था। इस नाटक को ज्यों–ज्यों पढ़ता गया, लगता गया कि इसका मात्र अनुवाद हमारी सामाजिक स्थितियों, हमारे जीवन–मूल्यों और हमारे रंगमंच के अनुकूल नहीं है। अंग्रेजी परिवेश, अंग्रेजी समाज के मूल्यों और उनकी रंगमंच पर अभिव्यक्ति हमारे जीवन के करीब नहीं लगती। उदाहरणार्थ, पात्रों के बार–बार चुंबन, आलिंगन और पिता–पुत्री का एक साथ शराब पीना जैसी कुछ बातें यहाँ स्वीकार्य नहीं है। जबकि वहाँ के आदमी और यहाँ के आदमी की मूल वृत्तियों में कोई फर्क नहीं है। साहित्य में आई यह मूल वृतियाँ ही हमें एक दूसरे के साथ जोड़ देती हैं। नाटक वहाँ के पाखंड और आडम्बर पर व्यंग्य भी करता था, वैसा ही पाखंड और आडंबर हमारे समाज में भी है। मैंने उसे रूपांतरित करने का निर्णय लिया और भारतीय परिवेश के मुताबिक उसका रूपांतर 'अंधेरे में नाम' से किया। भारतीय परिवेश में ढलने के कारण वह बिल्कुल अपना लगने लगा और अनेक नाट्य–मण्डलियों ने देश के अनेक शहरों में उसका मंचन भी किया। इसी बीच कुछ अफ्रीकी कविताओं के अनुवाद करने का अवसर भी मिला।

कहने का अर्थ यह है कि किस रचना का अनुवाद होना चाहिए और किसका रूपांतर इसका निर्णय लेकर कोई रचनाकार आगे बढ़ सकता है। यह भी सच है कि तकनीकी अनुवाद करने के लिए सृजनात्मक अनुवाद संभव नहीं होता और जो लोग पेशों की तरह या फिर मशीन की तरह से अनुवाद करते चले जाते हैं, वे प्रायः अच्छी रचनाओं की हत्या कर देते हैं। इसके विपरीत जब भी कोई रचनाकार किसी दूसरी कृति से प्रभावित होकर अनुवाद करता है, शौक से करता है, तो ऐसी रचनाएँ बेहतर रूप से हमारे सामने आती है।

इंडो–बल्गारियन लिटरेरी क्लब की एक बैठक में यह फैसला हुआ कि कुछ चुनिंदा बल्गारियाई साहित्य का हिन्दी में अनुवाद किया जाए और हिन्दी के साहित्य को बल्गारियाई भाषा में अनूदित करवाकर आदान–प्रदान की एक प्रक्रिया शुरू की जाए। इसी प्रक्रिया कि एक कड़ी के रूप में श्री कर्तार सिंह दुग्गल ने एक नाटक का अनुवाद मेरे जिम्मे किया। इसके लिए वालेरी पित्रोव का एक नाटक चुना गया। यह नाटक भी अंग्रेजी में उपलब्ध हुआ। बल्गोरियन मुझे आती भी नहीं, अंग्रेजी का अनुवाद स्पास निकालेव ने 'ह्वैन दि रोजेजे और डांसिग' नाम से किया है। तय हुआ कि मैं बैठक में इस नाटक के चालीस–पचास पृष्ठ अनुवाद करके पढ़ें और उस पर बात होती चले। मैं पूरा नाटक पढ़ गया, ज्यों–ज्यों इसे पढ़ता गया, अपने समाज से जोड़कर इसे देखता रहा। अपने रंगमंच से जोड़कर परखता रहा। यह प्रश्न कि इसका अनुवाद करें या रूपातर। रूपांतर करने की जरूरत मुझे इसलिए महसूस नहीं हुई कि सामाजिक परिवेश, चरित्रों की बनावट और रंगमंच की जरूरत के मुताबिक मुझे यह अपना–सा लगा।

मन में सबसे पहला सवाल यह आया कि यह उपलब्ध नाटक मूल नाटक के कितना करीब होगा और फिर जब में उस अनुवाद का अनुवाद करूंगा तो वह मूल से कितना दूर हो जाएगा? ऐसे में कहीं मूल रचना से में बहुत दूर तो नहीं चला जाऊँगा? रंगमंच की जरूरतों पर भी मैंने विचार किया। अपना हिन्दी रंगमच पश्चिमी रंगमंच की दृष्टि से तकनीकी रूप में अभी शायद बहुत विकसित न हो तो भी हमारे रंगमच ने अपना एक मुहावरा अर्जित किया है और मुश्किल से मुश्किल नाट्यलेखों को भी एक–से–अधिक शैलियों में मंचित किया है। तकनीकी दृष्टि से यह नाटक मुझे बहुत सक्षम ओर विकसित लगा। बल्गारियाई रंगमंच के विकसित स्वरूप की ओर भी यह नाटक संकेत करता है। अतएव मैंने दो फैसले किए, पहला यह कि नाटक का रूपांतर नहीं, अनुवाद होगा और अनुवाद का मेरे लिए अर्थ होगा पूरी रचना को फिर से रचना। उसे पुनः सर्जित करता। अनुवाद शब्द तकनीकी अर्थ में जो भ्रम खड़ा करता है, वही सबसे पहले ढूँढना जरूरी है, दूसरा यह कि तकनीकी दृष्टि से इसमें परिवर्तन नहीं करूंगा और मंचित करने की स्थिति में किसी भी निर्देशक को नाट्यालेख के अनुरूप ही नाट्यशैली को सृजित करना होगा, गढ़ना होगा।

नाटक गद्य पद्य में लिखा हुआ है, पद्य कहीं तुकांत है कहीं नहीं भी हैं, पर ऐसे स्थल कम है। मन में सवाल उठा कि सारे नाटक को गद्य में ही क्यों न बदल दिया जाए। फिर लगा कि नहीं यह मूल–आलेख का अनुवाद है तो मूल–आलेख में भी कविता होगी और अब कविता को गद्य में ढाल देना सुविधा का रास्ता है। इससे नाटक के मूलस्वरूपं से बहुत दूर होना होगा। इसी के साथ जुड़ा सवाल यह भी था कि क्या हिन्दी अनुवाद तुकांत किया जाए

या मुक्त छंद में। छंद का अनुशासन कविता के भाव को कई बार कम करता है खंडित करता है क्योंकि तब छंदानुसार निर्वाह करना बहुत जरूरी हो जाता है। कविता में लय रहे तो भाव और अंदाजे-बयाँ भी बना रहता है। इसलिए मैंने काव्य का अनुवाद करते हुए कहीं तुक तो कहीं भावमुक्त लय का ही सहारा लिया है। मकसद तो बात को, वस्तु को, या तनाव को या नाट्य-गति को संप्रेषित करने का है। उदाहरणार्थ, अंग्रेजी में-नाटक की शुरुआत में युवक कहता है-

All though the trivial may born ye I truly must implore your pardon.

(इसका अनुवाद मैंने किया) -

युवक-हो सकता है वह छोटी-सी बात, करे आपको बोर।

क्षमा माँग लेता हूँ पहले, नहीं कीजिए शोर।।

भारतीय रंग-परंपरा के अनुसार नाटक नाटककार या नाटक की वस्तु के बारे में सूचना सूत्रधार या नट-नटी के माध्यम से मिलती है। अग्रेजी में 'नेरेटर' की परिकल्पना है लेकिन नेरेटर सूत्रधार की कल्पना के कहीं आसपास भी नहीं बैठता। युवक को सूत्रधार के रूप में बदला जा सकता था, पर वह रूपांतर होता, भावानुवाद में इस तरह की जरूरत नहीं होती। यहाँ 'बोर' शब्द का इस्तेमाल बोर के रूप में किया गया क्योंकि यह आम बोलचाल में हमारे यहाँ स्वीकृत शब्द है, 'नहीं कीजिए शोर' अंग्रेजी की दो पंक्तियों में कहीं नहीं है। इससे नाट्य-प्रस्तुति की शुरुआत को बल मिलता है, यहाँ काव्य की अर्द्धपंक्ति कहीं भी नाट्य-वस्तु, नाट्य-गति या नाट्य प्रस्तुति को तोड़ती नहीं है। कहने का अर्थ यही कि भावानुवाद करते हुए कुछ छोड़ने और कुछ जोड़ने की छूट भी पुन: सर्जन करने वाले सर्जक को लेनी होती है पर यह छूट कोई ऐसा लाइसेंस भी नहीं माना जाना चाहिए, जिससे अनूदित रूप में रचना मूल रचना के बिल्कुल विपरीत हो जाए या उससे बहुत दूर चली जाए।

'ह्वेन दि रोजेज और डांसिंग' की पहली समस्या इसे हिन्दी में एक उपयुक्त शीर्षक देने की थी, 'जब गुलाब नच रहे हों', 'नाच रहे हों जब गुलाब' या 'नाच तीन गुलाबों का' आदि कई शीर्षक मन में आए-पर कोई भी नाटक की वस्तु के अनुरूप नहीं लग रहा था। नाटक की वस्तु है प्रेम। प्रेम के प्रति किशोरावस्था, युवावस्था और वृद्धावस्था में बदलता हुआ दृष्टिकोण। प्रेम के साथ जुड़े हुए नैतिक मूल्य। बदलते हुए समाज के साथ प्रेम के साथ जुड़े नैतिक मूल्यों के न बदलने का संकट और उससे पैदा हुआ पीढ़ियों का तनाव। नाटक अंतत: प्रगतिशील, मानववादी दृष्टि को स्वीकार करता है, इस तरह से नाटक में प्रेम के बहाने एक समाजवादी देश में नैतिक, सामाजिक मूल्यों के प्रति अलग-अलग तीन पीढ़ियों के दृष्टिकोण, उनके आपसी संघात और उससे पैदा तनाव को बहुत बारीकी से स्थितियों और घटनाओं के माध्यम से रेखांकित किया गया है। ऐसी ही समस्या हमारे यहाँ भी है। किसी भी समाज में ऐसी समस्या हो सकती है। यह नाटक किसी भी देश का, किसी भी समाज का थोड़े से परिवर्तनों के साथ बिल्कुल अपना हो सकता है। यह किसी भी रचना कि बड़ी ताकत होती है, तो अपनी इसी ताकत की पहचान करवाने के लिए वालेरी पित्रोव ने 'गुलाब' को प्रतीक रूप में इस्तेमाल किया है। प्रतीकात्मक और नाट्य-वस्तु की रक्षा करते हुए इसे मैंने नाम दिया-'किस्सा तीन गुलाबों का'। इसमें 'किस्सा' एक ऐसा शब्द है जो सीधे-सीधे हमें नाट्य के कथा-पक्ष से जोड़ता है। हिंदी-प्रदेश में यह शब्द अपनी अहमियत रखता है, अंग्रेजी में यह शब्द समझ नहीं आएगा। तो एक आधुनिक किस्से के बहाने ही तो नाटक की वस्तु हम तक संप्रेषित होती है, इसीलिए मुझे यही नाम उपयुक्त लगा। भावानुवाद या पुन: सृजन की प्रक्रिया में रचना क्या स्वरूप लेती है, एक उदाहरण के जरिए इसे समझा जा सकता है, नाटक के तीसरे अंक की शुरुआत में कुछ पंक्तियाँ हैं-

आह, जब गुलाब नाच रहे हों

Ah, when the roses are dancing

The old are even, young and hole

And they...as phalt street are fancying

To be fragrant blooming vale

यह प्रसंग काफी लंबा है और इसे एक गीत में बदलकर रखा गया है. कहीं कुछ छोड़ा नहीं गया, बस स्वरूप बदला है। ऊपर की पंक्तियों का काव्यानुवाद हुआ है –

वाह! नाच रहे हों जब गुलाब
बूढ़ों को भी जगे जवानी
देखो तो चेहरे की ताब;
सजा रहे हैं वे सड़कों को,
खुशबू भरी विदा कहने को
कहीं चहक है मुस्कानों की,
कहीं अश्क फैले सहने को
हर अवसर हैरानी का क्यों ?
''मत पूछिए जनाब
नाच रहे हों जब गुलाब।''

यहाँ बाद की दो पंक्तियों का भाव भी शामिल है और ऊपर की चार पंक्तियों का भी, अब इनका शब्दानुवाद किया जाए तो न तो उसमें रंग आएगा और न ही नाट्यगति।

बात नाटक के नाम की हो या अनुवाद की समस्या की हमारे बीच कोई भी ऐसा व्यक्ति उस समय नहीं था जो बल्गेरियन और हिन्दी को समान रूप से जानता हो और जिसने नाटक को मूल रूप में पढ़ा हो। बल्गारिया के ही मित्रों से नाटक का मूल नाम पूछा तो उन्होंने बताया, 'कोगातो रोजिते तान्सूवत'। यहाँ यह कहना मुश्किल है कि वे मूल नाम बता रहे थे या 'ह्वैन दि रोजेज आर डांसिंग' की बल्गारियन भाषा में अनुवाद कर रहे थे। बहरहाल नाटक की पूरी वस्तु को ध्यान में रखते हुए ही उसे 'किस्सा तीन गुलाबों का' नाम दिया गया।

अनुवाद की इस प्रक्रिया में यह भी अहसास हुआ कि हम विदेशी साहित्य का अनुवाद करते हुए सिर्फ शब्दों को नहीं बदलते, बल्कि उस संस्कृति को अपनी भाषा में ढाल रहे होते हैं, जो उस रचना के रेशे-रेशे में समाई होती है। 'पीटर शेफर' के नाटकों की संस्कृति और वालेरी पित्रोव के इस नाटक की संस्कृति में मूल तत्व प्रेम होते हुए भी सांस्कृतिक-सामाजिक स्तर पर उसकी अभिव्यक्ति में अंतर आ जाता है। अपने इसी अंतर के कारण ही जहाँ पीटर शेफर की 'ब्लैक कामेडी' विदेशी लगती है, वहीं 'कोगातो रोजिते तान्सूवत' बिल्कुल अपना लगता है।

हर भाषा अपने मंच के अनुरूप एक शैली तलाशती है। पर नाटककार उस शैली को नए-नए आयाम देता है ओर जब एक भाषा का नाटक दूसरी भाषा में जाता है तो मंच के मुहावरे के अनुरूप उसमें कुछ परिवर्तन जरूरी हो जाते हैं। ऐसे परिवर्तन यहाँ भी किए गए हैं जो हिन्दी रंगमंच के प्रेक्षक को ग्राह्य हो, स्वीकार्य हो।, मैंने बोलचाल की भाषा के करीब रहने की कोशिश की है और कहीं शब्दों के नितांत अभाव में तत्सम शब्द आए है। कहीं-कहीं तो सारा रूप ही बदला हुआ लग सकता है, लेकिन संवादों की अंतर्धारा को मैंने कहीं नहीं बदला। नाट्य का 'अंडर करेंट' अपनी जगह मौजूद है। इस तरह के अनेक उदाहरण लिए जा सकते हैं। वस्तुतः नाटक की असली परीक्षा तो रंगमंच पर ही होती है चाहे नाटक मंच के अनुरूप लिखा जाए या नाटक के अनुरूप मंच बने और कोई नई नाट्यशैली विकसित हो। ऐसी नाट्यशैली की माँग यह नाटक भी करता है। यही बात इस नाटक का अनुवाद करते हुए भी मेरे साथ घटित हुई।

7.3.2 नाट्यानुवाद की समस्याएँ

(1) मूल रचना का चयन-नाट्यानुवाद में सर्वप्रथम समस्या मूल रचना के चयन की है। अनुवादक किस आधार पर उस रचना का चुनाव करे जिसका उसे अनुवाद करना है। इसके लिए सर्वप्रथम महत्वपूर्ण बात तो यह है

कि अनुवाद करने के लिए चुने जाने वाली रचना की विषयवस्तु अनुवादक की अपनी रुचि, प्रतिभा और विषय-प्रवीणता के अनुसार होनी चाहिए। कोई भी अनुवादक किसी भी विषयवस्तु से संबंधित रचनाओं का अनुवाद करने में प्रायः पूर्ण रूप से सक्षम नहीं होता है। और यदि होता भी है तो वह अपनी रुचि के विरुद्ध काम करके उस रचना विशेष के साथ न्याय नहीं कर सकता है। क्या कोई सृजनात्मक साहित्य का अनुवादक वैज्ञानिक विषयवस्तु से संबंधित रचना के अनुवाद के साथ न्याय कर सकता है? क्या कोई कार्यालयी सामग्री के अनुवाद का अभ्यस्त अनुवादक किसी नाटक, उपन्यास या कविता का अनुवाद कर सकता है? क्या मनोविज्ञान, समाजशास्त्र और इतिहास के विषयों का ज्ञाता सृजनात्मक साहित्य का अनुवाद कर सकता है? विषय-विशेष को पृष्ठभूमि और पर्याप्त जानकारी के बाद ही किसी रचना के अनुवाद की बात सोची जा सकती है। ऐसा नहीं है कि जो चाहे, जैसा चाहे, जिस रचना को चाहे, जिस विषय को चाहे, अनुवाद करने में जुट जाये। अब कोई बच्चन, रांगेय राघव, रघुवीर सहाय जी से पूछे कि उन्होंने शेक्सपियर के नाटकों का ही अनुवाद क्यों किया, किसी कम्प्यूटर विज्ञान की पुस्तक का क्यों नहीं, तो सम्भावित उत्तर के संदर्भ में उपर्युक्त तथ्य ही सामने आते हैं। मेरा तो यहाँ तक मानना है कि अनुवादक को अपने मनपसंद विषय-विशेष में भी किसी विधा-विशेष में विशेषज्ञता हासिल करनी चाहिए। साहित्य के अनुवाद में अगर कोई अनुवादक कविता, नाटक, उपन्यास, कहानी, निबंध आदि के अनुवाद में एक साथ हाथ न डालकर किसी एक विधा का चुनाव करके अनुवाद करता है तो यह अनुवाद कहीं बेहतर होगा, क्योंकि अनुवाद प्रक्रिया में अभ्यास का बहुत महत्वपूर्ण स्थान होता है। एक ही विधा के अनुवाद का अभ्यास करते-करते वह इसमें पारंगत हो जाते है और उसकी नब्ज बड़ी आसानी से पकड़ सकते है। साहित्य के अनुवाद में भी कुछ लोग केवल कविता, कुछ नाटक और कुछ कथा-साहित्य में ही अच्छा कार्य कर सकते है। स्पष्ट ही एक कवि कविता का, एक रंगकर्मी नाटक का और एक कथाकार कथा-साहित्य का अधिक स्वाभाविक अनुवाद प्रस्तुत कर सकता है।

अनुवादक को एक अन्य बात यह ध्यान में रखनी चाहिए कि मूल कृति की कथावस्तु सामाजिकता के संदर्भ में मध्य भाषा के पाठकों के अनुरूप हो। प्रायः ऐसी रचना का चुनाव किया जाना चाहिए, जिसकी कथावस्तु सार्वभौमिक ही। इससे प्रत्येक वर्ग का पाठक दर्शक आसानी से उसे आत्मसाधु करके उसका रसास्वादन कर सकता है। यदि ऐसा संभव न हो तो लक्ष्य भाषा के पाठक दर्शक के समकालीन परिवेश विशेष, जिसके लिए वह अनुवाद किया जा रहा है, के अनुसार ही कथावस्तु का चयन ठीक रहेगा। आज जो नाटक अन्य भाषाओं से अनुदित होकर हमारे सामने आ रहे हैं, उनकी कथावस्तु समकालीन प्रसंगों से जुड़ी हुई होती है। विदेशी भाषाओं, मुख्यतः अंग्रेजी और ग्रीक के अधिकृतः नाटकों को प्रायः उनकी ऐतिहासिकता अथवा साहित्यिक समृद्धि के आधार पर ही चुना जाता है और सार्थकता पर विशेष ध्यान दिया जाता है।

शेक्सपियर, बेन जॉनसन, माल्सवर्दी, आस्कर वाइल्ड, बर्नार्ड शो, इब्सन आदि के नाटकों का अनुवाद प्रमुखतः ऐतिहासिकता को ध्यान में रखकर किया गया है, यद्यपि अनुवाद के संदर्भ में शेक्सपियर के नाटकों का चयन मानवीय अनुभूतियों की सार्वभौमिकता की दृष्टि से किया गया है। बर्नार्ड शॉ के 'दि एपल कार्ट' जैसे नाटक का चयन राजनीति में लोकतांत्रिक प्रणाली के गुण-दोषों जैसे तथ्यों की सार्वभौमिकता एवं भारतीय संदर्भ में समकालीनता को ध्यान में रखकर किया गया है। द्वितीय महायुद्ध के बाद यूरोप के नाटकों में अनैतिकता, उन्मुक्त प्रेम व सैक्स, धार्मिक अनास्था, व्यक्तित्व-विघटन, दाम्पत्य जीवन का तनाव, निराशा का एहसास आदि विषयों की प्रधानता देखने में आई। स्वतंत्रता के पश्चात् भारत में भी ऐसी भावनाएँ पाठकों और दर्शकों के मन में उत्पन्न हुई और उनकी अभिव्यक्ति के लिए अनुवादकों ने इसी प्रकार के विषयों वाले विदेशी नाटकों का चयन किया। उदाहरण के लिए ओनील, टेनेसी विलियम्स, सार्त्र, कामू, बैकेट, मिलर, ब्रेख्त, आयनेस्को, जॉन आस्वर्न, एलियट, ज्यांजेने, एडवर्ड एलबी आदि के नाटकों का चुनाव देखा जा सकता है।

भारतीय भाषाओं से हिन्दी में अनुदित नाटकों की भी यही स्थिति सामने आती है। उदाहरण के लिए चन्द्रशेखर कम्यार का 'बलि का बकरा' राजनीतिक जोड़-तोड़ और दलीय राजनीति के वर्तमान घिनोने पक्ष को उजागर करता है और बौद्धिक वर्ग के दिवालिएपन, पुलिस के भ्रष्टाचार और निम्न वर्ग की असहाय स्थिति पर भी करारी चोट करता है। **विजय तेंदुलकर के 'जात ही पूछो साधू की' और 'सखाराम बाईडर', बसंत कानेटकर के 'आँसू बन गये फूल', 'ढाई आखर प्रेम का'** जैसे नाटकों की कथावस्तु शायद इसीलिए अनुवादक को अच्छी लगी होगी।

(2) सांस्कृतिक परिवेश- नाटकानुवाद में दूसरी अत्याधिक महत्त्वपूर्ण समस्या मूल कृति के सांस्कृतिक परिवेश को लक्ष्य भाषा में सुरक्षित रखने या अवतरित करने की है। यह अनुवादक के लिए एक कठिन चुनौती होती है। इसकी रक्षा विभिन्न प्रकार के नाटकों में विभिन्न प्रकार से की जाती है। प्राय: यह एक विवादास्पद विषय रहा है कि मूल नाटक के देशकाल का लक्ष्य भाषा में भारतीयकरण करना चाहिए या नहीं। कुछ अनुवादक चिंतक भारतीयकरण करने के पक्ष में है। इस संबंध में उनके तर्क इस प्रकार है -पहला, ऐसा करने से भारतीय दर्शकों को विदेशीपन अनुमान नहीं होता। दूसरी, यह संप्रेषणीयता में सहायक होता है और दर्शक इससे तादात्म्य स्थापित कर सकेगें। और तीसरा, मूल नाटक की आत्मा के साथ-साथ शरीर का भी भारतीयकरण करना आवश्यक है। दूसरी ओर कुछ का कहना है कि मूल नाटक के देशकाल का भारतीयकरण नहीं करना चाहिए। उनके तर्क इस प्रकार हैं-पहला, ऐसा करने से नाटक के मूलभाव को सुरक्षित रखा जा सकता है। दूसरा, उसके शैलीगत सौंदर्य को सुरक्षित रखा जा सकता है। तीसरा, भारतीयकरण न करने से मूल लेखक व संस्कृति के प्रति न्याय किया जा सकता है और अन्तिम यह कि लक्ष्य भाषा के पाठक को यह तो आभास होना ही चाहिए कि वह कोई विदेशी रचना से परिचित हो रहा है और उसकी जिज्ञासा पूरी हो रही है।

निश्चित रूप से यह दोनों ही अतिवादी मत है। इन दोनों के बीच की स्थिति ही आदर्श स्थिति मानी जा सकती है। मेरे विचार में इन दोनों का निर्णायक बिंदु दर्शक वर्ग होने चाहिए, अर्थात् दर्शक किस स्थान पर रहता है-गांव में, शहर में या महानगर में। उसका बौद्धिक स्तर क्या है-अशिक्षित, कम शिक्षित या अधिक शिक्षित। नाटकानुवाद में यह बहुत आवश्यक होता है। जब यह कहा जाता है कि मूल नाटक की आत्मा तो वही रहे और शरीर में परिवर्तन कर दिए जाएँ, अर्थात् आत्मा विदेशी और शरीर स्वदेशी, भला यह भी कोई बात हुई। शरीर भी यदि विदेशी ही रहे तो क्या हानि? इस संबंध में कहा जाएगा कि इससे दर्शक को विदेशीपन या अजनबीपन महसूस होगा। सोचने की बात यह है कि किस स्तर के दर्शक को विदेशीपन अनुभव होगा, जो अनपढ़ है, जो दसवीं पास है, जो एम.ए. या पी-एच.डी. है, जिनके दिमाग में पहले से ही विदेशीपन घुसा हुआ है। दर्शक यदि अशिक्षित है तो बात समझ में आती है और नहीं तो फिर कैसा विदेशीपन, यह तो पहले से ही जीन्स पहनता है, स्टार टी. वी. का शौकीन है, विदेशी उपन्यास, कहानियों पर पढ़ता है और भई यदि अनपढ़ दर्शक को नाटक ही दिखाना है तो क्या जरूरी है कि उसे शेक्सपेयर, काफ़का, कामू, सार्त्र के नाटक ही दिखाए। उसे नाटक दिखाना है तो लिखिए मौलिक नाटक जिसमें उसके इर्द-गिर्द का परिवेश हो, उसकी समस्याएं हों। मान लीजिए आप नाटक तो दिखा रहे हैं दिल्ली, बम्बई, कलकता के हाई फाई और आधुनिक मानसिकता के दर्शकों को, और बात कर रहे हैं संस्कृति के अजनबीपन की। बात कुछ जमती नहीं, जबकि आज सारा विश्व एक छोटी-सी इकाई में सिमट गया है, जबकि दिल्ली, लदंन, पैरिस, न्यूयार्क, मास्को आदि एक दूसरे के बहुत नज़दीक आ चुके हैं। हां, भारतेन्दु के जमाने में तो भारतीयकरण करना ठीक लगता था, क्योंकि उस समय सांस्कृतिक फासले बहुत अधिक होते थे। किन्तु आज जो दर्शक दिल्ली के श्रीराम सेन्टर में नाटक देखने आ रहा है वह यह जानता है कि नाटक भारतीय है अथवा विदेशी, क्योंकि बहुत पहले से ही उसका विज्ञापन निकाल दिया जाता है। वह यह सोचकर ही आएगा कि उसे कामू का नाटक देखने को मिलेगा। कोई रिक्शा वाला कामू का नाटक देखने श्रीराम सेंटर में नहीं आएगा। वहाँ आने वाले दर्शक को तो वह अनुदित नाटक विदेशी अथवा अजनबी संस्कृति का लगना ही चाहिए, वह आया ही इसलिए है कि उसे कुछ नया देखने को मिलेगा। इतना सब कहने का अभिप्राय: यह कदापि नहीं है कि दर्शक की अपेक्षाओं की पूर्णत: उपेक्षा की जाए, कि नाटक उनके लिए अबोधगम्य ही रहे, कि उसमें भाषिक एवं

सांस्कृतिक उलझाव हो, अस्पष्टता हो। नहीं, ऐसा तो होना ही नहीं चाहिए। इस उद्देश्य के लिए रुपांतरकार यथास्थिति कुछ परिवर्तन कर सकता है, कुछ छोड़ सकता है, इसमें कोई आपत्ति नहीं होनी चाहिए।

(3) वेशभूषा व असभ्य संबोधन–नाट्यानुवाद से संबंधित तीसरी समस्या वेशभूषा, बुजुर्ग को नाम लेकर पुकारना और असभ्य संबोधनों की है। नाटकों के अनुवाद में इन्हें ज्यों का त्यों रखा जाए, संशोधित रूप में प्रयोग किया जाए या फिर बिल्कुल ही छोड़ दिया जाए। एक बार इन्दिरा गांधी मुक्त विश्वविद्यालय में नाटकानुवाद की समस्याओं पर आधारित एक व्याख्यान का अंश विडियो कैसेट के माध्यम से देखने का अवसर मिला था। उसमें युवा पात्र जीन्स पहने हुए हैं किन्तु रूपांतरण में कहा और दिखाया गया कि वे जीन्स के बजाय सीधे–सादे कपड़े पहने हुए हैं, जीन्स और टॉप्स गायब है। यदि यह सब दिल्ली जैसे महानगर में रहने वाले दर्शकों के लिए किया जाए तो कितनी हास्यास्पद–सी बात होगी। अरे भाई आप राजधानी के आधुनिक दर्शकों को कह रहे हैं कि जीन्स के बजाय साधारण पैन्ट अधिक ठीक रहेगी। उन्होंने जीन्स कभी देखी नहीं या पहनी नहीं? यह कल्चर जितना दिल्ली और बम्बई में है, उतना भारत में कही और नहीं। हां, यदि आप ग्रामीण परिवेश के दर्शकों के लिए यह परिवर्तन कर रहे हैं तो उचित है।

अब रही बात असभ्य संबोधनों की, तो यह दो प्रकार के होते है। एक तो वे जिन्हें हम रोजमर्रा की जिन्दगी में प्रयोग करते हैं, जैसे कम्बख़्त, दुष्ट, बेहया, कमीने, साले, हरामखोर आदि। ये सभी शब्द पहले से ही कई अनुदित नाटकों में विद्यमान है। दूसरे वे जिन्हें हम बिल्कुल ही प्रयोग नहीं करते और न ही करना चाहिए। अनुवाद में ऐसे शब्द नहीं आने चाहिए।

अन्तिम बात रही बुजुर्गो को नाम लेकर पुकारने की। इस क्षेत्र में हम अभी बहुत पिछड़े हुए हैं। अभी हम इतने एडवांस नहीं हुए हैं कि अपने बुजुर्गों को उनकी ही उपस्थिति में नाम लेकर संबोधित करें। अनुवाद में भी इसका ध्यान रखा जाना चाहिए।

अत: मूल नाटक के सांस्कृतिक परिवेश व देशकाल की विशेषताओं को लक्ष्य भाषा में स्थान, समाज और स्थिति को ध्यान में रखकर ही रूपांतरित किया जाना चाहिए। अनुवादक को पूर्वाग्राही नहीं होना चाहिए कि परिवर्तन सिर्फ इसलिए करना है कि नाटक दूसरी संस्कृति का है। वे सभी तत्त्व जो लक्ष्य भाषा से बिल्कुल मेल नहीं खाते उन्हें किसी भिन्न ढंग से प्रस्तुत करना चाहिए, क्योंकि हर संस्कृति मंच पर हर तरह की चीज बर्दाशत नहीं कर सकती। परिवर्तन सीमित हो, इतना कि जिससे मूल नाटक बिल्कुल बदल ही न जाए। अत्यन्त महत्त्वपूर्ण अंशों–प्रसंगों को इतना न छोड़ा जाए कि कथ्य अधूरा व अस्पष्ट दिखाई दे।

(4) नाटकीय भाषा की प्रयुक्तियाँ– अगली समस्या नाटकीय भाषा की प्रयुक्तियों से संबंधित है नाटक की भाषा–शैली में निहित विविधता अनुवाद में भी अपेक्षित होती है। अनुवाद की भाषा भी मूल के समान पात्रानुकूल, भावानुकूल और प्रसंगानुकूल होनी चाहिए। इसके साथ ही भाषा का प्रवाह भी बनाये रखना चाहिए। प्रचार के लिए आवश्यक सहजता, उसके लिए चाहिए आम बोलचाल की भाषा और यह व्यक्त होती है तद्भव शब्दों और मुहावरों लोकोक्तियों के द्वारा। अन्य भाषाओं के शब्दों का स्वाभाविक प्रयोग करना चाहिए। इसमें पारिभाषिक शब्दों के प्रयोग से बचना चाहिए। संवादों में योजकों का अत्यधिक प्रयोग नहीं करना चाहिए, क्योंकि इससे प्रवाह में रुकावट पैदा होती है। वाक्य–संरचना बहुत ही सरल होनी चाहिए। छोटे वाक्यों, अधूरे वाक्यों, एकाक्षरी वाक्यों, कर्त्ता और सर्वनाम का लोप करके, प्रश्नवाचक वाक्यों को सहज बनाकर संवादों को सहज एवं स्वाभाविक बनाया जा सकता है। प्रत्येक भाषा में अपनी प्रयुक्तियाँ तथा शैलियां होती हैं। प्रत्येक भाषा में एक जैसी ही प्रयुक्तियां व शैलियां उपलब्ध होना आवश्यक नहीं होता, प्राय: होती ही नहीं। स्रोत भाषा की इन विशेषताओं को लक्ष्य भाषा में भी उतारना होता है। अनुवाद की भाषा पात्रानुकूल होनी चाहिए अर्थात् सभी पात्रों के लिए एक जैसी भाषा का प्रयोग नहीं करना चाहिए। पात्र के व्यक्तित्व, सामाजिक स्तर और शिक्षा के स्तर के अनुसार ही भाषा का प्रयोग करना चाहिए। पात्र की जाति, व्यवसाय और स्थान को भी ध्यान में रखते हुए भाषा का प्रयोग करना चाहिए। इन सब बातों के साथ ही पात्र की मन:स्थिति को भी ध्यान में रखना चाहिए। इन सब समस्याओं से संबंधित उदाहरण यहाँ प्रस्तुत हैं–

"What brings you here? Who wants to go heaven? I can do anything for money, you know, I'll make that loafer a laughing stock, Tell, what does that guy do? i'll thrash him like anything. I don't prefer cheating in profession. If you speak nonsense. I'll finish you"

सामान्य अनुवाद

आप यहाँ किसलिए आए हैं? कौन स्वर्ग जाना चाहता है? पैसे के लिए मैं कुछ भी कर सकता हूँ। मैं उस बदमाश को हंसी का पात्र बना दूँगा। बताओ, वो लड़का क्या करता है? मैं उसे सबक सीखा दूँगा। मैं व्यवसाय में बेईमानी करना पसन्द नहीं करता। यदि तुम बकवास करोगें तो मैं तुम्हें खत्म कर दूँगा।

प्रस्तावित अनुवाद

यदि पात्र पठान की भूमिका निभा रहा है तो

किस की मौत आई जो शेरखान की याद आई। दौलत की खातिर हम कुछ भी कर सकती। ओए उस लोफर को हम जोकर बना देगी। बोलो वो छोकरा क्या करती? उसका अंचर-पंचर ढीला कर देगी हम। देखो, हम धन्धे में हेराफेरी नहीं करती। ज्यादी बड़बड़ करेगा तो तुम्हारी जिन्दगी खलास कर देगी।

यदि पात्र मौलवी की भूमिका निभा रहा है तो

लाहौल विल्ला कुव्वत, किसकी शामत तुम्हें खींच लाई? दौलत की खातिर हम कुछ भी कर सकते हैं हुजूर। उस लफंगे को हम जहन्नुम भेज देंगे.....

यदि पात्र बिहारी निवासी की भूमिका निभा रहा है तो

तुम इन्हा काए कू आई रहित? कौन ससुर मरना चाहि रहित है? पैइसा के वास्ते हम कुछ भी करि सकत हैं। उस बदमाश की हम ऐसी की तैसी करि देत......

यदि पात्र पंडित जी की भूमिका निभा रहा है तो

कहिए श्रीमान, कैसे आगमन हुआ? किस भाग्यहीन की मृत्यु का सन्देश लाए हैं? लक्ष्मी प्राप्ति के लिए हम कुछ भी कर सकने में सक्षम हैं। हम उस नीच की कुण्डली में राहू-केतु बिठा देंगे......

(5) मूलनिष्ठता अथवा स्वतन्त्रता-नाटक के अनुवाद में अगली समस्या अनुवादक की मूलनिष्ठता से संबंधित है। अनुवादक को मूलनिष्ठता का दायित्व भी निभाना पड़ता है और लक्ष्य भाषा के पाठक की बोधगम्यता को भी ध्यान में रखना पड़ता है। अनुवाद-चिंतकों के लिए हमेशा से ही यह एक विवाद का विषय रहा है। अनुवादक को भिन्न-भिन्न विधाओं के अनुवाद में कितनी छूट दी जाये, वह एक महत्वपूर्ण समस्या है। नाटक के संदर्भ में तो यह और भी कठिन हो जाता है।

नाटक चूंकि अधिकांशतः विदेशी भाषाओं से ही अनुदित किये जाते हैं, इसलिए स्त्रोत भाषा में अवश्य ही ऐसे स्थल होते हैं जो कि वहाँ के सांस्कृतिक संदर्भ से गुंथे हुए होते हैं। ऐसे स्थल लक्ष्य भाषा के दर्शकों को ध्यान में रखते हुए छोड़ दिए जाते हैं, किंतु प्रश्न यह है कि यह छूट कहां तक उचित है और यह कितनी मिलनी चाहिए। कथा-साहित्य की अपेक्षा नाटक के अनुवाद में अनुवादक को अधिक छूट की आवश्यकता पड़ती है। यह बात काफी हद तक ठीक है, क्योंकि इन दोनों विधाओं के अनुवाद में काफी अन्तर है। कथा-सहित्य में तो बहुत सारी बातें विस्तार से बतायी जाती हैं। लेखक अपनी तरफ से बहुत-सी बातें बता रहा होता है। इसलिए अनुवादक इसे इन्टग्रेट कर सकता है रीइन्टरप्रेंट भी कर सकता है। लेकिन नाटक के अनुवाद में अधिक छूट की जरुरत पड़ती है। यहाँ नाटककार स्वयं नहीं होता है, हाँ कुछ दिशा-निर्देश अवश्य होते हैं, लेकिन वे पर्याप्त नहीं होते। इसलिए पात्र जो कहता है उसे अर्थ की दृष्टि से वैसे का वैसा रखना अनुवादक के लिए जरूरी होता है। लक्ष्य भाषा की सहजता के लिए मूल के अंशों अथवा प्रसंगों में आवश्यकतानुसार कुछ छूट अवश्य दी जानी चाहिये। यहाँ एक और प्रश्न उठता है कि नाटक के अनुवादक को दर्शकों के प्रति अधिक वफादार होना चाहिए या मूल कृति के प्रति। वास्तव में अनुवादक प्रति वफादार होना चाहिए। ऐसा नहीं होना चाहिए कि अनुवादक दर्शक को खुश करने के लिए अर्थ का या फिर मूलनिष्ठता के फेर में दर्शकों को निराश कर दे।

(6) कथावस्तु आंचलिकता अथवा सार्वभौमिकता-नाटकानुवाद के संदर्भ में अगली समस्या कथावस्तु की आंचलिकता अथवा सार्वभौमिकता से जुड़ी हुई है। रचना जितनी आंचलिक होगी, उसका अनुवाद उतना ही कठिन होगा और जितनी सार्वभौमिक होगी, अनुवाद उतना ही सफल होगा। वास्तव में आंचलिक रचना का रूपांतरण नहीं हो सकता, यदि हो भी जाए तो वह सफलता प्राप्त नहीं कर पाती क्योंकि उसमें सार्वकालिक संदेश अथवा आकर्षण का अभाव होता है। किसी भी ऐसी रचना का सफल रूपांतरण किया जा सकता है जिसकी कथावस्तु सार्वभौमिक संदेश और आर्कषण का अभाव लिए हुए हो, क्योंकि उसे विश्व के किसी भी परिवेश और पात्रों के अनुकूल ढाला जा सकता है। शेक्सपियर के नाटकों के अनुवाद/रूपांतर इसलिए ही विश्व में लोकप्रिय हुए क्योंकि उनकी कथावस्तु इतनी सार्वभौमिक है कि विश्व के किसी भी भाग में उन्हें लागू किया जा सकता है। जी.टी.वी. पर सेलेस्टे या जंगल बुक जैसे सीरियल्स भी लोकप्रिय हुए हैं बहुत सारी फिल्में इसलिए ही अन्य भाषाओं में डब की जाती हैं, क्योंकि उनका परिवेश, उनका सन्देश व उनके पा सार्वभौमिक परिस्थितियों में कहीं भी फिट बैठते हैं।

स्वयं आकलन प्रश्न

प्रश्न-1 शेक्सपियर के नाटक 'मर्चेन्ट ऑफ वेनिस' का अनुवाद 'दुर्लभ बंधु' नाम से किसने किया है ?

प्रश्न-2 कालिदास के 'अभिज्ञान शाकुंतलम' का जर्मन में अनुवाद किसने और कब किया ?

7.4 सारांश

नाट्यानुवाद में संवादों की निरंतर बदलती हुई उच्चारण-प्रक्रिया से भी दो-चार होना पड़ता है। नाटक में गद्य व पद्य कृतियों की अपेक्षा उच्चारण को बदलना पड़ता है। स्वराघात, वाक्य-विन्यास और बोलचाल की भाषा के प्रयोग की समस्या होती है। नाट्यानुवाद में नाटक रंगमंचीय आवश्यकताओं एवं दर्शकों को ध्यान में रखकर लिया जाता है। अत: इसके अनुवाद के लिए अभ्यास की आवश्यकता होती है।

7.5 कठिन शब्दावली

काल्पनिक - कल्पित

संशोधन - शुद्धिकरण

अप्रतिम - अद्वितीय

संपादन - प्रस्तुत करना

प्रत्ययन - प्रतीत होने की क्रिया

7.6 स्वयं आकलन प्रश्नों के उत्तर

उ.1 भारतेन्दु हरिश्चंद ने

उ.2 गियार्ग फास्टर ने 1791 में

7.7 संदर्भित पुस्तकें

1. कैलाश चन्द्र भाटिया, अनुवाद कला : सिद्धांत और प्रयोग, तक्षशिला प्रकाशन, दिल्ली।
2. वासुदेव नन्दन प्रसाद, हिन्दी अनुवाद, सिद्धांत और प्रयोग, भारती भवन, पटना।
3. डॉ. पूरन चन्द टंडन, अनुवाद साधना अभिव्यक्ति प्रकाशन, दिल्ली।

7.8 सात्रिक प्रश्न

प्रश्न-1 नाट्यानुवाद के स्वरूप सहित प्रक्रिया का विस्तारपूर्वक विवेचन कीजिए।

प्रश्न-2 नाट्यानुवाद की समस्याओं पर प्रकाश डालिए।

*****

इकाई-8
अनुवाद में पर्यवेक्षण (वेटिंग)

संरचना

8.1 भूमिका

8.2 उद्देश्य

8.3 अनुवाद में पर्यवेक्षण (वेटिंग) की भूमिका

- पर्यवेक्षण क्या है
- पर्यवेक्षण कैसे होता है
- पर्यवेक्षण कौन करता है
- पर्यवेक्षण की शिक्षक के रूप में भूमिका
- पर्यवेक्षण का महत्व
- पर्यवेक्षक के लिए अपेक्षित गुण

स्वयं आकलन प्रश्न

8.4 सारांश

8.5 कठिन शब्दावली

8.6 स्वयं आकलन हेतु प्रश्नों के उत्तर

8.7 संदर्भित पुस्तकें

8.8 सात्रिक प्रश्न

8.1 भूमिका

इकाई सात में हमने नाट्यानुवाद के स्वरूप, नाट्यानुवाद की प्रक्रिया तथा नाट्यानुवाद की समस्याओं का गहन अध्ययन किया है। इकाई आठ में हम अनुवाद में पर्यवेक्षक की भूमिका, पर्यवेक्षण के महत्व तथा पर्यवेक्षक के लिए अपेक्षित गुणों का विस्तारपूर्वक अध्ययन करेंगे।

8.2 उद्देश्य

इकाई आठ का अध्ययन करने के पश्चात हन यह जानने में सक्षम होगे कि -

1. अनुवाद में पर्यवेक्षण की क्या भूमिका होती है ?
2. पर्यवेक्षण क्या है और इसे कौन करता है ?
3. पर्यवेक्षण की क्या आवश्यकता है ?
4. अनुदित सामग्री का पर्यवेक्षण कर सकेंगे ?

8.3 अनुवाद कार्य में पर्यवेक्षण की भूमिका

अनुवाद कार्य में पर्यवेक्षण की भूमिका को समझने के पूर्व आवश्यक है कि पर्यवेक्षण का अर्थ ठीक से समझा जाए। पर्यवेक्षण शब्द की उत्पत्ति 'परि' + 'ईक्षण' शब्दों के योग से हुई है, जिसका अर्थ है-चारों ओर देखना। अनुवाद कार्य के संदर्भ में चल रहे अनुवाद कार्य पर, उसके हर कोण पर अपनी दृष्टि बनाए रखना ही अनुवाद का पर्यवेक्षण है। पर्यवेक्षण विभिन्न गतिविधियाँ, जैसे- निगरानी निर्देशन, मार्गदर्शन, निरीक्षण एवं तालमेल आदि शामिल हैं। शिक्षा एवं परामर्श संबंध पहलू भी इसके अंग हैं। इस प्रकार पर्यवेक्षक की भूमिका एक नेता की भूमिका से मिलती-जुलती होती है। अनुवाद पर्यवेक्षक को भी निरंतर अनुवाद कार्य, उसकी प्रगति, उसकी प्रमाणिकता पर दृष्टि बनाए रखनी होती है। समय-समय पर उसमें आवश्यक संशोधन करने होते हैं।

हेनरी रेइनिंग के अनुसार, ''पर्यवेक्षण दूसरों के कामों का प्राधिकार के साथ निर्देशन है।'' टेरी व फ्रैंकलिन- पर्यवेक्षण का अर्थ है-कर्मचारियों के प्रयासों और अन्य संसाधनों का मार्गदर्शन और निर्देशन करना ताकि वांछित कार्य परिणाम प्राप्त किया जा सके।''

एम. विलियमसन ''पर्यवेक्षण एक प्रक्रिया है जिसमें अपनी आवश्यकतानुसार सीखने, अपनी क्षमताओं को बढ़ाने के लिए अपने ज्ञान और कौशल का सर्वश्रेष्ठ उपयोग करने में कर्मचारियों की निर्दिष्ट स्टॉफ सदस्यों द्वारा मदद की जाती है, ताकि वे अपना काम अपने और एजेंसी के लिए अधिक प्रभावी और संतोषजनक ढंग से कर सकें।''

इस परिप्रेक्ष्य में, जे. एम. फिफनर टिप्पणी करते हैं- ''एक दृष्टिकोण से पर्यवेक्षण पदानुक्रम के उच्चतम स्तरों तक जाता है। ब्यूरो प्रमुख प्रभागीय प्रमुख को पर्यवेक्षित करता है, जो स्वयं विभागीय प्रमुखों को पर्यवेक्षित करता है, जो कतारों को पर्यवेक्षित करते हैं।'' इस तरह, प्राधिकार में मौजूद सभी व्यक्ति जो दूसरों के कार्यों को नियंत्रित करते हैं, संगठन के आधिकारिक पदानुक्रम से जुड़े पर्यवेक्षक होते हैं। पर्यवेक्षण का अर्थ स्पष्ट हो जाने के उपरान्त हम अनुवाद में पर्यवेक्षण की भूमिका पर विचार कर सकते हैं। अनुवादक द्वारा अपने अनुवाद के पर्यवेक्षण के संदर्भ में निम्नलिखित दो प्रकार के संशोधन करने आवश्यक होते है-

1. भाषायी संशोधन, 2. संकल्पनात्मक संशोधन।

1. भाषायी संशोधन-अनुवादक से अपेक्षा की जाती है कि वह भाषाविद् और विद्वान होगा ताकि अनुवाद में भाषा संबंधी अशुद्धियाँ होने की संभावना कम साहित्यिक अनुवाद भावावेग की स्थिति में पुनर्सृजन के समान होता है, जिसके परिणामस्वरूप भाषिक अशुद्धियाँ आ जाने का भय बना रहता है। भाषायी संशोधन सतही होते हैं परंतु फिर भी महत्त्वपूर्ण होते हैं। भाषा विचारों की वाहक है। शब्दों का सही चयन, सही शब्द-छाया (शेड्स) का प्रयोग, वाक्य विन्यास का सही क्रम और सुगठित वाक्य प्रयोग पर्यवेक्षण के दौरान जाँचा जाता है और आवश्यकतानुसार संशोधित किया जाता है। तभी स्रोत भाषा का पाठ सही ढंग से लक्ष्य भाषा में संप्रेषित हो पाता है।

अनुवाद पर्यवेक्षक को पांडित्य-प्रदर्शन के लिए अनुवाद की भाषा में अनावश्यक परिवर्तन नहीं करने चाहिए। कभी-कभी अनुवाद पर्यवेक्षक प्रयुक्त शब्दावली में, पांडित्य प्रदर्शन के लिए ही संशोधन करने लगते हैं। देखा गया है कि 'आवश्यक' को काटकर 'जरूरी' और 'जरूरी' को काटकर 'आवश्यक' कर दिया जाता है, 'अंतत:' को काट कर 'अंत में' या 'अंततोगत्वा' कर दिया जाता है। ऐसा नहीं किया जाना चाहिए। अनुवाद पर्यवेक्षण के समय अनुवाद के प्रति सौहार्द और तटस्थता रखते हुए भाषा में संशोधन अपेक्षित है। भाषा तो अविरल प्रवाह है और उसमें निरंतर परिवर्तन होते रहते हैं। भाषा संबंधी संशोधनों को निम्न रूप में रखा जा सकता है-

1. पर्यवेक्षक का काम है व्याकरण सम्मत शब्द प्रयोग और वाक्य-विन्यास को सुनिश्चित करना।
2. वाक्य-विन्यास में वाक्य सौष्ठव, उपवाक्य, वाक्यांशों का क्रम बैठाना।
3. सही एवं सटीक शब्द का चयन, उपयुक्त शब्दावली और शब्द-छाया का प्रयोग करना।
4. कठिन शब्दों को छोड़ना और अन्य सहभाषाओं से प्रचलित शब्द लेना। इससे अनुवाद सुबोध होगा।
5. अवतरण संरचना और समग्र अध्याय और अध्यायों का उपयुक्त अनुक्रम रखना।
6. भाषा सौष्ठव एवं सज्जा लाना।
7. सुपाठ्यता, प्रांजलता, उचित क्रम निश्चित करना।
8. सुनिश्चित करना कि कोई आवश्यक वाक्य छूट न जाए।
9. अनुवाद के प्रति तटस्थ रहना, उस पर अपनी (पर्यवेक्षक) शैली थोपने का प्रयास न करना।

2. संकल्पनात्मक संशोधन-हम जानते हैं कि किसी भी साहित्यिक रचना के दो प्रमुख स्तर होते हैं-क्या कहा गया है और कैसे कहा गया है। 'क्या कहा गया' का सबंध विषय-वस्तु अर्थात् भाव, विचार से होता है, संकल्पना से होता है। 'कैसे कहा गया' का संबंध शिल्प पक्ष से होता है।

किसी अनुदित पाठ का पर्यवेक्षण करने से पूर्व पर्यवेक्षण को मूल रचना को विशेष ध्यान से पढ़ लेना चाहिए, ताकि उसके कथ्य, संकल्पनाओं के प्रति किसी तरह का संदेह न रह जाए। इसके पश्चात् वह अनुदित पाठ का अध्ययन करते हुए यह तय कर सकता है कि अनुवाद में अभिव्यक्त संकल्पना, मूल लेखक के अनुरूप हुई है अथवा नहीं।

तकनीकी अनुवाद में भी शब्दों की छायाओं के कारण अभिव्यक्तियां एक जैसी दिखाई देती है। परंतु उनमें बारीक अंतर रहता है। सभी आंगिक और सर्वांगीण संकल्पनाओं का निरंतर निर्वाह और प्रतिपादन करते रहना पर्यवेक्षक का कार्य है। अत्यंत जागरूक, सिद्धहस्त अनुवादक और उतने ही कुशाग्रबुद्धि, सूक्ष्म पर्यवेक्षक ही श्रेष्ठ कोटि के अनुवाद और पर्यवेक्षण कार्य को संपन्न कर सकते हैं। अच्छा अनुवाद वही है, जिसे समझने के लिए मूल की आवश्यकता न पड़े और अनुवाद, मूल रचना का सा आनंद दे।

प्रत्येक अनुवाद का एक निश्चित लक्ष्य होता है। यह लक्ष्य मनोरंजक, साहित्यिक कथात्मक से लेकर विधि , अनुसंधान विज्ञान, अन्य तकनीकी से संबद्ध हो सकता है। अतः तत्संबंधी संशोधन करना पर्यवेक्षक का प्रमुख कार्य है। उसे यह सुनिश्चित करना होता है कि पर्यवेक्षक के स्तर पर अनुवाद की मूल संकल्पना गलत संप्रेषित न हो जाए। थोड़ा सा संदेह होने पर पर्यवेक्षक को सजग प्रहरी की तरह सुनिश्चित करना चाहिए कि अभिव्यक्ति मूल के अनुरूप हुई है या नहीं। यदि ऐसा न हो तो उसे भाषायी और संकल्पनात्मक दोनों प्रकार के संशोधन करने होंगे, जो निश्चित ही श्रमसाध्य कार्य हैं। इस स्थिति में पर्यवेक्षण को अनुवाद के स्तर तक उतर कर गहरी पैठ लगानी होगी, जिसमें शब्दकोशों की सहायता लेकर विशेष परामर्श व विचार-विमर्श की भी आवश्यकता हो सकती है। ऐसी स्थिति में पर्यवेक्षक को अपने-आपको अनुवादक की भूमिका में लाना पड़ सकता है, तब वह मूल के साथ न्याय कर सकता है।

पर्यवेक्षक संकल्पनात्मक संशोधनों को निम्नलिखित प्रकार वर्गीकृत कर सकता है-

1. अस्पष्ट और संदिग्ध संकल्पना।
2. आंगिक संकल्पना।
3. सर्वांगी या संपूर्ण संकल्पना।
4. मूल संकल्पना।
5. निश्चित और असंदिग्ध संकल्पना।

अनुवाद का पर्यवेक्षण करते समय यह याद रखना जरूरी है कि लेखक का कथन क्या है? वह किस प्रकार की शैली में कहता है तथा उसका आशय क्या है?

इनमें से पहले दो का प्रयोजन अनुवादक द्वारा पूरा किया जाता है, जबकि तीसरा अर्थात् लेखक क्या कहना चाहता है। उसका अभिप्राय क्या है? इसका ध्यान पर्यवेक्षक द्वारा रखा जाना जरूरी है। लेखक का अभिप्राय या संकल्पना क्या है ? उसे उपर्युक्त तीन भागों में विभक्त करके विश्लेषण किया जा सकता है।

समय के अभाव में अथवा सरकारी दबाव में कई बार अनुवादक मूल को अपने वास्तविक रूप में प्रस्तुत करने से बचता है। पर्यवेक्षक को इस कमी को दूर करने का प्रयास करना चाहिए। यदि अनुवादक ने पूर्ण संकल्पना ग्रहण नहीं की या आंगिक संकल्पना में अक्षम रहा है तब पर्यवेक्षक को इस ओर इंगित करके इसे सुधारना चाहिए। व्यक्ति के रूप में लेखन का कार्य प्रायः अनुवादक कर चुका होता है। अतः संकल्पना की स्पष्टता सुनिश्चित करना पर्यवेक्षक का मूल दायित्व है।

पर्यवेक्षक के लिए अपेक्षित गुण-पर्यवेक्षक का दायित्व अनुवादक से भी अधिक इसलिए हो जाता है, क्योंकि अनुवाद पाठक के हाथ में जाने से पूर्व अंतिम रूप से पर्यवेक्षक द्वारा अनुमोदित और संशोधित किया जाता है और इसके पश्चात् उसमें किसी प्रकार के सुधार या संशोधन की गुंजाइश नहीं रहती। अनुवादक यदि अनुवाद के हृदय पक्ष को प्रकट करता है, तो पर्यवेक्षण उनके मस्तिष्क को प्रकट करता है। दोनों के सुखद संयोग से ही सुंदर, आदर्श अनुवाद का सृजन होता है। पर्यवेक्षक को स्रोत भाषा और लक्ष्य भाषा का सम्यक् ज्ञान होना चाहिए, उसे सजग, सचेत होना चाहिए। अनुदित सामग्री के विषय का समुचित ज्ञान उसे होना चाहिए। एक ही परिवार की सहभाषाओं के शब्दों और उनके प्रयोग की सामान्य जानकारी उसे होनी चाहिए। भाषा विश्लेषण की क्षमता होनी चाहिए, व्यापक सामान्य

ज्ञान से युक्त होना चाहिए। ज्ञान की दृष्टि से पर्यवेक्षक को अनुवादक का पूरक होना चाहिए। पर्यवेक्षक में साहित्यिक अभिरुचि एवं सृजनात्मक क्षमता होनी चाहिए। उसे अद्यतन सामाजिक स्थिति और परिवर्तनों के प्रति जागरूक होना चाहिए, पर्यवेक्षक को संशोधक और संपादक की भूमिका निभाने वाला होना चाहिए अर्थात् उनमें अनुवाद में तारतम्यता और अंत: संबंध बनाए रखने की क्षमता होनी चाहिए। (उसे अद्यतन सामाजिक स्थिति और परिवर्तनों के प्रति जागरूक होना चाहिए, पर्यवेक्षक को संशोधक और संपादक की भूमिका निभाने वाला होना चाहिए अर्थात उसमें अनुवाद में तारतम्यता और अत: संबंध बनाए रखने की क्षमता होनी चाहिए) पर्यवेक्षक में सहज बुद्धि विवेक, सविवेक और मानवीय दृष्टिकोण होना चाहिए, जन-जीवन को प्रभावित करने वाली यांत्रिक परिवर्तनों, वैज्ञानिक खोज और औद्योगिक विकास से सामान्यत: परिचित होना चाहिए, पर्व को श्रेष्ठ कोटि के शब्दकोशों की जानकारी होनी चाहिए। उसमें तटस्थता और निर्णय लेने की क्षमता होनी चाहिए पर्यवेक्षक को नीर-क्षीर विवेक करते हुए उसका तटस्थ मूल्यांकन करना चाहिए। उसे एक प्रकार से तीसरी आँख का काम करना चाहिए।

पर्यवेक्षण के सिद्वांत-

पर्यवेक्षक की प्रक्रिया में पर्यवेक्षक को पर्यवेक्षण के निम्नलिखित सिद्धांतों का ध्यान रखना चाहिए-

1. पर्यवेक्षण से पूर्व पर्यवेक्षक को मूल रचना को ध्यान से पढ़ना चाहिए ताकि यह लेखक के मूल आशय को समझ सके।
2. मूलभूत विचार-भाव उद्देश्य, संप्रेष्य क्या है? उसे रेखांकित कर लेना चाहिए।
3. अनुदित कृति को मूल पाठ के परिप्रेक्ष्य में पढ़ना और समझना चाहिए और उसके साम्य और वैषम्य के आधार पर मूल्यांकन करना चाहिए।
4. अनुदित सामग्री संपूर्ण और सही अर्थ कर पा रही है अथवा नहीं, इस संदर्भ में आश्वस्त होना चाहिए और समग्रता में उसका क्या प्रभाव परिलक्षित हो रहा है. इसे ध्यान में रखकर सामग्री का मूल्यांकन करना चाहिए।
5. अनुदित सामग्री के पाठक, मूल भाषा को नहीं जानते। अत: उनके प्रति अन्याय न हो सके, इसके लिए विषय-वस्तु और भाषा-शैली की दृष्टि से अनुदित पाठ की जाँच करनी चाहिए। कार्यालय में नियमों आदि का निर्वाचन करने से अर्थ का अनर्थ न हो जाए, इस बात पर पूरी तरह ध्यान केंद्रित करना चाहिए।
6. शब्दों या वाक्यांशों के अभिधात्मक अर्थ के साथ-साथ लक्ष्यार्थ और व्यंग्यार्थ को भी ध्यान में रखना चाहिए।
7. अनुवाद किस पाठक वर्ग से लिया गया है इस पर अनुवाद की भाषा शैली निर्भर करती है।
8. अनुवाद में अनुवादक की शैली की झलक तो आ सकती है, परन्तु पर्यवेक्षक को अपने शैली लाने का प्रयास नहीं करना चाहिए। उसकी भूमिका तटस्थ संशोधक की होना ही श्रेयस्कर है।
9. मूल भाषा के वाक्य विन्यास की छाया अनुदित भाषा के वाक्य विन्यास से आच्छादित होनी चाहिए। अनुवाद, अनुवाद जैसा न लगे. मूल जैसा प्रतीत होना चाहिए।
10. यदि अनुवादक किसी संदर्भ या घटना को व्याख्यातित नहीं कर सका हो तो पर्यवेक्षक को अपेक्षानुसार पाद टिप्पणी में उसकी व्याख्या भी करनी चाहिए।

अनुवादक जब अनुवाद को अपनी ओर से पूरा कर लेता है तो प्राय किसी अन्य विद्वान को उसे दिखाया जाता है। यह व्यक्ति स्रोत और लक्ष्य भाषा का विद्वान होने के साथ-साथ अनुभवी अनुवादक और उस विषय का ज्ञाता भी हो सकता है। उसे पर्यवेक्षक कहते हैं। अनुदित पाठ, मूल के समतुल्य हो, उसमें कोई भाषा, कथ्य, शैली अथवा सांस्कृतिक पृष्ठभूमि को लेकर कोई कमी न रह जाए, वह इसकी चिंता करता है और अपेक्षित सुधार करता अथवा अनुवादक से करवाता है। यह कार्य अत्यधिक महत्वपूर्ण है।

प्रस्तुत पाठ में हम आपको बताएंगे कि पर्यवेक्षण क्या होता है, उसे कौन करता है, कैसे करता है तथा इसका महत्व क्या है। पर्यवेक्षण विषयक आवश्यक जानकारी प्राप्त करने पश्चात् आप पर्यवेक्षण का अभ्यास भी कर पाएंगे।

• पर्यवेक्षण क्या है :

व्युत्पति की दृष्टि से पर्यवेक्षण शब्द 'परि: + अवेक्षण' शब्दों के मेल से बना है। इसका अर्थ है 'दुबारा' देखना। अनुवाद संपन्न होने के पश्चात जब अनुवादक से किसी व्यक्ति द्वारा उसे पुन: देखा या जांचा जाता है तो इस प्रक्रिया को 'पर्यवेक्षण' कहेंगे। अंग्रेजी में एक अन्य शब्द 'Revision' या दुहराई चलता है। दुहराई में भाव यह रहता है कि जिसने कोई कार्य किया है वह उसे दुबारा पढ़कर ठीक करेगा। अंग्रेजी में पर्यवेक्षण के लिए (Vetting) वैटिंग शब्द का प्रयोग होता है। इसमें निहित है कि रचनाकार के इतर कोई व्यक्ति इसमें सुधार परिष्कार करेगा या करवाएगा।

अनुवादक ही यदि पर्यवेक्षण करे तो इससे क्या हानि हो सकती है? अनुवादक ने जो अनुवाद किया होता है वह इसकी समझ, शब्दावली, अभ्यास के अनुसार ठीक ही लगता है। वह अपने लिखे को ठीक ही मानता रहेगा और गलतियां छूट जाएंगी। यही कारण है कि पर्यवेक्षक कोई अन्य व्यक्ति होना चाहिए।

अनुवादक और पर्यवेक्षक अलग-अलग व्यक्ति होते हुए भी एक दूसरे के पूरक होते हैं। प्राय: होना यह चाहिए कि यदि अनुवादक की मातृभाषा स्रोत भाषा है और वह उसका विद्वान है तो पर्यवेक्षक को लक्ष्य भाषा का विद्वान होना चाहिए। दोनों मिलकर आदर्श अनुवाद का सृजन कर पाएंगे। यदि दोनों एक ही भाषा के जानकार हैं तो पर्यवेक्षण अधूरा रहेगा। सृजनात्मक साहित्य का पर्यवेक्षण प्राय: नहीं किया जाता। सृजानात्मक साहित्य का अनुवादक प्राय: आनंद के लिए यह कार्य करता है और उसकी वैयक्तिकता उसमें झलकती है। पर्यवेक्षण में अनुदित पाठ की भाषा-शैली और कथ्य अर्थात् संकल्पनात्मक शुद्धि पर विचार किया जाता है।

• पर्यवेक्षण कैसे होता है ?

पर्यवेक्षण की प्रक्रिया के अनेक सोपान हैं। प्रत्येक सोपान पर अनुदित पाठ का निरीक्षण, परीक्षण, संशोधन और मूल्यांकन होता है और उसे स्वीकृति दी जाती है। बड़े अनुवाद संस्थानों जैसे 'भाषा अकादमियों' और 'नेशनल बुक ट्रस्ट' आदि में जहां व्यावसायिक स्तर पर अनुवाद कराए जाते हैं, वहां प्रशिक्षित पर्यवेक्षक नियुक्त किए जाते हैं। पर्यवेक्षक प्राय: भाषाविद्, अनुभवी अनुवादक तथा किसी विषय का विशेषज्ञ होता है। पर्यवेक्षण के सोपान हैं मूलपाठ और लक्ष्य पाठ का अनुवाद के साथ पाठ करना, अनुवाद और मूल पाठ का मिलान, कथ्य अशुद्धियां देखना, भाषागत अशुद्धियां निकालना, शैली परक सुधार, सांस्कृतिक धरातल पर पाठ की जांच तथा अंत में अनुवाद के फार्मेट की जांच।

• मूल रचना और अनुदित पाठ को पढ़ना :

पर्यवेक्षक मूल रचना को और अनुवाद को अलग-अलग ध्यान से पढ़ता है और सामग्री को समझने का प्रयास करता है। पढ़ते समय उसे अनुमान हो जाता है कि अनुवादक मूल पाठ के समतुल्य अनुवाद कर पाया है अथवा नहीं, अनुवाद सहज है अथवा उबड़-खाबड़ है।

अनुवाद और मूलपाठ से उसका मिलान :

पर्यवेक्षण की दृष्टि से यह दूसरा सोपान है। इस स्तर पर पर्यवेक्षक मूल कृति और अनुवादक को साथ-साथ पढ़ता जाता है और उनका मिलान करता जाता है। वह देखता है कि किसी पंक्ति का अनुवाद छूट तो नहीं गया है। अनुवादक ने उसमें से यदि कुछ छोड़ा है तो उसे छोड़ने से रचना के भाव या अर्थ को हानि तो नहीं हुई। यदि कुछ जोड़ा है तो उससे अर्थग्रहण में क्या लाभ हुआ। यह मिलान पर्यवेक्षक यदि मनोयोगपूर्वक बनाता है तो उसके पास देने के लिए अनेक सुझाव सहज ही रहते हैं।

कथ्यगत अशुद्धियां :

पर्यवेक्षक जब मूल और अनुदित कृति का मिलान कर लेता है तो देखता है कि कथ्यगत अथवा संकल्पनात्मक अशुद्धियां तो उसमें नहीं आ गई। कहीं अनुवादक ने मूल लेखक के आश्रय को समझने में गलती तो नहीं कर दी ? अनुवादक ने वही कहा या लिखा है जो मूल पाठ में अभिप्रेत है ? दोनों के कथन में कोई ऐसा अंतर तो नहीं कि भिन्न-भिन्न ध्वनि निकलती हो। इस प्रक्रिया में पर्यवेक्षक गलतियां खोजकर उनका समाधान सुझाता है।

उदाहरण के लिए अंग्रेजी वाक्य है 'I have no reservation about eating meat' यदि इसका अनुवाद 'मेरे लिए मांस खाने में कोई आरक्षण नहीं है' अनुवाद किया गया है तो यह गलत होगा। 'Reservation' का अर्थ 'आरक्षण' भी होता है परंतु संदर्भ के अनुसार यहां यह अर्थ नहीं लगता। इसके स्थान पर अनुवाद होना चाहिए कि 'मुझे मांस खाने में कोई संकोच नहीं है।' यहां 'रिजर्वेशन' का अर्थ संकोच लगेगा। पर्यवेक्षण इस भूल से सम्बन्धित को सुधार करवाएगा।

भाषागत अशुद्धियां : कथ्यगत या संकल्पनात्मक अशुद्धियों को दूर करने के साथ-साथ भाषा संबंधी भूलों का पता लगाना भी पर्यवेक्षक का काम है। वह देखता है कि मूलपठ के अनुरूप शब्दावली का प्रयोग हुआ है अथवा नहीं। प्रत्येक विषय की अपनी-अपनी शब्दावली रहती है गैर विधि, विज्ञान की तकनीकी और परिभाषिक शब्दावली होती है, साहित्य की भावात्मक एवं बिम्बात्मक रहती है। पर्यवेक्षक को जांचना होता है कि शब्दावली अनुद्य विषय से दूर तो नहीं जा रही। उदाहरण के लिए 'Plant' शब्द को लें। बागवानी में इसका अर्थ 'पौधा' लगेगा। जबकि उद्योग में इसका अर्थ 'संयंत्र' लगाना होगा। पर्यवेक्षक को यह भी देखना होता है कि भाषा में अटपटापन तो नहीं, वह सुपाठ्य और सुग्राह्य है अथवा नहीं। अनुवाद किस वर्ग के पाठकों के लिए किया गया है इसे ध्यान में रखते हुए भी भाषा के स्तर पर विचार किया जाता है। यह भी देखा जाता है कि अनुवाद की भाषा, लक्ष्य भाषा की प्रवृत्ति और मुहावरे के अनुकूल है अथवा नहीं। कुछ उदाहरणों से यह बात स्पष्ट हो जाएंगी।

"A pollated sky, reduces your life' का अनुवाद 'एक प्रदूषित आकाश आपका जीवन कम करता है।' तथा (ii) Control motor vehicle pollution' का अनुवाद 'मोटर वाहनों के प्रदूषण पर नियंत्रण कीजिए।' जैसे शाब्दिक अनुवाद देखने में ठीक ही लगते हैं परंतु ये लक्ष्य भाषा (हिंदी) के अनुरूप नहीं इसलिए इनमें सुधार अपेक्षित है। पर्यवेक्षक इनका क्रमशः अनुवाद करेगा।

'प्रदूषित आकाश आपकी आयु घटाता है।' ऊपर दिए अनुवाद में अंग्रेजी के 'ए स्काई' का अर्थ 'एक आकाश' कर दिया गया जो अनुचित है। आकाश तो एक ही है तो 'एक' लिखने की आवश्यकता क्या है ? इसी प्रकार दूसरे वाक्य में 'मोटर वाहनों से होने वाला प्रदूषण' लिखा जाना चाहिए न कि 'मोटर वाहनों का प्रदूषण' इससे अर्थ ही बदल जाता है। 'मोटर वाहनों का प्रदूषण' का अर्थ है मोटर वाहनों की संख्या से होने वाला प्रदूषण न कि उनके द्वारा छोड़े हुए धुएं से होने वाला प्रदूषण।

पर्यवेक्षक, भाषा संबंधी अशुद्धियों को दूर करता है। कहने का भाव यह है कि वह कथ्य के अनुरूप भाषा चयन पर बल देता है। विषय गंभीर, सरल, हास्य प्रधान आदि जैसा है उसके अनुरूप ही भाषा चयन होना चाहिए अनेक बार ऐसे भी होता है कि स्रोत भाषा और लक्ष्य भाषा की प्रकृति में अंतर होने के कारण अनुवादक अर्थ का अनर्थ कर बैठता है विशेषकर उस समय जब वह शाब्दिक अनुवाद का सहारा लेता है। उदाहरण के लिए वाक्य देखिए-

(1) 'The Big Bazar will supply eggs to the schools'

बिग बाजार स्कूलों को अंडे देगा।

(1)Free treatment for the eyes.

मुफ्त आंखों का इलाज।

इन वाक्यों में ऊपरी तौर पर कोई अशुद्धि प्रतीत नहीं होती। ध्यान से देखने पर अर्थ का अनर्थ दिखता है। पहले वाक्य में प्रतीत होता है कि 'बिग बाज़ार' कोई मुर्गी है जो स्कूलों को अंडे देगी। इसलिए अनुवाद होना चाहिए था कि 'बिग बाज़ार स्कूलों को अंडों की आपूर्ति करेगा।' इसी प्रकार दूसरे वाक्य में लगता है 'आंखें मुफ्त है' जबकि 'आंखों का इलाज मुफ्त।'

अनेक बार संदर्भ पर ध्यान न देने से अनुवाद का अर्थ स्पष्ट नहीं हो पाता। 2014 में मोदी जी के विजय पर अखबार में छपा "It was goodbye to Manmohan and hello to Modi" अर्थात 'यह मनमोहन को नमस्कार और मोदी को 'हैलो' कहना था। यहां 'good-bye' का अर्थ 'अलविदा' है अर्थात् दोनों एक दूसरे से तब तक अलग रहे हैं जब तक पुनः मिलना न चाहें। 'Hello' का अर्थ आदरपूर्वक निमंत्रण/स्वागत है। यहां संदर्भ चुनावों का है इसलिए अनुवाद किया जाना चाहिए ''चुनाव के माध्यम से जनता ने प्रधानमंत्री के रूप में मनमोहन को विदाई देते हुए मोदी का स्वागत किया।''

भाषा की दृष्टि से पर्यवेक्षक यह भी देखता है कि विषयानुरूप भाषा शैली का प्रयोग हुआ है या नहीं। गंभीर अथवा पाविद्वत्यपूर्ण विषयों में प्रांजल-तत्सम शैली और हास्य प्रधान में बोलचाल की भाषा ही अपेक्षित है।

पर्यवेक्षक यह भी जांच करता है कि अनुद्य भाषा, पाठक वर्ग के अनुरूप है अथवा नहीं। यदि विदेशियों के लिए अनुवाद किया गया है तो अधिक से अधिक शब्द मानक हिंदी के हो, देसी अथवा आंचलिक शब्दों का प्रयोग न हो।

अनुदित पाठ की लक्ष्यभाषा संस्कृति के प्रकाश में जांच :

प्रत्येक भाषा किसी संस्कृति विशेष की उपज होती है और वह उसकी सांस्कृतिक विशेषताओं का वहन भी करती है। स्रोत भाषा और लक्ष्य भाषा आम तौर पर विभिन्न समाजों से संबंध रखती हैं। कभी-कभी यह भिन्नता बहुत अधिक होती है और कभी-कभी काफी कम होती है। ब्रज भाषा से हिंदी में अनुवाद अथवा तमिल से हिंदी में अनुवाद करते समय सांस्कृतिक अंतर कम होगा। हिंदी से अंग्रेजी में अनुवाद करते समय सांस्कृतिक अंतर अधिक होगा क्योंकि दोनों भाषाओं का सामाजिक-सांस्कृतिक परिवेश भिन्न है। अनुवाद की प्रक्रिया में किया जाने वाला भाषातंरण एक हद तक सांस्कृतिक अंतरण भी होता है। कथ्य को स्रोत भाषा की संस्कृति से लक्ष्य भाषा की संस्कृति में अंतरित किया जाता है।

पर्यवेक्षण करते समय पर्यवेक्षक को यह देखना पड़ता है कि अनुवाद में वही कहा गया हो जो मूल रचना में कहा गया है। यह भी देखना पड़ता है कि लक्ष्य भाषा की संस्कृति में वह ग्राह्य है भी या नहीं। उदाहरण के लिए अंग्रेजी में कहा जाता है "He is as humble as a sheep" इसका शाब्दिक अनुवाद होगा ''वह भेड़ की तरह विनम्र है।'' भारतीय संदर्भ में किसी को ऐसा कहना अपमानजनक होगा। इसके स्थान पर होना चाहिए ''वह गाय की तरह निरीह है या वह बिल्कुल गऊ है।''

फार्मेट संपादन :

अन्य सभी तरह के भूल सुधार और शुद्धिकरण के पश्चात् अनुवाद निश्चित फार्मेट के अनुसार अनुवाद का संपादन करता है। प्रत्येक पाठ्य सामग्री को प्रस्तुत करने का एक ढांचा होता है जिसे फार्मेट कहते हैं। पाठ के विभिन्न अध्यायों, अनुच्छेदों के विभाजन, पैराग्राफ विभाजन, अंकन, विभिन्न खंडों के लिए अलग-अलग अंकों अथवा वर्णाक्षरों का प्रयोग, चित्र, आलेख आदि के निर्धारित स्थान आदि की जांच करता है। वह उसमें अपेक्षित सुधार भी करता है। उदाहरण के लिए विभिन्न खंडों के लिए वर्णांकित संख्या यदि a, b, c, d आदि है तो हिंदी में 'अ, ब, स, द, न करके 'क, ख, ग, घ' करना उचित होगा क्योंकि यही स्वीकार्य है। 1,2,3,4 जैसी अंक संख्या अनुवाद में ज्यों की त्यों रह सकती है।

पर्यवेक्षण कौन करता है ?

ऊपर दिए विवेचन से स्पष्ट है कि अनुवाद से आगे की प्रक्रिया पर्यवेक्षण है। पर्यवेक्षण का कार्य अनुवादक नहीं करता क्योंकि उसके द्वारा किया गया पर्यवेक्षण दुहराई या Revision मात्र होगा। अनुवादक अपने किए अनुवाद की गलतियां नहीं पकड़ पाता क्योंकि वह उसी शब्दावली और शैली का अभ्यस्त होता है जिसका उपयोग उसने किया है। उसे अपने अनुवाद में कथ्य और शिल्प विषयक गलतियां दिखाई नहीं पड़ती भले ही भाषा की अशुद्धियां वह ठीक कर भी ले।

पर्यवेक्षक एक अनुभवी अनुवादक, भाषाविद, और विषय विशेष का विशेषज्ञ होता है। वह कथ्य, भाषा और सांस्कृतिक धरातल पर अनुवाद की जांच परख कर उसमें सुधार के सुझाव भी देता है और सुधार करता भी है। पर्यवेक्षक ही अनुवाद को अंतिम रूप देता है और उसकी सहमति के पश्चात् उसे प्रकाशन हेतु भेज दिया जाता है। विभिन्न सरकारी कार्यालयों तथा स्वायत्त संस्थाओं में पर्यवेक्षण के लिए बाकायदा नियुक्ति होती है। इस पद पर कार्य करने वाले अधिकारी को अनुवाद अधिकारी, हिंदी अधिकारी अथवा सहायक निर्देशक कहा जाता है। प्राय वरिष्ठ विद्वानों और अनुवादकों को पर्यवेक्षक बनाया जाता है।

- **पर्यवेक्षक की शिक्षक के रूप में भूमिका :**

पर्यवेक्षण का प्रशिक्षण देने वाली कोई संस्था नहीं है। पर्यवेक्षण प्रशिक्षण का कार्य पर्यवेक्षक ही करता है और इस प्रकार वह अध्यापक की भूमिका निभाता है। अनुवादक द्वारा किए अनुवाद की गलतियां निकाल कर अनुवाद का अधिक प्रभावी बनाने के लिए सुझाव देकर पर्यवेक्षक अनुवादक को प्रशिक्षित करता है।, अनुवाद विषय उसके व्यवहारिक ज्ञान में वृद्धि करता है। अच्छे पर्यवेक्षक के मार्गदर्शन में अनुवादक अपनी ग्रहणशीलता और अभिव्यक्ति क्षमता को पर्याप्त ढंग से परिमार्जित कर पाता है। वह पर्यवेक्षित सामग्री का पुनः गठन करके अपनी भूलों से बचता है। इतना ही नहीं जब कभी अनुवादक महसूस करता है कि वह पर्यवेक्षक संशोधन से सहमत नहीं है तो वह पर्यवेक्षक से उस विषय पर विचार विमर्श करके अपनी शंका का समाधान कर सकता है। इस प्रकार पर्यवेक्षक, अनुवाद को अनुवाद सीखने की प्रक्रिया में प्रशिक्षक की भूमिका निभाता है।

- **पर्यवेक्षण का महत्व :**

अनुवाद एक व्यावहारिक कार्य है। इसलिए इसमें त्रुटियां रह जाना स्वाभाविक है। इन्हें अनुवाद दोष भी कहा जाता है। मूल पाठ और अनुदित पाठ में संदेश या अर्थ में गड़बड़ी होने पर अनुदित पाठ में दोष आने की संभावना बनी रहती है। संदेश भाषा और विषय वस्तु दोनों में से किसी में भी विकृति से संदेश दोषपूर्ण और असंप्रेषणीय हो जाता है। इसकी जांच पड़ताल के लिए पर्यवेक्षण की आवश्यकता रहती है।

अनुदित पाठ में विभिन्न भाषायी स्तरों पर अनेक दोष मिल जाते है। ध्वनि, वर्तनी, रूप, पदबंध, उपवाक्य, वाक्य और प्रोक्ति आदि संरचनागत इकाइयों के अतिरिक्त शैलीगत दोष भी पाए जाते हैं। भाषा की प्रकृति के अनुसार उपयुक्त संयोजन न होने से भी पाठ दुर्बोधपूर्ण या अटपटा हो जाता है। उदाहरण के लिए यदि लिफाफे पर लिखा है 'No enclosures allowed' तो शाब्दिक अनुवाद होगा 'संलग्नक की आज्ञा नहीं।' यह न तो बोधगम्य है और न ही सहज। इसके स्थान पर पर्यवेक्षक यदि लिख देता है कि 'इस पत्र में कुछ न रखें तो यह सहज संप्रेषणीय अनुवाद बन जाता है।'

विषय वस्तु के स्तर भी उपयुक्त भाषा के प्रयोग की चिंता पर्यवेक्षक करता है। मूलपाठ का विषय प्रशासनिक, विधिक, वाणिज्यिक, वैज्ञानिक, सामाजिक विज्ञान अथवा विज्ञापन संबंधी हो सकता है। अनुवाद करते समय इसमें कई शब्दावली परक अथवा संरचनात्मक दोष आ जाते हैं जो विषय के अनुकूल नहीं होते। विषय वस्तु के अनुसार प्रत्येक शब्द का उपयुक्त अर्थ हो और व्यवहार में आए यह पर्यवेक्षक देखता है। वह देखता है कि भाषा कितनी संप्रेषणीय, सर्जनात्मक और प्रभावोत्पादक है और उसमें क्या सुधार अपेक्षित है।

अनुवाद किस वर्ग के लिए किया जा रहा है उसके अनुसार ही भाषिक रूप का चयन होता है। अंग्रेजी में 'No admission' का अनुवाद 'प्रवेश निषेध' 'भीतर न आइए', 'अंदर आना मना है', तीन प्रकार से किया जा सकता है। सामान्य जन के लिए निर्देश 'प्रवेश निषेध' रहेगा, आदरणीय के लिए 'भीतर न आइए' रहेगा और अधीनस्थ के लिए 'भीतर आना मना है' उपयुक्त होगा।

अनेक बार ऐसा भी होता है कि एक ही कृति दो या अधिक अनुवादकों द्वारा अनुदित की जाती है। विभिन्न अंशों का अनुवाद अलग-अलग शैली और शिल्प का होगा। इस शैलीगत विभिन्नता से अनुदित पाठ सहज और सुबोध नहीं हो पाता। पर्यवेक्षण के दौरान उस पाठ में शैलीगत एकरूपता लाने का प्रयास पर्यवेक्षक ही कर सकता है। इसके अतिरिक्त प्रत्येक अनुवादक के पास स्रोत भाषा के शब्द के कई वैकल्पिक पर्याय होते हैं उन्हें अपने विवेक और रूचि से प्रयुक्त करता है। इससे अनुदित कृति की बोध गम्यता और संप्रेषणीयता को आघात पहुंचता है। अतः पर्यवेक्षक की भूमिका यहां महत्वपूर्ण है कि वह वैकल्पिक पर्यायों में एकरूपता लाए ताकि अनुदित पाठ में विशेषतः तकनीकी साहित्य में बोधगम्यता और संप्रेषणीयता में कोई आघात न पहुंचे। यहां अनुदित पाठ में समन्वय और समरूपता लाने का काम पर्यवेक्षक करता है।

पर्यवेक्षण, संवाद प्रक्रिया का अंतिम सोपान है जो पर्यवेक्षक द्वारा संपन्न किया जाता है। इसलिए उसकी भूमिका सर्वाधिक महत्व की है। पर्यवेक्षक, अनुदित पाठ को मूल पाठ का सहपाठ बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। इससे शब्दावली, संरचना और शैली की एकरूपता तो रहती ही है साथ ही अनुदित पाठ में प्रामाणिकता, संप्रेषणीयता, स्वाभाविकता और प्रभावोत्पादकता लाने का कार्य करता है। अनुवाद में मूलनिष्ठा बनी रहे इस पर पर्यवेक्षक विशेष ध्यान देता है।

संक्षेप में कह सकते हैं कि पर्यवेक्षक द्वारा अनुवाद की जांच, सुधार और साज-सज्जा की जाती है। इससे अनुवाद की अशुद्धियां तो सुधरती ही हैं उसका अनगढ़पन भी दूर होता है और उसमें परिष्कृति आती है। वैसे तो अच्छा अनुवादक स्वयं ही अपने अनुवाद को भूल से मिलाकर एक बार दोहराता है और भूल सुधार तथा भाषा शोधन करता है परंतु किसी अधिक अनुभवी द्वारा सुधार बेहतर हो पाता है।

पर्यवेक्षण का महत्व केवल मानवकृत अनुवाद के लिए ही नहीं है बल्कि मशीनी अनुवाद में भी पर्यवेक्षक की आवश्यकता रहती है। वह कम्प्यूटर के लिए अनुवाद को जांचता और सुधारता है। पूर्व संपादन तथा पश्चात् संपादन की प्रक्रिया पूरी करते समय संपादक, पर्यवेक्षक की भूमिका में ही होता है।

• पर्यवेक्षक के लिए अपेक्षित गुण :

पर्यवेक्षक का दायित्व, अनुवादक से भी अधिक इस लिए हो जाता है क्योंकि अनुवाद पाठक के हाथ में जाने से पूर्व अंतिम रूप से पर्यवेक्षक द्वारा अनुमोदित और संशोधित किया जाता है और इसके पश्चात् उसमें किसी प्रकार के सुधार या संशोधन की गुंजाइश नहीं रहती। अनुवादक यदि अनुवाद के हृदय पक्ष को प्रकट करता है तो पर्यवेक्षक उसके मस्तिष्क को प्रकट करता है। दोनों के सुखद संयोग से ही सुदंर, आदर्श अनुवाद का सृजन होता है। पर्यवेक्षक को स्रोत भाषा और लक्ष्य भाषा का सम्यक ज्ञान होना चाहिए, उसे सजग, सचेत होना चाहिए। अनुदित सामग्री के विषय का समुचित ज्ञान उसे होना चाहिए। एक ही परिवार की सहभाषाओं के शब्दों और उनके प्रयोग की सामान्य जानकारी उसे होनी चाहिए ंभाषा विश्लेषण की क्षमता होनी चाहिए, व्यापक सामान्य ज्ञान से युक्त होना चाहिए, ज्ञान की दृष्टि से पर्यवेक्षक को अनुवादक का पूरकहोना चाहिए। पर्यवेक्षक में साहित्यिक अभिरूचि एवं सृजनात्मक क्षमता होनी चाहिए, उसे अद्यतन सामाजिक स्थिति और परिवर्तनों के प्रति जागरूक होना चाहिए, पर्यवेक्षक को संशोधक और संपादक की भूमिका निभाने वाला होना चाहिए अर्थात् उसमें अनुवाद में तारतम्यता और अंतः संबंध बनाए रखने की क्षमता होनी चाहिए। पर्यवेक्षक में सहज बुद्धि, विवेक, सविवेक और मानवीय दृष्टिकोण होना चाहिए, जन जीवन को प्रभावित करने वाले यांत्रिक परिवर्तनों, वैज्ञानिक खोज और औद्योगिक विकास से रूपमान्यतः परिचित होना चाहिए। पर्यवेक्षक को श्रेष्ठ कोटि के शब्दकोशों की जानकारी होनी चाहिए। उसमें तटस्थता और निर्णय लेने की क्षमता होनी चाहिए। पर्यवेक्षक को नीर-क्षीर विवेक करते हुए उसका तटस्थ मूल्यांकन करना चाहिए उसे एक प्रकार से तीसरी आंख पर काम करना चाहिए।

पर्यवेक्षण के मूलाधार : पर्यवेक्षक को निम्नालिखित सिद्धांतों पर विशेष ध्यान देना चाहिए।

(1) पर्यवेक्षण से पूर्व पर्यवेक्षक को मूल रचना को ध्यान से पढ़ना चाहिए ताकि वह लेखक के मूल आशय को समझ सकें।

(2) अनुदित कृति के मूलपाठ को परिप्रेक्ष्य में पढ़ना और समझना चाहिए और उसके साम्य और वैषम्य के आधार पर मूल्यांकन करना चाहिए।

(3) मूलभूत विचार/भाव/उद्देश्य, संप्रेष्य क्या है? उसे रेखांकित कर लेना चाहिए।

(4) अनुवाद किस पाठक वर्ग के लिए किया गया है इस पर अनुवाद की भाषा शैली निर्भर करती है।

(5) शब्दों या वाक्यांशों के अभिधात्मक अर्थ के साथ-साथ लक्ष्यार्थ और व्यंग्यार्थ का भी ध्यान में रखना चाहिए। साथ ही शब्दों की अनेकार्थता और बहुअर्थता के प्रति पूरी तरह सजग और सचेत रहना चाहिए।

(6) अनुदित सामग्री संपूर्ण और सही अर्थ कर पा रही है अथवा नहीं, इस संदर्भ में आश्वस्त होना चाहिए और समग्रता में उसका क्या प्रभाव परिलक्षित हो रहा है इसे ध्यान में रखकर सामग्री का मूल्यांकन करना चाहिए।

(7) अनुदित सामग्री के पाठक, मूल भाषा को नहीं जानते। अत: उनके प्रति अन्याय न हो सके, इसके लिए विषय वस्तु और भाषा शैली की दृष्टि से अनुदित पाठ की जांच करनी चाहिए। कार्यालय में नियमों आदि का निर्वाचन करने से अर्थ का अनर्थ न हो जाए इस बात पर पूरी तरह ध्यान केंद्रित करना चाहिए।

(8) मूल भाषा के वाक्य विन्यास की छाया अनुदित भाषा के वाक्य विन्यास से आच्छादित होना चाहिए। अनुवाद, अनुवाद जैसा न लगे मूल जैसा प्रतीत होना चाहिए।

(9) यदि अनुवादक किसी संदर्भ या घटना को व्याख्याति नहीं कर सका हो तो पर्यवेक्षक को अपेक्षानुसार पाद टिप्पणी में उसकी व्याख्या भी करनी चाहिए।

(10) अनुवाद में अनुवादक की शैली की झलक तो आ सकती है परंतु पर्यवेक्षक को अपनी शैली लाने का प्रयास नहीं करना चाहिए उसकी भूमिका तटस्थ संशोधक भी होना ही श्रेयस्कर है।

अंत में इतना ही कहा जा सकता है कि जब अनुदित कृति पाठक के हाथ में आती है तो उसे इस बात से कोई सरोकार नहीं होता कि उस कृति का दोष अनुवादक का है अथवा पर्यवेक्षक का है। दोष अंतिम रूप से पर्यवेक्षक का ही माना जाएगा।

प्रस्तुत पाठ में आपने पढ़ा कि पर्यवेक्षक कौन है और वह क्या करता है। अनुदित पाठ की जांच और सुधार की अंतिम जिम्मेदारी उसी की रहती है। पर्यवेक्षण के दौरान अनुवाद को मूलपाठ के साथ रखकर पढ़ा जाता है और उसकी कथ्यगत और भाषगत गलतियों को सुधारा जाता है। अनुदित पाठ को लक्ष्य भाषा की शैली की आवश्यकतानुसार संशोधित किया जाता है। फिर अनुदित पाठ का समग्रता में फार्मेट संपादन किया जाता है।

पर्यवेक्षक पाठक, आलोचक, संपादक और अध्यापक की भूमिका एक साथ निभाता है। उसमें कौन-कौन से गुण होने चाहिए इसका अध्ययन भी हमने इस पाठ में किया हैं।

स्वयं आकलन प्रश्न

प्रश्न-1 'पर्यवेक्षण' दूसरों के कामों को प्राधिकार के साथ निर्देशन है, किसका कथन है ?

प्रश्न-2 अनुवाद पर्यवेक्षण में कितने प्रकार के संशोधन कने आवश्यक होते हैं?

8.4 सारांश

पर्यवेक्षण किसी भी संगठन या पेशे का एक महत्वपूर्ण घटक है, जो प्रभावी प्रदर्शन और निरंतर सुधार सुनिश्चित करने के लिए मार्गदर्शन और निरीक्षण प्रदान करता है। चाहे शिक्षा, स्वास्थ्य क्षेत्र, व्यवसाय या अन्य क्षेत्र हो, पर्यवेक्षण विकास, उत्कृष्टता और जबावदेही को बढ़ावा देने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाता है। प्रयासों और अन्य संसाधनों का मार्गदर्शन और निर्देशन करना पर्यवेक्षण कहलाता है जिससे वांछित कार्य एवं परिणाम की प्राप्ति की जा सके। अतएव पर्यवेक्षण का अभिप्राय, परिणामों का अवलोकन है, जो किसी भी संगठन को शक्तिशाली बनाने में महत्त्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन करता है।

8.5 कठिन प्रश्नावली

तार्किक - तत्ववेता

अर्थापति - परिणाम

संकल्पना - इच्छा

प्रचलित - जिसका प्रचलन हो

निरीक्षण - जांच

8.6 स्वयं आकलन प्रश्नों के उत्तर

उ.1 हेनरी रेइनिंग का

उ.2 दो

8.7 संदर्भित पुस्तकें

1. डॉ. नगेन्द्र (सं.), अनुवाद विज्ञान, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली।

2. डॉ. दिनेश चमौला 'शलैश' अनुवाद और अनुप्रयोग, आदिश प्रकाशन, देहरादून।

3 सुरेश कुमार, अनुवाद सिद्धान्त की रूपरेखा, वाणी प्रकाशन, दिल्ली।

8.8 सात्रिक प्रश्न

प्र.1 पर्यवेक्षण की अनुवाद में भूमिका को स्पष्ट करें।

प्र.2 पर्यवेक्षण का महत्व एवं शिक्षक के रूप में पर्यवेक्षक की भूमिका को स्पष्ट करें।

प्र.3 पर्यवेक्षक के लिए अपेक्षित गुणों की विस्तारपूर्वक विवेचन कीजिए।

*****

इकाई-9
वैज्ञानिक तकनीकी शब्दावली का अनुवाद

संरचना

9.1 भूमिका
9.2 उद्देश्य
9.3 वैज्ञानिक तकनीकी शब्दावली का अनुवाद
- भाषा प्रयुक्ति
- वैज्ञानिक तकनीकी भाषा प्रयुक्ति की विशेषताएँ
- विज्ञान क्या है?
- वैज्ञानिक विषयों के अनुवाद में प्रयुक्त भाषा की विशेषताएँ
- वैज्ञानिक शब्दावली के अनुवाद की समस्याएँ

स्वयं आकलन प्रश्न
9.4 सारांश
9.5 कठिन शब्दावली
9.6 स्वयं आकलन प्रश्नों के उत्तर
9.7 संदर्भित पुस्तकें
9.8 सात्रिक प्रश्न

9.1 भूमिका

इकाई आठ में हमने अनुवाद में पर्यवेक्षण की भूमिका, पर्यवेक्षण के महत्व तथा पर्यवेक्षण के लिए अपेक्षित गुणों का गहन अध्ययन किया है। इकाई नौ में हम वैज्ञानिक तकनीकी शब्दावली के अनुवाद, वैज्ञानिक विषयों के अनुवाद की विशेषताएँ तथा वैज्ञानिक शब्दावली के अनुवाद की समस्याओं का विस्तार पूर्वक अध्ययन करेंगे।

9.2 उद्देश्य

इकाई नौ का अध्ययन करने के पश्चात एक यह जानने में सक्षम होंगे कि -

1. वैज्ञानिक तकनीकी शब्दावली का अनुवाद क्या होता है ?
2 भाषा प्रयुक्ति क्या है ?
3. वैज्ञानिक विषयों के अनुवाद की विशेषताएँ क्या हैं ?
4. वैज्ञानिक शब्दावली के अनुवाद की प्रमुख समस्याएँ कौन-कौन सी हैं ?

9.3 वैज्ञानिक तकनीकी शब्दावली का अनुवाद

अनुवाद एक व्यावहारिक प्रक्रिया है। विभिन्न क्षेत्रों में जैसे साहित्य, सामाजिक विज्ञान, विधि, वाणिज्य तथा विज्ञान के क्षेत्र में विशेष प्रकार की शब्दावली की आवश्यकता, अनुवाद के लिए रहती है। भाषा की इस विशिष्टता का अध्ययन प्रयुक्ति के अनुसार किया जाता है। प्रस्तुत पाठ में हम ज्ञान विज्ञान की प्रयुक्ति की विशिष्टताओं के साथ-साथ उनके प्रयोग पर भी चर्चा करेंगे।

• भाषा प्रयुक्ति :

प्रयुक्ति (रजिस्टर) शब्द प्रयोग से बना है। इसका अर्थ है 'प्रयोग में लाया गया।' अंग्रेजी में इसे 'रजिस्टर' कहा जाता है जिसका अर्थ प्रचलित अर्थ से भिन्न है। भाषा विज्ञान के क्षेत्र में 'रजिस्टर' वस्तुत: एक परिभाषिक शब्द है और

समाज भाषा विज्ञान के अंतर्गत, भाषा के भीतर पाए जाने वाले भेदों का सूचक है। प्रत्येक क्षेत्र की भाषा का अलग 'रजिस्टर' या 'प्रयुक्ति' होती है, अलग स्वरूप होता है। 'भाषा प्रयुक्ति से अभिप्राय विशेष सामाजिक संदर्भ में, विशिष्ट व्यक्तियों द्वारा अपनाए जाने वाले भाषा रूप से है। व्यक्तियों/समूहों द्वारा विभिन्न परिस्थितियों में भिन्न मानसिक स्तर, संस्कार, व्यवसाय के अनुरूप अपनाए जाने वाले विशेष भाषा रूप को ही प्रयुक्ति कहा जाता है। प्रयुक्ति का मूलाधार शब्दावली, वाक्य विन्यास और शैली होती है। प्रत्येक विषय से संबंधित, विशिष्ट शब्दावली होती है और उसके प्रयोग करने वाले उसे अच्छी तरह से समझते हैं। संप्रेषणीयता के लिए उसी प्रयुक्ति का प्रयोग आवश्यक है।

संप्रेषण की रीति भी भाषा प्रयोग के स्वरूप को प्रभावित करती है। संप्रेषण लिखित है तो अधिक औपचारिक होगा, भाषा अधिक सरल और अनौपचारिक होगी। भाषा का प्रयोग, बातचीत करने वालों के पारस्परिक संबंध, मानसिक स्तर और संस्कार पर भी निर्भर करता है। कहने और सुनने वाले के बीच संबंध का प्रभाव पड़ता है। दो व्यापारी आपस में जिस तरह की भाषा का प्रयोग करते हैं वह दो वैज्ञानिकों, इंजीनियरों अथवा अध्यापकों की भाषा से भिन्न होगी। समान व्यवसाय, शिक्षा पद का समान स्तर, समान आयु तथा वक्ताओं के सामाजिक स्तर के अनुरूप भाषा या व्यवहार परिवर्तित होता है।

● वैज्ञानिक तकनीकी भाषा प्रयुक्ति की विशेषताएं :

विज्ञान की भाषा तथ्यपरक संदर्भों की भाषा होती है। इसलिए यह मूर्त भाषा होती है। शब्द प्रयोग की निश्चितता के कारण यहां अर्थ का स्थिरीकरण होता है। उदाहरण के लिए 'ऊर्जा' शब्द का अर्थ विज्ञान में 'एनर्जी' के लिए स्थिर है। साहित्य में शब्दों के अर्थ संभावनापरक या लाक्षणिक होते हैं। परंतु विज्ञान में प्रत्येक शब्द का अर्थ सुनिश्चित रहता है। विज्ञान की भाषा में प्रतीक ज्ञान चिन्ह होते हैं और निश्चित अर्थ देते हैं। उदाहरण के लिए 'गुरूत्वाकर्षण' (ग्रेविटी) शब्द का एक निश्चित अर्थ विज्ञान में है। विज्ञान की भाषा काल्पनिक न होकर भौतिक वास्तविकताओं की भाषा होती है। जैसे-जैसे भौतिक वास्तविकताओं के ज्ञान में वृद्धि होती है वैसे-वैसे शब्दावली में संशोधन और संपादन होता जाता है। विज्ञान की भाषा प्रत्ययन मूलक और तार्किक होती है, साहित्य की भाषा की तरह अमूर्त प्रतीकों विम्बों या भाव चित्रों से युक्त।

साहित्य और सामाजिक विज्ञानों की भाषा परिस्थितियों से फूटती है और अर्थ पाती है। अतः भाषा विज्ञान की तीन प्रतिक्रियाएं-अर्थादेश, अर्थ विस्तार और अर्थापति वैज्ञानिक शब्दावली में नहीं होती।

हिंदी में वैज्ञानिक शब्दावली के संबंध में यह जानना आवश्यक है कि जो वैज्ञानिक संकल्पनाएं भारत में पैदा हुई उनके लिए संस्कृत की शब्दावली उपलब्ध है। जैसे गणित आयुर्विज्ञान, ज्योतिष आदि में। दूसरी ओर जो संकल्पनाएं (Concepts) विदेश में विकसित हुई हैं उनके लिए अंतर्राष्ट्रीय रूप ही अनुवाद में ग्रहण किया जाता है। इन अंतर्राष्ट्रीय शब्दों को उनके प्रचलित अंग्रेजी रूपों में ही अपनाया गया है उनका लिप्यंतरण हिंदी की प्रकृति के अनुरूप कर लिया जाता है जैसे ऑक्सीजन, नाइट्रोजन, कैलोरी, वोलट मीटर, इलैक्ट्रॉन, प्रोटोन, राडार, पैट्रोल, रेडियो, साइन लॉग, रेजेंट आदि शब्द अंग्रेजी से लिए गए हैं। इसी तरह स्थिरकों (Constants) को भी उनके अंतर्राष्ट्रीय रूपों में ही स्वीकार किया गया है जैसे (पाई) g आदि।

वैज्ञानिक हिंदी की एक अन्य विशेषता है कि 'संकर' शब्दों का प्रयोग अर्थात् अंग्रेजी से लिए गए शब्दों में हिंदी प्रत्यय लगाना। 'आयन' शब्द का हिंदीकरण करते हुए 'आयोनाइज' अथवा 'आयोनाइजेशन' शब्द तथा 'विभाग' से 'विभागीकरण' शब्द बनाए गए हैं। हिंदी में आए विदेशी शब्द प्रायः पुल्लिंग में प्रयुक्त होते हैं पदों में भी मिली जुली शब्दावली देखने में आती है जैसे पैट्रोल चालित और स्पैक्ट्रम अवतरत फोटोग्राफी, लैंस आदि।

वैज्ञानिक भाषा की महत्वपूर्ण विशेषता होती है। संकेतों और प्रतीकों का प्रयोग। वैज्ञानिक हिंदी में ये संकेत अक्सर रोमन अथवा ग्रीक अक्षरों या चिन्हों के रूप में प्रयुक्त होते हैं। उदाहरण के लिए 'रदरफोर्ड' ने इन किरणों के नाम क्रमशः अल्फा (a) किरण, बीटा (b) किरण तथा गामा (x) किरण रखा।

''प्रयोग के आधार पर पाया गया कि ये कण वस्तुतः द्वि आवेश युक्त हीलियम आयन (He++) है।''

● विज्ञान क्या है ?

'विज्ञान' का शाब्दिक अर्थ है 'विशिष्ट ज्ञान' विज्ञान के ज्ञान में यह विशिष्टता कैसे आती है ? विज्ञान का 'ज्ञान' कल्पना प्रसूत न होकर भौतिक सामग्री के संकलन, विश्लेषण, विवेचन पर आधारित निष्कर्षों पर आधारित होता है। कहने का भाव यह है कि प्रयोग सिद्ध विचार ही विज्ञान के नियम बनते हैं। नियमों की श्रृंखला सिद्धांत बन जाती है। सार्वदेशिकत्ता और सार्वकालिक प्रयोग सिद्धता उनका आधार होती है। इस प्रकार तर्क आधारित प्रयोग सिद्ध, कार्य कारण श्रृंखला पर आधारित ज्ञान ही विज्ञान कहलाता है। विज्ञान में निरीक्षण, परीक्षण और प्रयोग का महत्व रहता है।

विज्ञान के अंतर्गत चार प्रमुख विषय आते हैं भौतिकी, गणित, रसायन और प्राणी विज्ञान। वनस्पति विज्ञान, आयुर्विज्ञान, इंजीनियरी, कम्प्यूटर विज्ञान, कृषि विज्ञान आदि विषय इन्हीं से निकले हैं। विज्ञान प्रणाली के तीन प्रमुख गुण माने जाते हैं तर्क, प्रामाणिकता और वस्तुनिष्ठता।

वैज्ञानिक नियम कार्य कारण श्रृंखला से बंधे रहते हैं अर्थात तर्कसम्मत होते हैं। ये वास्तविक प्रयोगों, तथ्यों और विश्लेषण पर आधारित होने के कारण सार्वभौतिक सार्वकालिक और वस्तुनिष्ठ होते हैं, व्यक्तिनिष्ठ नहीं।

विज्ञान–प्रणाली के उपर्युक्त तीनों गुण किसी न किसी वैज्ञानिक भाषा–रूप शैली और शब्दावली में प्रतिबिम्बित होते है। जहा तक भाषा रूप और शैली का प्रश्न है। वैज्ञानिक भाषा के वाक्यों में अधिक कसाव रहता है, शब्दों का चयन अधिक सावधानी से किया जाता है जिससे किसी प्रकार के अनावश्यक दोहराव वाले शब्दों का प्रयोग न हो। लाक्षणिक की बजाय अभिधात्मक तथा एकार्थी अभिव्यक्तियों का प्रयोग होता है। फलस्वरूप वैज्ञानिक भाषा के वाक्य अर्थ गर्भित होते हैं और उनमें बहुत अधिक परिवर्तन नहीं होता।

● वैज्ञानिक विषयों के अनुवाद में प्रयुक्त भाषा की विशेषताएँ :

वैज्ञानिक विषयों के अनुवाद में प्रयुक्त भाषा की निम्नलिखित विशेषताएं हैं

● नित्यतावादी क्रियाएं :

विज्ञान के नियम सार्वभौम होते हैं। इसलिए सामान्य नित्यतावादी क्रियाओं का प्रयोग इसमें होता है जैसे है, होता है। उदाहरण के लिए 'पृथ्वी' के गुरूत्वाकर्षण के कारण पदार्थ ऊपर से पृथ्वी की ओर गिरते हैं। अंतरिक्ष में गुरूत्वाकर्षण न होने से पदार्थ हवा में स्थिर रहते है या तैरते रहते हैं।

● आरेखों अथवा विशेष चिह्नों का प्रयोग :

विज्ञान अपनी विषय वस्तु को सूक्ष्मता और स्पष्टता से व्यक्त करने के लिए आरेखो, विशेष चिह्नों का प्रयोग करता है। ये युक्तियां शाब्दिक व्याख्या की अनुपूरक होती हैं। उदाहरण के लिए 'त्रिकोण' अथवा 'वर्ग' लिख देने से संकल्पना स्पष्ट नहीं होती। इसके लिए इन शब्दों को आरेखों द्वारा ( ) स्पष्ट करना पड़ता है।

● विषय विषयक शब्दावली की जानकारी आवश्यक :

वैज्ञानिक विषयों का अनुवाद करते समय क्या अनुवादक को इन विषयों का ज्ञान होना आवश्यक है। यह न तो संभव है, न आवश्यक। यदि विषय का ज्ञान आवश्यक मान लें तो हर वैज्ञानिक विषय का अनुवादक अलग से खोजना होगा। एक डाक्टर जिसने अंग्रेजी में अध्ययन किया है जरूरी नहीं हिंदी का भी अच्छा ज्ञाता है, वह अनुवाद कैसे करेगा? वह अनुवादक क्यों बनना चाहेगा। हमारे विचार से अनुवादक को विषय की अपेक्षा उस विषय की शब्दावली का अच्छा ज्ञान होना चाहिए।

● विज्ञान विषय शब्दावली प्रयोग के विभिन्न स्तर :

विज्ञान की भाषा का इस्तेमाल सामान्यतः चार स्तरों पर होता है।

(1) वैज्ञानिक प्रयोगशाला स्तर (2) कार्यालयी स्तर (3) अदैनन्दिनी व्यवहार का स्तर (4) प्रचार / बिक्री का स्तर।

क्षेत्र बदलने पर वैज्ञानिक शब्दावली के प्रयोग का स्वरूप भी बदल जाता है। उदाहरण के लिए

● **चिकित्सा शास्त्र की परिभाषिक शब्दावली मुख्यतः तीन रूपों में मिलती है-**

1. **शैक्षिक :** जिसमें ग्रीक और लातिनी भाषा से चली आती वह शब्दावली होती है जिसका उपयोग शैक्षिक आलेखों में किया जाता है। उदाहरण के लिए Philegmasia, Albocloen इन शब्दों का लिप्यंतरण ही संभव है।, अनुवाद नहीं।
2. **व्यावसायिक :** यह विशेषज्ञों द्वारा प्रयुक्त शब्दावली होती है। उदाहरण के लिए Epidemic, Tetanus] Scarlatina तथा Paratities आदि। इनका भी लिप्यंतरण ही संभव है।
3. **लोक-प्रचलित :** उपर्युक्त बीमारियों के नामों के समानांतर वैकल्पिक रूप, लोक व्यवहार में रहते हैं जैसे Mumps (कनपेडा, गलसुआ), Chicken Posc (छोटी माता), Typhaid (मोतीझाला) Jaundice (पीलिया) Stroke (सर्दी खा जाना, दौरा पड़ना), Heat stroke (लू लगना)
4. **शब्द युग्मों के अनुवाद में विशेष सावधानी आवश्यक :** चिकित्सा विज्ञान के अतिरिक्त जीव विज्ञान और कृषि विज्ञान में अनेक ऐसे शब्द युग्म प्रयुक्त होते हैं जिनके अनुवाद में विशेष सावधानी आवश्यक है जैसे (क) Silver Fish का अनुवाद 'रजत मछली' लिखना जानकारी की कमी दर्शाता है। वास्तव में यह आम कीड़ा है जो लकड़ी कागज़ आदि में लगता है। इसका लिप्यंतरण ही उचित है।

   (ख) White ants का अनुवाद 'सफेद चींटी' करना गलत होगा। यह 'दीमक' है, इसलिए इसका अनुवाद 'दीमक' ही होगा। इसी तरह 'अरहर' को अंग्रेजी में 'Red gram' लिखना गलत है। इसे भी लिप्यंतरण करके 'Arhar' लिखना उचित होगा।
5. जिन बीमारियों के नाम परंपरागत लोक व्यवहार की भाषा में नहीं है उन्हें ज्यों का त्यों लिखना चाहिए। जैसे कैंसर (Cancer) टिटानस (Titanus), ब्रेन हेम्रेज। सामान्य लोक व्यवहार में आने वाले शब्दों का अनुवाद भी उचित नहीं है जैसे रैफ्रिजेरेटर, 'डीप फ्रीजर' 'माइक्रो बेन', 'कुकिंग रेंज' आदि। हिंदी शब्द कोश में 'बटन' 'कमीज़' तथा अंग्रेजी में 'Dhoti, Kurta जैसे शब्द प्रयुक्त हो रहे हैं।

ऐसे शब्दों के अनुवाद असंभव तो नहीं होते परंतु कष्ट साध्य होते हैं इसलिए आसानी से प्रचलित नहीं हो पाते। उदाहरण के लिए 'दियासिलाई' के लिए 'अग्नि शलाका' 'टेलीविजन' के लिए 'दूरदर्शन' इंजीनियर के लिए 'अभियंता' आदि अनुहित शब्द सही होने पर भी कम प्रचलित हैं।

कभी-कभी कुछ शब्दों के सहज अनुवाद लोक-व्यवहार के आधार पर प्रचलित हो जाते हैं। ऐसे शब्दों के लिए कोशगत पर्याय खोजने या शब्द पढ़ने के बजाय प्रचलित रूपों को स्वीकार कर लेना ही अनुवादक के हित में होता है। उदाहरण के लिए 'Fire Engine' के लिए 'दमकल' और बिजली के Positive और Negative आवेश के लिए ठंडा/गर्म तार।

यह भी जरूरी नहीं होता कि कोशगत अर्थ हमेशा सही हो। शब्द के स्त्रोत के साथ उसका अर्थगत अनुषंग जुड़ा रहता है। ऐसी स्थिति में व्यवहार ही प्रमाण होता है। अंग्रेजी भाषा के शब्द Cheese का सही अर्थ 'पनीर' नहीं होता जिसे हम 'पनीर' कहते हैं। यह जानकारी कोश से नहीं व्यवहार से ही हासिल होती है।

● **प्रौद्योगिकी के पारिभाषिक शब्द :**

दूसरे प्रकार अनुवादों से प्रौद्योगिकी की अनुवाद की पहचान मुख्य रूप से उसकी पारिभाषिक शब्दावली के कारण होती है।

प्रौद्योगिकी की पारिभाषिक शब्दावली का अनुवाद करते समय एक बात का विशेष ध्यान दिया जाना चाहिए। ऐसे अनेक शब्द है जिनका विज्ञान के विविध क्षेत्रों में अलग-अलग अर्थों में प्रयोग होता है। उदाहरण के लिए Force, Power, Strength, Thrust आदि।

● पारिभाषिक के स्थान पर वर्णनात्मक शब्दों का प्रयोग :

प्रौद्योगिक विषयों के अनुवाद में एक समस्या आती है। कभी-कभी लेखक किसी तकनीकी वस्तु के लिए पारिभाषिक शब्द के स्थान पर वर्णनात्मक शब्द का प्रयोग करता है। ऐसा प्रायः तीन स्थितियों में होता है। (1) वस्तु नई हो और उसे कोई नाम न दिया गया हो (2) पारिभाषिक शब्दावली की दुहराई से बचने के लिए (3) किसी अन्य पारिभाषिक शब्द से अंतर बताने के लिए। यदि पारिभाषिक शब्द के लिए लक्ष्य भाषा में कोई शब्द उपलब्ध हो तो भी अनुवादक को अपने ज्ञान का प्रदर्शन करने के लिए वर्णनात्मक पद के स्थान पर पारिभाषिक शब्द का प्रयोग नहीं करना चाहिए।

● वैज्ञानिक शब्दावली अनुवाद की शैली कैसी हो ?

प्रायः कहा जाता है कि वैज्ञानिक विषयों के अनुवाद में विषय-वस्तु सर्वोपरि होती है, भाषा-शैली का महत्व गौण है। ऐसा नहीं है। वैज्ञानिक अनुवाद का अर्थ तकनीकी शब्दों का अनुवाद कर देना मात्र नहीं है। इसका अर्थ केवल इतना है कि तथ्यात्मक प्रामाणिकता बनी रहे। ध्यान देने की बात यह है कि तथ्यों की प्रामाणिकता को प्रस्तुत करने के लिए उन्हीं के अनुरूप शैली का भी प्रयोग होना चाहिए। ताकि अनुवाद बोधगम्य और रोचक बन सके। वैज्ञानिक लेखन में साहित्य जैसी लालित्य, व्यंजना अथवा व्यंग्यात्मकता अपेक्षित नहीं लेकिन विज्ञान की सहज शैली अवश्य अपेक्षित है।

● सदैव शब्दानुवाद नहीं किया जाना चाहिए :

लोकप्रिय वैज्ञानिक लेखन के विषयों में तथ्यात्मक प्रामाणिकता के साथ-साथ सुरूचिपूर्ण सरल परंतु आकर्षक शैली अपेक्षित है। इसमें विज्ञान की सूचनाओं को जन-सामान्य के लिए प्रस्तुत किया जाता है। इस तरह की सामग्री के अनुवाद में तथ्यों की प्रामाणिकता के साथ-साथ समुचित सरसत्ता और प्रभावोत्पादकता होनी चाहिए।

● देशकाल का परिप्रेक्ष्य भी अनुवाद में उपेक्षित न हो :

विज्ञान के अनुवाद में भी देशकाल का परिप्रेक्ष्य नहीं छूटना चाहिए। उदाहरण के लिए यदि उत्तरी गोलार्द्ध के किसी देश में बैठा व्यक्ति लिखता है कि सर्दियों में खंजन पक्षी दक्षिण में चले जाते हैं और भारत में बैठा व्यक्ति इसका अनुवाद करता है कि खंजन पक्षी सर्दियों में उत्तर से दक्षिण में चलते जाते हैं तो भाषिक दृष्टि से यह ठीक होते हुए भी तथ्यात्मक दृष्टि से गलत हो जाएगा। भारत में खंजन पक्षी उत्तरी भारत में सर्दियों में ही आते हैं। भारत दक्षिण में स्थित है।

● वैज्ञानिक शब्दावली के अनुवाद की समस्याएं :

विज्ञान एक व्यापक संकल्पना है और वैज्ञानिक लेखन उस व्यापकता को भाषा में समेटने का गंभीर एवं रचनात्मक प्रयास है। भारत में विज्ञान संबंधी चिंतन मनन की लंबी परंपरा रही है तथा आयुर्विज्ञान, गणित, ज्योतिष, रसायन शास्त्र, वैमानिकी, यांत्रिकी आदि का संस्कृत में पर्याप्त शब्द भंडार है। मध्यकाल में विज्ञान के क्षेत्र में मौलिक चिंतन प्रायः समाप्त हो गया। गत दो सौ वर्षों में भारत में वैज्ञानिक लेखन की ओर विद्वानों का ध्यान गया क्योंकि पश्चिम में बड़े पैमाने पर आविष्कार हुए, वैज्ञानिक ज्ञान में वृद्धि हुई और उसे जन-जन तक पहुंचाने के भारतीय भाषाओं में अनुदित करने की आवश्यकता अनुभव होने लगी। 19वीं और 20वीं शताब्दी में भारत के अनेक विद्वानों ने अनुवाद का कार्य प्रारंभ किया तो उनके सामने परिभाषिक, तकनीकी शब्दों के कमी की समस्या आई। भारत, स्वाधीनता के लिए छटपटा रहा था, समाज में नई चेतना लाने के लिए सामाजिक विज्ञानों और प्राकृतिक विज्ञानों में साहित्य उपलब्ध करवाने की समस्या सबके सामने थी। निश्चय ही आधुनिक समय में वैज्ञानिक लेखन का विकास यूरोपीय देशों में भारत के संपर्क का परिणाम है।

• वैज्ञानिक और तकनीकी शब्दों का सृजन :

भारत में आज भी उच्च स्तर पर वैज्ञानिक विषयों का अध्ययन, अध्यापन, भारतीय भाषाओं में न होकर, अंग्रेजी में ही होता है इसलिए तकनीकी और परिभाषिक शब्दों के निर्माण और प्रयोग की प्रक्रिया बहुत धीमी है। वैज्ञानिक और तकनीकी शब्दावली आयोग जैसी अनेक संस्थाएं, शब्दावली निर्माण और अनुवाद को लेकर सामने आई। वैज्ञानिक एवं औद्योगिक अनुसंधान परिषद, भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद जैसी संस्थाओं का अपना तंत्र है जो शब्दावली निर्माण और अनुवाद कार्य में अपना योगदान कर रही है। राष्ट्रीय स्तर पर यदि इजराईल की तरह हमने भारतीय भाषाओं को विकसित करने में दृढ़ इच्छा शक्ति दिखाई होती तो आज हिंदी के पास इतना समृद्ध शब्द भंडार होता कि विज्ञान की उच्च शिक्षा हिंदी में दी जा रही होती। इजराइल ने हिब्रू को राष्ट्र भाषा और शिक्षा का माध्यम घोषित किया था।

• वैज्ञानिक शब्दावली का देशकाल से संबंध :

सामान्य रूप से विज्ञान की संकल्पनाएं देशकाल निरपेक्ष होती हैं परंतु उनका विकास किसी देशकाल में हुआ होता है। इसलिए उनके सूचक शब्दों पर देशकाल की संस्कृति का प्रभाव रहता है जिसके कारण उन शब्दों के अनुवाद में समस्या पैदा होती है। सभ्यता का अंतराल विज्ञान की शब्दावली के अनुवाद को जटिल बना देता है। हिंदी में वैश्वानद, अग्नि, जठरानल, दावानल जैसे शब्द हैं जिनका अनुवाद अंग्रेजी 'Fire' शब्द में पूरी तरह नहीं आ पाता। ‘फायर’ पश्चिम में ‘काम भावना’ (Sexuality) का अंश है जो भारतीय परंपरा में नहीं है। इसी प्रकार अंग्रेजी के (Sanitation) शब्द का हिंदी अनुवाद ‘स्वच्छता’ अधूरा है क्योंकि यह 'Cleanliness' का पर्याय है। Sanitation में पर्यावरण की अनुकूलता और परिवेश की स्वचछता का भाव मिला रहता है। इसी प्रकार Punctuality के लिए ‘समयनिष्ठता’ ‘समयबद्धता’ ‘समयानुशासन’ और ‘समय की पाबंदी’ जैसे शब्द प्रचलित हैं।

हिंदी में अंग्रेजी के 10 हजार से अधिक शब्द ज्यों के त्यों स्वीकार कर लिए गए हैं क्योंकि वे व्यवहार में आ रहे हैं, जैसे कार्बन, कैल्शियम, कैंसर, मलेरिया, एड्स आदि।

• तकनीकी वैज्ञानिक शब्दों के समतुल्य शब्द निर्माण :

संविधान में दी गई राष्ट्रीय नीति के अनुरूप नए तकनीकी शब्दों के निर्माण में संस्कृत से शब्दावली ली जा रही है। Climate के लिए जलवायु, Atmosphare के लिए ‘वातावरण’, 'Environment' के लिए ‘पर्यावरण’, Airforce के लिए ‘वायुसेना, Aircraft के लिए विमान, शब्द लिया गया। रामायण में ‘पुष्पक विमान’ का उल्लेख है इसलिए ‘विमान’ शब्द प्रचलित हुआ और इसके आधार पर अन्य शब्द गढ़े गए यथा

(1) Aeronautical Development वैज्ञानिकी विकास

(2) Department of Aeromotcs वैज्ञानिकी विभाग

(3) Ciiril Avtation नागर विमानन

मैथिलीशरण गुप्त ने ‘भारत भारती’ रचना में ‘भारती’ शब्द का ‘सरस्वती’ के अर्थ मेंप्रयोग न करके ‘भारत’ और ‘भारत माता’ का अर्थ प्रचारित किया। इसी की तर्ज पर ‘प्रसार भारती’ शब्द प्रचलित हुआ। अंग्रेजी में Season ऋतु और मौसम सूचक है परंतु ‘मानसून’ शब्द ‘मौसम’ का ही विकसित होने पर भी विशेष प्रकार की बरसाती हवाओं का सूचक बना है।

हिंदी में ‘विष’ और ‘जहर’ प्रायः समानार्थक है परंतु अंग्रेजी में Poision, Toxin तथा Venom शब्द है जिन ‘आविष’ और ‘जीविष’ के रूप में अनुदित किया जाता है। Poision रसायनिक है, जीविष, जीव का विष अर्थात् सांप आदि का विष है। Toxin या अविष वनस्पति विज्ञान से जुड़ा है। ग्रीक शब्द Geometry का अर्थ है ‘पृथ्वी मापना’ क्योंकि यह विज्ञान भूमि मापने की आवश्यकता से पैदा हुआ। यह निश्चय ही ‘ज्या’ अर्थात ‘परिधि’ को मापने का मामला हिंदी में Geometry का पर्याय अपनी परंपरागत संकल्पना का नवीन अर्थ में प्रयोग के आधार पर है। इसी प्रकार अंग्रेजी के Hyper शब्द का अनुवाद कहीं ‘उच्च’ तो कहीं ‘अति’ करना पड़ता है, जैसे Hyper Tenson

(उच्च रक्तचाप) Hyper Aesthesia (अतिसंवेदिता) तथा Hyper-balic Expressions (अतिश्योक्ति पूर्ण अभिव्यक्ति) इस प्रकार यह स्पष्ट हो जाता है कि वैज्ञानिक और तकनीकी क्षेत्र में परिभाषिक शब्दों का निर्माण मौलिक क्षेत्र है। इनके निर्माण में लगा व्यक्ति भाषा और विज्ञान का समान रूप से विद्वान होना चाहिए।

इस प्रकार हम कह सकते हैं कि वैज्ञानिक और तकनीकी शब्दों के अनुवाद और निर्माण का अपना स्वरूप और अपनी ही समस्याएं हैं। विज्ञान के क्षेत्र में परिभाषिक शब्दों के निर्माण में नियम तय हैं और उन्हीं के आधार पर शब्द निर्माण हो रहा है।

(1) प्रस्तुत पाठ में हमने पढ़ा कि प्रत्येक विषय की अपनी विशिष्ट भाषा-प्रयुक्ति होती है। अनुवाद करते समय उसकी प्रकृति और विशेषताओं पर विशेष ध्यान देना चाहिए।

(2) वैज्ञानिक ज्ञान तर्क आधारित, प्रयोग सिद्ध, सार्वभौमिक, सार्वकालिक और वस्तुनिष्ठ होता है। इसकी भाषा मे नित्यतावादी क्रियाएं, आरेख अथवा चिह्न, विशिष्ट पारिभाषिक शब्दावली विभिन्न स्तरों पर विभिन्न प्रकार की भाषा का प्रयोग होता है।

(3) पारिभाषिक शब्दों के स्थान पर पाठक को समझाने के लिए कभी-कभी वर्णनात्मक शब्दों का प्रयोग आवश्यक हो जाता है।

(4) वैज्ञानिक लेखन का प्राय: शब्दानुवाद ही संभव होता है परंतु लोकप्रिय वैज्ञानिक विषयों के लेखन के लिए शब्दानुवाद के साथ-साथ भावानुवाद शैली भी आवश्यक हो जाती है।

(5) वैज्ञानिक शब्दावली निर्माण और प्रयोग में अनेक तरह की समस्याएं आती हैं जिनका विवेकपूर्ण समाधान अपेक्षित है।

स्वयं आकलन प्रश्न

प्रश्न-1 'विज्ञान' का शाब्दिक अर्थ क्या है ?

प्रश्न-2 'विज्ञान' के अंतर्गत कितने प्रमुख विषय है ?

9.4 सारांश

वैज्ञानिक तकनीकी शब्दावली भाषा का वह भाग है जिसका उपयोग वैज्ञानिक अपनी व्यावसायिक गतिविधियों के संदर्भ में करते हैं। प्रकृति का अध्ययन करते समय, वैज्ञानिक अक्सर नई सामग्री या अभौतिक वस्तुओं और अवधारणाओं का सामना करना हैं या उनका निर्माण करते हैं और उन्हें नाम देने के लिए मजबूर होते हैं।

9.5 कठिन शब्दावली

दारूण - भयंकर

संरक्षण - देखरेख

विचलित - चंचल

स्पृहा - इच्छा

अलापना - बोलना

9.6 स्वयं आकलन हेतु अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

उ.1 विशिष्ट ज्ञान

उ.2 चार

9.7 संदर्भित पुस्तकें

(1) डॉ. नगेन्द्र, अनुवाद विज्ञान, दिल्ली विश्वविद्यालय दिल्ली।

(2) डॉ. दिनेश चमोला 'शैलेश', अनुवाद और अनुप्रयोग, आदिश प्रकाशन, देहरादून।

(3) डॉ. पूरन चन्द टंडन, अनुवाद साधना, अभिव्यक्ति प्रकाशन, दिल्ली।

9.8 सात्रिक प्रश्न

प्रश्न- प्रयुक्ति से क्या अभिप्राय है? वैज्ञानिक प्रयुक्ति की विशेषताओं पर प्रकाश डालें।

प्रश्न- विज्ञान से क्या अभिप्राय है? इसके अन्तर्गत आने वाले विषयों की शब्दावली का परिचय दें।

प्रश्न- वैज्ञानिक शब्दावली निर्माण की समस्याओं का सोदाहरण वर्णन करें।

*****

इकाई–10
मुहावरों एवं लोकोक्तियों का अनुवाद

संरचना

10.1 भूमिका

10.2 उद्देश्य

10.3 मुहावरों एवं लोकोक्तियों का अनुवाद

- साहित्य और साहित्येकर सामग्री के अनुवाद में भिन्नता
- साहित्यिक रचनाओं में अनुवाद की प्रक्रिया

स्वयं आकलन प्रश्न–1

10.4 मुहावरों और लोकोक्तियों का साहित्य में महत्व

- मुहावरों का अनुवाद
- लोकोक्तियों का अनुवाद

स्वयं आकलन प्रश्न–2

10.5 सारांश

10.6 कठिन शब्दावली

10.7 स्वयं आकलन हेतु प्रश्नों के उत्तर

10.8 संदर्भित पुस्तकें

10.9 सात्रिक प्रश्न

10.1 भूमिका

इकाई नौ में हमने वैज्ञानिक तकनीकी शब्दावली का अनुवाद वैज्ञानिक विषयों के अनुवाद की विशेषताएं तथा वैज्ञानिक शब्दावली के अनुवाद की समस्याओं का गहन अध्ययन किया है। इकाई दस में हम मुहावरों एवं लोकोक्तियों का अनुवाद, साहित्य और साहित्येतर सामग्री के अनुवाद में भिन्नता तथा मुहावरों एवं लोकोक्तियों का साहित्य में महत्व इत्यादि का विस्तारपूर्वक अध्ययन करेंगे।

10.2 उद्देश्य

इकाई दस का अध्ययन करने के पश्चात हम यह जानने में सक्षम होंगे कि –

1. मुहावरों एवं लोकोक्तियों का अनुवाद क्या है ?
2. साहित्य और साहित्येतर सामग्री के अनुवाद में क्या भिन्नता है ?
3. साहित्यिक रचनाओं में अनुवाद की प्रमुख प्रक्रिया कौन सी है ?
4. मुहावरों एवं लोकोक्तियों का साहित्य में क्या महत्व है ?

10.3 मुहावरों एवं लोकोक्तियों का अनुवाद

मुहावरों और लोकोक्तियाँ समाज के लिए सामूहिक अनुभव की ठोस अभिव्यक्ति होते हैं। इसलिए 'डच भाषा' में कहावत को 'दिन–प्रतिदिन के अनुभव की पुत्री' कहा गया है। इनमें मानव जाति के संपूर्ण अनुभवों का निचोड़ मौजूद रहता है। इसलिए ये भाषा में लवणवत् माने गए हैं। अरबी लोग इन्हें शब्दों का दीपक कहते हैं। कवि टेनीसन ने कहा है– ''ये वे रत्न है जो काल की खुली तर्जनी पर सदा चमकते रहते हैं।'' इस प्रकार पुरखों के अनुभवभरे वचन और जनसाधारण की उक्तियाँ लोकोक्ति अथवा मुहावरों के माध्यम से जीवित रहते हैं। लोकोक्तियाँ तथा मुहावरे भाषा को जितना अधिक प्रभावशाली बनाते हैं, अनुवाद करते समय वे उतने ही प्राणलेवा सिद्ध होते है।

सर्वप्रथम तो लोकोक्ति तथा मुहावरे का अंतर समझना अनुवादक के लिए बहुत जरूरी शर्त है। लोकोक्ति में एक पूर्ण सत्य या विचार की पूरी अभिव्यक्ति होती है। वह दूसरे वाक्य में अंश नहीं बनती, अपितु एक स्वतंत्र वाक्य होती है। मुहावरा स्वतंत्र वाक्य नहीं होता। वह किसी वाक्य में रखे जाने का सहारा खोजता है। उदाहरणार्थ– 'ठंडा लोहा गर्म लोहे को काटता है। एक लोकोक्ति है तथा 'टेढ़ी खीर' 'दाँत खट्टे करना' आदि मुहावरे हैं। कहावतें और मुहावरे प्रायः किसी अनुभवसिद्ध कहानी का सार होते हैं। इनके माध्यम से की गई अभिव्यक्ति लोकजीवन और लोकचेतना की ज्यादा गहरी पकड़ से युक्त होती है। इसलिए उसकी लाक्षणिकता और व्यंजकता अपने में अर्थगर्भत्व की एक बहुत बड़ी उपलब्धि को संचित किये होती है। लोक–जीवन की अनेक स्थितियाँ लोकोक्ति से ही व्यंजित होती हैं। लोकानुभव की कसौटी पर पूरी तरह खरा उतरने के बाद ही कोई कथन लोकोक्ति बनता है। ऐसी स्थिति में इसका अनुवाद एक बड़ी चुनौती का रूप होता है। लोकोक्तियों और मुहावरों को स्रोतभाषा से लक्ष्यभाषा में अंतरित करते समय अनुवादक का प्रयास होता है मूल शब्दार्थ की दोनों भाषाओं में खोज करना।

लोकोक्तियों में सांस्कृतिक–ऐतिहासिक संदर्भ का पूरा लोक–रहस्य अंतर्निहित होता है, इसलिए उनके अभिव्यंजक शब्द विशिष्ट–विशिष्ट अर्थ–संदर्भों के वाहक होते हैं। वे सामान्य भाषा की सरल उक्तियाँ नहीं होतीं, बल्कि लोकानुभव की ऐसी ध्वन्यर्थमयी उक्तियाँ होती हैं जिनका अनुवाद बड़ा ही कठिन होता है। उनमें संपूर्ण लोक–जीवन रचा–बसा रहता है। अनुवादक प्रत्येक देश के लोक–जीवन की और भाषा की भीतरी से भीतरी पकड़ सहजता से नहीं कर सकता। अतः भाषा में इनकी अभिव्यक्तियों पर अधिकारपूर्वक अनुवाद करना असंभव तो नहीं, किंतु बड़ा ही जटिल कार्य होता है। एक व्यक्ति तीन–चार भाषाओं पर अधिकार प्राप्त कर सकता है। किंतु आज के युग में सभी भाषाओं पर अधिकार होने का दावा हास्यास्पद ही प्रतीत होगा।

एक ही देश की लोकोक्तियां प्रादेशिक संस्कृति के रंग लिये होती हैं और उन स्थानीय रंगों (Local Colours) में निहित अर्थच्छायाओं, सूक्ष्म बारीकियों को पकड़ने में उस देश के अन्य भागों के लोगों को भी कठिनाई होती है। ऐसी स्थिति में दूसरे देश और संस्कृति के लोगों के लिए उन्हें पकड़ पाना तो बहुत बड़ी बात है। भारतवर्ष में विभिन्न भाषाओं और बोलियों की कहावतें अलग–अलग ढंग की शैलियों और पद्धतियों की हैं। उनमें समानता के बावजूद काफी असमानता है। भौगोलिक, सामाजिक, आर्थिक स्थितियों, रहन–सहन, रीति–रिवाज, आस्था–विश्वास, आचार–विचार, जादू–टोना, तंत्र–मंत्र, शिक्षा–दीक्षा आदि सभी का भीतरी प्रभाव उन पर तैर रहा है। पंजाबी की कहावत है 'नालायक पुत्तर दा बस्ता भारी।' अब हिंदी में इसे 'नालायक बेटे का बस्ता भारी' कहते हैं तब इसमें कुछ औपचारिकता–सी दिखाई देने लगती है लेकिन जब कहते हैं कि 'नालायक पूत का बस्ता भारी', तो 'पूत' शब्द से जो बोलीगत सहायता मिलती है वह पंजाबी पुत्तर के पर्याप्त निकट लगती है क्योंकि उसमें एक ठेठ देसीपन का बोध होता है।

हर भाषा की लोकोक्तियाँ, नवीन उपमाओं और नवीन भावों की निजता में एक विशिष्ट ढंग की प्रतिभा का संकेत देती हैं। अतः लोकोक्तियों का अनुवाद करते समय दोनों भाषाओं के स्रोतों को भलीभांति समझ लेना चाहिए। शब्दशः अनुवाद करने का प्रयास अधिकतर असफल हो जाता है। मूल कहावत के अलंकार और तुकबंदीगत आग्रहों को ज्यों का त्यों दूसरी भाषा में लाने में अनुवाद असमर्थ रहता है। उदाहरणार्थ हिंदी की कहावत है–

'टके की बुढ़िया, नौ टका सिर मुड़ाई'

इसका तुकबंदीगत अनुवाद हुआ–

'Uarter worth verry, and three quarters to carry'

यहां 'Verry' और 'Carry' की तुकबंदी ठीक बैठी है और अनुवाद भी मूल के काफी नज़दीक है। लेकिन ऐसा प्रायः नहीं होता। अनुप्रास के साथ प्रायः सुंदर अनुवाद नहीं हो पाता क्योंकि लोकोक्ति अनुस्यूत दृष्टांत काफी गड़बड़ करता है। भारतीय कहावतें प्रायः कुटुंब पद्धति तथा पाप–पुण्य के संबंध में समान विचार रखने के कारण भावों में समानता रखती हैं, अतः भारतीय भाषाओं की लोकोक्तियों का हिंदी अनुवाद उतनी कठिन समस्या नहीं खड़ी करता जितनी कि विदेशी भाषाओं की लोकोक्तियों का। इसी तरह भारतीय धारणाओं और विधियों को अंग्रेजी में अनूदित करना

कठिन हो जाता है।

प्रादेशिक भाषाएँ एक दूसरे को प्रभावित करती रहती हैं। किसी स्थिति विशेष में एक देश का प्रभाव दूसरे देश पर पड़ता है। इस तरह से लोकोक्तियों का आदान-प्रदान बिना रोक-टोक के होता रहता है। अनेक बार इनमें इतनी समानता होती है कि उनका अनुवाद काफी सुविधा से हो जाता है। शब्दानुवाद यदि न भी हो पाए तो अत्यंत सहज सन्निकट भावानुवाद हो जाता है। उदाहरणार्थ- 'Barking dogs soldom bite'

हिंदी में इसी से मिलती जुलती कहावत है

'जो गरजते हैं वे बरसते नहीं'

किंतु गुजराती में बिल्कुल अंग्रेजी जैसी ही कहावत मिल जाती है-

'मसतो कूतरो करढतो नयी'

लोकोक्तियां के अनुवाद में एक कठिनाई यह भी आती है कि अनुवादक का प्राय: साथ देने वाला कोश उसका साथ बहुत देर तक नहीं दे पाता। शब्दकोश में लोकोक्तियों प्राय: नहीं होती और होती भी हैं तो इतनी कम होती हैं कि उनसे अनुवादक का काम नहीं चलता। द्विभाषिक, त्रिभाषिक लोकोक्ति कोश बनाने की वही कठिनाई है जो इनके अनुवाद में सामने आती है क्योंकि थोड़े-बहुत शब्द समानार्थी मिल पाते हैं और अधिकतर भिन्नार्थी। अत: लोकोक्तियों की पूरी अर्थ-व्यंजना एक भाषा से दूसरी भाषा में भगीरथ प्रयास करने पर भी अर्थ गंगा नहीं बहा पाती।

स्रोतभाषा से लक्ष्यभाषा में लोकोक्तियों का व्याख्यात्मक अनुवाद (Interpretative translation) हो सकता है। सही अनुवाद के लिए स्रोतभाषा के अर्थ को पकड़ते हुए लक्ष्यभाषा में उस अर्थ को रक्षित रखना जरूरी होता है। इस प्रक्रिया को अपनाने से अनुवाद में अर्थ और भाव की पूरी रक्षा हो जैसे हिंदी की कहावत है- 'तवा हाँडी को काली बताए'। इसका अंग्रेजी में कई तरह से अनुवाद हो सकता है

(i) 'The pan calls the pot black'

(ii) 'The Kettle calls the pot black'

(iii) "The frying pan says to the pan" = 'Abount brows'

(vi) The sooty oven mocks the black chimney.

(v) The klin calls the oven burnt house.

(vi) The chimney sweeper his the collier wash his face

इस प्रकार यदि अनुवादक कहावत का अर्थ पकड़ लेता है तो उसे अनुवाद में कई तरह से प्रस्तुत कर सकता है जिसमें शब्दों को बदलने पर भी अर्थ सुरक्षित रहता है। कभी-कभी ऐसी लोकोक्ति होती है जो ऐसा बिखराव लिये होती है कि लक्ष्यभाषा में उसे सूत्रबद्ध करना पड़ता है और यदि उसे सूत्रबद्ध न किया जाय तो अर्थ ही खो जाता है - 'बछिया घर में रही तब तक सुहागन, पर बिक गई तब अभागिन।'

इसके समकक्ष कई कहावतें हो सकती है

(i) 'The crow thinks her own bird fairest.'

(ii) 'Every potter praises his own pot, and more if it is broken.'

(iii) 'Each priest praiseshis own relice'

किन्तु ऐसी कहावतों का यदि शब्दानुवाद कर दिया जाए तो सूत्रबद्धता चाहे न आए किंतु अर्थ रक्षित रहता है-

'The liefer was auspicious so long as it was with us, when it was sold out to others if became inauspicious.

इस बिखरी कहावत का अर्थ व्यंजित करने वाली एक अन्य कहावत हिंदी में ही मौजूद है

'हर कुम्हारन अपने ही मटके सराहती है।'

इस प्रकार स्रोतभाषा की लोकोक्ति खंडित हुए बिना लक्ष्यभाषा में उतर आती है। किंतु 'On the horns of a dilemma' को 'सांप के मुंह में छछूंदर, निगले तो अंधा, उगले तो कीढ़ी' अभिव्यक्त नहीं किया जा सकता क्योंकि इसमें समानार्थी खो गए हैं और अंग्रेजी की उपरोक्त कहावत से अधिक गहरी अर्थव्यंजना हिंदी की यह कहावत प्रस्तुत नहीं कर रही है।

कभी-कभी ऐसा भी होता है कि दो भाषाओं की लोकोक्तियों में विचार समान होते हैं किंतु उनका प्रभाव समान नहीं होता। जैसे। little pot is so hot' से मिलती-जुलती कहावत है 'अधजल गगरी छलकत जाय' या 'क्षुद्र नदी बढ़ि चलि इतरानी।' इन कहावतों में विचार-साम्य होने के बावजूद प्रभाव साम्य नहीं है।

स्रोतभाषा की लोकाक्तियों के समान अर्थ वाली लोकोक्ति लक्ष्यभाषा में खोजी जानी चाहिए। प्रयास करने पर यह कार्य कठिन नहीं होता जैसे संस्कृत की कहावत है-

संस्कृत-शिष्यापराधे गुरोर्दण्डः।

हिंदी-शिष्य के अपराध के लिए गुरु को दंड।

अंग्रेजी-For the fault of a pupil the teacher has been punished- ऐसी समान आशय की लोकोक्तियाँ भी होती हैं जो लगभग सभी भाषाओं में नहीं तो अनेक भाषाओं में मिल जाती हैं-

हिंदी-'एक तो करेला दूसरे नीम चढ़ा।'

पंजाबी-'इक करेला दूजा नीम चढ्या।'

गुजराती - 'कारेला ने बली नीम पर चढ़ाइ।'

उर्दू-'एक तो मियां दीवाने-ऊपर से खाई भांग।'

अंग्रेजी- 'Already a mad cowherd and moreover she had swallowed the gralic'

समग्रतः अनुवादक का प्रयास यह होना चाहिए कि लोकोक्ति का मूल आशय नष्ट न हो।

बहुत से मुहावरे ऐतिहासिक-पौराणिक कथाओं पर आधारित होते हैं जैसे- 'द्रौपदी का चीर होना, 'बीरबल की खिचड़ी होना', 'सुदामा के तंदुल', 'राम-बाण औषधि', 'शबरी के बेर' आदि। कुछ ऐसे भी मुहावरे होते हैं जो लोकानुभव को विशिष्ट ढंग से संकेतित करते हैं। अत्यधिक प्रभावशाली ध्वनिपरक योजना के कारण मुहावरों का अनुवाद बड़ा ही कठिन काम है। इसलिए अनुवादक को स्रोतभाषा में से किसी मुहावरे को लक्ष्यभाषा में लाते समय शब्दार्थ की समानता पर ध्यान केंद्रित करना चाहिए। चूँकि मनुष्य स्वभाव एक है, भिन्न दिखाई देता हुआ भी वह भिन्न नहीं है, अतः अनेकता में एकता की खोज का सिद्धांत यहाँ हमारी समस्या का सही समाधान होता है। हर भाषा की प्रवृत्ति और प्रयोग शक्ति अलग होने से मुहावरा अलग ढंग की शैली और अर्थव्यंजना ग्रहण कर लेता है। इसलिए उसका एक अलग ढंग का शब्द-बिंब और फिर शब्द-बिंव में अर्थ-बिंव बनता है। अतः अनेक भाषाओं के मुहावरों में तुलनात्मक समानता की खोज करने का प्रयास होना चाहिए। असमानताओं को जल्दी से टाल नहीं देना चाहिए अपितु उन पर बहुत थमकर विचार करना चाहिए। ऐसा करने से नई सूझबूझ पैदा होती है और मुहावरा अपना अर्थ व्यक्त करने लगता है। हिंदी तथा अंग्रेजी में अनेक मुहावरे ऐसे हैं जिनकी समानता दर्शनीय है-

- अलादीन का चिराग - Alladin's lanip
- लालफीताशाही - Red tapism
- लुढ़कना लोटा- A rolling stone
- झगड़े की जड़ - An apple of discors
- हवाई किला बनाना- To make castle in the air

- एक ही थैली के चट्टे--बट्टे होना - Birds of the same feather

To blow one's own trumpet...

To long face......

To strike the iron while it is hot....

To keep in the dark.....

To throw trump card....

To put one's head in the lion's mouth......

To leave no stone unturned...

To be at daggers drawn.....

To be true to one's salt......

To bell the cat.......

To cast the pearls before a swine....

To have a thing at one's finger tips....

To throw dust in a person's eye

To make mountain of a mole hill....

To nip in the bud...

कुछ ऐसे मुहावरे भी हैं जिन्हें लक्ष्यभाषा में सीधे अंतरित नहीं किया जा सकता। शब्दों के हेर फेर से अर्थ अभिव्यक्त किया जा सकता है। जैसे 'Achilles heel' का अर्थ होता है किसी व्यक्ति की परिस्थितियों या व्यक्तित्व का कोई कमजोर अंश। यह मुहावरा सांस्कृतिक संर्दर्भों से जुड़ा है अतः दूसरी भाषा में इसका अनुवाद नहीं हो पाता। जब तक सांस्कृतिक संदर्भों के स्रोतों तक नहीं पहुँचा जाएगा तब तक सही अर्थ पकड़ना संभव नहीं है। इसी तरह हिंदी मुहावरे 'शबरी के बेर' का अर्थ उसके संदर्भगत परिप्रेक्ष्य में ही समझा जा सकता है।

यदि स्रोतभाषा के मुहावरे के शब्द और अर्थ की दृष्टि से समान मुहावरा लक्ष्यभाषा में नहीं मिलता तो ऐसी स्थिति में अभिप्रेत अर्थ को ध्यान में रखते हुए भावानुवाद कर दिया जाना चाहिए। उदाहरणार्थ 'A close fisted man' के समानांतर कोई मुहावरा नहीं सूझता तो इसका अभिप्रेत अर्थ लेकर इसका अनुवाद 'कंजूस व्यक्ति' या 'मक्खीचूस व्यक्ति' किया जा सकता है। ऐसे अवसर पर लक्ष्यभाषा की मूल प्रकृति का ध्यान रखना चाहिए। स्थिति विशेष में नया मुहावरा भी बनाया जा सकता है। जैसे 'broken heart' के लिए 'भग्न हृदय' बना लिया गया। 'Herculean effort' का अनुवाद 'हरक्यूलियन प्रयत्न' की बजाय 'भगीरथ प्रयास' करने से यह हिंदी की प्रवृत्ति एवं भाषिक सहजता के अधिक निकट बैठता है।

यह ध्यान अवश्य रखना चाहिए कि स्रोतभाषा से लक्ष्यभाषा में जाते समय मुहावरा कहीं भिन्नार्थक या हास्यास्पद स्थिति तो ग्रहण नहीं कर लेता। व्यंजनाप्रधान मुहावरे का अभिधापरक अनुवाद करना भारी भूल होगी। 'White elephant' का अनुवाद 'सफेद हाथी' कर देना बहुत उपयुक्त नहीं है क्योंकि वस्तुतः 'White elephant' का अर्थ होता है 'हानिप्रद स्वत्य' और हिंदी में इस अर्थ में प्रचलित मुहावरा है 'महँगा सौदा'। इस संबध में अनुवादक के लिए विशेष सतर्कता एवं सावधानी नितांत आवश्यक है।

हर भाषा का भूगोल, इतिहास और अर्थशास्त्र अलग होने से अभिव्यक्ति भी उसकी निजी हो जाती है। अतः अनुवादक को सदैव शब्दानुवाद न करके जहाँ अपेक्षित हो वहाँ भावानुवाद करना चाहिए।

'To give a cordial welcom' का अर्थ है हार्दिक स्वागत करना। किंतु हिंदी के मुहावरे के माध्यम से इसका भावानुवाद भी किया जा सकता है- 'पलक पाँवड़े बिछाना' वा 'आँखों के गलीचे डाल देना'। इस प्रकार मुहावरों का अनुवाद शब्द-प्रतिशब्द न करते हुए संपूर्ण मुहावरे को भाषिक इकाई के रूप में रखकर किया जाना चाहिए।

यदि स्रोतभाषा के मुहावरे का सही अर्थ शीघ्र ही पकड़ में नहीं आता और अनुवादक जल्दी में उसका शब्दानुवाद कर बैठता है तो अर्थ के अस्पष्ट होने की संभावना रहती है। ऊपर 'white elephant' के लिए 'सफेद हाथी' पर्याय का उदाहरण ऐसी ही जल्दबाजी का परिणाम है। ऐसी स्थिति में स्रोतभाषा के अनुभवी और जानकार व्यक्तियों की सहायता लेना बेहतर होगा।

निष्कर्ष यह है कि लोकोक्तियों तथा मुहावरों के अनुवाद में स्रोतभाषा के मुख्यार्थ और शब्द-संदर्भ पर ध्यान केंद्रित रखने से अनुवादक भारी गलतियों से बच सकता है।

अनुवाद, स्रोतभाषा के मध्य और शिल्प को यथासंभव सुरक्षित रखते हुए लक्ष्य भाषा में अवतरित करता है। मनुष्य के व्यवहार, चिंतन अथवा बाह्य आकार प्रकार में बहुत सी समानाएं हैं परंतु दो विभिन्न भाषाओं में यह समानता नहीं के बराबर रहती है। स्रोतभाषा और लक्ष्य भाषा में कालगत संदर्भ में पुरानी अथवा नई हो सकती है दोनों भाषाएं विभिन्न संस्कृतियों और समाज की उपज हो सकती है, दोनों का व्याकरण, प्रकृति और शिल्प भी भिन्न हो सकता है। ऐसी भाषाओं के भाव या अर्थ को क्षति पहुंचाए बिना भाषान्तरित करना बड़ी चुनौती है।

• साहित्यिक और साहित्येतर सामग्री के अनुवाद में भिन्नता :

साहित्येतर सामग्री का अनुवाद, साहित्यिक सामग्री के अनुवाद की अपेक्षा सरल रहता है। उनमें भाषा की अंगिमा और शैली का अंतरण नहीं होता, साहित्यिक अनुवाद में होता है। यह साहित्यितर अनुवाद एक विकल्प की तरह शब्द के लिए शब्द और वाक्य के लिए वाक्य से भी काम चला लेता है साहित्यिक कृति का भावानुवाद अथवा छायानुवाद ही करना पड़ता है। शब्दानुवाद यहां काम नहीं करता।

साहित्येतर अनुवाद में अभ्यास अधिक जरूरी है। इसी से इसमें दक्षता प्राप्त हो सकती है। साहित्यिक अनुवाद में दक्षता के साथ-साथ प्रतिभा अधिक जरूरी है क्योंकि साहित्यिक अनुवाद पुनर्सर्जन की श्रेणी में आता है। अनुवादक की प्रतिभा उसकी संवेदनशीलता और सृजनात्मक में प्रकट होती है। यही कारण है कुछ विद्वानों ने साहित्य को अननुवा्दय और कुछ ने अत्यधिक कठिन अनुवाद योग्य माना है।

• साहित्यिक रचनाओं का अनुवाद, मूलभूत आवश्यकताएं :

साहित्यिक रचना के अनुवादक से यह अपेक्षा की जाती है कि वह मूल लेखक की मानसिकता और मूल कृति के संपूर्ण परिवेश को आत्मसात करे। यह परकाय प्रवेश जैसी सृजनात्मक प्रक्रिया है। अनुवादक को मूल लेखक के मंतव्य को समझने के लिए गहराई में उतरना पड़ता है। सांकेतिक अर्थों को समझना पड़ता है। मूल लेखक और कृति के प्रति अपनी निष्ठा को सहेजना और संवारना पड़ता है। साहित्य के अनुवादक को सृजन शब्दों की स्थूल डोर उस अदृश्य सूक्ष्म प्रक्रिया को जोड़ती है जो सृजन के क्षणों में एक सृजनात्मक प्रक्रिया है और अनुवादक को इसके विभिन्न आयामों से गुजरना पड़ता है। इस प्रक्रिया में वह दूसरी भूमिका निभाता है। पहले वह स्रोतभाषा में रचना को पढ़ने और समझते हुए प्रबुद्ध पाठक की भूमिका निभाता है, दूसरे वह लक्ष्यभाषा में अनुवाद करते हुए सर्जक या लेखक की भूमिका में आ जाता है। पाठक के रूप में वह मूल पाठ के लेखक की रचना को आत्मसात कर उसकी सामाजिक, सांस्कृतिक पृष्ठभूमि से अपने को जोड़ता है और स्वयं पाठक बनकर पाठ की संप्रेष्यता की जांच करता है।

• साहित्यिक रचनाओं की अनुवाद प्रक्रिया :

अनुवाद प्रक्रिया के संबंध में विभिन्न विद्वानों ने अपने मत प्रकट किए है। तीन विद्वानों के मतों के आधार पर हम निष्कर्ष तक पहुंय सकते हैं।

1. **नीड़ा :** स्रोतभाषा-विश्लेषण-अंतरण-पुनर्गठन-लक्ष्य भाषा में अनुवाद।
2. **पीटरन्यूमार्क** स्रोतपाठबोधन-अभिव्यक्ति-शब्द प्रति शब्द अनुवाद-लक्ष्य भाषा पाठ/अनुवाद।
3. **बाथगेट:** स्रोत भाषा पाठ-समन्वयन-विश्लेषण-बोधन-परिभाषिक-अभिव्यक्ति-पुनर्गठन-पुनरीक्षण-पर्यालोचन

यहां दर्शाए गए अनुवाद प्रक्रिया के विभिन्न सोपानों के आधार पर हम निम्नलिखित सोपानों की कल्पना कर सकते हैं।

(1) मूल कृति का पाठ-पठन (2) मूल कृति का पाठ विश्लेषण (3) मूलकृति का लक्ष्य भाषा में अंतरण (4) स्रोत भाषा का लक्ष्य भाषा का समायोजन।

• मूलकृति का पाठ पठन :

साहित्यिक अनुवाद की सृजनात्मक प्रक्रिया में सबसे पहले वह मूल रचना को पढ़कर उसके माध्यम से मूल लेखक से, उसके संपूर्ण परिवेश से, उसकी मानसिकता और युग-परपंराओं से जुड़ता है। इस प्रकार वह उसे जीता है मानो उसकी काया में प्रवेश कर गया हो। मूलकृति को बार-बार पढ़कर उसकी शैली को समझता है। ज्यों-ज्यों उसे गहराई में पढ़ता है उस रचना के अर्थो की परते उसके समक्ष खुलती चली जाती हैं। अनुवादक को इसके लिए कल्पनाशील भी होना पड़ता है। ताकि वह लेखक की सृजनात्मकता तक पहुंच सके। वह रचना को बार-बार पढ़कर उसके संपूर्ण कलेवर को जीता है। अनुवाद करने के पश्चात पुनः उस रचना को जीता है। मूलकृति की भाषिक संरचनाओं और सांस्कृतिक परिवेश को लक्ष्य भाषा में उतारने की कोशिश में निरंतर जूझना पड़ता है। अफ्रीकी लेखक चितुआ अचेको की कहानियों में आए निम्नलिखित वाक्यों का अनुवाद तभी संभव है जब अनुवादक अफ्रीकी परिवेश और संस्कृति से पूरी तरह परिचित हो अन्यथा शाब्दिक अनुवाद परिहासप्रद ही रहेंगे यथा

1. मूल वाक्य	शाब्दिक अनुवाद	सही अनुवाद
1. I never eat the food they cooked for feer of love medicine	मैंने उनके द्वारा पकाया खाना इसलिए नहीं खाया कि कहीं उसमें प्रेम की दवाई न मिलाई गई हो।	मैंने जादू टोने के डर से उनके द्वारा पकाया खाना नहीं खाया।
नोट : इस वाक्य में 'Love medicine का अर्थ जादू-टोना लगेगा।		
2. I have Germon doctors were sprisits	वे जर्मन डॉक्टर भूत प्रेत थे। अद्‌भुत, वायवी जीव।	जर्मनी के डॉक्टर कमाल की चीज थे।
नोट : Spirit अदभुत वायवी जीव।		
3. I had are Roasted chicken and a tin of Ginea Gold.	मैंने एक रोस्ट चिकेन और गिन्नी गोल्ड का टिन लिया।	मैंने एक रोस्टेड चिकेन और गिन्नी गोल्ड सिगरेट का पैकेट खरीदा।
नोट : 'Ginea Gold' अफ्रीका में विशेष प्रकार की सिगरेट का नाम।		

इस प्रकार मूल रचना के लेखक, उसके परिवेश और संस्कृति, सभ्यता का ज्ञान आवश्यक है।

मूल कृति का पाठ-विश्लेषण :

साहित्यिक अनुवाद की सृजनात्मक प्रक्रिया में प्रथम सोपान है 'मूल कृति का पाठ' विश्लेषण। मूल कृति की भाषिक संरचना इतनी जटिल हो सकती है कि उसे लक्ष्य भाषा में ज्यों का त्यों नहीं उतारा जा सकता। ऐसी स्थिति में अनुवादक को कई प्रकार को जोड़-तोड़ करने पड़ते हैं। परिवर्धन-संवर्धन करना पड़ता है, और उन्हें लक्ष्य भाषा के मुहावरे के अनुरूप ढालना पड़ता है। उसकी व्याकरण संबंधी समस्याओं से जूझना पड़ता है तथा भाषिक अभिव्यक्ति को बोध गम्य बनाना पड़ता है। सांस्कृतिक स्तर पर भी अवांछित तत्वों का त्याग करना पड़ता है। कुछ साधरणीकरण और अनुकूलन करना पड़ता है।

पाठ विश्लेषण विभिन्न भाषिक संरचनाओं के विभिन्न अर्थों की प्रतीति कराने में यह सहायक होता है, निश्चित रूप से अनेकार्थी, संदिग्धार्थी, विभिन्नार्थी, पर्यायवाची एवं संदर्भगत अभिव्यक्तियों का विश्लेषण मूल पाठ के अर्थ को स्पष्ट करने में सहायक सिद्ध होता है। उदाहरण के लिए कुछ संज्ञाएं संदर्भ अनुसार अलग-अलग अर्थ प्रदान करती हैं उदाहरण के लिए अंग्रेजी के 'Hand शब्द को लें At hand, old hand, extra hand, legible hand आदि का अर्थ संदर्भानुसार अलग-अलग लगेगा + अर्थ होगा, क्रमशः निकट, निपुण, अतिरिक्त, सुलेख। इसके अतिरिक्त भाषिक संरचनाओं के अन्य रूपों का भी अनुवादक को विश्लेषण करना पड़ता है और उसका अर्थ ग्रहण करना पड़ता है। यह विश्लेषण निम्नलिखित स्तरों पर होता है।

• पदक्रम के स्तर पर :

हिंदी में वाक्य है 'वह खाना खाता है' इसमें पदक्रम है कर्त्ता, कर्म और क्रिया। अंग्रेजी में अनुवाद है 'He eats food' यहां पदक्रम है कर्त्ता, क्रिया और कर्म। यदि अनुवाद किया जाए 'He food eats' तो यह हिंदी पदक्रम के अनुसार है परंतु अंग्रेजी पदक्रम के विपरीत होने से गलत और अस्पष्ट है।

• सहप्रयोग के स्तर पर :

शब्दों के सहप्रयोग के आधार पर भी अनुवाद करते समय ध्यान रखना पड़ता है। हिंदी में 'वह सिगरेट पीता है' ठीक है, परंतु अंग्रेजी में 'He drunks cigerette' गलत होगा, सही होगा, 'He smokes'

(ग) पदबंध के आधार पर :

पूरे पदबंध अर्थात् उक्ति के आधार पर विश्लेषण अपेक्षितहै। 'जुबान संभालकर बोलों' का अनुवाद 'Keep your tongue in control' नहीं होगा बल्कि 'Mind your language' होगा। इसी प्रकार 'Behave your self' उक्ति का अनुवाद–'स्वयं से व्यवहार करो, न होकर 'तमीज से पेश आओ' उचित होगा।

(घ) मुहावरों के स्तर पर प्रयोग :

मुहावरों का शाब्दिक अनुवाद नहीं किया जाता। लक्ष्य भाषा में समतुल्य भाव वाले मुहावरे की लोकोक्ति को खोजा जाता है और न मिलने पर उसका अर्थ कर दिया जाता है। 'मेरा सिर चकरा रहा है' का अंग्रेजी अनुवाद नोट 'My head is eating circle' नहीं हो सकता और न ही 'वह पानी-पानी हो गया' का अनुवाद 'He became water and water' हो सकता है। इसके अनुवाद होंगे 'He was ashamed of himself' होगा।

(ङ) सांस्कृतिक स्तर पर :

प्रत्येक देश का एक सांस्कृतिक परिवेश रहता है जिससे भाषा जन्म लेती है। जब एक अंग्रेज कहता है नोट "I take two oranges in break fast' तो अनुवाद मैं नास्ते में दो संतरे लेता हूं व करके 'दो मुसम्मी लेता हूं, करना पड़ेगा क्योंकि इंग्लैंड में मुसम्मी का प्रचलन है संतरे का नहीं।'

(च) अनेकार्थक संरचनाओं के स्तर पर :

कभी-कभी वाक्य संरचनाओं संदर्भ से जुड़कर विभिन्न अर्थ देती है और उनका अनुवाद भी अनेक स्तर पर होता है यथा 'यह फिदा हुसैन का चित्र है' पंक्ति के तीन अर्थ लगाए जा सकते हैं (1) यह फिदा हुसैन का फोटो या चित्र है। (2) इस चित्र का स्वामी फिदा हुसैन है। (3) यह चित्र फिदा हुसैन ने बनाया है। अनुवाद करते समय तीनों वाक्यों का अनुवाद भिन्न प्रकार से होगा।

(छ) स्त्रोतभाषा का लक्ष्य भाषा पर प्रभाव के स्तर पर :

अनेक बार ऐसा भी होता है कि स्त्रोत भाषा का लक्ष्य भाषा पर प्रभाव पड़ता है और अनुवाद तकनीकी दृष्टि से ठीक होते हुए भी निष्प्राण होता है। 'We have to do this work' का अनुवाद करना है तो ''हमें इस काम को किया जा सकता है'' परंतु यह हिंदी की प्रकृति के विपरीत होगा। 'I am afraid, I ought to the going' का अनुवाद 'मुझे डर है कि मुझे जाना चाहिए' नहीं किया जा सकता। हिंदी मुहावरे या चलन के अनुसार अनुवाद होना चाहिए 'मुझे अब चलना चाहिए।'

ऊपर दी गई भाषिक संरचनाओं में सतही तौर पर देखने पर अधिक असर प्रतीत नहीं होता परंतु वास्तव में हर भाषा की संरचना विशिष्ट होती है। प्रत्येक संरचना में किसी संदर्भ विशेष से जुड़कर विभिन्न अर्थ प्रकट होते हैं। अनुवादक से यह अपेक्षा रहती है कि वह भाषा विशेष के तकनीकी पहलू का भी उतना ही बड़ा अध्येता हो जितना उस विषय जिसका अनुवाद कर रहा है। अनुवादक केवल वाक्य विश्लेषण तक ही सीमित नहीं रह सकता।

• मूल कृति का लक्ष्य पाठ में रूपातंरण :

साहित्य अनुवाद की सृजन प्रक्रिया का तीसरा पड़ाव मूल भाषा का लक्ष्य भाषा में रूपातंरण है। ऐसा प्रायः होता है कि भाषातंरण पूरी तरहनहीं हो पाता क्योंकि मूल भाषा और लक्ष्य भाषा में अर्थ संप्रेषण एक जैसा नहीं होता। अनुवाद की दृष्टि से वह अर्थ समकक्ष न होकर समीप तुल्य हो सकता है। इस प्रक्रिया में प्रायः अनुदित पाठ में मूल के संदेश व अर्थ का कुछ स्थितियों में मूल से अलग होकर भी इसके अभिव्यक्त होने की संभावना बनी रहती है। ऐसी स्थिति में अनुवादक को मूल से अलग होकर भी इसके अभिव्यक्त होने की संभावना बनी रहती है। ऐसी स्थिति में अनुवादक को मूल के संदेश अथवा अर्थ को यथासंभव लक्ष्य भाषा के अनुरूप बनाए रखकर अंतरित करना होता है। मूल कृति की भाषायी इकाइयों को लक्ष्य भाषा के अनुरूप, अवतरित किया जाता है। अर्थ-संप्रेषण की दृष्टि से वाक्यों को भाषा के स्तर पर प्रवाहमयता, सहजता, स्पष्टता आदि को ध्यान में रखकर ही भाषान्तरण करना चाहिए।

स्वयं आकलन प्रश्न-1

प्रश्न-1 मुहावरा शब्द किस भाषा का शब्द है ?

प्रश्न-2 अर्थ को पूरी तरह स्पष्ट करने वाला वाक्य क्या कहलाता है ?

10.4 मुहावरों और लोकोक्तियों का साहित्य में महत्व

मुहावरे और लोकोक्तियां लोकजीवन के अनुभव से निसृत होने के कारण लोक विश्वासों, अवधारणाओं को व्यक्त करते हैं।

साहित्यिक भाषा अमिद्यात्मक न होकर लक्षणात्मक अथवा व्यंजनात्मक होती है। सृजनात्मक साहित्य में अभिव्यंजना इस विभिन्न का एक महत्वपूर्ण तत्व होती है। इसे वह निम्न, प्रतीक, व्यंग्य, ध्वनि, अलंकार, सांस्कृतिक तत्वों आदि के प्रयोग द्वारा साहित्य में उत्पन्न करता है। इसके साथ-साथ मूल लेखक मुहावरों और लोकोक्तियों के प्रयोग से भी भाषा की अभिव्यंजना को बढ़ाता है। मुहावरों और लोकोक्तियों का मूल स्रोत उस भाषा की सांस्कृतिक पृष्ठभूमि हुआ करती है। ये उस देश अथवा भाषा की सांस्कृतिक चेतना के वाहक होते है। और भाषा की अभिव्यक्ति को विशिष्टता प्रदान करते हुए उसे सशक्त स्वरूप प्रदान करते हैं साथ ही उस भाषा को सहजता और स्वाभाविकता भी प्रदान करते हैं।

• मुहावरों का अनुवाद :

युगों से मुहावरे और लोकोक्तियां लोकानुभव को प्रकट करते आए हैं। ये लोकानुभव हमारे नैतिक, धार्मिक, सांस्कृतिक एवं सामाजिक जीवन पर आधारित होते हैं। साहित्यकार इनके प्रयोग द्वारा अपने साहित्य को अधिक आकर्षक, प्रामाणिक और विधात्मक बनाने का प्रयास करता है। समाज व संस्कृति में ग्रहित यह लोकाश्रित तत्व उस साहित्य विशेष में एक सजीवता, नवीनता एवं सचेतना उत्पन्न करते हैं। लेखक इनके प्रयोग से अपनी भाषा को अधिक प्रामाणिक, अलंकारिक, सांस्कृतिक एवं लोकजीवन से सुगंधित बनाते हैं। इनके प्रयोग से भाषा में विलक्षण अर्थ गरिमा आ जाती है। मुहावरे एवं लोकोक्तियां ऐसे वाक्यांश होते हैं जिनका अर्थ उस भाषा में साधारण या सीधा न होकर विलक्षण होता है। ऐसा लक्षणा तथा व्यंजनों के प्रयोग से ही संभव है। इस प्रकार मुहावरे और लोकोक्तियां हर प्रकार के लोक साहित्य में भाषा के अलंकारिक सौंदर्य को बढ़ाते हैं। भाषा के उच्चारण के लालित्य को बढ़ाते हैं और अंततः संपूर्ण साहित्य निधि पर अपना प्रभुत्व स्थापित करने में सक्षम होते हैं। भावपूर्ण प्रसंगों की उद्‌भावना के प्रसंगों में इन व्यंजना प्रधान एवं भंगिमापूर्ण लोकाश्रित अभिव्यक्तियों के प्रयोग से साहित्य में सौंदर्य की वृद्धि होती है और वह साहित्य आकर्षक एवं प्रभावशाली बनकर हृदय को चमत्कृत करता हुआ अधिक संप्रेष्य बनता है। अपनी भाषा के मुहावरे और लोकोक्तियां सहज ही जुबान पर आ जाती हैं। परंतु पराई भाषा में इनको कंठस्थ करना पड़ता है।

मुहावरों के अनुवाद की समस्या मूलतः व्यंजना के अनुवाद की ही समस्या है। मानव जीवन के चिरसंचित कटु-मधुर अनुभवों को सुंदर, संक्षिप्त एवं सटीक अभिव्यक्ति देने के साथ मुहावरे अतीत, वर्तमान और भविष्य के बीच सेतु होते हैं। किसी मुहावरे के शब्दार्थगत विश्लेषण के समय और समाज के सांस्कृतिक, आर्थिक, सामाजिक, धार्मिक एवं मनोवैज्ञानिक परिवेश और परिस्थितियों के संदर्भ स्पष्ट और साकार होते चले जाते हैं। जहां कहीं एक आख्यान अथवा उदाहरण बात स्पष्ट नहीं कर पाता वहां एक मुहावरा या कहावत यह काम कर देती है। कहा भी है 'जो जाने मुहावरे का अर्थ वह जाने वेद का अर्थ।'

मुहावरों के अनुवादक को निम्नलिखित बातों का ध्यान रखना पड़ता है।

(1) मुहावरों की व्यंजना सुरक्षित रहे।

(2) मुहावरे की लोकाश्रित पृष्ठभूमि को अनदेखा न करें।

(3) शब्द संयोजना पर विशेष ध्यान दें।

(4) मुहावरों के अर्थगत और शैलीगत सौंदर्य को लक्ष्य भाषा में भी यथासंभव बनाए रखे।

(5) स्रोत भाषा में मुहावरों का जैसा प्रभाव पाठक पर पड़ता है वैसा ही प्रभाव लक्ष्य भाषा के पाठक पर भी पड़े।

ऊपर दी गई समस्याओं के समाधान हेतु अनुवादक निम्नलिखत पद्धतियों का अनुसरण करता है

- **लक्ष्य भाषा में समानार्थक मुहावरों की खोज :**

संसार में सामाजिक-सांस्कृतिक विभिन्नता के बावजूद भी विचारों और अनुभवों की समानता दिखती है। यही कारण है कि अनुवादक स्रोतभाषा के समकक्ष अर्थ देने वाले मुहावरों की खोज लक्ष्य भाषा में भी कर लेता है यथा उसने मुझे अंधेरे में रखा (He kept indark) 'चोर रंगे हाथों पकड़ा गया' (The thief was caught red handed), 'तुम मेरी आंख में धूल नहीं झोंक सकते,' (You cannot throw dust in my eyes), आई.ए.एस. पास करना बच्चों का खेल नहीं (To qualify I.A.S. is not child's play) 'उसने जीवन में उतार चढ़ाव देखे हैं' (He has seen ups and downs in life) मुहावरों का अनुवाद करते समय यह स्थिति आ सकती है कि स्रोतभाषा के मुहावरे के लिए लक्ष्य भाषा में एक से अधिक मुहावरे हों हमें उनमें से वही मुहावरा चुनना चाहिए जो भाव शिल्प दोनों दृष्टियों से सर्वाधिक निकट हो।

- **लक्ष्यभाषा में निकटार्थ की खोज :**

यह भी संभव है कि स्रोतभाषा के मुहावरे के समतुल्य मुहावरा लक्ष्य भाषा में न मिले। ऐसी स्थिति में हमें लक्ष्य भाषा में ऐसा मुहावरा खोजना चाहिए जो अर्थ की दृष्टि से सर्वाधिक निकट हो। प्रस्तुत पद्वति में अर्थ के स्तर पर आंशिक समानता के आधार पर मुहावरों की खोज की जाती है और अनुवाद के रूप में पेश किया जाता है। यथा 'यह बेसिर पैर की बात है' के लिए 'It is a cock and bull story', मूसलाधार वर्षा हो रही है (It is raining cats and dogs), 'वे सब एक ही थाली के चट्टे-बट्टे हैं।' (They are all chips of the same block) तथा 'यह उसका भागीरथ प्रयास था।' (It is his herculian task)

- **मुहावरों का शाब्दिक अनुवाद :**

मुहावरों के अनुवाद की तीसरी पद्धति स्रोतभाषा के मुहावरों के लिए शब्द और अर्थ की दृष्टि से लक्ष्यभाषा में समान मुहावरे अथवा निकटार्थक मुहावरे उपलब्ध नहीं हो पाते। ऐसी स्थिति में मुहावरे का शाब्दिक अनुवाद करना पड़ता है। अनुवादक को चाहिए कि वह लक्ष्य भाषा के मुहावरे में वही अर्थ खोजे जो स्रोतभाषा के मुहावरे का है। उदाहरण के लिए 'अधजल गगरी छलकत जाए' का अंग्रेजी अनुवाद (An empty vessel makes much noise) नहीं करना चाहिए क्योंकि 'अधजल' और 'empty' का अर्थ भिन्न है। इसका शाब्दिक अनुवाद होगा, Half filled pitcher sprills a lot. इसी प्रकार निम्नलिखित मुहावरों का अनुवाद देखिए

1. One should be true to one's salt.
   व्यक्ति को नमक हलाल होना चाहिए।
2. The problem is that, who will bell the cat.
   समस्या यह है कि बिल्ली के गले में घंटी कौन बांधेगा ?
3. Redtapism is in full sweing these days.
   आजकल लालफीताशाही का बोलबाला है।
4. A car is a white elephant for a poor man like him.
   उस जैसे गरीब के लिए कार सफेद हाथी है।

कई बार लक्ष्यभाषा में समानार्थक मुहावरा उपलब्ध होने पर भी उसका शब्दानुवाद करना अधिक आकर्षक एवं प्रभावी होता है यथा

1. As you saw, so shall you reap.
   समानार्थक मुहावरा–जैसी करनी, वैसी भरनी
   शब्दार्थक मुहावरा–जैसा करोगे, वैसा भरोगे
2. Fortune favours the tools
   मुहावरा–लक्ष्मी का वाहन उल्लू।
   शब्दार्थक मुहावरा–मूर्ख किस्त के धनी होते हैं।
3. To fuied castles in the air.
   मुहावरा : ख्याली पुलाव पकाना।
   शब्दार्थक मुहावरा : हवाई किले बनाना।

लक्ष्य भाषा में समानार्थक और निकटार्थक मुहावरे न मिलने की स्थिति में शब्दानुवाद के द्वारा नए मुहावरे गढ़ लेने चाहिए। समय के साथ वे प्रचलित हो जाते हैं। उदाहरण के लिए–

1.Tip of the iceberg हिमशिला की नोक मात्र।

2. throw the ball in the court पाले में गेंद फैंकना

3. Many sheltons in the cupboard अलमारी में कई कंकाल है।

4. Push under the carpet दरी के नीचे खिसकाना।

• **मुहावरों का भावानुवाद :**

मुहावरों के अनुवाद की चौथी स्थिति यह है जहां मुहावरे का शब्दानुवाद करना संभव नहीं होता और अनुवादक को उसके लिए भावानुवाद की पद्धति अपनानी पड़ती है। शब्दानुवाद करने से स्थिति हास्यास्पद हो जाती है। उदाहरण के लिए–

1. He has got on my nerves.

भावानुवाद– उसने मेरे नाक में दम कर रखा है।

शब्दार्थ–वह मेरी नसों पर चढ़ा है। (गलत अनुवाद)

2. Do not beat about the lush, come to the point.

भावानुवाद : इधर–उधर की बात मत करो, मतलब की बात करो।

शब्दानुवाद : झाड़ियों को मत पीटो, बिंदु पर आओ।

3. I took him to task

भावानुवाद: मैंने उसकी खबर ली

शब्दानुवाद : मैंने उसका काम किया (गलत)

4. On seeing the police, the theif took to his heals.

भावानुवाद: पुलिस को देखकर चोर रफूचक्कर हो गया।

शब्दानुवाद: पुलिस को देखकर चोर अपनी एडिया ले गया। (गलत)

• मुहावरों की व्याख्यात्मक पद्धति :

मुहावरों के भाव अनुवाद की इस पद्धति में कभी-कभी स्रोतभाषा के मुहावरों में निहित संपूर्ण अर्थ को ध्वनित करने में सक्षम नहीं होते। दोनों भाषाओं में कभी-कभी इस संदर्भों में इतनी दूरी हो जाती है कि मुहावरों से जुड़ी अनेक अर्थ छवियां प्रकट नहीं हो पातीं। यहां वैसी ही समस्याएं सामने आती हैं जैसी कि सांस्कृतिक अभिव्यक्तियों के संदर्भ में। मुहावरे की इन अपरिचित, सूक्ष्म अर्थ छवियों को लक्ष्य भाषा को पाठक के लिए स्पष्ट करने के लिए पाद-टिप्पणियों का सहारा लिया जाता है कि जिससे उन संदर्भों की व्याख्या कर दी जाती है। इसी प्रकार हर भाषा के सांस्कृतिक मुहावरे होते हैं जैसे 'श्री गणेश करना', 'हाथ पीले करना', 'गंगा जी नहाना', 'फूल चुगना', 'सदा सुहागन रहना', 'कोख हरी होना', 'गोद सूनी होना', 'मांग भरना', 'यज्ञोपवीत संस्कार', 'चूल्हा चौका करना' आदि। निश्चय ही इन मुहावरों के समानार्थक मुहावरे किसी अन्य भाषा में उपलब्ध नहीं हो सकते इसलिए व्याख्यात्मक टिप्पणी देना ही उचित है।

• लोकोक्तियों का अनुवाद :

लोक अर्थात् साधारण लोगों में प्रचलित उक्तियां या कथन ही लोकोक्तियां हैं। विश्वनाथ अय्यर के अनुसार ''अधिकांश कहावते जीवन के अनुभव से गढ़ी हुई हैं और पीढ़ियों से पीढ़ियों को प्राप्त होती हैं। पुराण-कथ्य, लोक कथा आदि से भी कहावतें या लोकोक्तियां जन्म लेती हैं। ऐसी कहावतों का विस्तृत अर्थ समझने लिए उनमें सूचित कथा तत्व की जानकारी भी जरूरी है।'' किसी कहावत को समाज में प्रचलित होने और मान्यता प्राप्त करने में सदियां लग जाती हैं। मानवीय व्यवहार का मार्ग-दर्शन करने वाली कहावतें चिरजीवी होती है। सत्य-असत्य का संघर्ष, पाप-पुण्य का द्वंद्व, निर्धन-धनी की समस्या, व्यंसनों से जीवन का सर्वनाश, प्रतिभाशाली एवं मूर्ख का अंतर आदि सारे संसार के तत्व हैं इसलिए ऐसी समस्याओं पर प्रत्येक भाषा में कहावतें मिल जाती हैं।

कहावतों का अनुवाद एक सृजनात्मक कार्य हैं प्राय: लोकाश्रित तत्वों के समावेश के कारण स्रोतभाषा की कहावतों को लोकभाषा में उतारने में अत्यधिक कठिनाई होती है। पहली समस्या तो यही आती है कि लक्ष्य भाषा में समानार्थक लोकोक्तियां नहीं मिल पातीं। यदि प्रयासपूर्वक कुछ समान लोकोक्तियां खोज भी ली जाती हैं तो भी सामाजिक-सांस्कृतिक विभिन्नता के कारण उनमें अर्थ साम्य तो मिल जाता है परंतु बिम्ब और प्रतीक साम्य प्राय नहीं मिलता। अनुवाद यदि शब्दार्थक किया जाए तो कहावत के ध्वन्यार्थ को हानि पहुंचती है। विदेशी लोकोक्तियां अपने सांस्कृतिक वातावरण का अभिन्न हिस्सा होने के कारण अनुवाद में कठिनाई होती है। लोकोक्तियों के अनुवाद में निम्नलिखित पद्धतियों का अनुसरण किया जाता है।

(क) Necessity is the mother of invention.
आवश्यकता, अविष्कार की जननी है।

(ख) An empty mind in devilis work shop.
खाली दिमाग शैतान का घर है।

(ग) It requires two hands to clap.
ताली दो हाथ से बजती है।

(घ) All is well that ends well

अंत भला सो भला।

(ङ) Forced labour is better than idleness.

बेकार से बेगार भली।

- **लक्ष्यभाषा में निकटस्थ लोकोक्ति की खोज :**

जब लक्ष्यभाषा में पूरी तरह समानार्थक कहावत नहीं मिलती तो उसके निकटस्थ कहावत की खोज की जाती है यथा

(क) अंधों में काना राजा।

A figure among cyphers.

(ख) जो गरजते हैं सो बरसते नहीं।

Barking dogs seldom bite.

(ग) नौ नकद न तेरह उधार।

A bird in hand is better two in the bush.

(घ) अपनी दही को कौन खट्टा कहता है ?

Every patter praised his own pat.

(ङ) देर जोगी, मठ उजाड़ या दो मुल्लाओं में मुर्गी हराम।

Two many cooks, spail the broth.

- **लोकोक्तियों का शब्दानुवाद :**

उपर्युक्त दोनों पद्धतियों के सफल न होने पर लोकोक्ति का शब्दानुवाद ही एकमात्र विकल्प बचता है। ऐसा करते समय अर्थगत और शैलीगत सौंदर्य की रक्षा भी यथासंभव करनी ही चाहिए। कुछ उदाहरण इस प्रकार हैं-

(क) A drawning man catches at a straw

डूबते को तिनके का सहारा।

(ख) No rose, without a thorn.

जहां फूल, वहां कांटा।

(ग) The pan calls the pat black

तवा, हांडी को काला कहता है।

(घ) Self is good, world is good

आप भला तो जग भला।

(ङ) A barley carn is better than a diamond to a cock.

मुर्गे के लिए हीरे से बेहतर जौ का दाना।

- **लोकोक्ति का भावानुवाद :**

जब लक्ष्य भाषा में समानार्थक अथवा निकटार्थक लोकोक्ति उपलब्ध न हो तो भावार्थ करना ही उपयुक्त होता है। लोकोक्तियों के कुछ भावार्थ सूचक उदाहरण दृष्टव्य हैं

(क) To have all your eggs in the same basket.

सब कुछ दाव पर लगाना।

(ख) Adversity tries friends.

आफत आई, दोस्त गए।

(ग) Money makes the more go.

दादा बड़ा न भैया, सबसे बड़ा रूपैया।

(घ) Prevention is better than cure

परहेज, इलाज से बेहतर है।

निष्कर्ष : वास्तव में मुहावरे और लोकोक्तियां लोक जीवन के न्यायशास्त्र, लोकाचरण की आचारसंहिता, लोक मान्यताओं के मानक कोष होते हैं। ये मानव समाज की ऐसी धरोहर चमत्कार पूर्ण प्रयोग अभिव्यक्ति-कौशल के रूप में परंपरागत ढंग से होता है। मुहावरे और लोकोक्तियों का संबंध भूगोल तथा स्थानीय समाज की संस्कृति से कैसे होता है। इसके कुछ उदाहरण देखिए :-

1. कहावत है-'अब पछताए होत क्या, जब चिड़िया चुग गई खेत' इसका अंग्रेजी अनुवाद है 'It is no use crying over spilt milk' अर्थात दूध उबल कर गिर जाने के पश्चात् पछताने से क्या लाभ। दोनों में भाव साम्य है क्योंकि कुछ घटित होने के पश्चात पछताना बेकार है। परंतु पहले में कृषि प्रधान भारत का बिम्ब है जहां चिड़िया खेत चुग जाती है ओर किसान पछताता है। अंग्रेजी मुहावरे में रसोई में उबल कर गिरते दूध का विम्ब है क्योंकि वहां पर खुले खेत और चिड़ियों के झुंड कम ही दिखते हैं।

एक अन्य कहावत है 'ऊंट के मुंह में जीरा' अर्थात 'नगण्य वस्तु'। अंग्रेजी में समानार्थक कहावत है 'A drop in the ocean' 'समुद्र में गिरी बूंद' दोनों में अर्थ साम्य है। रेगिस्तान भारत में है और जीरा भी यहां होता है। ऊंट के बड़े मुंह में जीरे के दाने का पता भी नहीं चलता। समुद्र तट पर बसे इंग्लैंड के आम आदमी के लिए ऊंट और रेगिस्तान ही नहीं, जीरा भी अनजाना है। इसके विपरीत समुद्र में गिरती बूंद उसका अनुभव है। इसलिए वह अपने अनुभव को 'समुद्र' में बूंद कहेगा न कि 'ऊंट के मुंह में जीरा' कहेगा।

इस प्रकार हम कह सकते हैं कि मुहावरों और लोकोक्तियों का अनुवाद स्रोत एवं लक्ष्य भाषा से जुड़े समाजों की संस्कृति के निकट ज्ञान की मांग करता है।

साहित्य में लोकोक्तियों और मुहावरों का प्रयोग सदा से होता रहा है। मुहावरे और लोकोक्तियां लोकानुभव एवं लोक विश्वास से संपन्न सूक्ति वाक्य होते हैं जिन पर लोक विश्वास करता है।

साहित्यिक सामग्री अधिक भाव संपन्न, सांकेतिक, ध्वयात्मक एवं अर्थ गर्भित होती है इसलिए साहित्य का शब्दानुवाद संभव नहीं है। साहित्य का भावानुवाद अथवा छायानुवाद ही किया जाता रहा है जहां शब्दानुवाद किया गया वहां पर अटपटा ही रहा।

साहित्यिक रचनाओं के अनुवाद की प्रक्रिया यूं तो सामान्य अनुवाद जैसी ही होती है परंतु मूल कृति का पाठ करते समय पदक्रम, सहप्रयोग, पदबंध, सांस्कृतिक स्वर, अनेकार्थता, स्रोतभाषा का लक्ष्य भाषा पर प्रभाव देखकर ही मूल कृति का लक्ष्य भाषा में भाषान्तरण किया जाता है।

साहित्यिक कृतियों में मुहावरों और लोकोक्तियों के अनुवाद में विशेष कठिनाई का सामना करना पड़ता है। मुहावरों/लोकोक्तियों के अनुवाद की समस्या उनमें निहित व्यंजना की समस्या है। इनके अनुवाद के लिए अनेक उपाय अपनाए जाते हैं जैसे लक्ष्य भाषा में समानार्थक मुहावरों की खोज, लक्ष्य भाषा में निकटार्थी की खोज, मुहावरों का शाब्दिक अनुवाद, मुहावरों का भावानुवाद, मुहावरों की व्याख्या आदि। लक्ष्य भाषा में लोकोक्तियों का अनुवाद करते समय भी इन्ही बातों पर ध्यान देना आवश्यक होता है।

स्वयं आकलन प्रश्न

अभ्यास प्रश्न-2

प्रश्न-1 लोकोक्ति में कौन सी शब्द शक्ति होती है ?

प्रश्न-2 अंग्रेजी भाषा में मुहावरों की संख्या कितनी है ?

10.5 सारांश

साहित्य में लोकोक्तियों और मुहावरों का प्रयोग सदा से होता रहा है। मुहावरे और लोकोक्तियां लोकानुभव एवं विश्वास से संपन्न सूक्ति वाक्य होते हैं। जिन पर लोक विश्वास करता है। साहित्यिक कृतियों में मुहावरों और लोकोक्तियों के अनुवाद में विशेष, कठिनाई का सामना करना पड़ता है। मुहावरों तथा लोकोक्तियों के अनुवाद की समस्या उनमें निहित व्यंजना की समस्या है।

10.6 कठिन शब्दावली

अत्यंत - बहुत अधिक

एकांत - अकेला

औपचारिक - दिखावटी

उग्र - तीखा

निर्दिष्ट - नियत किया हुआ

10.7 स्वयं आकलन हेतु अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

अभ्यास प्रश्न-1 के उत्तर

उ.1 अरबी भाषा

उ.2 लोकोक्ति

अभ्यास प्रश्न-2 के उत्तर

उ.1 लक्षणा शब्द शक्ति

उ.2 लगभग 25,000

10.8 संदर्भित पुस्तकें

(1) डॉ. बालेन्दु शेखर तिवारी, अनुवाद विज्ञान, प्रकाशन संस्थान, नई दिल्ली।

(2) भोलानाथ तिवारी, अनुवाद विज्ञान, किताबघर प्रकाशन, दिल्ली।

(3) डॉ. ओम प्रकाश गुप्त, मुहावरा मीनांसा, बिहार-राष्ट्रभाषा परिषद, पटना।

10.9 सात्रिक प्रश्न

प्रश्न-1 साहित्यिक और साहित्येत्तर कृतियों की अनुवाद सामग्री की भिन्नता पर प्रकाश डालिए।

प्रश्न-2 मुहावरे तथा लोकोक्तियों का साहित्य में क्या महत्त्व है? वर्णन कीजिए।

प्रश्न-3 मुहावरे तथा लोकोक्तियों के अनुवाद में आने वाली कठिनाईयों पर प्रकाश डालिए।

*****

इकाई पाठ -11

संक्षिप्ताक्षरों तथा कूटपदों, आँचलिक शब्दावली, व्यंजनापरक लाक्षणिक पद प्रयोगों का अनुवाद

संरचना

11.1 भूमिका

11.2 उद्देश्य

11.3 संक्षिप्ताक्षरों तथा कूटपदों का अनुवाद

स्वयं आकलन प्रश्न-1

11.4 आँचलिक शब्दावली का अनुवाद

स्वयं आकलन प्रश्न-2

11.5 व्यंजनात्मक लाक्षणिक पद प्रयोगों का अनुवाद

स्वयं आकलन प्रश्न-3

11.6 सारांश

11.7 कठिन शब्दावली

11.8 स्वयं आकलन प्रश्नों के उत्तर

11.9 संदर्भित पुस्तकें

11.10 सात्रिक प्रश्न

11.1 भूमिका

इकाई दस में हमने संक्षिप्ताक्षरों तथा कुटपदों का अनुवाद आँचलिक शब्दावली का अनुवाद तथा व्यंजनापरक लाक्षणिक पद प्रयोगों के अनुवाद का गहन अध्ययन किया। इकाई ग्यारह में हम संक्षिप्ताक्षरों तथा कुटपदों का अनुवाद, आँचलिक शब्दावली का अनुवाद तथा व्यंजनापरक लाक्षणिक पद प्रयोगों के अनुवाद का विस्तारपूर्वक अध्ययन करेंगे।

11.2 उद्देश्य

इकाई ग्यारह का अध्ययन करने के पश्चात हम यह जानने में सक्षम होंगे कि

1. संक्षिप्ताक्षरों तथा कूटपदों का अनुवाद क्या है?
2. आंचलिक शब्दावली का अनुवाद क्या है?
3. व्यंजनात्मक लाक्षणिक पद प्रयोगों का अनुवाद किसे कहते हैं?

11.3 संक्षिप्ताक्षरों तथा कूटपदों का अनुवाद

अंग्रेजी भाषा में संक्षिप्ताक्षर या संक्षिप्तियाँ बनाने की प्रवृत्ति अत्यधिक है। व्यक्तियों, नाम के आद्याक्षरों से हम सब भली-भांति परिचित हैं। 'राज कुमार शर्मा' को 'आर.के. शर्मा' लिखेंगे जो हिंदी में इसकी संक्षिप्ती 'रा.कु.शर्मा' होनी चाहिए। इन संक्षिप्तियों का परिणाम यह होता है कि व्यक्ति का सही नाम क्या है, इसका अनुमान लगाना पड़ता है। आर.के.से राम कुमार, राजेंद्र कुमार, राज कृष्ण, राधा कृष्ण कुछ भी हो सकता है।

संक्षिप्तिनामों के अतिरिक्त अंग्रेजी में स्थानों, संस्थाओं, विभागों के नामों, पदों या पदनामों तथा अन्य नामों के संक्षेपाक्षरों के प्रयोग का भी प्रचलन है। प्रतिदिन नई संक्षिप्तियां बनती हैं और संदर्भ से अनजान अनुवादक गलत अनुवाद कर सकता है। यदि हिंदी अनुवाद में सभी संक्षिप्तियों को ले आएँ तो अटपटा लगता है, क्योंकि हिंदी की प्रवृत्ति संक्षिप्तिपरक नहीं है। राजनीतिक पार्टियों, संस्थाओं आदि की संक्षिप्त, हिंदी नामों के प्रचलन के बावजूद हिंदी में पूरा

शब्द लिखने का चलन है। अत: अनुवाद में संक्षिप्ति का सही रूप पहचानना और फिर उसका अनुवाद करना आवश्यक है अन्यथा भयंकर गलतियाँ हो सकती है।

बहुत से विभागों/संस्थाओं के अंग्रेजी नाम इतने अधिक प्रचलित हो चुके हैं कि हिंदी में उनका लिप्यांतरण भी कर दिया जाता है, जैसे सी.बी.आई, यू.पी.एस.सी. आदि। इनमें पाठक को कोई भ्रम नहीं होता और उन्हें आशय समझ में आता है।

इसी प्रकार अंतरराष्ट्रीय संगठनों के नामों की ऐसी संक्षिप्तियाँ जो काफी प्रचलन में हैं, वे लक्ष्य भाषा में ज्यों की त्यों लिखी जा सकती हैं। जैसे–यू.एन.ओ. डब्ल्यू.एच.ओ। हिन्दी में इनके पूर्ण रूप मौजूद हैं परंतु इन्हें लिप्यांतरण करके लिखने से भी कोई भ्रम नहीं होता है। कुछ संक्षिप्तियाँ के उच्चारणपरक रूप अधिक प्रचलित है, जैसे यूनेस्को या यूनीसेफ लिखने से बात ज्यादा समझ में आती है। इसकी जगह यू.एन.आ.सी.एफ. अथवा 'यू.एन.एस.सी.ओ. लिखने से भ्रम–सा उत्पन्न होता है। इसी प्रकार हिंदी में टाडा, दक्षेश आदि संक्षिप्तियों के संयुक्त शब्द लिखने का भी प्रचलन है।

कुछ संक्षिप्तियां ऐसी हैं जो किसी प्रदेश, स्थान या राज्य विशेष में प्रचलित हैं जैसे डी.वी.बी. (दिल्ली विद्युत बोर्ड), सी.पी.डब्ल्यू.डी. (केन्द्रीय लोक निर्माण विभाग), डी.डी.प्रा. (दिल्ली विकास प्राधिकरण), हिमुडा (हिमाचल अर्बन डिवेल्पमेंट अथॉरटी) आदि। स्थानीय स्तर पर प्रयुक्त संक्षिप्तियां प्रयोग करते समय पत्र व्यवहार में पहली बार पूरा नाम लिख देना उचित रहता है।

कोड–संक्षिप्तियों के अनुवाद में समस्या तब पैदा होती है। जब अनुवादक संदर्भ, सामान्य ज्ञान और विवेक, तीनों की अनदेखी करता है। उदाहरण के लिए, Washington DC का अनुवाद 'वाशिगटन डिप्टी कमिश्नर' नहीं किया जाना चाहिए। भले ही आपके शहर में डी.सी का पूरा नाम डिप्टी कमिश्नर ही बनता है। इसी प्रकार अमेरिका में कैलिफोर्निया के लिए संक्षिप्त रूप C.A. भी प्रचलित है। अमेरिका के संदर्भ में केवल C.A. लिखे होने पर प्रबुद्ध अनुवादक 'कैलेफोर्निया' अर्थ ही लगाएगा अन्यथा कोई इसका अनुवाद 'चाटर्ड एकाउटेन्ट' भी कर सकता है। समाचार पत्र अथवा पत्रिकाओं और पुस्तकों आदि के अध्ययन से अनुवादक की जानकारी विस्तृत हो सकती है। इस प्रकार भूल का निराकरण हो सकता है।

कुछ सक्षिप्तियाँ ऐसी होती हैं जो सरलता से समझ में नहीं आतीं और उनका पूरा रूप भी अनुदित सामग्री में नहीं मिलता। ऐसी संक्षिप्तियों के संबंध में कभी–कभी अनुवादक, अनुमान का सहारा लेता है। उदाहरण के लिए यदि Local Br. of Ministry of Law' का अनुवाद यदि 'विधि मंत्रालय का स्थानीय बिग्रेडियर' किया जाए तो संदर्भ के अनुसार और न ही संक्षिप्ती के अनुवाद की दृष्टि से उचित है क्योंकि ब्रिगेडियर पदनाम का संक्षिप्त रूप Brig. है न कि Br. ।

कुछ अंग्रेजी सक्षिप्तियाँ और उनके हिंदी पर्याय निम्नलिखित हैं–

1. N.A.M. - Non Alignment Movement

2. S.A.R.C. - South Asian Regional Association

(गुटनिरपेक्ष समाज)

3. E.E.C. - East European Community

(पूर्वी यूरोपीय समुदाय)

4. R.B.I. - Reserve Bank of India

(भारतीय रिजर्व बैंक)

5. W.T.O. - World Trade Organisation

(विश्व बाजार संगठन)

6. G.A.T.T. - General Agreement of Trade and Teriffs

(व्यापार एवं तटकर पर सामान्य समझौता।)

7. M.T.N.L. - Mahanagar Telephone Nigam Limited

(महानगर टेलीफोन निगम लिमिटेड)

8. R.A.W. - Research And Analysis Wing

(अनुसंधान एवं विश्लेषण स्कंध)

9. C.V.C. - Central Vigilence Commission

(केंद्रीय सतर्कता आयोग)

10. N.C.E.R.T. - National Council of ResearchAnd Training

(राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद्)

स्वयं आकलन प्रश्न-1

प्रश्न-1 संक्षिप्ताकार बनाने की प्रवृत्ति सर्वाधिक किस भाषा में है ?

प्रश्न-2 S.A.R.C. का प्रचलित हिन्दी अनुवाद क्या है ?

11.4 आँचलिक शब्दावली का अनुवाद

आँचलिक शब्दावली अंचल अथवा क्षेत्र विशेष में प्रचलित शब्दावली होती है। संपूर्ण देश के संदर्भ में आँचलिक शब्दों से लोग अनभिज्ञ होते हैं। फणीश्वर नाथ रेणु का उपन्यास 'मेला आँचल' उन्नीसवीं शताब्दी के छठे दशक में आया। इसमें पूर्वी बिहार की सांस्कृतिक सामाजिक-पृष्ठभूमि और यहीं की भाषा का प्रयोग हुआ था। इसी से 'आंचलिक' शब्द प्रचारित हुआ। आँचलिक का अर्थ है-अंचल विशेष। आँचलिक रचनाओं में तो आँचलिक भाषा के शब्द आते ही हैं, सामान्य रचनाओं में भी अंचल विशेष की भाषा का प्रयोग होता है। आँचलिक शब्द भौगोलिक परिवेश एवं सामाजिक-सांस्कृतिक जीवन से गहरे में जुड़े रहते हैं। इसलिए उनका अनुवाद करने के लिए अनुवादक को उस अँचल से परिचित होना आवश्यक है। मुंशी प्रेमचन्द के उपन्यासों की अपेक्षा फणीश्वरनाथ रेणु अथवा नागार्जुन की रचनाओं में आँचलिकता अधिक है इसलिए उनका अनुवाद भी अधिक कठिन है।

आँचलिक साहित्य में विशेषकर कथा साहित्य में आँचलिक शब्दावली का अधिक प्रयोग होता है, क्योंकि पात्र आँचलिक भाषा (बोली) में वार्तालाप करते हैं। इन रचनाओं में अनुवाद में शैली और शिल्प को सूक्ष्मताओं, अर्थछायाओं और लेखक के प्रतीकात्मक एवं काव्यात्मक प्रयोगों पर अधिक ध्यान देना पड़ता है। इस संदर्भ में तत्संबंधी अँचलो के लोकजीवन का निकटतम परिचय और स्थान विशेष की पृष्ठभूमि का ज्ञान आवश्यक है। इसके अतिरिक्त अनुवादक को मिथकीय, दार्शनिक व सामाजिक परिकल्पनाओं एवं सांकेतिक शब्दों की अर्थ छायाओं का संकेत भी देना जरूरी हो जाता है अन्यथा लक्ष्य भाषा के पाठक के लिए उसे हृदयागन करना कठिन हो जाता है और अनुवादक के लिए अनुवाद करना मुश्किल हो जाता है।

आँचलिक रचनाओं की भाषा क्षेत्र विशेष की संस्कृति में रची बसी होती है, उसी की प्रतीत होती है। समानार्थी प्रतीक लक्ष्य भाषा में मिल पाना बहुत ही कठिन होता है। प्रदेश विशेष के जन जीवन की अभिव्यक्ति होने के कारण वह बिल्कुल अलग ही होती है। इस संबंध में लियोनार्ड फास्टर का प्रतीकवादी सिद्धांत बहुत महत्त्वपूर्ण है। आँचलिक रचनाओं के अनुवाद की समस्या का भाषा के स्तर पर भी समाधान ढूंढना होता है। पात्रों के नाम के उच्चारण से लेकर आँचलिक शब्द प्रयोगों तक की समस्याओं को सुलझाना वास्तव में अत्यधिक परिश्रमपूर्ण कार्य है। उदाहरण के लिए 'मैला आँचल', 'पानी के प्राचीर', का नीरू, 'बूंद और समुद्र' (लेखक अमृतलाल नागर) के लखनऊ की वन कन्या, 'ब्रह्मपुत्र के हिंसामुख' की आरती, 'चेम्मीन' के निर्कुन्नम तथा 'समुद्रतट' का पलनी आदि पात्र, अपने प्रदेश की विशेषताओं से भरपूर हैं। आँचलिक भाषा और संस्कृति उनके जीवन का अभिन्न अंग है। ऐसे पात्रों की भाषा को लक्ष्य भाषा में अनुद्रित करना सृजनात्मक प्रतिभा और विशद ज्ञान की माग करता है। इसके लिए अनुवादक को आँचलिक भाषा शिल्प का पूरा ज्ञान होना चाहिए।

स्वयं आकलन प्रश्न-2

प्रश्न-1 व्यंजनात्मक लाक्षणिक अनुवाद का कोई एक उदाहरण दीजिए।

प्रश्न-2 W.T.O का हिन्दी पूर्वानुवाद क्या है ?

11.5 व्यंजनात्मक लाक्षणिक पद प्रयोगों का अनुवाद

किसी भी प्रकार के साहित्य में भाषा प्रयोग में अभिधा की अपेक्षा लक्षणा और व्यंजना शब्द शक्तियों का प्रयोग करके काव्य में सौंदर्य अथवा चमत्कार का सृजन किया जाता है। किसी भी प्रकार के साहित्य में भाषा प्रयोग अनुवाद कठिन होता है। लक्षणा का रूपांतर करने के लिए अनुवादक को ऐसे पर्यायों का चयन करना आवश्यक होता है, जिनमें पूर्व विधायन की क्षमता हो। इसी प्रकार व्यंजना के अनुवाद के लिए में ही पर्याय सार्थक हो सकते हैं, जो पाठक के चित्त में समान कल्पना जगा सके। शेक्सपीयर की एक लाक्षणिक पंक्ति है- 'Now heaven walks on this Earth' यहाँ 'Heaven' दिव्य सौंदर्य के लिए लाक्षणिक प्रयोग है जिसका अनुवाद हिन्दी में 'स्वर्ग' किया जा सकता है। इसी प्रकार कालिदास की प्रसिद्ध लाक्षणिक उक्ति है- 'अहो लब्ध नेत्र निर्वाणम्' जिसका सीधा अनुवाद है- 'अहा' नेत्रों को निर्वाण प्राप्त हो गया। यही संस्कृत वाक्य में प्रयुक्त 'निर्वाण' शब्द 'शांति और आनंद' का सूचक है जिसे 'मुक्ति' के अर्थ में अनुदित कर दिया गया है। यह दोनों अनुवाद भाषिक दृष्टि से ठीक होकर भी भाव की दृष्टि से गलत है। पहले उदाहरण में 'Heaven' का अर्थ 'अनंत या दैवी सौंदर्य' लगना चाहिए तथा दूसरे में 'निर्वाण' शब्द का अर्थ 'परमशक्ति' या 'परमसुख' लिखा जाना जाना चाहिए। ये अर्थपरक अनुवाद की ग्राह्य है, जो लक्षणा अथवा व्यंजना शब्द शक्ति पर आधारित है।

व्यंजनात्मक लाक्षणिक पद प्रयोग अप्रस्तुत विधान में अलकारों/प्रतीकों/विबों के प्रयोग के रूप में देखा जा सकता अलंकारों के माध्यम से हम प्रस्तुत विवेचन में किसी अप्रस्तुत को संकेतित करते है। रचनाकार प्रस्तुत में जिस शब्द का प्रयोग कर रहा होता है, यह स्वयं में किसी अन्य अर्थ का वाहक होता है, परंतु संदर्भ में वह किसी अप्रस्तुत अर्थ अथवा वस्तु की ओर संकेत करता दिखाई पड़ता है। इसे ही मोटे तौर पर साहित्य में अप्रस्तुत विधान कहा जाता है। अर्थ की दृष्टि से प्रस्तुत की जगह अप्रस्तुत ही अधिक महत्त्वपूर्ण हुआ करता है। अप्रस्तुत सामान्य भी हो सकता है और सांस्कृतिक, पौराणिक भी। सांस्कृतिक पौराणिक संदर्भ के अप्रस्तुत का अनुवाद कठिन होता है, क्योंकि लक्ष्य भाषा में समकक्ष, अभिव्यक्ति खोज पाना कठिन होता है। प्रत्येक भाषा का सामाजिक-सांस्कृतिक संदर्भ भिन्न होता है। उदाहरण के लिए अशोक बनना बहुत कठिन है तथा 'तुम भी उसी मार्ग पर जाओगे जिस पर बाली गया है।' रामायण में बाली तथा इतिहास में अशोक क्रमशः हत्या होने एवं 'अहिंसा मार्ग पर चलने' के प्रतीक हैं। ऐसे में अनुवादक को अर्थ ध्यान में रखकर अनुवाद करना होगा।

मुहावरों में अक्सर लक्षणा और व्यंजना का ही प्रयोग होता है। 'थोथा चना, बाजे घना' से अभिप्राय 'कम योग्य व्यक्ति अधिक शोर मचाता है' से है। यहाँ 'थोथा चना' से अभिप्राय खाने वाले चने से नहीं है। इसी तरह 'अंधे की लकड़ी', 'घर का दीपक', 'काठ का उल्लू' आदि मुहावरे भी लक्षणा और व्यंजनापरक अर्थ देते हैं।

काव्य में अलंकार, व्यंजना और लक्षणा शब्द शक्ति से संपन्न रहते हैं। 'श्लेष' अलंकार में एक शब्द में दो या अधिक अर्थ छुपे रहते हैं। जैसे 'सुमन' शब्द 'अच्छे मन' के लिए भी प्रयुक्त हो सकता है और 'पुष्प' के लिए भी संदर्भानुसार अर्थ निकालकर अनुवाद करना उचित होगा। सांस्कृतिक-ऐतिहासिक नामों से जुड़े श्लेषों का अनुवाद न करके उन्हें ज्यों-का-त्यों लिखकर, उनका भावार्थ पाद-टिप्पणी में दे देना चाहिए। हिंदी में 'भीष्म प्रतिज्ञा', 'रावण', दुर्योधन, 'कुंभकर्ण' आदि ऐसे ही उदाहरण है। शेक्सपीयर के नाटक 'हेमलेट' में राजकुमार हेमलेट, पोलोनियरों से कहता है- "That brute part of his killed the capital, A calf there-' प्रस्तुत पंक्ति में तीन स्थल पर श्लेष का प्रयोग हुआ मैं जो व्यंजना द्वारा ही पहचाना जाता है- capital, capial And Calf, इनमें से 'Brute' नामक योद्धा को सांकेतिक करता है और साथ ही उसकी बर्बरता को भी हिन्दी में समकक्ष खोजना संभव नहीं। 'Capital' का अर्थ 'राज्य' और उत्तराधिकारी के लिए भी है। 'Calf' बछड़े और राजकुमार का परिचायिक है।

इसी प्रकार 'यमक' अलंकार में शब्द की दुहराई, विभिन्न अर्थों में होती है, जिनका अर्थ लक्षणा से निकलता है। जैसे यह दोहा 'कनक-कनक' ते सौगुना, मादकता अधिकाय।

'या पाया चोराय है जग वा पाए बोराय।'

यहां 'कनक' धतूरा और सोने का अर्थ देते हैं। अंग्रेजी में इनका पर्यायवाची शब्द नहीं इसलिए भावार्थ ही अनुचित होगा।

उपमा अलंकार में प्रस्तुत की तुलना अप्रस्तुत से की जाती है। 'वह शेर की भांति वीर है' का अनुवाद His valour is like A lion' शारीरिक उपमाएँ प्राय: प्राकृतिक पदार्थों से दी जाती है. जैसे 'नवकंज लोचन, कंज मुख, कर कंज, पद कंजारूणम' में तुलसीदास भगवान राम की आँखों, मुख, हाथ और पाँव की तुलना कमल या लाल कमल से करते हैं। यही लक्षणा का प्रयोग हुआ है। अनुवाद करते समय संदर्भ का ध्यान रखना पड़ता है।

अनुप्रास अलंकार में व्यंजन वर्ण की अनेक तरह से दुहराई करके चमत्कार पैदा किया जाता है। अनुवाद का करते समय अनुवादक को अर्थ के साथ ध्वनि-साम्य का सौंदर्य भी यथासंभव पैदा करना होता है। प्रसाद की पंक्ति, रो-रोक सिसक-सिसककर, कहता अपनी करुण कहानी का अनुवाद यतेंद्र कुमार ने किया है-

I Sob And say my story of sorrow'

अर्थालंकारों के अनुवाद में भी लाक्षणिक और व्यंजनात्मक प्रयोगों पर ध्यान देना चाहिए।

यतेंद्र कुमार द्वारा किया एक अनुवाद दृष्टव्य है

It a touch sweet pleasure melteth
Like to bubble's when rain pelteth,

अनुवाद - ''आनंद मधुर तो गल जाता छूने से,
पानी में जाता फूट बगूले जैसा।''

व्यंजनापरक एवं लाक्षणिक अभिव्यक्तियों कवि मानस के छाया-चित्रों में रहती है और उसे सुरक्षित रख पाना कठिन काम है। अनुवादक विबों का अनुवाद कर अग्नि परीक्षा देता है। विंबवाद में अनुवादक की समस्या इस विशिष्ट क्षण को, उसकी अनुभूति को सुरक्षित रख पाने की ही है। मनोजगत की इस अनुभूति भंगिमा, जिसे तथ्य-कथन द्वारा प्रगट नहीं किया जा सकता, को अनुवाद द्वारा लक्ष्य भाषा में ढालना कठिन कार्य है। जिस प्रकार हूल्मे कविता के प्रत्येक शब्द का अत्यधिक रूप से उपयुक्त होना अनिवार्य मानते हैं वैसे ही बिंब-शब्दों के अनुवाद का उपयुक्त होना भी अनिवार्य हो जाता है। एडिथ सिटवेल के काव्य में जिस प्रकार बिंबों का उद्देश्य प्रत्यक्ष एवं तात्कालिक प्रभाव की सृष्टि करना है, अनुवाद के क्षणों में भी अनुवादक के लिए यह प्रभाव सुरक्षित रखना अपेक्षित होता है। टी.एस.इलियट की प्रसिद्ध कविता 'वेस्ट लैंड' की प्रथम पंक्ति है, 'April is the Cruelest month' इसका सरल अनुवाद अति क्रूर है 'अप्रैल मास' किया जा सकता है, जो कवि के अभिप्राय को संप्रेषित नहीं करता। लाक्षणिक और व्यंजनात्मक अनुवाद होगा- 'टीस रहे बसंत के घाव' अथवा उजड़े हुए का क्या 'बंसत' हो सकता है।

व्यंजनापरक-लाक्षिक- प्रयोगों की दृष्टि से प्रतीकों का भी अत्यधिक महत्त्व है और इनका सटीक अनुवाद या तो लक्ष्य भाषा में समकक्ष प्रतीक खोजकर या फिर भावार्थ देकर किया जाता है। प्रतीक, मूल रचना में विभिन्न प्रकार की प्राकृतिक स्थितियों, सामाजिक-सांस्कृतिक संदर्भों एवं पात्रों की विभिन्न मानसिकता को दर्शाते हैं। लक्ष्य भाषा में प्रतीकों का अनुवाद करते समय अनुवादक को इस तथ्य की ओर सतर्क रहना चाहिए कि उस प्रतीक विशेष की अर्थगत संवेदना सोत भाषा एवं लक्ष्य भाषा में एक जैसी हो और उनकी गुणात्मकता में अधिक अंतर न हो। प्रतीकों के अनुवाद में सबसे अधिक कठिनाई अनुवादक को वहाँ आती है, जहाँ वह प्रतीकों के सांस्कृतिक संदर्भगत एवं गुण संबंधी पृष्ठभूमि से परिचित नहीं होता। ऐसा प्राय: विदेशी संस्कृति से संबंधित प्रतीकों में होता है।

सांस्कृतिक प्रतीकों का अनुवाद प्रायः कठिन होता है। 'सुदामा के चावल', 'लक्ष्मण रेखा', 'चक्रव्यूह की रचना' आदि ऐसे ही प्रतीक हैं। इनका भावानुवाद ही संभव है।

प्रतीक का अनुवाद करते समय इस बात पर भी ध्यान देना होता है कि स्रोत भाषा में प्रतीकात्मक रूप में जिस वस्तु को ग्रहण किया गया है वह वस्तु लक्ष्य भाषा में वही अर्थ देती है या नहीं, जैसे–

''हर शाख पे उल्लू बैठा है।

अंजामे गुलिस्तां क्या होगा।''

का अर्थ मूल भाषा में यह है कि हर पग पर अनिष्टकारी लोग बैठे हैं तो देश का उपवन उजड़कर ही रहेगा। अफ्रीका में उल्लू बुद्धिमता का प्रतीक है इसलिए वहाँ यह व्यंजना उचित नहीं होगी। पश्चिमी देशों में ठंड पड़ती है इसलिए सूर्य का चमकना सुखद है जबकि भारत जैसे गर्म देश में वह कष्ट का कारण हो सकता है।

विवेचन से यह स्पष्ट हो जाता है कि मुहावरे, लोकोक्तियाँ, अलंकार बिंब और प्रतीक प्रायः भाषा का लाक्षणिक और व्यंजनात्मक रूप ही प्रस्तुत करते है। साहित्य में इनका प्रयोग अभिधात्मक न होकर लाक्षणिक अथवा व्यंजनात्मक ही होता है। अनुवाद करते समय संदर्भ एवं भावार्थ पर विशेष ध्यान देने की आवश्यकता रहती है।

स्वयं आकलन प्रश्न-3

प्रश्न-1 Brute शब्द किसे संकेतिक करता है?

प्रश्न-2 R.A.W. संक्षिप्ति का हिन्दी पर्याय क्या है?

11.6 सारांश

अंग्रेजी भाषा में संक्षिप्ताक्षर या संक्षिप्तियां बनाने की प्रवृति अधिक है तथा वह पद जिसमें शिल्प शब्दों का प्रयोग और इसलिए जिसका अर्थ जल्दी से सब लोगों की समझ में न आए वह कूटपद कहलाते हैं। आँचल विशेष में प्रचलित आँचलिक शब्दावली और लक्षणा, व्यंजनात्मक शब्दावली इत्यादि का अनुवाद करना बेहद कठिन माना जाता है। इसलिए इसका अनुवाद बेहद ध्यानपूर्वक एवं विशिष्ठ अनुवादक द्वारा ही किया जाता है।

11.7 कठिन शब्दावली

अवहेलना - तिरस्कार

स्वच्छंद - मनमानी, स्वतंत्र

संचित - इकट्ठा करना

विस्मित - हैरान

11.8 स्वयं आकलन हेतु प्रश्नों के उत्तर

अभ्यास प्रश्न-1 के उत्तर

उ.1 अंग्रेजी भाषा में

उ.2 सार्क

अभ्यास प्रश्न-2 के उत्तर

उ.1 मुहावरों का अनुवाद

उ.2 विश्व व्यापार संगठन

अभ्यास प्रश्न-3 के उत्तर

उ.2 योद्धा को

उ.2 अनुसंधान एवं विश्लेषण स्कंध

11.9 संदर्भित पुस्तकें

1) कैलाश चन्द्र भाटिया अनुवाद कला: सिद्धांत और प्रयोग, तक्षशिला प्रकाशन, दिल्ली।

2) डॉ. गार्गी गुप्त, अनुवाद बोध, भारतीय अनुवाद परिषद्, दिल्ली।

3) वामुदेव नन्दन प्रसाद, हिन्दी अनुवाद : सिद्धांत धौर प्रयोग, भारती भवन, पटना।

11.10 सात्रिक प्रश्न

प्रश्न-1 संक्षिप्तिाक्षरों एवं कूटपदों के अनुवाद पर विस्तार से प्रकाश डालिए।

प्रश्न-2 आँचलिक शब्दावली के अनुवाद पर अपने विचार व्यक्त कीजिए।

प्रश्न-3 व्यंजनापरक लाक्षणिक पदों के प्रयोगों के अनुवाद का विस्तार से वर्णन कीजिए।

*****

इकाई पाठ-12
संपादन

संरचना

12.1 भूमिका
12.2 उद्देश्य
12.3 अनुवाद की सम्पादन प्रविधि
12.3.1 अनुवाद की संपादन प्रविधि से अभिप्राय
12.3.2 अनुवाद की संपादन प्रविधि की विधि
● मानक हिंदी वर्णमाला
● हिंदी वर्तनी का मानकीकरण
● विदेशी ध्वनियाँ
● हिंदी शब्द/ध्वनि का मानकीकरण
● हिंदी के संख्यावाचक शब्दों की एकरूपता
● फार्मेट मानकीकरण
स्वयं आकलन प्रश्न
12.4 सारांश
12.5 कठिन शब्दावली
12.6 स्वयं आकलन प्रश्नों के उत्तर
12.7 संदर्भित पुस्तकें
12.8 सात्रिक प्रश्न

12.1 भूमिका

इकाई ग्यारह में हमने संक्षिप्ताक्षरों तथा कूटपदों का अनुवाद, आँचलिक शब्दावली का अनुवाद तथा व्यंजनापरक लाक्षणिक पद प्रयोगों के अनुवाद का गहन अध्ययन किया। इकाई बारह में हम अनुवाद की सम्पादन प्रविधि, अनुवाद की सम्पादन प्रविधि की विधि, मानक हिन्दी वर्णमाला, हिन्दी वर्तनी का मानवीकरण, हिन्दी के संख्यावाचक शब्दों की एकरूपता तथा फार्मेट के मानकीकरण का विस्तारपूर्वक अध्ययन करेंगे।

12.2 उद्देश्य

इकाई बारह का अध्ययन करने के पश्चात् हम यह जानने में सक्षम होंगे कि

1. अनुवाद की सम्पादन प्रविधि की विधि क्या है ?
2. अनुवाद की सम्पादन प्रविधि की विधि क्या है ?
3. हिंदी वर्तनी के मानकीकरण से आप क्या समझते हैं ?
4. हिंदी के संख्यावाचक शब्दों की एकरूपता क्या है ?

12.3 अनुवाद की सम्पादन प्रविधि

अनुवाद के पश्चात उसका संपादन, पुनरीक्षण और कभी-कभी मूल्यांकन भी किया जाता है। संपादन में अनुवाद की भाषा और स्वरूप (फार्मेट) के मानकीकरण पर जोर दिया जाता है। पुनरीक्षण में जहां जांच के साथ सुधार, संशोधन और संपादन शामिल होता है वहीं मूल्यांकन में केवल जांच की जाती है। जांचने के पश्चात् अनुवाद के स्वरूप और गुणवत्ता उसकी उपलब्धियों और अनुपलब्धियों पर टिप्पणी दी जाती है।

अनुवाद मूल्यांकन के लिए 'अनुवाद की गुणवत्ता' पर परीक्षण किया जाता है। मूल्यांकन द्वारा निर्णय दिया जाता है कि अनुदित पाठ मूल पाठ के स्तर का है अथवा नहीं, उसके सहपाठ के रूप में प्रयुक्त हो सकता है अथवा नहीं। साथ यह भी पता लगाया जाता है कि मूल पाठ से अलग रखे जाने पर अनुदित पाठ, मूल के संदेश को संप्रेषित करने में सूक्ष्म हुआ है या नहीं।

अनुवाद समीक्षा का अभिप्राय मूलपाठ की तुलना में अनुदित पाठ के गुण दोष का विवेकन और अनुदित पाठ का लक्ष्य भाषा की साहित्यिक कृतियों के बीच मूल्यांकन से है। इसके अंतर्गत विवेचक अनुवाद सिद्धांत की मान्यताओं के आधार पर भी किया जाता है और कृति को स्वतंत्र पाठ के रूप में भी जांचा जाता है। यदि अनुवाद समीक्षा, अनुवाद कभी भी हो तो बेहतर समीक्षा कर पाएगा।

अनुवाद संपादन, पुनरीक्षण का अभिन्न अंग है। संपादन अनुवाद की भाषा के मानकीकरण की परख कर संशोध न करता है। ध्वनि, पद, वाक्य और फार्मेट के मानकीकरण पर बल दिया जाता है।

12.3.1 अनुवाद की संपादन विधि से अभिप्राय

अनुवादन पुनरीक्षण और अनुवाद संपादन में अंतर यही है कि पुनरीक्षण में अनुवाद के कथ्य पर विशेष ध्यान दिया जाता है। अनुदित विषय वस्तु भाषिक और आर्थिक अभिव्यक्ति में सफल है अथवा नहीं, इस पर विचार किया जाता है। संपादन में वर्ण, वर्तनी, विभक्ति, क्रियापद, अव्यय, अनुस्वार–अनुनासिक ध्वनियों के प्रयोग आदि भाषिक तत्वों की शुद्धता पर विचार किया जाता है। संपादन प्रायः भाषा प्रयोग के स्तर पर शुद्धता पर बल देता है।

भारतीय संघ तथा कुछ राज्यों की राजभाषा स्वीकृत हो जाने के फलस्वरूप हिंदी का मानक रूप निर्धारित करना आवश्यक हो गया। वर्णमाला में सर्वत्र एकरूपता और टाइपराइटर आदि आधुनिक यंत्रों के उपयोग के लिए लिपि की अनेक रूपता में बाधक हो सकती है। केंद्रीय हिंदी निर्देशालय ने शीर्षस्थ विद्वानों आदि के साथ वर्षों के विचार–विमर्श के पश्चात हिंदी वर्णमाला तथा अंकों का जो मानक स्वरूप निर्धारित किया वह इस प्रकार है।

12.3.2 अनुवाद की सम्पादन प्रविधि की विधि

मानक हिन्दी वर्णमाला

स्वर : अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ऋ, ए, ऐ, ओ, औ

मात्राएं : ा ि ी ु ू ृ े ै ो ौ

अनुस्वार : अं (ं)

विसर्ग : अः (ः)

अनुनासिकता : ँ

व्यंजन क ख ग घ ङ
च छ ज झ ञ
ट ठ ड ढ़ ण
त थ द ध न
प फ ब भ म
य र ल व
श ष स ह

संयुक्त व्यंजन : क्ष त्र (त्र) ज्ञ श्र

हल चिह्न ् ड् , क् ख्

गृहित स्वर ऑ (ॉ) ख ज फ

देवनागरी अंक १ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९ ०

भारतीय अंकों का राष्ट्रीय रूप : 1, 2, 3, 4, 5, 6, 7, 8, 9, 0

संस्कृत के लिए प्रयुक्त देवनागरी लिपि में ॠ ऌ भी सम्मिलित हैं। हिंदी वर्णों में इनका प्रयोग न होने से इन्हें हिंदी वर्णमाला में शामिल नहीं किया गया।

संविधान के अनुच्छेद 343 (1) में संघ के राजकीय प्रयोजनों के लिए प्रयुक्त होने वाले अंकों का रूप भारतीय अंकों का अंतर्राष्ट्रीय रूप होगा। इसके बाद देवनागरी अंकों का प्रयोग भी प्राधिकृत है। अनुवाद संपादक को इसका ज्ञान होना चाहिए।

- **हिंदी वर्तनी का मानकीकरण :**

किसी भाषा को सीखने और सिखाने में सहायक या बाधक उसकी लिपि अथवा व्याकरण होता है। लिपि का एक पक्ष है, सामान्य और विशिष्ट स्वरों के पृथक प्रतीक-वर्गों की समृद्धि, उनका परस्पर स्पष्ट आकार-भेद, लिखावट में सरलता तथा स्थान लाघव एवं प्रयत्न लाघव।

लिपि का दूसरा पक्ष है, वर्तनी एक ही स्वर को प्रकट करने के लिए विविध वर्गों का प्रयोग वर्तनी को जटिल बना देता है और यह लिपि का एक सामान्य दोष होता है। देवनागरी लिपि में ऐसी कुछ कठिनाइयों को दूर करने के लिए शिक्षा मंत्रालय ने 1961 में एक विशेषज्ञ समिति नियुक्त की थी। समिति ने अप्रैल, 1962 में अपनी अंतिम सिफारिशें प्रस्तुत की। इन्हें 1967 में हिंदी वर्तनी का मानकीकरण शीर्षक पुस्तिका में व्याख्या तथा उदाहरण सहित प्रकाशित किया गया था। वर्तनी (Spelling) संबंधी नवीनतम नियम इस प्रकार हैं-

- **संयुक्त वर्ण**

(क) खड़ी पाई वाले व्यंजनों का मेल, खड़ी पाई को हटाकर किया जाता है, यथा-ख्याति

(ख) लग्न (लग्न) कच्चा (च् च) छज्जा (ज - ज) नगण्य (ण्) कुत्ता (त् त), पथ्य (थ् य) न्यास (न् - न्य) प्यास (प्-प), डिब्बा (ब-ब) रम्य (म-म) शय्या (य् -य), उल्लेख (ल-ल)

- **अन्य व्यंजन** (अ) क और फ के संयुक्ताक्षर क्व, फ्य संयुक्त, पक्का आदि की तरह बनाए जाएं न कि संयुक्त, पक्का की तरह।

(आ) ङ, छ, ट, ठ, ड, ढ, द और ह जैसे गोलाकार अक्षरों के संयुक्ताक्षर हल् चिन्ह लगाकर ही बनाए जाएं, यथा-वाङ्मय, लट्टू, बुड्ढा, विद्या, चिह्न, ब्रह्मा आदि इन्हें वाङ्मय, लट्टू, बुड्ढा, विद्या, चिह्न, ब्रह्मा न लिखा जाए।

(इ) संयुक्त 'र' के प्रचलित तीनों रूप यथावत रहेंगे प्रकार, धर्म, राष्ट्र

(ई) 'श्र' का प्रचलित रूप मान्य होगा। इसे 'श्र' के रूप में नहीं लिखा जाए, त्+र के संयुक्त रूप के लिए त्र और त्र,् दोनों रूप स्वीकृत हैं।

(उ) हल् चिह्न युक्त वर्ण से बनने वाले संयुक्ताक्षर के द्वितीय व्यंजन के साथ 'इ' की मात्रा का प्रयोग संबंधित व्यंजन के तत्काल पहले ही किया जाए न कि पूरे युग्म के पश्चात, यथा ही किया जाए न कि पूरे युग्म के पश्चात्, यथा कुट्टिम (कुट्टिम नहीं) द्वितीय (द्वितीय) नहीं) बुद्धिमान (बुद्धिमान नहीं), चिह्नित '(चिह्नित नहीं)

(ऊ) संस्कृत में संयुक्ताक्षर पुरानी शैली में भी लिखें जा सकेंगे, उदाहरणार्थ चिह्, विद्या, चञ्चल, विद्वान, वृद्ध, द्वितीय आदि।

- **विभक्ति चिह्न**

(क) हिंदी के विभक्ति चिह्न सभी प्रकार के संज्ञा शब्दों में प्रतिपादक से पृथक लिए जाएं, जैसे राम ने, राम को, राम से आदि। इसी तरह स्त्री ने, स्त्री को स्त्री से आदि।

(ख) सर्वनाम शब्दों में ये चिह्न प्रतिपादक के साथ मिलाकर लिखे जाएं जैसे उसके, उसको, तुमको, उसपर, उससे आदि।

• सर्वनामों के साथ यदि दो विभक्ति चिह्न हों तो उनमें से पहला मिलाकर और दूसरा पृथक लिखा जाता है, जैसे उसके लिए, इसमें से।

(ग) सर्वनाम और विभक्ति के बीच 'ही,' हूं 'तक' आदि का निपात हो तो विभक्ति को पृथक लिखा जाएगा जैसे आप ही <u>के</u> लिए, मुझ तक <u>तो</u> नहीं आया।

• **क्रियापद :**

संयुक्त क्रियाओं में सभी असंगत क्रियाएं पृथक लिखी जाएं जैसे पढ़ा करता है, 'आ सकता है', 'जाया करता है', 'खाया करता है' 'खेला करेगा', 'घूमता रहेगा', 'बढ़ते चले जा रहे हैं।'

• **हाइफन :**

(क) द्बंद्व समास में दो पदों के बीच हाइफन रखा जाए-माता-पिता, लेन-देन, हाथी-घोड़ा, चाल-चलन, पढ़ना-लिखना, देखरेख शिव-पार्वती आदि।

(ख) 'सा' 'जैसा' आदि से पूर्व हाइफन रखा जाए, यथा-तुम-सा, राम-जैसा, चाकू-से-तीखा।

(ग) तत्पुरूष समास में हाइफन वहीं प्रयोग किया जाए जहां उसके बिना भ्रम होने की संभावना हो, अन्यथा नहीं, जैसे भू-तत्व। सामान्यतः तत्पुरूष समास में हाइफन लगाने की आवश्यकता नहीं रहती, जैसे राम राज्य, राजकुमार, आत्महत्या आदि। इसके विपरीत 'अ-नख' में हाइफन न लगा हो तो 'अनख' शब्द का अर्थ 'रख सहित' की जगह 'क्रोध' हो सकता है। 'अन्नति' नम्रता का अभाव है, अनति का अर्थ थोड़ा सा है।

कठिन सन्धियों से बचने के लिए भी हाइफन का प्रयोग हो सकता है। द्वि अक्षर, द्वि अर्थक आदि।

• **अव्यय प्रयोग :**

'तक' 'साथ' आदि अव्यय सदा पृथक लिखे जाएं जैसे आपके साथ, यहां तक।

हिंदी में आह, ओह, अहा, भी, न, जब, तब, यहां, वहां, कहां, कि, तथा, यथा आदि अनेक मानों का बोध करवाने वाले अव्यय है। कुछ अव्ययों के आगे विभक्ति चिह्न भी आते हैं जैसे-अब से, यहां से, वहां से आदि। नियम के अनुसार अव्यय सदा पृथक लिखे जाने चाहिए। जैसे आप ही के लिए, मुझ तक को, आपके साथ आदि। सम्मानार्थक 'श्री' और 'जी' अव्यय भी पृथक लिखें जाएं, जैसे श्री श्रीराम, कन्हैया लाल जी 'महात्म जी' आदि।

समस्त पदों में प्रति, मात्र, यथा आदि अव्यय पृथक नहीं लिखे जाएंगे, जैसे प्रतिदिन, प्रतिशत, मानवमात्र, यथासमय आदि। यह सर्वविदित है कि समास होने पर समस्त पद एक माना जाता है इसलिए इसे इकट्ठा लिखना चाहिए।

• **श्रुतिमूलक 'य' 'व'**

(क) जहां श्रुतिमूलक 'य, व' का प्रयोग विकल्प से होता है, वहां न किया जाए अर्थात् किए-किये, नई-नयी, हुआ-हुवा आदि में से पहले (स्वरात्मक) 'ए/ई' रूपों का प्रयोग किया जाए। यह नियम क्रिया, विशेषण, अव्यय आदि सभी रूपों और स्थितियों में लागू माना जाए। जैसे दिखाए गए, राम के लिए, पुस्तक लिए हुए, नई दिल्ली आदि।

(ख) जहां 'य' श्रुतिमूलक व्याकरणिक परिवर्तन न होकर शब्द का ही मूल तत्व हो वहां वैकल्पिक, श्रुतिमूलक स्वरात्मक परिवर्तन की आवश्यकता नहीं है, जैसे स्थायी, अव्ययी भाव, दायित्व आदि। यहां स्थाई, अव्यई भाव, दाइत्व न लिखा जाए।

• **अनुस्वार तथा अनुनासिकता-चिह्न (चंद्रबिंदु) :**

अनुस्वार (ं) और अनुनासिकता (ँ) दोनों प्रचलित रहेंगे।

संयुक्त व्यंजन के रूप में जहां पंचमाक्षर के बाद 'स' वर्गीय शेष चार वर्णो में से कोई वर्ण हो तो एकरूपता और मुद्रण-लेखन की सुविधा के लिए अनुस्वार का ही प्रयोग करना चाहिए, जैसे-गंगा-चंचल, ठंडा, संध्या, संपादक आदि में पंचमाक्षर आता है उसके स्थान पर अनुस्वार का ही प्रयोग होगा।

यदि पंचमाक्षर के बाद किसी अन्य वर्ग का कोई वर्ण आए अथवा वहीं पंचमाक्षर दुबारा आए तो पंचमाक्षर, अनुस्वार के रूप में परिवर्तित होता है, यथा बाङमय, अन्य, सम्मेलन, सम्मति आदि। वांमय, अंय, संमेलन, संमति आदि लिखना गलत हैं।

• चंद्रबिंदु :

चंद्रबिंदु के बिना अर्थ में भ्रम रहता है। जैसे-हंस-हँस, अंगना-अँगना आदि। अतएव ऐसे भ्रम को दूर करने के लिए चंद्र बिंदु का प्रयोग अवश्य किया जाए। किंतु जहां (विशेषकर शिरोरेखा के ऊपर जुड़ने वाली मात्रा के साथ) चंद्रबिंदु के प्रयोग से छपाई आदि में बहुत कठिनाई हो और चंद्रबिंदु के स्थान पर बिंदु (अनुस्वार चिह्न) का प्रयोग किसी प्रकार का भ्रम उत्पन्न न करे वहां चंद्रबिंदु के स्थान पर बिंदु के प्रयोग की छूट दी जा सकती है, जैसे-नहीं, में, मैं। कविता आदि के प्रसंग में छंद की दृष्टि से चंद्र बिंदु का यथास्थान प्रयोग किया जाए। इसी प्रकार छोटे बच्चों की प्रवेशिकाओं में जहां चंद्रबिंदु का उच्चारण सिखाना अभीष्ट हो, वहां उसका यथास्थान सर्वत्र प्रयोग किया जाए, जैसे कहाँ, हँसना, आँगन, सँवारना, नहीं आदि।

• विदेशी ध्वनियां

(क) अरबी, फारसी या अंग्रेजी मूल के वे शब्द जो हिंदी के अंग बन चुके हैं और जिनकी विदेशी ध्वनियों का हिंदी ध्वनियों में रूपांतर हो चुका है उन्हें हिंदी रूप में ही स्वीकार किया जा सकता है। जैसे कलम, किला, दाग आदि। (कलम, किला, दाग) नहीं पर जहां उनका शुद्ध विदेशी रूप में प्रयोग अभीष्ट हो अथवा उच्चारणगत भेद बताना आवश्यक हो वहां उनके हिंदी में प्रचलित रूपों में यथास्थान नुक़्ते लगाए जाएं जैसे खाना: खाना, राज: राज, फन: फन आदि।

मुख्य रूप से अरबी-फारसी की पांच ध्वनियां (क, ख, ग़, ज़ और फ) हिंदी में आई हैं जिनमें से दो (क और ग) तो हिंदी उच्चारण (क और ग) में परिवर्तित हो गई हैं, एक (ख) लगभग हिंदी 'ख' में खपने की प्रक्रिया में है। शेष दो (ज़ और फ़) धीरे-धीरे अपना अस्तित्व बनाए रखने के लिए संघर्षरत है।

अंग्रेजी के जिन शब्दों में अर्धविवृत 'ओ' ध्वनि का प्रयोग होता है, उनके शुद्ध रूप का हिंदी में प्रयोग अभीष्ट होने पर 'आ' की मात्र (ा) के ऊपर अर्धचंद्र का प्रयोग किया जाए। (ऑ ॉ) जहां तक अंग्रेजी तथा अन्य विदेशी भाषाओं में नए शब्द ग्रहण करने और उनके देवनागरी लिप्यंतरण का संबंध है अगस्त-सितंबर, 1962 में वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली पर आयोजित भाषाविदों की संगोष्ठी में अंतर्राष्ट्रीय शब्दावली के देवनागरी लिप्यंतरण के संबंध में की गई सिफारिश उल्लेखनीय है उसमें कहा गया है कि अंग्रेजी शब्दों का हिंदी लिप्यंतरण इतना कठिन नहीं होना चाहिए कि इसके लिए वर्तमान देवनागरी वर्णों के अनेक नए संकेत-चिह्न लगाने पड़े। अंग्रेजी शब्दों का देवनागरी लिप्यंतरण मानक अंग्रेजी उच्चारण के अधिक से अधिक निकट होना चाहिए। उसमें भारतीय शिक्षित समाज में प्रचलित उच्चारण संबंधी थोड़े बहुत परिवर्तन किए जा सकते हैं। अन्य भाषाओं के शब्दों के संबंध में यही नियम लागू होना चाहिए।

• हिंदी शब्द/ध्वनि का मानकीकरण :

हिंदी में कुछ शब्द दो-दो रूपों में स्वीकृत हैं। अभी इनकी एकरूपता आवश्यक नहीं समझी गई जैसे गर्दन, गरदन, गरमी-गर्मी, बिलकुल-बिल्कुल, कुरसी-कुर्सी, दोबारा-दुबारा, दूकान-दुकान, बीमारी-बिमारी आदि।

• हल चिह्न :

संस्कृतमूलक शब्दों में जहां हल् चिह्न प्रचलित है कहां लगाया जाए परंतु जहां समाप्त हो चुका है, वहां लगाने का प्रयास न किया जाए जैसे महान, विद्वान के 'न' में।

• स्वन परिवर्तन :

संस्कृतमूलक तत्सम शब्दों की वर्तनी को ज्यों का त्यों ग्रहण किया जाए। अतः ब्रह्मा को ब्रम्हा, चिह्न को चिन्ह, उऋण को उरिण में बदलना उचित नहीं है। इसी प्रकार ग्रहीत, दृष्टव्य, प्रदर्शिनी आदि अशुद्ध प्रयोग है। इनकी जगह गृहीत, द्रष्टव्य, प्रदर्शनी ही लिखना चाहिए जिस तत्सम शब्द में तीन व्यंजनों का संयोग हो उसमें एक द्वित्वमूलक व्यंजन लुप्त हो जाता है, जैसे अर्द्ध, (अर्ध) उज्जवल (उज्वल) तत्तव (तत्व) दोनों तरह लिखे जा सकते हैं।

• विसर्ग :

संस्कृत के जिन शब्दों में विसर्ग का प्रयोग किया जाता है वे यदि तत्सम रूप में प्रयुक्त हों तो विसर्ग का प्रयोग अवश्य किया जाए, जैसे दुख-सुख के साथी।

'ए', 'और' का प्रयोग : हिंदी में ऐ (ै) औ (ौ) का प्रयोग दो प्रकार की ध्वनियां 'हे' 'और' 'आदि' में है तथा दूसरे प्रकार की 'गवैया' 'कौवा' आदि में है। इन दोनों ही प्रकार की ध्वनियों को व्यक्त करने के लिए इन्हीं चिह्नों (ऐ, औ, ै ौ) का प्रयोग किया जाना चाहिए। गव्यया, कावा आदि सुधार अनावश्यक है।

• पूर्वकालिक प्रत्यय :

पूर्वकालिक प्रत्यय 'कर' क्रिया से मिलाकर लिखा जाए, मिलाकर, खा चीकर, रो-रोकर आदि।

अन्य नियम

(क) शिरोरेखा का प्रयोग प्रचलित रहेगा।

(ख) स्कूल स्टॉप को छोड़कर शेष विराम चिह्न वही ग्रहण कर लिए गए जो अंग्रेजी में प्रचलित हैं।

• अन्य नियम :

1. शिरोरेखा का प्रयोग प्रचलित रहेगा।
2. फुल स्टॉप के अतिरिक्त, अंग्रेजी के सारे विराम चिह्न प्रयुक्त होंगे, यथा-(- - ; ? ! =)
3. विसर्ग चिह्न ही कोलन का चिह्न माना जाए।
4. पूर्णविराम के लिए खड़ी पाई (।) का प्रयोग किया जाए।

हिंदी के संख्यात्मक शब्दों की एकरूपता :

हिंदी प्रदेश में संख्यात्मक शब्दों के उच्चारण और लेखन में एकरूपता लाने के लिए निदेशालय ने भाषा वैज्ञानिकों की सहायता से 1980 में, इन शब्दों का मानक रूप तय किया जो निम्न प्रकार से है।

एक	दो	तीन	चार	पांच
छह	सात	आठ	नौ	दस
ग्यारह	बारह	तेरह	चौदह	पंद्रह
सोलह	सत्रह	अठारह	उन्नीस	बीस
इक्कीस	बाईस	तेईस	चौबीस	पच्चीस
छब्बीस	सत्ताईस	अट्ठाईस	उनतीस	तीस
इकतीस	बत्तीस	तैंतीस	चौंतीस	पैंतीस
छत्तीस	सैंतीस	अड़तीस	उन्तालीस	चालीस
इकतालीस	बयालीस	तैंतालीस	चवालीस	पैंतालीस
छियालीस	सैंतालीस	अड़तालीस	उनचास	पचास
इक्यावन	बावन	तिरपन	चौवन	पचपन
छप्पन	सतावन	अठावन	उनसठ	साठ

इकसठ	बासठ	तिरसठ	चौंसठ	पैंसठ
छियासठ	सड़सठ	अड़ठस	उनहत्तर	सत्तर
इकहत्तर	बहत्तर	तेहत्तर	चौहत्तर	पचहत्तर
छिहत्तर	सत्तहत्तर	अठहत्तर	उनासी	अस्सी
इक्यासी	बयासी	तिरासी	चौरासी	पचासी
छियासी	सतासी	अठासी	नवासी	नब्बे
इक्यानवे	बानवे	तिरानवे	चौरानवे	पचानवे
छियानवे	सतानवे	अठानवे	निन्यान्वे	सौ

परिवर्तित देवनागरी : केंद्रीय हिंदी निदेशालय का एक प्रमुख कार्य देवनागरी को भारतीय भाषाओं के लिप्यतंरण का सशक्त माध्यम बनाना भी रहा है। इसके लिए यह आवश्यक था कि देवनागरी में अन्य भाषाओं की ध्वनियों से सूचक/प्रतीक विकसित किए जाएं। अतः निदेशालय ने विशेषज्ञों के साथ विचार विमर्श के बाद, 1966 में परिवर्धित देवनागरी नामक एक पुस्तिका प्रकाशित की, जिसमें दक्षिण भारत की भाषाओं तथा कश्मीरी के विशिष्ट स्वरों और व्यंजनों के अतिरिक्त सिंधी और उर्दू की विशिष्ट ध्वनियों के लिप्यतंरण के लिए देवनागरी में अपेक्षित परिवर्धन किया गया। सिंधी को छोड़कर शेष सभी भारतीय भाषाओं में संविधान के एक अंश का लिप्यतंरण इस परिवर्धित देवनागरी में किया गया था। परिवर्धित देवनागरी की कमियों पर बाद में भी विचार चलता रहा और इनके निराकरण के लिए प्रयास किया गया। विद्वानों से इस विषय में सलाह दी गई। प्राप्त सुझावों के अनुरूप एक तुलनात्मक सारणी बनाई गई जिसमें संविधान की अष्टम सूची में सम्मिलित सभी भाषाओं को समाविष्ट किया गया। यह सारणी निदेशालय की विभिन्न बहुभाषी कोष-योजनाओं में काफी सहायक सिद्ध हुई। कालांतर में इस सारणी में भी संशोधन होते रहे।

- **फॉरमेट मानकीकरण : पैराग्राफ आदि के विभाजन सूचक वर्गों तथा अंकों का प्रयोग :**

देखने में आया है कि अंग्रेजी से हिंदी अनुवादों में तथा अन्य प्रशासनिक साहित्य में विषय के विभाजन, उपविभाजन तथा पैराओं-उपपैराओं का क्रमांकन करते हुए अंग्रेजी के A,B,C,D, के लिए क,ख,ग,घ का ही प्रयोग किया जाएगा। जहां रोमन वर्ण कोष्ठक में हों वहां देवनागरी वर्गों को भी कोष्ठक में रखा जाएगा।

विषय के विभाजन, उपविभाजन, पैराओं, उप पैराओं के लिए अंतर्राष्ट्रीय अंकों अर्थात 1,2,3,4 के प्रयोग के साथ-साथ आवश्यकता के अनुसार रोमन i, ii, iii, iv का भी प्रयोग किया जा सकता है। अनुवाद पूरा होने के पश्चात पुनरीक्षण, मूल्यांकन और समीक्षा के कार्य किए जाते हैं। पुनरीक्षण में कथ्य और शिल्प दोनों में सुधार किया जाता है। शिल्प में भाषा का मानक रूप प्रयुक्त करने पर संपादन में बल दिया जाता है। हिंदी ध्वनियों, पदों, वाक्यों, वर्तनी, संख्यावाचक शब्दों का मानक रूप ही व्यवहार में आए इसकी चिंता की जाती है। अनुवाद में 'फार्मेट' का मानक रूप ही प्रयुक्त हुआ है, यह भी देखा जाता है।

स्वयं आकलन प्रश्न

प्रश्न-1 'संपादन' शब्द किस भाषा का शब्द है ?

प्रश्न-2 'संपादन' का मूल अर्थ क्या है ?

प्रश्न-3 'संपादक' शब्द किन शब्दों से मिलकर बना है ?

प्रश्न-4 अनावश्यक शब्दों की कांट-छांट का वर्ण किसका होता है ?

12.4 सारांश

अनुवाद संपादन पुनरीक्षण का ही एक चरण है। अनूदित पाठ के गुण-दोषों का विवेचन करते हुए उसे सुधारने की जो प्रक्रिया की जाती है। अंत में अनुवाद संपादन का यह कर्तव्य होता है कि वह वर्तनी की एकरूपता पर ध्यान दे और वह ईमानदारी के साथ अनुदित पाठ का संपादन कार्य करें।

12.5 कठिन शब्दावली

पुलकित - खुश होना

कृतज्ञ - आभारी

विषम - विपरीत

सम्मुख - पास

अविनाशी - जिसका विनाश न हो

12.6 स्वयं आकलन हेतु प्रश्नों के उत्तर

उ.1 संस्कृत भाषा।

उ.2 सम्यक् रूप से स्थान देना।

उ.3 सम्+पद्+विच्+व्युत्+अन।

उ.4 संपादक।

12.7 संदर्भित पुस्तकें

1) डॉ. दिनेश चमोला 'शैलेश', अनुवाद और अनुप्रयोग, आदिश प्रकाशन, देहरादून।

2) डॉ. एन. ई, विश्वनाथ अययर, अनुवाद कला, प्रभात प्रकाशन दिल्ली।

3) सुरेश कुमार, अनुवाद सिद्धांत की रूपरेखा वाणी प्रकाशन, दिल्ली।

12.8 सात्रिक प्रश्न

प्रश्न.1 अनुवाद में संपादन प्रविधि क्या होती है ? विस्तारपूर्वक वर्णन करें।

प्रश्न.2 अनुवाद में संपादन का क्या महत्त्व है ? वर्णन कीजिए।

प्रश्न.3 अनुवाद में संपादन की उपयोगिता सिद्ध कीजिए।

*****

इकाई पाठ -13
अनुवादक की अर्हता और सफल अनुवाद के अभिलक्षण

संरचना

13.1 भूमिका

13.2 उद्देश्य

13.3 अनुवादक की अर्हता और सफल अनुवाद के अभिलक्षण

- अनुवादक की अर्हता
- सफल अनुवाद की परिकल्पना

स्वयं आकलन प्रश्न

13.4 सारांश

13.5 कठिन शब्दावली

13.6 स्वयं आकलन प्रश्नों के उत्तर

13.7 संदर्भित पुस्तकें

13.8 सात्रिक प्रश्न

13.1 भूमिका

इकाई बारह में हमने अनुवाद की सम्पादन प्रविधि, अनुवाद की सम्पादन प्रविधि की विधि, मानक हिंदी वर्णमाला तथा हिंदी वर्तनी के मानकीकरण का गहन अध्ययन किया। इकाई तेरह से हम अनुवादक की अर्हता और सफल अनुवाद के अभिलक्षण का विस्तारपूर्वक अध्ययन करेंगे।

13.2 उद्देश्य

इकाई तेरह का अध्ययन करने के पश्चात हम यह जानने में सक्षम होंगे कि

1. अनुवादक की अर्हता से आप क्या समझते हैं ?

2 सफल अनुवाद के अभिलक्षण क्या हैं ?

3. सफल अनुवाद की परिकल्पना से आप क्या समझते हैं ?

13.3 अनुवादक की अर्हता और सफल अनुवादक के अभिलक्षण

अनुवाद एक प्रयोगिक प्रक्रिया है जिसका परिणाम तुरंत सामने आता है। अनुवादक का कार्य मूल लेखक से भी कठिन है क्योंकि लेखक को अपनी भाषा में, अपने विचार व्यक्त करने होते है। परंतु अनुवादक को लक्ष्य भाषा में, किसी अन्य के विचारों का भाषान्तरण करना होता है। यह कार्य परकाया प्रवेश के समान कठिन है। उसके लिए आवश्यक है कि वह मूल और लक्ष्य भाषा पर समान रूप से अधिकार रखता हो, मूल कृति के भाव और अर्थ को आत्मसात करने में समर्थ हो और उसे उपयुक्त शब्दावली और शैली में लक्ष्य भाषा में व्यक्त कर सके।

आदर्श अनुवादक जिस आदर्श अनुवाद को प्रस्तुत करता है अथवा जिसकी अपेक्षा उससे की जाती है उसकी विशेषताओं को जानना भी आवश्यक है।

• अनुवादक की अर्हता

प्राय: यह माना जाता है कि अनुवादक का कार्य मौलिक लेखक की अपेक्षा दूसरे दर्जे का है परंतु यह भ्रम है। अनुवादक का कार्य भी सर्जनात्मक प्रतिभा और विद्वता की मांग करता है और अनेक बार मूल लेखक से अधिक श्रम और प्रतिभा की मांग करता है। मूल लेखक को अपनी भाषा में विशेषज्ञता, पूर्ण अधिकार हो तो वह अच्छा लिख सकता है। अनुवादक के लिए यह जरूरी है कि वह स्रोत भाषा का अच्छा ज्ञाता हो ताकि मूल रचना के मर्म को समझ सके

और लक्ष्य भाषा का भी विद्वान हो ताकि मूल कथ्य को उसमें पुन: सृजित कर सके। मूल लेखक को अपने ही मनोभाव है। अपनी कृति में प्रस्तुत करने होते है। अनुवादक को मूल लेखक भावों और विचारों को आत्मसात कर उसे लक्ष्य भाषा में प्रस्तुत करना होता है उसे मूल रचना और उसके लेखक का आत्मीकरण करना पड़ता है। यह एक प्रकार से परकाया प्रवेश जैसा कठिन कार्य है। पुन: उस विचार और भाव के अनुरूप शैली का अनुकरण करते हुए लक्ष्य भाषा में प्रस्तुत करना कठिन सर्जनात्मक कार्य है। अत: अनुवादक मूल लेखक की अपेक्षा कहीं कठिन काम करता है। अच्छे अनुवाद के पश्चात् अनुवादक को भी नवसृजन का आनंद आता है। नगीन चंद सहगल लिखते हैं ''अनुवादक का लक्ष्य मूल रचनाकार की भावन राशि को अन्य भाषा-शैली के परिधान में प्रस्तुत कर मूल कृति तथा कृतिकार को अन्य भाषा-भाषियों के हृदयासन पर प्रतिष्ठित करना होता है।'' अनुवाद साहित्यिक विषय का हो या साहित्येतर विषयों का गद्य में हो या पद्य में, सभी तरह का अनुवाद अनुवादक की कठोर परीक्षा लेता है और पुर्नसृजन का आनंद देता है। अच्छे अनुवादक में निम्नलिखित गुण और अर्हताएं (योग्यताएं) होनी चाहिए।

- **अनुवादक अनुवाद का लक्ष्य तय करें :**

अनुवादक किसी रचना के अनुवाद की ओर प्रवृत्त क्यों हुआ, उसे यह स्पष्ट होना चाहिए। अनुवादक किसी श्रेष्ठ रचना से प्रभावित होकर भी उसके अनुवाद की ओर प्रवृत्त हो सकता है और कार्यालयी दायित्व का निर्वाह करने हेतु भी अनुवाद कर सकता है। अनुवादक के समक्ष अपने कार्य के औचित्य और उपयोगिता का आधार स्पष्ट होना चाहिए। मूल रचनाकार तो रचनात्मक प्रेरणा के दबाव में साहित्य रचना करता है परंतु अनुवादक उस रचना को पढ़कर प्रभावित होकर उसके अनुवादन की ओर प्रवृत्त हो सकता है। अनुवाद कार्य भी मौलिक सृजन जैसा आनंद देता है और वैसी ही विद्वता और प्रतिभा की मांग करता है यही कारण है कि बड़े-बड़े साहित्यकार अनुवाद कार्य की ओर प्रवृत्त हुए हैं आचार्य रामचंद्र शुक्ल, महावीर प्रसाद द्विवेदी, हरिवंश राय बच्चन, मैथिलीशरण गुप्त, रवींद्रनाथ ठाकुर, फिरजराल्ट जैसे साहित्यकार, विभिन्न कृतियों का अनुवाद करने के लिए आगे आए। अच्छी रचना पढ़कर अनुवादक की संवेदना और सृजनात्मकता उसी प्रकार जागृत हो उठती है जैसे कि अपनी रचना पढ़ते समय। अनुवादक रचना का पहला सजग पाठक होता है। ऐसा भी संभव है कि अनुवादक किसी रचना के अनुवाद के लिए इसलिए प्रवृत्त हों कि वे उस रचना की विचारधारा से प्रभावित हैं और इसे अपने समाज में प्रचलित करना चाहते हैं। मूल कृति में सामाजिक-राजनीतिक अथवा धार्मिक प्रतिबंध अथवा दोषारोपण का होना भी अनुवादक को रचना के अनुवाद के लिए प्रेरित कर सकता है। तसलीमा नसरीन की रचना 'लज्जा' और सलमान रशदी की रचना 'सैतानिक वर्सिस' का अनुवाद इसी उद्देश्य से हुआ। अनुवादक किसी रचना का अनुवाद इसलिए भी कर सकता है यदि उसे लगे कि उस रचना को पढ़कर उसके समाज में नई जागृति आएगी। अनुवादक वस्तुनिष्ठ ढंग से अपनी विचारधारा के विपरीत विचारधारा वाली रचना का अनुवाद भी करता है। अनुवादक किसी रचना के प्रति आदर भाव के कारण भी उसके अनुवाद की ओर प्रवृत्त हो सकता है। यह ठीक है कि आदर भाव से अनुवाद किया जाए परंतु अच्छा अनुवाद तो भाषा कौशल और संवेदनशीलता की मांग करता ही है।

- **अनुवादक की सृजनशील प्रतिभा :**

अनुवाद कार्य कोई मशीनी कार्य नहीं है जिसे यांत्रिक ढंग से संपन्न किया जा सके। अनुवादक में सृजनात्मक प्रतिभा होनी चाहिए। उसे मूल रचना का स्रोत भाषा का अच्छा ज्ञान होना चाहिए। यदि अनुवादक में सृजन प्रतिभा नहीं होगी तो वह रचना का नीरस, शब्दानुवाद ही प्रस्तुत कर सकेगा। वह मूल रचना के साहित्यिक सौंदर्य को भी समझने में असमर्थ रहेगा। अनुवादक से आशा की जाती है कि वह मूल के प्रति वफ़ादार रहे परंतु साथ ही उसे मूल रचना के अनुभव और अनुभूतियों को समेट कर लक्ष्य भाषा में उतारना पड़ताहै। शब्दकोश एक सीमा तक ही अनुवादक की सहायता कर सकते हैं। सही शब्द का चुनाव, अनुवादक की रचनात्मक प्रतिभा पर ही निर्भर करता है। कम्प्यूटर में 'टर्मिनोलोजी डाटा बैंक' शब्द चुनाव में सहायक होते हैं।

• अनुवादक स्रोत और लक्ष्य भाषा का अधिकारी विद्वान हो

अनुवादक से यह अपेक्षा की जाती है कि वह स्रोत भाषा और लक्ष्य भाषा का अधिकारी विद्‌वान हो। प्राय: अनुवादक को अपनी मातृभाषा में ही अनुवाद करना चाहिए। स्रोत भाषा का व्यवहारिक ज्ञान भी पर्याप्त हो सकता है। अंग्रेजों ने भारतीय भाषाओं से अनेक ग्रंथों का अनुवाद अंग्रेजी में किया क्योंकि वह उसकी मातृभाषा थी। 'कुरान' के असंख्य अनुवाद हुए परंतु अंग्रेजी अनुवाद ही सर्वाधिक लोकप्रिय हुए। खुशवंत सिंह का मानना है कि ''दोनों भाषाओं पर समानाधिकार वाला व्यक्ति मिल सकना बड़ी ही दुर्लभ बात है जिस भाषा में अनुवाद किया जाना है उसका विशेष ज्ञान रखने वाले व्यक्ति को लक्ष्य भाषा का विशेष ज्ञान रखने वाले व्यक्ति की तुलना में ज्यादा महत्व दिया जाना चाहिए। भारत में हम प्राय: इसके विपरीत चलने लगते हैं और इसका परिणाम बुरा होता है।''

• मूल कृति के विषय का ज्ञान :

अनुवादक जिस कृति का अनुवाद करने की तैयारी करता है उसकी विषय वस्तु से भली भांति परिचित होने पर उसका अच्छा अनुवाद कर पाएगा। यह संभव नहीं कि एक अनुवादक सभी विषयों का अधिकारी विद्‌वान भी हो। जिस क्षेत्र में वह अनुवाद कार्य कर रहा है उसका अच्छा ज्ञान उसे श्रेष्ठ अनुवादक बनाने में सहायक होगा। साहित्यिक कृति का अनुवाद करने वाला व्यक्ति यदि साहित्य प्रेमी, साहित्य का मर्मज्ञ भी होगा तो वह श्रेष्ठ अनुवाद कर पाएगा। महान साहित्यकारों ने ही श्रेष्ठ साहित्यिक अनुवाद प्रस्तुत किए हैं। इसी प्रकार विज्ञान, वित्त, वाणिज्य, विधि आदि के क्षेत्रों में अनुवाद करने वालों को इन विषयों की अच्छी जानकारी होनी चाहिए। क्षेत्र विशेष में प्रयुक्त परिभाषिक शब्दावली का ज्ञान भी होना चाहिए।

• मूल कृति की संस्कृति का ज्ञान :

अनुवादक जब किसी कृति का अनुवाद करता है तो वह केवल भाषांतरण ही नहीं करता, कृति में प्रस्तुत सामाजिक-सांस्कृतिक परिवेश का भी अंतरण करता है जिन लोगों की भाषा में मूल कृति लिखी गई है उनके रहन-सहन, रीति-रिवाजों, सामाजिक- धार्मिक एवं ऐतिहासिक मान्यताओं सेपरिचित होना अनुवादक के लिए आवश्यक है। ये सारे तत्व, भाषा के ताने-बाने में बुने रहते हैं और इनसे ही भाषा के मुख्य मुहावरे बनते हैं। अनुवादक संस्कृतियों के बीच सांस्कृतिक सेतु का काम करता है।

• मूल कृति से अनुवादक का तादात्म्य :

मूल कृति के लेखक से तादात्म्य स्थापित करके ही अनुवादक लेखक के मनोभावों को समझने में समर्थ हो सकता है। रचनाकारों के मनोभावों को समझकर ही उनके समाज के वास्तविक और काल्पनिक परिवेश को समझने की योग्यता, अनुवादक प्राप्त करता है। लेखक के तात्कालिक परिवेश को पूर्णत: आत्मसात करके ही अनुवादक उस मनोभूमि का पुन: सृजन अनुवाद में कर सकता है जो मूल लेखक की थी। अनुवादक को उस रहस्यमय बाज की खोज करनी पड़ेगी जब लेखक की तरल अनुभूति घनीभूत होकर साकार हुई। इसे पूर्ण कर्मठता के साथ लेखन की लीक पर चलना होगा।

• अनुवाद की भाषा में एकरूपता :

अनुवादक के लिए अनुवाद की भाषा का प्रश्न महत्वपूर्ण है। अनुवाद की भाषा-शैली कैसी हो, संस्कृत निष्ठ हो या आम बोलचाल की हो, प्रादेशिक, आंचलिक शब्दों का अनुवाद किस तरह प्रस्तुत किया जाए, इन प्रश्नों पर उसे विचार करना पड़ता है। अनुवाद की भाषा में एकरूपता रहे और अनुवाद की भाषा अस्पष्ट, क्लिष्ट अथवा दुर्बोध न हो यह भी आवश्यक है। कुछ अनुवादक खिचड़ी भाषा का प्रयोग करते हैं और भाषा की एकरूपता बनाए रखने में असमर्थ रहते हैं। पाठक को ऐसा अनुवाद अटपटा लगता है।

• जनसाधारण की भाषा का प्रयोग :

अनुवादक के लिए यह आवश्यक है कि अनुदित कृति पठनीय और संप्रेषीणय हो। इसके लिए उसे यथासंभव साधारण बोलचाल की भाषा का प्रयोग करना चाहिए। जहां तक हो सके वह किताबी न हो, अस्वभाविक न हो, नीरस

न हो। सृजनात्मक साहित्य के अनुवाद में तो यह बात और भी आवश्यक है। मौलिक लेखन, किताबी भाषा में नहीं रहता। अरस्तु ने ठीक ही कहा है ''बुद्धिमानों की तरह सोचें और जन साधारण की भाषा में बोलें।'' सृजनात्मक-साहित्य और नाटक जैसी विधाओं के लिए बोलचाल की भाषा आवश्यक है। बोलचाल की भाषा मुहावरेदार, सरल और अर्थगर्भित होती है। किताबी और बोलचाल की सरल भाषा का अंतर निम्न अनुवादों में देखिए

(1) What the hell I have to do with the police

किताबी अनुवाद : यह कैसा नरक है, मुझे पुलिस से क्या काम।

बोलचाल अनुवाद : खुदा के लिए बताओ मुझे पुलिस से क्या लेना-देना है।

2. You have letrayed me like anything

किताबी : आपने जमकर मुझे धोखा दिया।

बोलचाल : तुमने मेरी मुहब्बत का खूब सिला दिया है।

• मूल लेखक की शैली की समझ और अनुवाद :

अनुवादक के लिए यह आवश्यक है कि वह सरल, सहज और स्पष्ट भाषा में अनुवाद करे। मूल लेखक की भाषा के संदर्भ में एक समस्या यह रहती है कि अनुवादक मूल लेखक की शैली के प्रति कौन सा दृष्टिकोण अपनाए ? क्या मूल लेखक की शैली को अनुवाद में सुरक्षित रखा जा सकता है ? यदि शैली से अभिप्राय विशिष्ट शब्द चयन से है तो यह संभव है कि। टाल्स्टॉय के लंबे, गूढ़ अर्थों से भरे, अस्पष्ट एवं क्लिष्ट वाक्य विधान का अनुवाद कठिन कार्य है। क्या उसके अनुसार अनुवादक को करना चाहिए ? वास्तव में अनुवादक को हर हाल में स्पष्ट, सरल एवं सहज भाषा का ही प्रयोग करना चाहिए। शैली का लक्ष्य संप्रेषणीयता होना चाहिए।

• अनुवादक की व्यक्ति शैली :

जिस प्रकार मूल लेखक की एक शैली रहती है वैसे ही अनुवादक की भी एक शैली रहती है। हर अनुवादक को कुछ शब्दों और वाक्यों से विशेष लगाव रहता है जिनका वह बार-बार प्रयोग करता है। 'भीष्म साहनी' के अनुसार ''अनुवादक से ऐसी स्थिति में अनुशासन रखने और शब्दों के चयन में मूल की ओर अधिक ध्यान देने के लिए कहा जा सकता है। जहां तक हो सके अनुवाद पर अनुवादक के चहेते शब्दों, वाक्यांशों और मुहावरों को लादा न जाए, कोई मनमानी न की जाए।''

• अनुवाद सहज संप्रेषणीय बने :

अच्छे अनुवाद की पहचान यही है कि उसका किया अनुवाद सहज-संप्रेषणीय होता है और पढ़ते समय मूल रचना का सा आनंद देता है। बोधगम्यता, सहजता, स्पष्टता, प्रवाहमयता तथा संप्रेषणीयता आदि गुणों का सीधा संबंध अनुवादक की शैली और उसके ज्ञान और प्रतिभा से रहता है। अनुवाद, मूलनिष्ठ रहे, यह आवश्यक है। लक्ष्य भाषा में मूल के लिए उपयुक्त शब्दावली, उचित पर्याय खोजना अनुवादक की प्रतिभा पर निर्भर करता है। पाश्चात्य अनुवादक 'नीड़ा' का इस विषय में कथन है कि ''कोई अनुवादक भ्रांतिमूलक होने के साथ-साथ शैली के स्तर पर इतना बोझिल और अस्पष्ट हो जाता है। अत: संरचनात्मक विशेषताओं के लिए अनुकूल मूल पाठ को संप्रेषित करने के लिए कोई भी या कितने भी परिवर्तन करने पड़े, वे सफल अनुवाद के लिए आवश्यक हैं।'' नीड़ा के इस कथन का अर्थ यही है कि अच्छे अनुवाद की विशेषता यही है कि उसको पढ़ते समय, मूल पाठ की ओर ध्यान ही न जाए।

• अनुवादक की मूलनिष्ठा एवं स्वतंत्रता :

अनुवादक में पूर्ण मूलनिष्ठा, 'विलियम कूपर' के अनुसार 'बेईमानी' में बदल जाती है और अत्यधिक स्वतंत्रता भी 'अभिशाप' बन जाती है। कभी-कभी अनुवादक अपने सृजनात्मक उत्साह के कारण मूलकृति के कथ्य और शिल्प में इतना परिवर्तन कर देता है कि अनुदित कृति मूल से भिन्न कृति बन जाती है। वह मूल से श्रेष्ठ या निकृष्ट हो सकती है। ऐसे अनुवाद को अच्छा अनुवाद नहीं कहा जा सका। 'फिटज़राल्ड' ने 'उमर खैयाम' की नीरस रूबाइयों को नया

अर्थ-गौरव दिया। कार्यायली और विज्ञान तथा तकनीक संबंधी विषयों के अनुवाद में मूलनिष्ठा अधिक उपयोगी होती है जबकि साहित्यिक कृतियों में अनुवादक अपेक्षाकृत अधिक स्वतंत्रता ले सकता है। सफल अनुवाद में मूलनिष्ठा और स्वतंत्रता का समन्वय अपेक्षित है। 'के.के एवुल्लर' के अनुसार ''अनुवाद में समस्या मूलनिष्ठता की मात्रा की नहीं है, अपितु अनुवादक की उस छूट की है जो मूल लेखक से तादात्म्य स्थापित करते हुए उसके अनुभवों एवं अनुभूतियों को लक्ष्यभाषा में उतारने के लिए जरूरी होती है। ''हरिवंश राय बच्चन'' का भी मत है कि ''सफल अनुवादक भी वही होता है जो अपनी दृष्टि भावों पर रखता है। शाब्दिक अनुवाद न शुद्ध होता है, न सुंदर। भाव जब एक भाषा-माध्यम को छोड़कर दूसरे भाषा माध्यम से मूर्त होना चाहेगा तो उसे अपने अनुरूप उद्बोधक और अभिव्यंजक शब्द राशि संजोने की स्वतंत्रता देनी होगी। यहीं पर अनुवाद मौलिक सृजन हो जाता है या मौलिक सृजन की कोटि में आ जाता है।

• आशु अनुवादक के गुण :

अनुवाद कला में आशु अनुवाद का महत्वपूर्ण स्थान है। आशु अनुवाद में तत्काल अनुवाद करना पड़ता है। आशु अनुवादक में निम्नलिखित गुणों का होना अपेक्षित है-उसका व्यक्तित्व आकर्षक हो, उच्चारण शुद्ध हो। वह शिष्टाचार को समझने वाला और विनम्र हो। श्रोताओं और वक्ता की भाषा का अच्छा ज्ञाता हो। प्रत्युत्पन्न हो। उसकी स्मरण शक्ति अच्छी हो। सुनने, समझने में ध्यान केंद्रित करने में सक्षम तथा सार ग्राही हो। विशेषज्ञ के साथ बहुज्ञता का गुण भी उसमें हो।

निश्चय ही अनुवाद कार्य एवं गंभीर दायित्वपूर्ण कार्य है। अनुवादक की मूल लेखक और पाठक वर्ग के प्रति दुहरी निष्ठा अपेक्षित है। विश्व एकता में सहायक अनुवाद कार्य सांस्कृतिक आदान-प्रदान का प्रमुख आधार है। अनुवादक अपनी सूझ-बूझ, ज्ञान-सर्जन क्षमता, आदि गुणों के माध्यम से अनुवाद कार्य करता है।

अनुवादक को व्यक्तिगत गुणों और अर्हता पर विचार करते समय यह स्पष्ट हो जाता है कि अनुवादक का कार्य सर्जनात्मक लेखक से किसी प्रकार भी दोयम दर्जे का नहीं है। वह विभिन्न भाषाओं, समाजों और संस्कृतियों के बीच पुल का काम करता है और विश्व भाषाओं में रचे साहित्य को लक्ष्य भाषा में उपलब्ध करवाता है। किसी समाज विशेष अथवा भाषा विशेष के जानकारों का ज्ञान-भंडार पर एकाधिपत्य समाप्त कर उसे सर्वसुलभ बनाता है उसे जो कार्य करना होता है उसके लिए बहुआयामी प्रतिभा अपेक्षित है। वह बहुभाषा विद्, बहु विषय ज्ञाता, विचारवान लेखक, प्रतिभाशाली, संवेदनशील पाठक और लेखक एक साथ होना चाहिए। उसमें व्यावसायिक स्वाभिमान, अपने कार्य में आस्था और पाठक के प्रति प्रतिबद्धता होनी चाहिए। वह अपनी अनुदित रचनाओं के माध्यम से पाठकों को सांझी संस्कृति का मंच प्रदान करता है। इसलिए इसका महत्व मूल लेखक से किसी प्रकार भी कम नहीं है। आज का युग वैश्वीकरण, भूमंडलीकरण, साईबर कैफे का युग है। विश्व संस्कृतियों में आदान-प्रदान तीव्र हुआ है। ऐसे समय में अनुवादकों की मांग और उनकी भूमिका अत्यधिक महत्वपूर्ण हो गई है। व्यापार जगत में तैयार माल के विक्रय के लिए, विज्ञापनों में अनुवाद चाहिए। ज्ञान-विज्ञान का अध्ययन करने के लिए एक देश से दूसरे देश में जाने वाले छात्रों को अनुदित पुस्तकें चाहिए जिज्ञासु पाठकों को विश्व स्तरीय साहित्य का अनुवाद चाहिए। आने वाला युग, अनुवाद और अनुवादकों का है।

• आदर्श अनुवाद की परिकल्पना :

अनुवाद शब्द 'अनु+वाद' से निर्मित है। 'अनु' का अर्थ है 'पीछे' और 'वाद्' का अर्थ है कथन। किसी पूर्वकथन का अनुसरण करके कहे अथवा लिखे गए कथन को 'अनुवाद' कहते हैं। दूसरे शब्दों में किसी भाषा में पहले से ही विद्यमान कथित अथवा लिखित सामग्री को अन्य भाषा में कहना या लिखना अनुवाद है। अंग्रेजी के Translation शब्द 'Trans' का अर्थ है 'आर-पार' या 'एक ओर से दूसरी ओर तथा 'Lation' का अर्थ है 'ले जाना।' इस प्रकार 'अनुवाद' अथवा 'Translation' शब्द का अर्थ है किसी भाषा में कहे गए कथन का किसी दूसरी भाषा में रूपांतरण, भाषान्तरण अथवा पुनकर्थन। क्योंकि प्रत्येक भाषा अपने भौगोलिक, सामाजिक-सांस्कृतिक परिवेश में विकसित होती है। इसलिए एक भाषा के साहित्य को ज्यों का त्यों लक्ष्य भाषा में ढालना संभव नहीं होता। इसलिए मूल या स्रोत भाषा की सामग्री

को लक्ष्य भाषा में समतुल्य भाव और अर्थ से अभिव्यक्त किया जाता है। यथासंभव मूल रचना की शैली को भी बनाए रखने का प्रयास भी किया जाता है।अनुवाद मूलतः दो तरह का होता है साहित्यिक रचनाओं का अनुवाद अथवा वैज्ञानिक विचार प्रधान समाज शास्त्रों, दैनिक व्यवहार में आने वाली प्रयुक्तियों यथा 'वाणिज्य' विधि, बैंक, कानूनी दस्तावेज़ आदि का अनुवाद। शिल्प की दृष्टि से अनुवाद लिखित और मौखिक या आशु अनुवाद की दो श्रेणियों में बांटा जा सकता है।

श्रेष्ठ अनुवाद की विद्वानों ने अनेक विशेषताएं गिनवाई हैं। ए. एफ. टिटलर के अनुसार

(1) अनुवाद में मूल का पूरा कथ्य या भाव आना चाहिए।

(2) अभिव्यक्ति शैली मूल के अनुरूप रहनी चाहिए।

(3) अनुवाद में मौलिक लेखन सा सहज प्रवाह होना चाहिए।

• आदर्श अनुवाद के गुण :

'टिटलर' द्वारा प्रस्तावित इन तीन मूलभूत विशेषताओं के साथ-साथ एक अन्य विद्वान, कवि 'मैथ्यू अर्नाल्ड' ने आदर्श अनुवाद की निम्नलिखित विशेषताएं गिनवाई हैं।

1. अनुवाद का मुख्य गुण उसकी मूल निष्ठता है। अनुवाद न तो शत-प्रतिशत मूलनिष्ठ हो और न ही अनुवादक उसमें अनावश्यक आज़ादी ले। एक प्रकार से संतुलन अथवा समन्वय ही अपेक्षित है।
2. अनुवाद ऐसा होना चाहिए कि उसे पढ़कर या सुनकर, पाठक या श्रोता पर ठीक वही प्रभाव पड़े जो मूलपाठ के पठन या श्रवण से पड़ना संभव है।
3. अनुवादक को परकाया प्रवेश जैसे कठिन कार्य करना पड़ता है। उसे रचना के माध्यम से लेखक के साथ पूर्ण तादात्म्य स्थापित करना चाहिए और उसके देश काल को सूक्ष्मता से समझना चाहिए। ऐसा करने पर ही वह लेखक के मूलभाव, विचार और शैली को आत्मसात कर उसके समतुल्य अनुदित रचना को जन्म दे सकता है।
4. आदर्श अनुवाद वही है जिसमें मूल का कथ्य तथा कथ्य शैली, दोनों ही अनुवाद में यथासंभव आ जाएं।
5. अनुवाद न तो मूल से हीन लगे न ही श्रेष्ठ। यदि हीन है तो भी यदि श्रेष्ठ है तो भी, मूल लेखक से अन्याय होगा। हीन होने पर पाठक को मूल लेखक के विचार जगत का ठीक परिचय न मिल सकेगा। यदि अत्यधिक स्वतंत्रता लेकर अनुवादक अति उत्साह में नई ही रचना प्रस्तुत कर देता है जो मूल से भले ही श्रेष्ठ हो परंतु मूल से मिलती न हो, तो भी मूल लेखक की उपेक्षा होगी।
6. अनुवादक को संदर्भानुसार शब्दों के अर्थ ग्रहण करने चाहिए। प्रशासन में सामान्य शब्द भी प्रयुक्त होते हैं ओर सांकेतिक भी इसलिए उपयुक्त शब्दार्थ का चुनाव अपेक्षित है। उदाहरण के लिए Bar शब्द का अर्थ है शराब घर, कठघरा, वकील, समुदाय सिल्ली तथा टोक। Balance शब्द का अर्थ है तराजू, संतुलन, शेष बकाया आदि। अब अनुवादक पर है कि वह संदर्भानुसार कौन-सा अर्थ चुनता है।

साहित्यिक रचनाओं में लाक्षणिक और व्यंजनात्मक अंश अधिक रहते हैं। इसलिए वहां अनुवादक की प्रतिभा और विद्वता की वास्तविक परीक्षा होती है। काव्यानुवाद प्रायः गद्य से अधिक कठिन रहता है क्योंकि काव्य शैली के अनुवाद में अनुकरण और भी कठिन होता है। तकनीकी और विज्ञान संबंधी अनुवादों की भी एक शैली रहती है जिसे अपनाकर रचना अधिक रोचक और ग्राह्य रूप में अनुदित होती है।

गद्य साहित्य में प्रयुक्त मुहावरे और लोकोक्तियों का उपयुक्त अनुवाद स्रोत और लक्ष्य भाषा के परिवेश की गहरी पकड़ की मांग करते हैं। मुहावरे और कहावतें भौगोलिक, सामाजिक और सांस्कृतिक परिवेश से गहरे में जुड़े रहते हैं। इस लिए कहीं समतुल्य, कहीं भावार्थ अनुरूप तो कहीं व्याख्या करके ही अनुवाद करना पड़ता है। श्रेष्ठ अनुवाद में भाव और अर्थ में समतुल्यता रहती है। 'काठ की हांडी बार-बार नहीं चढ़ती' का भाव यह है कि बार-बार धोखा नहीं दिया जा सकता। इसका अंग्रेजी में समतुल्य मुहावरा होगा One trick cannot serve twice इसमें अर्थ की समतुल्यता है। इसमें स्रोतभाषा का विम्ब नहीं उभरता, मात्र भाव ही रह गया है।

इन सबके के बावजूद कहावत है कि 'अनुवाद यदि सुंदर है तो वस्तुनिष्ठ नहीं होगा' और यदि वस्तुनिष्ठ है तो सुंदर नहीं होगा।'' अनुवाद में वस्तुनिष्ठता अधिक महत्वपूर्ण है। उसके साथ ही यदि वह सुंदर भी हो तो सोने पर सुहागा है।

'आचार्य रामचंद्र शुक्ल' शब्दानुवाद को श्रेष्ठ नहीं मानते। वे आवश्यकतानुसार परिवर्तन और परिवर्धन के पक्षधर हैं। यहीं नहीं अनुवाद में वह मूल रचनाकार की त्रुटियों के परिमार्जन को भी उचित मानते हैं। उन्होंने 'एडविन अर्नाल्ड' की कृति Light of Asia का अनुवाद 'बुद्ध चरित' शीर्षक से किया है और मूल रचना की कमियों को भी दूर किया है। साहित्यिक अनुवादों में इस प्रकार की स्वतंत्रता उचित मानी गई है। 'आचार्य शुक्ल' के अनुसार अनुवादक के लिए जहां लक्ष्य भाषा की प्रकृति और उनके स्वाभाविक प्रवाह को बनाए रखना जरूरी है वहीं स्रोत भाषा के मूल भाव की रक्षा भी उसे करनी चाहिए।''

'महादेवी वर्मा' सभी अनुवादों को असंतोषजनक मानती हुई कहती है। ''स्वाध्याय से अधिक प्रयत्न साध्य होने पर भी अनुवाद अंततः अपूर्णता की अनुभूति ही देता है।'' अनुवादक का कार्य मूल लेखक से अनेक दृष्टियों से अधिक कठिन है फिर भी उसे लेखक की अपेक्षा कम सम्मान मिलता है। अनुवादक किसी कृति को लक्ष्य भाषा के पाठकों तक पहुंचाता है जो अनुवाद के अभाव में असंभव होता। एक आदर्श अनुवादक मूल कृति और उसके कर्त्ता से तादात्म्य स्थापित कर उस रचना को आत्मसात् करता है और इसके भाव और अर्थ के अनुरूप समतुल्य भाषा अंतरित करता है। उसका स्रोत और लक्ष्य भाषा पर समान रूप से अधिकार होना आवश्यक है। मूल लेखक की भाषा-शैली का भी वह यथासंभव अनुसरण अनुवाद में करता है। अनुवाद को सहज, संप्रेषणीय और सुपाठ्य बनाने के लिए वह अपने कौशल का प्रयोग करता है। अनुवादक सामान्यतः मूल के प्रति अपनी निष्ठा बनाए रखता है। साहित्यिक अनुवादों में भावानुवाद, छायानुवाद तथा मुक्त अनुवाद का भी वह सहारा लेता है। आदर्श अनुवाद मूल के अत्यधिक निकट उसके समतुल्य भाव या विचार को अभिव्यक्त करने वाला होता है। आदर्श अनुवाद, एक आदर्श, अनुवादक ही प्रस्तुत कर सकता है।

स्वयं आकलन प्रश्न

प्रश्न-1 अनुवाद कार्य मूल रूप से कितनी भाषाओं में होता है ?

प्रश्न-2 अनुवाद कार्य करने वाले व्यक्ति को क्या कहा जाता है ?

प्रश्न-3 एक आदर्श अनुवादक के किन्हीं दो गुणों का नाम बताइए।

प्रश्न-4 अनुवादक का मुख्य कार्य क्या होता है।

13.4 सारांश

अनुवादक का कार्य मूल लेखक से अनेक दृष्टियों से कठिन है। फिर भी उसे लेखक की अपेक्षा कम सम्मान मिलता है। अनुवादक किसी कृति को लक्ष्य भाषा के पाठकों तक पहुंचाता है जो अनुवादक के अभाव में असंभव होता है। एक आदर्श अनुवादक मूल कृति और उसके कर्त्ता से तादात्म्य स्थापित कर उस रचना का आत्मसम्मान करता है।

13.5 कठिन शब्दावली

युगल - दो का जोड़ा

सूत - धागा

जलधर - सागर

अम्बर - आकाश

अभिराम - मनोहर

13.6 स्वयं आकलन हेतु प्रश्नों के उत्तर

उ. 1 दो भाषाओं में।

उ. 2 अनुवादक।

उ. 3 प्रतिभाशाली और विषय का ज्ञाता।

उ. 4 स्त्रोत भाषा का लक्ष्य भाषा में परिवर्तन करना।

13.7 संदर्भित पुस्तकें

1) वासुदेव नन्दन प्रसाद, हिन्दी अनुवाद : सिद्धांत और प्रयोग, भारती भवन, पटना।

2) कैलाश चन्द्र भाटिया, अनुवाद कला सिद्धांत और प्रयोग, तलशिला प्रकाशन, दिल्ली।

3) डॉ. नागेन्द्र (से), अनुवाद, विज्ञान दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली।

13.8 सात्रिक प्रश्न

प्रश्न-1 एक अच्छे अनुवादक में क्या गुण होने चाहिए? विस्तारपूर्वक लिखिए।

प्रश्न-2 कुशल अनुवादक के क्या दायित्व हैं? वर्णन कीजिए।

प्रश्न-3 अनुवादक की समस्याओं पर प्रकाश डालिए।

*****

इकाई पाठ -14

विश्व भाषाओं एवं हिन्दी भाषा की प्रमुख कृतियों का अनुवाद

संरचना

14.1 भूमिका

14.2 उद्देश्य

14.3 विश्व भाषाओं की प्रमुख कृतियों का हिन्दी अनुवाद

- पाश्चात्य नाटक साहित्य का हिन्दी में अनुवाद
- विदेशी उपन्यासों के हिन्दी अनुवाद
- आत्मकथा और जीवनी साहित्य का हिंदी में अनुताद
- विदेशी भाषाओं के काव्य ग्रंथों का हिन्दी में अनुवाद
- हिंदी के श्रेव्य ग्रंथों का विश्व भाषाओं में अनुवाद

स्वयं आकलन प्रश्न

14.4 सारांश

14.5 कठिन शब्दावली

14.6 स्वयं आकलन प्रश्नों के उत्तर

17.7 संदर्भित पुस्तकें

14.8 सात्रिक प्रश्न

14.1 भूमिका

इकाई तेरह में हमने अनुवादक की अर्हता और सफल अनुवादक के अभिलक्षण का गहन अध्ययन किया है। इकाई चौदह में हम विश्व भाषाओं की प्रमुख कृतियों के हिन्दी अनुवाद एवं हिन्दी की प्रमुख कृतियों के विश्व भाषाओं में किये गये अनुवाद का विस्तारपूर्वक अध्ययन करेंगे।

14.2 उद्देश्य

इकाई चौदह का अध्ययन करने के पश्चात् हम यह जानने में सक्षम होंगे कि-

1. विश्व भाषा की किन-किन कृतियों का हिन्दी में अनुवाद हुआ है ?
2. हिन्दी की रचनाओं का विश्व की किन-किन भाषाओं में अनुवाद हुआ है। ?
3. किन-किन पाश्चात्य नाटकों एवं उपन्यासों का हिन्दी में अनुवाद हुआ है ?
4. हिन्दी के श्रेष्ठ ग्रंथों का विश्व की किन भाषाओं में अनुवाद हुआ है ?

14.3 विश्व भाषाओं की प्रमुख कृतियों का हिन्दी अनुवाद

विश्व की सभी भाषाओं में श्रेष्ठ साहित्य रचा जाता रहा है। जिज्ञासु, साहित्यकार और पाठक अपनी भाषा के साथ-साथ, अन्य भाषाओं के साहित्य को पढ़कर उसका आनंद लेने के इच्छुक रहे हैं। उनकी इस इच्छा की पूर्ति, अनुवादक ही कर सकते हैं। यह सीख कर उनके साहित्य का आनंद ले सकें। विश्व की भाषाओं में नाटक, कथा, काव्य, जीवनी और आत्मकथा आदि प्रमुख विधाओं में साहित्य रखा जाता रहा है। प्रस्तुत पाठ में हम विश्व भाषाओं से हिंदी में अनुदित साहित्य की जानकारी प्राप्त करेंगे और हिंदी के श्रेष्ठ ग्रंथों के अनुवाद की भी चर्चा करेंगे। विश्व भाषाओं में से भारतीय समाज सबसे पहले अंग्रेजी के संपर्क में आया और लगभग 200 वर्ष के ब्रिटिश राज में अंग्रेजी साहित्य का प्रभाव हिंदी साहित्य पर पड़ा। अन्य भारतीय भाषाओं पर भी अंग्रेजी का प्रभाव पड़ा। यह प्रभाव अंग्रेजी

के श्रेष्ठ ग्रंथों के अनुवादों के माध्यम से भी आया। 'महावीर प्रसाद द्विवेदी' के अनुसार **''जैसे अंग्रेजों ने ग्रीक और लैटिन भाषा की सहायता से अंग्रेजी की उन्नति की और उन भाषाओं के उत्तमोत्तम ग्रंथों का अनुवाद करके अपने साहित्य की शोभा बढ़ाई, वैसे ही हमको भी करना चाहिए। इस समय अंग्रेजों का साहित्य अत्यंत उन्नत देशों को प्राप्त है। अतएव हमको चाहिए कि उस भाषा के अच्छे-अच्छे ग्रंथों का अनुवाद करके हिंदी साहित्य की दशा को सुधारें।''** नवजागरण कालीन हिंदी विद्वानों और विभिन्न भाषाओं में अंग्रेजी साहित्य का अनुवाद होने लगा। हिंदी में बंगला भाषा से भी अनेक कृतियां अनुदित हुई। अंग्रेजी साहित्य का बंगला साहित्य पर सबसे पहले प्रभाव पड़ा क्योंकि ब्रिटिश राज का प्रारंभ बंगाल पर अंग्रेजों के आधिपत्य से ही हुआ था। हिंदी में अंग्रेजी के महान नाटककार 'शेक्सपीयर' की रचनाओं का अनुवाद व्यावसायिक पारसी थियेटर के माध्यम से प्रारंभ हुआ।

• पाश्चात्य नाटक साहित्य का हिंदी में अनुवाद :

पारसी थियेटर कंपनियों ने शेक्सपीयर के नाटकों का भारतीय समाज में खूब प्रचार किया। उनका लक्ष्य लाभ कमाना था। इसलिए शेक्सपीयर के मूल नाटकों में परिवर्तन लाकर और उनमें तड़क-भड़क तथा सजावट वाले दृश्यों की योजना करके भारतीय जनता को शेक्सपीयर के नाटकों की ओर आकर्षित किया। इन कंपनियों ने नाटकों का बुरी तरह से भारतीयकरण किया। इस प्रकार पारसी कंपनियों ने 'मर्चेण्ट ऑफ वेनिस' का 'दिलफरोश', 'कॉमेडी ऑफ एरर्स' का 'भूल भूलैया' और 'गोरखधंधा', 'द विन्टर्स टेल का 'मुरदा शोक', 'सिम्वलीन' का 'जुल्मनजा' 'रोमियो एंड जुलियट' का बज्मे फजी, 'हेमलैट' का 'खूनेनाहक', 'ओथलो' का 'शहीदे वफ़ा', 'किंग लियर', का 'हारजीत' और 'सफेद खून' तथा 'एंटोनी' और 'योपेट्रा' का 'काली नागिन' शीर्षक से अनुवाद किया। ये अनुवाद मंचन के लिए थे इसलिए इनमें नाच-गाने भी भरे गए। पारसी रंगमंच पर अंग्रेजी रंगमंच का गहरा प्रभाव था।

मूल्यांकन : यह सारे अनुवाद व्यावसायिक दृष्टि से किए गए थे। अधिकांश अनुवाद भद्दे थे। इनकी भाषा कुरूचिपूर्ण अशुद्ध तथा उूर्दनुमा थी। बीच-बीच में गजलों की भरमार थी। इन नाटकों से मात्र यही लाभ हुआ कि शेक्सपीयर का नाम आम लोगों तक पहुंचा।

• भारतेन्दु मंडल के अनुवादक : इसके पश्चात् साहित्यकार, विशेषकर भारतेन्दु मंडल के साहित्यकार भी शेक्सपीयर के नाटकों के अनुवाद की ओर प्रवृत्त हुए तथा कुछ अन्य नाटककारों के नाटकों का भी अनुवाद करने लगे।

1871 में 'तोताराम वर्मा' ने 'जोसेफ एडिसन' के 'केटो' नामक सरस नाटक का 'केटो वृतान्त' शीर्षक से अनुवाद किया। हिंदी में किसी विदेशी नाटक का यह पहला अनुवाद था।

1871 में ही इटावा निवासी 'रत्न चंद' ने 'कॉमेडी ऑफ एरर्स' का 'भ्रमजालक' शीर्षक से अनुवाद किया। 1880 में भारतेन्दु ने 'मर्चेन्ट ऑफ वेनिस' (शेक्सपीयर) नाटक का 'दुर्लभ बंधु' शीर्षक से अनुवाद किया। अनुवाद की दृष्टि से रत्नचंद, भारतेन्दु से अधिक सफल माने गए। उन्होंने नाटक की कथावस्तु को अधिक सफलता से अंकित किया। 'दुर्लभ बंधु' का कथानक तो यथावत् था किंतु अनुवादक ने विदेशी नामों और स्थानों के बदले देशी नाम और स्थान रख दिए थे जैसे अण्टोनियो के स्थान पर अतन्त, पोर्शिया के स्थान पर पुरश्री, शाइलाक के स्थान पर शैलाक्ष, ट्रिपोली के स्थान पर त्रिपुल आदि। ईसाइयों और यहूदियों के स्थान पर आर्य और जैन रख दिए गए। यह अनुचित था क्योंकि आर्य और जैनों में वैसा विरोध नहीं रहा जैसा यहूदियों और इसाइयों में रहा है। इसके अतिरिक्त रीति-रिवाज, आचार-विचार, घटनाएं और भाव भी बहुत कुछ विदेशी रहने दिए गए हैं। मूल के काव्यात्मक अंश गद्य में रखे गए हैं।

'मर्चेण्ट ऑफ वेनिस' का अविकल अनुवाद 1880 में जबलपुर की 'आर्या' नामक महिला ने भी प्रस्तुत किया था। उन्होंने पद्यांशों का अनुवाद पद्य में ही किया था और मूल सौंदर्य ग्रहण करने में वह अपेक्षाकृत अधिक सफल नहीं थीं। जयपुर दरबार के 'पुरोहित गोपीनाथ' ने 1896 में 'रोमियो एंड जूलियट' का अनुवाद 'प्रेमलीला' के रूप में प्रस्तुत किया। 'एज यू लाइय इट' का अनुवाद 'मनभावन' शीर्षक से किया। पुरोहित जी मूलभाव को व्यक्त करने में सफल रहे।

मिर्जापुर निवासी 'मथुरा प्रसाद चौधरी' ने 1892 में 'मैकबेथ' का अनुवाद प्रस्तुत किया जिसका शीर्षक था 'सह स्नेन्द्र साहस' इसका वातावरण भारतीय है तथा अनुवाद सुंदर बन पड़ा है। कुछ समय पश्चात 'हेमलेट' का भी 'जयंत' शीर्षक से अनुवाद इन्होंने प्रस्तुत किया। 'लाला सीताराम' ने 'शेक्सपीयर' के प्राय: सभी नाटकों का अनुवाद किया। इनके कुछ अनुवाद इस प्रकार हैं 'राजा लियर' (किंग लियर) 1914 में 'मनमोहन का जाल' (मच एडो अबाडट नथिंग, 1915), 'भूल भूलैयां' (कॉमेडी ऑफ एरर्स 1915 में) प्रकाशित हुए। इन नाटकों में अनुवादक ने केवल भावानुवाद किया है। नामों का भारतीयरण तो प्राय: सभी में हुआ है। भाषा सरल, परंतु स्थान-स्थान पर अशुद्ध है। 'किंग लियर' में शेक्सपीयर ने भय और करूणा की जो अजस्र धारा दिखाई है इसका लेशमात्र भी इस अनुवाद में नहीं है। 'ओपेले' के अनुवाद की भाषा शिथिल है, मूल नाम ही रखे गए हैं। लाला सीताराम में शेक्सपीयर के नाटकों में आम पाठकों की रूचि जागृत की।

'रांगेय राघव' और 'हरिवंश राच बच्चन' ने भी 'शेक्सपीयर' के नाटकों का अनुवाद किया है। 'राघव' ने शेक्सपीयर के अधिकांश नाटकों का अनुवाद किया है परंतु ये अनुवाद जल्दबाजी में किए गए प्रतीत होते हैं। उन्होंने मूल नाटकों के पद्य के स्थान पर गद्य का ही प्रयोग किया है। ये अनुवाद रूपांतर की अपेक्षा भावानुवाद अधिक हैं।

बच्चन द्वारा 'मैकवेथ' और 'ओथैलो' का पद्यानुवाद अधिक सफल रहा है। ये पद्यानुवाद हैं और शेक्सपीयर के कवित्व की रक्षा में बच्चन जी सफल रहे हैं।

कहीं-कहीं अंग्रेजी मुहावरों का शब्दानुवाद हो गया है जैसे 'जबड़ों के अंदर कैंची' तथा 'नजायज़ तोशक तकिए' आदि चिंतनीय हैं।

'लाला श्री निवासदास' ने 'मर्चेण्ट ऑफ बेनिस' की छाया में 'संयोगिता स्वयंवर' और 'रोमियो एंड जुलियट' की छाया में 'रणधीर प्रेम मोहिनी लिखा।' 'संयोगिता स्वयंवर' में लेखक ने विवाह में मुद्रिका-परिवर्तन आदि विदेशी रीतियां रहने दी हैं जिससे उसमें स्थान-स्थान पर अस्वाभाविकता आ गई है।'

हिंदी के आरंभिक चरण में शेक्सपीयर की यह लोकप्रियता तत्कालीन रंगमंच की गतिविधियों के कारण मानी जाती है। इन दिनों हिंदी क्षेत्र में रंगमंच के नाम पर या तो रामलीला, रासलीला या स्वाँग जैसी लोककलाएं थीं या पारसी रंगमंच था। शेक्सपीयर के नाट्यानुवाद पारसी रंगमंच पर अत्यंत लोकप्रिय हुआ। इसी समय भारत में अन्य यूरोपीय भाषाओं के नाटक भी अनुदित होने लगे। फ्रेंच साहित्यकार मोलियर नाटक 'ली बार्जीस गतोल हामे' का अनुवाद 'लक्ष्मण स्वरूप' ने 'बनिया चला नवाब की चाल' शीर्षक से किया। इसमें गद्य का अनुवाद गद्य में और पद्य का पद्य में किया। यह मूल का अक्षरश: अनुवाद है। 'मोलियर' के इसी नाटक का दूसरा अनुवाद 'लल्ली प्रसाद पांडेय' ने 'रायबहादुर' नाम से किया। पांडेय जी ने यह अनुवाद 'हरिशचंद्र आनंदराव तालचेरकर' के अनुवाद के आधार पर किया है। यह अनुवाद मूल फ्रेंच से तालचेरकर ने 20 वर्ष पहले किया था। नाटक का समस्त वातावरण भारतीय बनाया गया है। कथानक रहन-सहन, वार्तालाप, नाम सत्र में परिवर्तन हुआ है। अनुवाद के संवादों की भाषा कहीं-कहीं अश्लील और भद्दी है। वास्तव में 'राय बहादुर' में मूल रचना की हत्या हो गई थी।

'जी. पी. श्रीवास्तव' ने 'मोलियर' के इन नाटकों का रूपातंरण किया। 'नाक में दम' (ली मैरेज फोर्स), 'मियां की जूती मियां के सिर' (बेफूल्ड हस बैंड), 'मार-मार कर हकीम (ली मैडीसन मलग्रेलुई) 'हवाई डाक्टर', (ली अमर वलेण्ट), 'चाल बेदन' (ली फारवेरिज द स्केपिन), लाल बुझक्कड़ (द वलण्डर), 'आंखों में धूल', (ल अमर मैडिसन) 1936 में 'उमा नेहरू' ने 'जॉन मैसफील्ड' के, 'ट्रेजडी ऑफ नैन' का अनुवाद 'क्विता' नाम से किया। अनुवाद सुंदर है, भाषा मुहावरेदार है। 'प्रेम चंद' ने 'गाल्सवर्दी' के तीन नाटकों का अनुवाद किया। 'जस्टिस', 'स्ट्राईक' और 'द सिल्वर बॉक्स' जिनके शीर्षक क्रमश: 'न्याय', 'हड़ताल' और 'चांदी की डिबिया रखे।' ये यथार्थवादी नाटक हैं और न्याय के नाम पर वकीलों और जजों की धांधलियों का वर्णन करते हैं। 'गाल्सवर्दी' के एक अन्य नाटक 'स्किन गेम्स' का अनुवाद 'ललिता प्रसाद शुक्ल' ने किया। इसमें नवीन और प्राचीन विचारों का संघर्ष है। 'गोल्ड स्मिथ' के 'शी स्द्प्स ट्र कांकर' का 'प्रो. रामकृष्ण रिप्लीमुख' ने 'ह ! ह! ह!' शीर्षक से अनुवाद किया। इसमें हास्य विनोद प्रमुख है। 1932 में 'रोमा रोलां' के फ्रेंच नाटक 'द फोर्टीन्थ ऑफ जुलाई' का अनुवाद 'ठाकुर राज बहादुर सिंह' ने 'विनाश की घड़ी' के रूप में किया।

'रामलाल अग्निहोत्री' ने जर्मन नाटककार 'शीलर' के नाटक 'लुइस मेलरिन' या 'कवेविल द लाई' का अनुवाद 'प्रेम प्रपंच' नाम से 1927 में किया। अग्निहोत्री जी ने यह अनुवाद 'खुद ओ इश्क' नाम फारसी अनुवाद किया था। नाटक में पात्रों और स्थानों का भारतीयकरण किया गया है।

1932 में 'अवुल फजल' ने 'लेसिंग वृत' नाटक 'नातन दरवेज' का अनुवाद 'नातन' नाम से किया। 1937 में 'डा. मंगलदेव शास्त्री' ने 'लेसिंग' के 'मिना फन वार्न हयलम' नाटक का अनुवाद 'मिना' अथवा 'प्रेम-प्रतिष्ठा' नाम से किया। 1939 में 'भोलानाथ शर्मा' ने 'गेटे' के 'फाउस्ट' का 'फाउस्ट' शीर्षक से अनुवाद किया। मूल नाटक जर्मन पद्य में है परंतु शर्मा जी ने इसका अनुवाद गद्य में किया है। यह एक असफल भावानुवाद ही है।

वेलजियम के नाटककारों में मेटरलिंक सर्वाधिक लोकप्रिय नाटककार हैं उनके सिस्टर वियट्रिस तथा 'द यूजलेस डिलीवरेन्स' का 1916 में पदुमलाल पुन्ना लाल बख्शी ने अनुवाद किया 'प्रयिश्चित' और 'उन्मुक्ति' शीर्षकों से किया। ये दोनों छायानुवाद है और मूल के काफी निकट है।

जैनेन्द्र ने भी 1942 में मेटरलिंक के नाटक 'मेरी मेकडालीन' का 'मग्दालिनी' शीर्षक से किया था।

रूसी साहित्य का अध्ययन अध्यापन, भारत में रूसी क्रान्ति से पूर्व ही प्रारंभ हो चुका था। टाल्सटॉय कृत 'द फस्ट टिस्टिलर', 'एंड लाइट', 'शाइन्स इन डार्कनस' और 'द लिविंग कार्प्स' और 'रिडेम्पशन' का अनुवाद 'क्षेमानंद राहरत' ने क्रमशः 'कलाकार की करतूत' (1916), 'अंधेरे में उजाला' (1927), 'जिंदालाश' (1929) नाम से किया। इन सारे नाटकों में साम्यवादी विचारधारा प्रवाहित है। शराब पीने के दुष्परिणाम, धन के समान वितरण, वैवाहिक जीवन के सुख दुखः आदि इनके विषय हैं। 1976 में जैनेन्द्र ने भी इसी लेखक के नाटक 'द पावर ऑफ डार्कनेस' का अनुवाद 'पाप और प्रकाश' शीर्षक से किया है। 'रामनाथ सुमन' ने 'टॉल्स्टॉय' के 'द मारल्स ऑफ माइन उक्स' का अनुवाद 'बालकों का विवेक' नाम से किया है। भारतीय जमींदारों की तरह रूसी जार भी विलासिता तथा उल्लास के प्रतीक थे। दीनहीन किसानों पर वे अत्याचार करते थे। 'राजेंद्र यादव' ने भी रूसी नाटकों का अनुवाद किया। सुप्रसिद्ध ग्रीक नाटककार 'सोफोक्लीज' के प्रसिद्ध नाटक 'एंटीगोनी' को 'भवानी प्रसाद मिश्र' ने 1977 में अनुदित किया। इसी प्रकार सोफोक्लीज के अन्य नाटक 'राजा इडिप्स', यूरोपडीज के 'ट्राय की औरतें' का अनुवाद भी किया।

स्पेनी नाटककार लोको के नाटक 'येर्मा' का अनुवाद 'बांझपन' नाम से शीला भाटिया ने किया। विश्व के अनेक नाटककारों के नाटकों का अनुवाद 'जे. एन. कौशल' ने हिंदी में किया।

रूसी लेखक 'चिंगजे आहतमातोव' एवं 'मोहम्मेजानोव' के संयुक्त लेखन में रजित 'फूजीनीमा' या हिंदी अनुवाद 'भीष्म साहनी' ने किया।

आयरलैंड के 'आस्कर वाइल्ड' के 'द डचेस ऑफ पटुआ' का 1950 में अनुवाद 'सत्यजीवन वर्मा' ने किया।

'श्री लक्ष्मी नारायण मिश्र' ने नार्वे के प्रसिद्ध नाटककार 'ट्रब्सन' की प्रसिद्व कृति 'द डॉल्स हाडस' का 'गुडिया का घर' नाम से अनुवाद किया। 'इब्सन' के इसी नाटक का अनुवाद 1930 में 'गंगा प्रसाद' ने भी किया था और शीर्षक 'परिवर्तन' दिया था। इसमें भावों तथा पात्रों का भारतीयकरण कर दिया गया था। 'इब्सन' के दूसरे नाटक 'द पिलर्स ऑफ सोसायटी' का अनुवाद 'समाज के स्तंभ' शीर्षक से 'सीताचरण दीक्षित' ने किया था। इसमें मूल के भावों और चरित्रों में परिवर्तन नहीं किया गया।

'इब्सन' के तीसरे नाटक 'एन एनिमी ऑफ द पीपुल' का अनुवाद 'प्रो. राजनाथ पाण्डेय' ने 'देशभर का दुश्मन' शीर्षक से किया। यह अनुवाद भाव, भाषा शैली की दृष्टि से सफल है।

हिंदी में विदेशी भाषाओं के नाटकों के अनुवाद प्रारंभ में स्वच्छंदतावादी नाटकों के थे। फिर क्रमशः यथार्थवाद की ओर अग्रसर हुए। लेखक इस परिपाक की जगह शील वैचित्रय को नाटक का आधार मानने लगे थे। हिंदी का नाटक साहित्य इन अनुवादों के कारण समृद्ध हुआ, हिंदी रंगमंच का भी विकास हुआ। राष्ट्रीय साहित्य अकादमी, नेशनल बुक ट्रस्ट' जैसी अनेक संस्थाएं आज हिंदी में विदेशी नाटकों का अनुवाद करवा रही हैं। अनेक नाटक संस्थाएं विदेशी नाटकों का मंचन हिंदी में करती हैं इसलिए अनुदित नाटकों की मांग बढ़ रही है।

• विदेशी उपन्यासों के हिंदी अनुवाद :

वर्तमान में हिंदी उपन्यास साहित्य, विश्व की किसी भी विकसित भाषा के साहित्य के समकक्ष रखा जा सकता है। 19वीं शताब्दी में नवजागरण के साथ ही हिंदी में उपन्यास साहित्य का उदय हुआ। हिंदी के प्रारंभिक उपन्यास तिलस्म, अय्यारी, जासूसी के थे। तत्पश्चात उन पर समाज सुधार का रंग चढ़ा। प्रेम चंद आदर्शोन्मुख यथार्थवाद के अग्रदूत बनकर आए। इसके पश्चात् यशपाल, जैनेन्द्र, इलाचंद्र जोशी, अमृतलाल नागर, भगवती चरण वर्मा, उपेंद्र नाथ अश्क, अज्ञेय जैसे अनेक उपन्यासकारों ने इसे समृद्ध किया।

हिंदी उन्यासों पर प्रारंभिक अवस्था में अंग्रेजी के उपन्यासों का प्रभाव, अनुवादों के माध्यम से पड़ा। डेनियल डिफो का उपन्यास 'द लाइफ एंड स्ट्रेंज एंड सरप्राइजिंग एडवेंचर्स आफ रोबिन्सन क्रूसो' 1719 के हिंदी अनुवाद से, अनुवादों की परंपरा हिंदी में प्रारंभ हुई। बद्रीलाल ने बंगला में अनुदित इस उपन्यास को 1860 में हिंदी में अनुदित किया। इस प्रकार यह अनुवाद का अनुवाद था।

डेफो के पश्चात जॉन बनयान का उपन्यास 'पिलग्रिम्स प्रोग्रेस' (1676) का हिंदी अनुवाद एक पादरी ने किया और नाम दिया 'यात्रा स्वप्नोदय' (1865)। उपन्यासों के प्रभाव से हिंदी में तिलस्म एय्यारी के उपन्यास तथा जासूसी उपन्यास लिखने प्रारंभ हुए। देवकी नंदन खत्री, हरिकृष्ण जोहर एवं गंगा प्रसाद गुप्त ने तिलस्म और एय्यारी के उपन्यास लिखे। हरिकृष्ण जोहर ने रेनाल्डस के 'फाउस्ट' का अनुवाद 'नर पिशाच' (1901) के रूप में किया। देवकीनंदन खत्री ने 'लैला' का 'प्रवीण पथिक' नाम से तथा गंगा प्रसाद गुप्त ने 'द यंग फिसरमैन' का 'किले की रानी' (1915) के रूप में किया। 'लव्ज ऑफ हरम' का 'रंगमहल' (1904), शीर्षक से अनुवाद किया। इस क्रम में पहले से ही अनुदित 'हातिमताई' का हिंदी रूपातंर 1868 ई. में प्रकाशित हुआ। 1870 में रतन नाथ सरखाद की 'आजाद कथा' छपी। सन 1874 में अमीर खुसरो का 'चहार दरवेश' का लिप्यंतरण प्रकाशित हुआ और 1890 में 'अलिफ लैला' और 'अमीर हम्जा की दास्तान' भी प्रकाशित हुई। ये रचनाएं भी रेनाल्ड के रहस्यों की तरह रोचक थीं। डेफो बनियल और रेनॉल्ड के बाद हेरियर बीवर स्टो का अमर उपन्यास 'अंकल टॉमस केबिन' को महावीर प्रसाद पोद्दार ने 'रमई की कुटिया' शीर्षक से प्रकाशित किया। यह अनुवाद भी मूल पाठ से न होकर बांग्ला के चंडीचरण सेन विरचित अनुवाद पर आधारित था।

वाल्टर स्कॉट (1717-1832) के हिंदी में सर्वप्रथम अनुवाद श्री चंद्रलाल ने 'द एक्ट' (1870) नामक उपन्यास को 'रानी मेरी' शीर्षक से प्रकाशित किया।

जोनाथन स्विफट (1667-1745) की प्रसिद्ध रचना 'गुलिबर्स ट्रेवल्स' (1726) का अनुवाद 'विचित्र विचरण' नाम से जगन्नाथ प्रसाद चतुर्वेदी ने किया।

सेमुअल जॉनसन (1709-84) के सुप्रसिद्ध उपन्यास 'ओरियंटल टेल' (1759) का अनुवाद केशवराम भट्ट ने किया।

आधुनिक समय में विश्व की हर भाषा के श्रेष्ठ उपन्यासों का अनुवाद हिंदी में उपलब्ध है। रूसी साहित्यकारों के महान साहित्यकारों के उपन्यास मास्को स्थित 'प्रगति प्रकाशन' द्वारा उपलब्ध करवाए गए। टॉल्स्टॉय, दोस्तोवस्की, गोर्की, शोलोखोव जैसे उपन्यासकारों से 'हिंदी का पाठक' अनुवादों के माध्यम से ही परिचित हो सका है।' फ्रेंच और अंग्रेजी साहित्यकार, मोपॉसां, अलेक्जेंडर डयूमा, डाफनेड्र मैरियो, आन्द्रे पूर्वा, स्रोत एस वक, थॉमस हार्डी, हेमिंग्वे आदि की रचनाओं का भी हिंदी में अनुवाद हुआ।

हिंदी कहानी साहित्य भी अनुवाद के माध्यम से समृद्ध हुआ। विश्व की विभिन्न भाषाओं के सभी महान रचनाकारों की कहानियों के अनुवादों के संग्रह छपते रहते हैं। अनेक साहित्यिक पत्रिकाओं में विदेशी लेखकों की कहानियों के अनुवाद निरंतर प्रकाशित होते रहे हैं।

• आत्मकथा और जीवनी साहित्य का हिंदी में अनुवाद :

हिंदी में विदेशी साहित्यकारों के विभिन्न विदेशी भाषाओं से जीवनी और आत्मकथाओं के अनुवाद प्रकाशित होते आए हैं। भारतीय भाषाओं में रचित भारतीय महापुरूषों की असंख्य जीवनियां भी मराठी, गुजराती, बांग्ला, तेलगू, मलयालम, ओड़िया, आदि भाषाओं से हिंदी में अनुदित हुई है। हिंदी का अपना जीवनी साहित्य भी अत्यंत समद्ध है। कुछ विदेशी जीवनियों और आत्मकथाएं जो हिंदी में अनुदित हुई निम्न प्रकार से है

टॉल्स्टॉय, गोर्की और कैसर की आत्मकथाएं हिंदी में अनुदित होकर बहुत लोकप्रिय हुई है। लेव टॉल्स्टाय की आत्मकथा, 'ए कन्फैशन' का अनुवाद उमराव सिंह ने 'टॉलस्टाय की आत्मकहानी' (1922) शीर्षक से प्रकाशित की थी। 1939 में राजा राम अग्रवाल ने 'मेरी आत्म कहानी' नाम से इसे पुनः अनुदित किया।

मैक्सिम गोर्की की आत्मकथा 'मेरा बचपन' (1929), 'जीवन' राहों 'घर' तथा 'मेरे विश्वविद्यालय' (1929) नाम से अनुदित हुई। जर्मनी के प्रसिद्ध कैसर की आत्मकथा को पारसनाथ सिंह ने 'कैसर की रामकहानी' (1930) शीर्षक से प्रकाशित किया। विदेशी लेखकों में एफ. ऑर बेस्ट' की आत्मकथा 'कोलमाईन टू पार्लियामेंट' का प्रताप नारायण चतुर्वेदी द्वारा 'कोयले की खान से पार्लियामेंट तक' (1932) नाम से अनुवाद किया गया। यह अनुवाद अत्यंत महत्वपूर्ण है।

रूसी से अंग्रेजी और अंग्रेजी से हिंदी में प्रकाशित ट्राटस्की की आत्मकथा 'ट्राटस्की की जीवनी' नाम से दो भागों में छपी। प्रथम भाग का अनुवाद रामदास गौड ने तथा दूसरे भाग का यह अनुवाद राजा वल्लभ सहाय ने किया। जर्मनी के तानाशाह हिटलर की आत्मकथा कृष्णचंद्र बेरी ने 'मेरा जीवन संग्राम' नाम से अनुदित की।

भारतीय भाषाओं से हिंदी में अनुदित आत्मकथाओं में 1912 में देवेंद्र मुखोपाध्याय ने अंग्रेजी से हिंदी में दयानंद की जीवनी का अनुवाद किया। 1915 में अंग्रेजी में टी. बाशिंगटन की आत्मकथा 'अप फ्रॉम स्लेवरी' का अनुवाद पंडित लक्ष्मीनारायण गर्दे द्वारा 'आत्मोदधार' शीर्षक से किया गया। गुजराती में लिखी गांधी की आत्मकथा 'सत्य के प्रयोग शीर्षक से 1927 में हरिभाऊ उपाध्याय ने अनुदित की। रवीन्द्रनाथ ठाकुर, जवाहर लाल नेहरू, सुभाषचंद्र बोस, रवींद्र नाथ सान्याल, काका कालेलकर, सावरकर, अब्दुल कलाम आज़ाद जैसे अनेक महापुरूषों की आत्मकथाएं, अंग्रेजी तथा अन्य भारतीय भाषाओं से हिंदी में अनुदित हुई।

अफ्रीका ने नायक एंक्रमा की जीवनी 'अफ्रीका जागा' शीर्षक से श्याम सन्यासा ने अनुदित की।

• विदेशी भाषाओं के काव्य ग्रंथों का हिंदी में अनुवाद :

भारतीय में प्राचीनकाल से ही संस्कृत के श्रेण्ठ ग्रंथों का अनुवाद विभिन्न भारतीय भाषाओं में होता रहा। खड़ी बोली हिंदी में श्रेष्ठ रचनाओं का अनुवाद सोलहवीं शताब्दी से प्रारंभ हुआ। अठारहवीं शताब्दी तक तो संस्कृत के प्राचीन ग्रंथों का अनुवाद ही हिंदी में होता रहा क्योंकि समकालीन श्रेष्ठ ग्रंथ उपलब्ध नहीं थे। संस्कृत के धार्मिक ग्रंथ जैसे वेद, पुराण, उपनिषद्, भागवत, रामायण और महाभारत हिंदी में अनुदित होते रहे साथ ही ज्योतिष, वैद्यक, काव्यशास्त्र संबंधी ग्रंथों का अनुवाद भी हुआ। नवजागरण के कारण पश्चिमी विचारों से भारतीय विद्वानों, साहित्यकारों का परिचय बढ़ा। हिंदी साहित्य को समृद्ध करने के लिए कुछ विद्वानों ने श्रेष्ठ पाश्चात्य ग्रंथों का अनुवाद हिंदी में करना प्रारंभ किया। रामप्रसाद निरंजनी कृत 'भाषा योगवशिष्ट' (1741) को खड़ी बोली हिंदी का प्रथम गद्य ग्रंथ माना जाता है। सदासुख लाल नियाज ने (1746-1824) श्रीमदभागवत के दशम् स्कन्ध, 'सुखसागर' के रूप में किया। लल्लू जी लाल ने इसे 'प्रेम सागर' नाम से अनुदित किया।

खड़ी बोली काव्य की प्रथम कृति, श्रीधर (1900 में), प्रकाशित किशोरी लाल गोस्वामी की कृति 'इंदुमति' को हिंदी की प्रथम कहानी माना गया है जिस पर शेक्सपीयर के नाटक 'टेम्पेस्ट' का प्रभाव देखा जा सकता है। डा. नगीन चंद्र सहगल की पुस्तक अंग्रेजी काव्य-कृतियों के हिंदी अनुवाद प्रसिद्ध है। टॉसगे की कविता 'गडरिया और आर्मस' नाम से 1884 में अनुदित हुई। लॉग फैलो की कविता 'इवेंजलीन' को 'अंजलैना' नाम से, पर्नेल की कविता 'हरमिट' को 'योगी' नाम से महावीर प्रसाद द्विवेदी ने अनुदित किया। मैकाले के कथाकाव्य 'प्लेज ऑफ एन्सेन्ट रोम' की ओर भी विद्वानों का ध्यान गया। इस रचना के कुछ अंश छंगा लाल मिश्र द्वारा 'होरेशस' शीर्षक से प्रकाशित हुए। मैकोले की इसी रचना को ही 1911 में बच्चन पाण्डेय और 1912 में रघुनाथ प्रसाद कपूर ने अनुदित किया।

ईरान में ग्यारहवीं बारहवीं शताब्दी में फारसी कवि उमर खैय्याम हुए जिनकी रूवाइयों का संग्रह अंग्रेज कवि फिटजराल्ड ने इन रूवाइयों का सुंदर भावानुवाद काव्य में प्रस्तुत किया। 1930-1940 में फिटजराल्ड द्वारा अनुदित और खैय्याम की रूवाइयों के अंग्रेजी से हिंदी में अनेक भावानुवाद हुए। सन 1930 में हरिवंश राय बच्चन, मैथिली शरण

गुप्त, सुमित्रानंदन पंत, केशव प्रसाद पाठक, रघुवंश लाल गुप्त, नलदेव प्रसाद मिश्र, गया प्रसाद शुक्ल, सत्यपाल नेदार जैसे अनेक साहित्यकारों ने खैय्याम की रूबाइयों का हिंदी अनुवाद प्रस्तुत किया।

श्रीधर पाठक ने अंग्रेजी से हिंदी में अनुवाद का प्रारंभ खड़ी बोली में किया उन्हें हम हिंदी का गोल्ड स्मिथ कह सकते हैं। उन्होंने 'हरमिट' का 'एकान्तवासी योगी', 'ट्रेवलर' का 'श्रान्त पथिक' और 'शिशुपाल वध' के दो सर्गों का भी पद्यानुवाद किया। राजेंद्र द्विवेदी ने शेक्सपीयर के सोनेटो का सुंदर अनुवाद किया है। पं. सत्यनारायण कविरत्न ने मॅकॉले के अंग्रेजी काव्य 'हारेशस' का हिंदी में पद्यानुवाद किया। हिंदी में निराला, पंत और बच्चन जैसे कवियों ने अनुवाद कार्य किया। विश्व के मघुन विचारक कवि ने होरेस, सिसरो, लूथर, मौंटेन, ड्राइडन, शैली, कॉल रिज मैथ्यू अर्नाल्ड, गेटे इजरा पाउण्ड, मैलार्य, वोदलेयर, स्टीफन स्विंग और बोरिस पारतरनाक आदि ने भी अनुवाद कार्य किया। इससे सिद्ध होता है कि अनुवाद मौलिक लेखन जितना ही संतोषप्रद, महत्वपूर्ण कार्य है।

आधुनिक काल में हिंदी और अन्य भारतीय भाषाओं में अंग्रेजी से हिंदी अनुवाद की परंपरा प्रारंभ हुई थी। वैसे तो अंग्रेजी से वैज्ञानिक, धार्मिक, शैक्षिक साहित्य के भी अनुवाद हिंदी में हुए किंतु अधिकतर अनुवाद सर्जनात्मक साहित्य के ही हुए। वडर्सवर्थ, बीटस, शैली, बायरन, टामस ग्रे, गोल्ड स्मिथ एवं काऊपर की कविताओं के अनुवाद मिलते हैं। अंग्रेजी की फुटकर कविताओं के हिंदी अनुवाद सर्वप्रथम श्रीयुत श्रीनिवासदास ने किए। उन्होंने अपने उपन्यास 'परीक्षा गुरू' में शेक्सपीयर और वायदन की पंक्तियां उद्धृत की हैं।

• हिंदी के श्रेण्य ग्रंथों का विश्व भाषाओं में अनुवाद :

पश्चिमी देशों में भारत के प्रति रूचि का एक कारण यहां का समृद्ध साहित्य भी रहा है। भारतीय साहित्य, विशेषकर संस्कृत साहित्य का पश्चिम में अनुवाद अठाहरवीं सदी में ही होने लगा था। मैक्समूलए ने भारत के धाार्मिक साहित्य का अनुवाद, 'द सेक्रेड बुक्स ऑफ द ईस्ट' शीर्षक से 50 खंडों में करवाया। प्राच्य धर्म ग्रंथों के अनुवादकों में जेम्स डार्मेस्टीर, एल एच मिल्स, रीजडेविडस, जूलियस, एग्लिग, हर्मन, ओल्डनवर्ग, एच व्लूम फील्ड, ई.बी. कॉबिल, काशिनाथ, त्र्यवंक तैलंक आदि प्रसिद्ध है। दारा शिकोह ने उपनिष्दों का अनुवाद फारसी में करवाया था। फ्रांसिसी विद्वान पोरों ने दारा द्वारा करवाए अनुवाद के आधार पर उपनिष्दों का अनुवाद लैटिन में किया। रूस, जर्मनी, जापान आदि देशों में ऐसी संस्थाएं हैं जो विश्व भर की श्रेष्ठ कृतियों का मूल्यांकन कर उन्हें छापती है। इनमें मॉस्को का प्रगति प्रकाशन उल्लेखनीय है। यूनेस्को ने भी कई कृतियों के अनुवाद करवाए हैं।

हिंदी की प्रसिद्ध पुस्तक तुलसीकृत 'रामचरितमानस' का अनुवाद एफ. ग्राउज ने 1883 में किया। रूसी भाषा में अलेक्साई पेत्रोविच बारान्निकोव ने सन 1948 में 'तुलसीदास रामायण' नाम से मानस का पद्यानुवाद किया। लिंडा हेस और शुकदेव सिंह ने वेदमंत्रों का संग्रह और अनुवाद अंग्रेजी में किया। कबीर विरचित बीजक का रूपांतर वॉदविल ने अंग्रेजी में 1974 में किया। अमरीकी भाषाविद् जार्ज कार्टोना ने प्राणिनी की विकृतियों को आठ खंडों में प्रकाशित करवाया। रॉवर्ट पी ओल्डमैन द्वारा वाल्मीकि रामायण के अंग्रेजी अनुवाद जैसे सहस्रों रूपांतर विश्वभर में भारतीय संस्कृति की ध्वजा फहराते रहे।

बीसवीं शताब्दी के पश्चात् अनुवाद साहित्य में अभूतपूर्व प्रगति हुई। साहित्य, दर्शन, विज्ञान तथा समाजशास्त्र आदि विषयों में अनुवाद कार्य हुए। यूरोप, अमरीका, जापान, चीन, रूस आदि विभिन्न देशों के आचार्य अनुवादक अपने-अपने विश्वविद्यालयों में प्राचीन ग्रंथों की शोधपरक टिप्पणियां ही नहीं प्रस्तुत करते, बल्कि विश्व के विशाल साहित्य को अपनी-अपनी भाषा में, विशेषकर अंग्रेजी, रूसी और जापानी में रूपातंरित करते हैं। रूसी भाषा में संस्कृत और हिंदी के अनेक ग्रंथों का अनुवाद हुआ है। ए. ए. पेत्रोव ने 1787 में 'भगवतगीता' का अनुवाद रूसी भाषा में किया। ए. एम. गोर्की के नेतृत्व में सन 1981 में सोवियत संघ में प्राच्य साहित्य, विशेषकर भारतीय साहित्य के अनुवाद की परंपरा प्रारंभ हुई। प्रेम चंद के 'गोदान' और 'रंगभूमि', यशपाल का 'झूठा सच' और 'दिव्या', अमृत लाल नागर का 'बूंद और समुद्र' तथा 'विष और अमृत', रॉगेय राघव का 'मुर्दो का टीला', तथा 'कब तक पुकारूं', 'फणीश्वर नाथ रेणु का' 'मैला आंचल' आदि उपन्यास रूसी भाषा में अनुदित हुए। चेक भाषा में स्मैकल ने 1967 में प्रेम चंद के 'गोदान' का

अनुवाद चैक में किया। भारत के लिए महत्वपूर्ण अनुवादों में रवीद्र नाथ कृत 'गीताजंलि' और यूनेस्को द्वारा प्रकाशित प्रेम चंद और तुलसीदास के अनेक अनुवाद हुए हैं। हिंदी से सर्वाधिक अनुवाद अंग्रेजी में हुए हैं। प्रसाद की 'कामायनी' का अंग्रेजी में अनेक विद्वानों ने अनुवाद किया।

1773 में संस्कृत नाटक 'अभिज्ञान शाकुन्तला का अनुवाद सर विलियम जोन्स ने अंग्रेजी में 'शाकुन्तल' शीर्षक से किया था। इस अनुवाद ने पश्चिम में एक बौद्धिक क्रांति को जन्म दिया। प्राच्यवेता उसे 'संस्कृति की खोज' नाम से पुकारते हैं। गेटे ने इस अनुवाद को पढ़कर अपने जो पद्यबद्ध उदगार 'शाकुन्तल' के बारे में प्रकट किए उनको पढ़कर पश्चिम के विद्वानों, विशेषकर जर्मनी में संस्कृत ग्रंथों के प्रति रूचि जागी। संस्कृत ग्रंथों के अंग्रेजी, जर्मनी, इतालवी और फ्रेंच में अनुवाद हुए।

आधुनिक वैश्वीकरण के दौर में अनेक साहित्यक ग्रंथ हिंदी से अंग्रेजी तथा अन्य विश्व भाषाओं में अनुदित हुए हैं। विभिन्न विश्वविद्यालयों में भी संवादकार्य हो रहा है। प्रस्तुत पाठ में हमने विश्व भाषाओं के नाटक, कथा, साहित्य, आत्मकथा और जीवनी तथा काव्य-साहित्य के हिंदी में भाषान्तरण पर चर्चा की है। पाठ के अंत में हिंदी के कुछ श्रेष्ठ ग्रंथों के विश्व भाषाओं में अनुवाद की चर्चा की है। पौर्वाव्यवादियों ने संस्कृत साहित्य के श्रेष्ठ ग्रंथों का अनुवाद बहुत पहले प्रारंभ कर दिया था। संस्कृत के पंचतंत्र और हितोपदेश की कहानियां तो छठी-सातवीं शताब्दी में ही मध्य एशिया और यूरोप में पहुंच गई थीं। महाभारत, रामायण, वेद और उपनिष्दों में भी विदेशियों की रूचि रही। मैक्समूलर ने पूर्व के पवित्र ग्रंथों का अनुवाद करवाया।

भारतेन्दु युग में शेक्सपीयर के नाटक पारसी थियेटर कंपनियों ने अनुदित और मंचित किए। भारतेन्दु मंडल के साहित्यकारों ने शेक्सपीयर के साथ-साथ अन्य यूरोपीय नाटककारों के नाटक भी अनुदित किए। फ्रेंच साहित्यकार, मोलियर की रचनाएं भी अनुवादकों के साथ लोकप्रिय रहीं। गाल्सवर्दी, रोमा रोलॉ, गेटे, मेटरलिंक, तॉल्सटॉय, येर्मा, आस्कर वाइल्ड तथा अनुवादों से हिंदी नाटककारों को प्रेरण मिली और हिंदी रंगमंच भी समृद्ध हआ।

विदेशी उपन्यास साहित्य का भी हिंदी में अनुवाद अठारहवीं शताब्दी में प्रारंभ हो गया था। डेनियल डिको के विश्व प्रसिद्ध उपन्यास 'रॉक्सिन क्रूसो' से यह प्रारंभ हुआ और जॉन बनियन तथा रेनालट के रहस्य-रोमांच भरे किस्सों के अनुवाद के रूप में विकसित हुआ। हिंदी में प्रारंभिक तिल्समी ऐय्यारी तथा जासूसी उपन्यासों पर इसका प्रभाव दिखा। कालांतर में अंग्रेजी, फ्रेंच, रूसी आदि भाषाओं से श्रेष्ठ उपन्यास हिंदी में अनुदित हुए।

हिंदी में जीवनी और आत्मकथा साहित्य भी विदेशी भाषाओं और अन्य भारतीय भाषाओं से अनुदित हुआ। श्रीधर पाठक ने ओलिवर गोल्डस्मिथ की रचना 'द हर्मिट' का खड़ी बोली में अनुवाद 'एकांतवासी योगी' शीर्षक से किया। टॉस ग्रेस, एच डब्ल्यू लांगफैलो, रोमांटिक कवियों, शैले, बीटस, ब्राऊनिंग, वर्डस्वर्थ आदि का काव्य हिंदी में अनुदित हुआ और उससे हिंदी की छायावादी कविता प्रभावित हुई। उमर खैयाम की रूवाइयों का अंग्रेजी में अनुवाद फिरजराल्ड ने किया तो हरिवंश राय बच्चन ने उन्हें हिंदी में ढाला हिंदी के अनेक साहित्यकारों ने खैयाम की रूवाइयों का विभिन्न भाषाओं से अनुवाद किया। हिंदी के अनेक श्रेष्ठ ग्रंथों का अनुवाद विश्व की विभिन्न भाषाओं में हुआ। तुलसी कृत 'रामचरितमानस' का अनुवाद 1883 में एफ ग्राउज ने अंग्रेजी में किया। 1948 में वारान्निकोव ने 'रामचरितमानस' का पद्यानुवाद 'तुलसीदास रामायण' शीर्षक से किया। वेद मंत्रों का अनुवाद लिंडा हंस और शुकदेव ने अंग्रेजी में किया। 'कबीर' के दोहों का अंग्रेजी में अनुवाद टैगोर ने भी किया तथा वांदविल ने भी किया। पाणिनी के 'अष्टाध्यायी' का भी अनुवाद अंग्रेजी में हुआ।

इसी प्रकार हिंदी उपन्यासों और नाटकों का अनुवाद भी अंग्रेजी तथा अन्य विश्व भाषाओं में हुआ। टैगोर की 'गीतांजलि' का अनुवाद यदि की डब्ल्यू वी पेट्स न करते तो शायद उन्हें नोबेल पुरस्कार न मिल पाता। संस्कृत साहित्य के अनेक श्रेष्ठ ग्रंथों के विश्व भाषाओं में अनुवादों से प्रारंभ हुई परंपरा आज भी जारी है। ज्यों-ज्यों संसार विश्वग्राम बनने की ओर अग्रसर है त्यों-त्यों अनुवाद का महत्व बढ़ता जा रहा है।

स्वयं आकलन प्रश्न

प्रश्न-1 ज्ञान बनयान के उपन्यास 'पिलग्रिम्स प्रोग्रेस' का हिन्दी अनुवाद किस नाम से हुआ ?

प्रश्न-2 'गुलिवर्स ट्रैवल' का हिंदी अनुवाद 'विचित्र विचरण' नाम से किसे किया ?

प्रश्न-3 भारतेन्दु ने 'मर्चेंट ऑफ बेनिस' का हिन्दी रूपान्तरण किस नाम से किया ?

प्रश्न-4 प्रेमचंद ने गाल्र्सवर्दी के कितने नाटकों का हिन्दी अनुवाद किया ?

14.4 सारांश

संसार में अनेक भाषाएं हैं तथा उन अनेक भाषाओं में असंख्य प्रसिद्ध सार्वकालिक कालयजी रचनाओं का प्रणयन हुआ है। भारतीय भाषाओं में अनुदित आत्मकथाओं में 1915 ई. में टी. वॉशिंगटन की आत्मकथा 'अप फ्रॉम स्लेवरी' का अनुवाद पण्डित लक्ष्मीनारायण गर्दे द्वारा 'आत्मोद्धार शीर्षक थे किया। इसी प्रकार हिन्दी उपन्यासों और नाटकों का भी अंग्रेजी अनुवाद तथा अन्य विश्व भाषाओं में भी अनुवाद कार्य हुआ है।

14.5 कठिन शब्दावली

अधीर - उतावला

उजला - सफेद

वाणी - बोली

परख - जाँच

पुष्ट - पक्का

14.5 स्वयं आकलन हेतु प्रश्नों के उत्तर

उ.-1 यात्रा स्वप्नोदय।

उ.-2 जगन्नाथ प्रसाद चतुर्वेदी ने।

उ.-3 दुर्लभ बन्धु।

उ.-4 दो।

14.7 संदर्भित पुस्तकें

1) डॉ. गार्गी गुप्त (सं.), अनुवाद बोध, भारतीय अनुवाद परिषद, दिल्ली।

2) सुरेश कुमार, अनुवाद सिद्धांत की रूपरेखा, वाणी प्रकाशन, दिल्ली।

3) भोलानाथ तिवारी, अनुवाद विज्ञान सिद्धांत एवं प्रविधि, किताबघर प्रकाशन दिल्ली।

14.8 सात्रिक प्रश्न

प्रश्न-1 विश्व भाषाओं की प्रमुख कृतियों के हिन्दी अनुवाद का परिचय दीजिए।

प्रश्न-2 विदेशी उपन्यासों के हिन्दी अनुवाद पर विस्तार से प्रकाश डालिए।

प्रश्न-3 हिन्दी भाषा के श्रेष्ठ ग्रंथों का विश्व भाषाओं में अनुवाद की विस्तृत विवेचना कीजिए।

*****

इकाई पाठ -15
भारत में अनुवाद प्रशिक्षण के केन्द्र

संरचना

15.1 भूमिका

15.2 उद्देश्य

15.3 अनुवाद प्रशिक्षण की दिशाएं एवं स्थिति

15.3.1 अनुवाद प्रशिक्षण केंद्रों की आवश्यकता

15.3.2 विविध प्रशिक्षण केंद्र

स्वयं आकलन प्रश्न

15.4 सारांश

15.5 कठिन शब्दावली

15.6 स्वयं आकलन प्रश्नों के उत्तर

15.7 संदर्भित पुस्तकें

15.8 सात्रिक प्रश्न

15.1 भूमिका

इकाई चौदह में हमने विश्व भाषा की प्रमुख कृत्तियों के हिन्दी अनुवाद एवं हिन्दी की प्रमुख कृतियों के विश्व भाषाओं में किये गए अनुवाद का गहन अध्ययन किया। इकाई पन्द्रह में हम भारत में अनुवाद प्रशिक्षण के प्रमुख केन्द्र तथा अनुवाद प्रशिक्षण केंद्रो की आवश्यकता का विस्तारपूर्वक अध्ययन करेंगे।

15.2 उद्देश्य

इकाई पन्द्रह का अध्ययन करने के पश्चात् हम यह जानने में सक्षम होंगे कि-

1. भारत में अनुवाद प्रशिक्षण के प्रमुख केन्द्र कौन-कौन से हैं ?
2. अनुवाद प्रशिक्षण केंद्रो की आवश्यकता क्यों पड़ी ?
3. विविध प्रशिक्षण केन्द्र से आप क्या समझते हैं ?

15.3 अनुवाद प्रशिक्षण की दिशाएँ एवं स्थिति

भारत जैसे बहुभाषी और बहु-सांस्कृतिक देश में, जो 1652 में अधिक बोलियाँ/भाषाएँ बोली जाती हैं और बाईस भारतीय भाषाओं को संविधान द्वारा मान्यता प्राप्त है, अनुवाद महत्त्वपूर्ण एवं प्रासंगिक है। हमारे दैनिक आचार-व्यवहार से लेकर सभी महत्वपूर्ण क्षेत्रों में अनुवाद व्याप्त है। भारत के परिप्रेक्ष्य में विभिन्न भाषाओं के आधार पर अनुवाद संबंधी प्रशिक्षण कार्यक्रमों की निम्नलिखित तीन दिशाएं बनती हैं

1. अंग्रेजी-हिन्दी-अंग्रेजी अनुवाद प्रशिक्षण कार्यक्रम।
2. अंग्रेजी और हिंदीत्तर अन्य भारतीय भाषा में से अनुवाद प्रशिक्षण कार्यक्रम।
3. भारतीय समुद्र के बीच परस्पर अनुवाद प्रशिक्षण कार्यक्रम।

सृजनात्मक एवं ज्ञानपरक साहित्य, दर्शन, व्यापार-वाणिज्य, बैंकिंग, विधि, अभियान्त्रिकी, कृषि, प्रशासन, पत्रकारिता, शिक्षा आदि क्षेत्रों में अनुवाद की अपरिहार्य आवश्यकता है। दिनोंदिन अनुवाद की बढ़ती हुई आवश्यकता को नए अर्थों एवं संदर्भों में समझ/स्वीकार कर देश के कई विश्वविद्यालयों एवं शिक्षण संस्थाओं द्वारा अनुवाद-प्रशिक्षण कार्यक्रम चलाए जा रहे है। भारत के सामाजिक सांस्कृतिक एवं व्यावसायिक पहलुओं को देखते हुए, इन सन्दर्भों में अनुवाद रोजगार का एक व्यापक क्षेत्र बन गया है। हिन्दी भारत की राष्ट्रभाषा है। इसके अलावा, भाषा के विस्तृत भूभाग

के निवासियों की भाषा (जनभाषा) एवं एकता के मद्देनजर आज हिन्दी सम्पर्क भाषा के रूप में स्वीकृत है। रोजगार की वर्तमान व्यवस्था के अन्तर्गत अंग्रेजी और हिन्दी अनुवाद की अधिक आवश्यकता होती है, अतः इन प्रशिक्षण कार्यक्रमों में अंग्रेजी-हिन्दी-अंग्रेजी के अनुवाद पर अधिक बल दिया जाता है। वैसे भी, आज हिन्दी भारत की राजभाषा है और अंग्रेजी सह-राजभाषा के रूप में काम कर रही है। राजभाषा अधिनियम 1963 (यथासंशोधित) की धारा 3(3) क चलते प्रशासन के क्षेत्र में दीर्घकालिक द्विभाषिकता की स्थिति बनी हुई है। इस स्थिति में प्रशासनिक काम-काज में अनुवाद की स्थिति को अनिवार्य बना दिया है, जिसके चलते औपचारिक रूप से शिक्षित-प्रशिक्षित अनुवादकों की बड़ी माँग है।

अंग्रेजी से हिन्दी अथवा हिन्दी से अंग्रेजी के अलावा कुछ एक विश्वविद्यालयों में हिन्दीतर अन्य भारतीय भाषा में अनुवाद सम्बन्धी प्रशिक्षण कार्यक्रम भी हैं। उदाहरण के लिए, उत्तर प्रदेश स्थित अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय में उर्दू अनुवाद में स्नातकोत्तर डिप्लोमा कार्यक्रम चलाया जा रहा है, कर्नाटक विश्वविद्यालय में कन्नड़ में स्नातकोत्तर डिप्लोमा कार्यक्रम चलाया जा रहा है।

भारतीय भाषाओं के बीच अनुवाद के महत्त्व को स्वीकार करते हुए इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय क अनुवाद अध्ययन एवं प्रशिक्षण विद्यापीठ ने बंगला-हिन्दी अनुवाद और मलयालम-हिन्दी अनुवाद में जुलाई 2009 से दो स्नातकोत्तर सर्टिफिकेट कार्यक्रम शुरू किए। विभिन्न भारतीय भाषाओं के बीच अन्तर्भाषायी गतिविधियाँ बढ़ाने की दृष्टि से इस प्रकार के अध्ययन कार्यक्रमों का विशेष महत्व है। इससे देश की विभिन्न भाषाएं मुख्य धारा से जुड़ेंगी। और, देश में सामासिक संस्कृति को बढ़ावा देने की दृष्टि से इस प्रकार के अनुवाद प्रशिक्षण कार्यक्रमों की उपादेयता निर्विवाद है।

• अनुवाद प्रशिक्षण के सोपान

अनुवाद प्रशिक्षण का मूल लक्ष्य प्रशिक्षु के अनुवाद संबंधी ज्ञान में अभिवृद्धि करना, अनुवाद कार्य संबंधी कुशलता में बढ़ोतरी करना होता है जिससे वे अपने अनुवाद कार्य को प्रभावी बना सकें। इसके अन्तर्गत अनुवाद अध्ययन एवं अनुवाद कार्य के बार में शिक्षा देना शामिल है। इस प्रशिक्षण से अनुवाद के प्रति व्यक्ति की निष्ठा एवं मनोबल में बढ़ोतरी होने के साथ-साथ उसका दृष्टिकोण भी व्यापक होता है। इस दृष्टि से अनुवाद प्रशिक्षण का बड़ा महत्त्व है। कौशल और अन्य भाषा सम्बन्धी ज्ञान के मद्देनजर अनुवाद प्रशिक्षण के आयामों पर विचार करने पर हम पाते हैं कि प्रशिक्षण के निम्नलिखित चार सोपान हैं।

1. भाषा प्रशिक्षण के अंग के रूप में अनुवाद प्रशिक्षण।
2. एक कौशल के रूप में अनुवाद प्रशिक्षण।
3. स्वतन्त्र अध्ययन क्षेत्र की दृष्टि से अनुवाद प्रशिक्षण।
4. कार्यशाला प्रशिक्षण।

• भाषा प्रशिक्षण के अंग के रूप में अनुवाद प्रशिक्षण

पूर्व में हम जान चुके हैं कि भाषा शिक्षण भी अनुवाद का एक प्रमुख क्षेत्र है। भाषा शिक्षण केवल 'शिक्षण विज्ञान' ही नहीं होता, इसमें भाषा विशेष के भाषायी बिन्दुओं और कुशलताओं का भी समावेश होता है। इसका सम्बन्ध भाषायी कौशल (अर्थात भाषा का श्रवण, पठन, वाचन एवं लेखन) के सन्दर्भ में प्रयोग के विकास से है ताकि व्यक्ति में .... इस कौशल केन्द्रित प्रक्रिया में भाषा शिक्षण द्वारा भाषायी व्यवहार की कुशलता उत्पन्न की जाती है। भाषा सुनने, बोलने, पड़ने और लिखने का कौशल विकसित किया जाता है। इस कौशल विकास के लिए अनुवाद का सहारा लिया जाता है ताकि प्रशिक्षु कुशल भाषा-प्रयोक्ता और शैलीकार बन सके। यहाँ यह भी ध्यान रखना होगा कि भाषा शिक्षण में अनुवाद अध्ययन के दौरान प्रशिक्षु स्वयं को व्यवसाय से अनुवादक बनाने की दिशा में अग्रसर नहीं होता। वह स्वयं को भाषा सीखने तक ही सीमित रखता है, अनुवाद में पारंगत होना उसका उद्देश्य नहीं होता।

मनुष्य की यह सहज प्रवृत्ति होती है कि वह एक भाषा सीखकर सन्तुष्ट नहीं होता, उसे अन्य भाषा सीखने की जरूरत पड़ती है। एक भाषा के प्रयोग से सम्प्रेषण का क्षेत्र सीमित बन जाता है। मातृभाषा की शिक्षा मनुष्य के अन्य विषयों की शिक्षा के माध्यम और स्वतन्त्र विषय के रूप में ज्ञानार्जन का साधन बनती है। मातृभाषा मनुष्य के सर्वांगीण विकास का प्रमुख आधार है। अन्य भाषा की शिक्षा शिक्षार्थी के जीवन के विविध क्षेत्रों में सहायक होती है। भले ही वह क्षेत्र व्यावसायिक हो अथवा ज्ञानार्जन से संबंधित। वैसे यह भाषा देशी भी हो सकती है और विदेशी भी। जीवन की आवश्यकताएं मनुष्य को औपचारिक अथवा अनौपचारिक रूप से मातृभाषा से इत्तर भाषाएं सीखने को मजबूर करती हैं, प्रेरित करती हैं। लोगों में भाषा/भाषाएं सीखने की प्रवृति एवं परम्परा हर देश-समाज में सदा से विद्यमान रही है। मानव जीवन के विकास क्रम में प्रत्येक युग में ऐसा होता आया है। धर्म-प्रचार, ज्ञानार्जन, वाणिज्य, व्यापार, पर्यटन, शिक्षण आदि के सन्दर्भ में यह आसानी देख जा सकता है। आज के भूमण्डलीकृत विश्व में तो बहुभाषी ज्ञान, कई भाषाओं का कार्यसाधक ज्ञान अपरिहार्य हो गया है, और इन प्रसंगों का सीधा संबंध अनुवाद जुड़ता है।

किसी बहुभाषी समाज में देशी एवं अन्य भाषा के शिक्षण आंशिक अथवा पूर्णतया अनौपचारिक भी हो सकता है, किन्तु विदेशी भाषा का शिक्षण सामान्यतया औपचारिक स्थितियों में ही सम्भव हो पाता है। अन्य भाषा में भाषिक तत्वों (ध्वनि, रूप-रचना शब्द भण्डार और वाक्य संरचना) के सम्बन्ध में भिन्नताएँ हो सकती हैं और विभिन्न भाषायी तत्वों भिन्न सांस्कृतिक तत्त्व भी समाहित हो सकते हैं। भाषा-शिक्षण में सभी तत्व बाधक बन जाते हैं। 'व्यतिरेकी भाषाविज्ञान' नामक भाषाविज्ञान की उपशाखा द्वारा इन समस्याओं के आलोक में अन्य भाषा की भाषायी कुशलता विकसित कर पाना संभव हो जाता है जो वस्तुतः अनुवाद पर ही आधारित होता है।

इतर भाषा के ध्वनि, शब्द, अर्थ और संरचना जैसे भाषायी घटकों की पर्याप्त जानकारी के साथ-साथ व्यावहारिक दक्षता के सृजन में भी अनुवाद का ही सहारा लिया जाता है। भाषा शिक्षण-प्रशिक्षण में व्याकरण-अनुवाद विधिः प्रत्यक्ष विधिः संरचना विधि एव श्रवण-वाचन विधि, अभिक्रमित स्वाध्याय विधि आदि में से कोई भी विधि अपनाई जाए उसमें प्रत्यक्ष अथवा परोक्ष रूप से अनुवाद की उपस्थिति रहती ही है। भाषा शिक्षण-प्रशिक्षण में अनुवाद की अनिवार्यता के कारण ही अनुवाद को भाषा-शिक्षण का अंग स्वीकार किया जाता है। अर्थात् भाषाविज्ञान सम्बन्धी औपचारिक प्रशिक्षण में 'अनुवाद' को भी शामिल किया जाता है। देश-विदेश का अनेक शिक्षण संस्थाएं भाषाविज्ञान सम्बन्धी प्रशिक्षण कार्यक्रम चला रही हैं। जिनमें अनुवाद सम्बन्धी प्रशिक्षण भी शामिल है। उदाहरण के लिए आगरा स्थित केन्द्रीय हिन्दी संस्थान द्वारा चलाए जा रहे 'एक वर्षीय पोस्ट एम.ए. अनुप्रयुक्त हिन्दी में स्नातकोत्तर डिप्लोमा' कार्यक्रम को देखा जा सकता है, जिसमें भाषाविज्ञान सम्बन्धी विभिन्न प्रश्न-पत्रों के साथ-साथ एक अनुवाद विषयक प्रश्न-पत्र भी हैं। इसी प्रकार दिल्ली विश्वविद्यालय के एम.ए. हिन्दी अध्ययन कार्यक्रम में अनुवाद का एक वैकल्पिक प्रश्न पत्र भी है।

● एक कौशल के रूप में अनुवाद प्रशिक्षण

अनुवाद को एक कौशल के रूप में सीखने के लिए भी अनुवाद प्रशिक्षण दिया जाता है। इस अवधारणा के मूल में अनुवाद को कला के रूप में स्वीकार करने का भाव निहित है। वास्तव में अनुवाद के प्रशिक्षण और अभ्यास से अनुवादक की अनुवाद कला में निखार चार संयम आता है। यहाँ इसे अंग्रेजी की इस लोकोक्ति के सन्दर्भ में देखा जा सकता है कि practice makes A person perfect अनुवाद प्रशिक्षण से अनुवादक की अनुवाद सम्बन्धी प्रतिभा में दक्षता विकसित हो सकती है। इस दक्षता को ही अनुवादक का शिल्प अथवा कौशल (craft) का गुण माना जाता है। यह शिल्प अपने व्यापक अर्थ में कला की ही एक अवधारणा है क्योंकि अलग-अलग दिखाई देने पर भी तत्त्वतः ये एक-दूसरे से भिन्न नहीं। लेकिन, इसमें भी कोई दो राय नहीं कि नैसर्गिक प्रतिभा कला के रूप में उद्घाटित होती है। इस दृष्टि से अनुवादक 'कलाकार' नहीं है किन्तु उसे इस अर्थ में कलाकार कहा जा सकता है कि वह एक भाषा में व्यक्त की गई कलाकार की आत्माभिव्यक्ति भी अपने में उतारकर, उससे आत्म-साक्षात् करते हुए, उसे तटस्थ भाव से दूसरी भाषा में पुर्नसृजित कर देता है। उसका यह कर्म 'पुनरुत्पादक कर्म' है वह 'पुनरुत्पादक कलाकार' है।

इसीलिए तो यह कहा जाता है कि कला सृजन है और अनुवाद उसका पुनर्सृजन। इस प्रकार, अनुवाद प्रशिक्षण एवं अभ्यास साध्य 'उपयोगी कला' (Functional Art) है।

अनुवाद-कौशल विकसित करने के लिए भी अनुवाद प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया जाता है। यानी अनुवाद प्रशिक्षण के जरिए व्यक्ति में अनुवाद कौशल विकसित करना इसका मूल मन्तव्य और गन्तव्य होता है। व्यक्ति इस दक्षता को हासिल करके व्यवसाय में अनुवादक, अनुवाद अधिकारी आदि बन सकता है।

अनुवाद मूलत: एक स्वैच्छिक क्रिया है, 'स्वान्त: मुखाय' है। लेकिन व्यवहार-जगत में इसकी अनिवार्यता ने इसे व्यावसायिकता का रूप दे दिया है। आज, यह अर्थोपार्जन का जरिया भी बन चुका है। आज शासन-प्रशासन, ज्ञान-विज्ञान के विविध क्षेत्रों, शिक्षण-जगत, पर्यटन, विधि, साहित्य, पत्रकारिता और जनसंचार माध्यमों, बैंकिंग, बीमा आदि मानव जीवन से सम्बन्धित हर क्षेत्र में अनुवाद आवश्यक बन गया है। भारत जैसे बहुभाषिक देश में यह अनिवार्य आवश्यकता है। आज़ादी के बाद और विशेष तौर पर सन् 1960 के दशक में राजभाषा अधिनियम पारित होने के पश्चात् संघ के सरकारी कामकाज में द्विभाषिकता की स्थिति से देश में अचानक बड़े पैमाने पर अनुवादकों की आवश्यकता हुई। इससे रोजगार के रूप में अनुवाद की सम्भावनाओं में हुई वृद्धि आज भी जारी है। रोजगार के रूप में आज अनुवाद का विशिष्ट स्थान है। बड़ी संख्या में अनुवादकों की जरूरतों के मद्देनजर उन्हें अनुवाद कार्य में दक्ष करने के लिए शिक्षण संस्थाओं में एवं अन्य सरकारी प्रयासों से विधिवत् अनुवाद प्रशिक्षण कार्यक्रम शुरु किए गए। देश में विभिन्न स्तरों पर अनुवाद प्रशिक्षण कार्यक्रम शुरू करने की दिशा में किए गए प्रयासों पर हम पूर्व में विस्तार से चर्चा कर चुके हैं। अनुवाद में 'स्नातकोत्तर डिप्लोमा', 'अनुवाद में डिप्लोमा' जैसे कार्यक्रम से अनुवाद कौशल विकसित करने के आधार बने। प्रशिक्षित व्यक्तियों की अनुवादक, अनुवाद अधिकारी जैसे पदों पर नियुक्ति सम्भव हुई। ये प्रशिक्षण अनुवाद को कौशल मानकर दिए जाते हैं, इससे अनुवाद-कार्य का कौशल विकसित होता है, अनुवाद-कला परिमार्जित होती है, अनुवादक की गति और दक्षता बढ़ती है।

• स्वतन्त्र अध्ययन क्षेत्र की दृष्टि से अनुवाद प्रशिक्षण

अनुवाद प्रशिक्षण का 'अनुवाद अध्ययन' सम्बन्धी शैक्षिक सन्दर्भ भी है। यानी इसके अन्तर्गत अनुवाद को स्वतन्त्र अध्ययन क्षेत्र मानकर उससे सम्बन्धित शिक्षण-प्रशिक्षण शामिल करना निहित है। अनुवाद प्रशिक्षण का इतिहास अधिक पुराना नहीं है, एक विषय के रूप में अनुवाद अध्ययन का शिक्षण-प्रशिक्षण तो और भी नया है। इससे पहले अनुवाद को 'भाषा -शिक्षण' (Language learning) के लिए व्याकरण-अनुवाद पद्धति (Grammar-Translation) के रूप में अथवा तुलनात्मक साहित्य (Comparative Literature) अथवा 'व्यतिरेकी विश्लेषण' (Comparative Analysis) के एक अंश के रूप में अध्ययन का विषय बनाया जाता रहा है। इसके साथ-साथ यह अनुवादकों के कौशल विकास का भी अंग रहा है। भाषा शिक्षण के अंग एवं एक कौशल के रूप में अनुवाद प्रशिक्षण पिछले दशक के उत्तरार्द्ध की उपज है। एक नए शैक्षिक अनुसंधान क्षेत्र के रूप में अनुवाद अध्ययन सम्बन्धी शिक्षण-प्रशिक्षण एकदम अधुनातन है। इस प्रकार के प्रशिक्षण का मुख्य उद्देश्य अनुवाद अध्ययन के क्षेत्र में शिक्षाविद् तैयार करना है। जनसंचार माध्यमों, पर्यटन, सांस्कृतिक अध्ययन, राजनीति, सृजनात्मक लेखन आदि क्षेत्रों में अध्यापन करने की दृष्टि से भी इसका महत्व है। विविध अभिकरणों में अनुवादक/दुभाषिया आदि की सेवा पाने की मंशा में यह रोजगारोन्मुखी है।

भारत में सबसे पहले लखनऊ विश्वविद्यालय ने 'एम.ए. हिन्दी अनुवाद' कार्यक्रम की शुरुआत करके इसे स्वतन्त्र अध्ययन क्षेत्र के रूप में अनुवाद प्रशिक्षण कार्यक्रम चलाया था। आज देश के अनेक विश्वविद्यालयों में अनुवाद में एम.ए. जैसे कार्यक्रम चलाए जा रहे हैं। इनमें-इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय, अन्नामलाई विश्वविद्यालय, लखनऊ विश्वविद्यालय, देवी अहिल्या विश्वविद्यालय इन्दौर), हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय (शिमला), हैदराबाद विश्वविद्यालय महात्मा गांधी, अंतर्राष्ट्रीय हिन्दी विश्वविद्यालय (वर्धा), गुजरात विद्यापीठ, विश्वभारती विश्वविद्यालय आदि के नाम उल्लेखनीय हैं।

आज देश की कई शिक्षण संस्थाओं में अनुवाद अध्ययन में शोध कार्य समेत विभिन्न स्तर की पढ़ाई हो रही है। अन्नामलाई विश्वविद्यालय, जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, हैदराबाद विश्वविद्यालय, कन्नड़ विश्वविद्यालय (हम्पी), महात्मा गांधी अन्तर्राष्ट्रीय हिन्दी विश्वविद्यालय (वर्धा) आदि में अनुवाद में एम.फिल. कराई जा रही है। इसी प्रकार हैदराबाद विश्वविद्यालय, कन्नड़ विश्वविद्यालय (हम्पी), महात्मा गाँधी अन्तरराष्ट्रीय हिन्दी विश्वविद्यालय (वर्धा) आदि में अनुवाद में पी.एच.डी. भी कराई जा रही है।

इस दिशा में इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय के प्रयास भी उल्लेखनीय हैं। अनुवाद को स्वतन्त्र अध्ययन के रूप में मान्यता प्रदान करते हुए विश्वविद्यालय ने सन् 2007 में 'अनुवाद अध्ययन एवं प्रशिक्षण विद्यापीठ' (School of Translation Studies And Training) स्थापित की। सन् 2009 से विद्यापीठ में पूर्णकालिक अनुवाद प्रशिक्षण एवं 'अनुवाद अध्ययन में एम.ए. की पढ़ाई शुरू हुई, दूर शिक्षा पद्धति के जरिए भी यह कार्यक्रम तैयार किया गया है। अब देश के किसी भी भाग में विद्यार्थी घर बैठे अनुवाद अध्ययन में एम.ए. कार्यक्रम को कर सकते हैं।

● **कार्यशाला प्रशिक्षण**

अनुवाद कार्यशाला का आयोजन अनुवाद प्रशिक्षण का एक प्रभावकारी सोपान है। इसमें प्रतिभागियों को अनुवाद का व्यावहारिक प्रशिक्षण दिया जाता है। यह प्रशिक्षण देने की बेहतरीन पद्धति है। इस प्रशिक्षण कार्यक्रम में प्रशिक्षुओं को सम्बन्धित विषय की सैद्धान्तिक जानकारी देकर अनुवाद हेतु सामग्री उपलब्ध कराई जाती है। प्रशिक्षु उस कार्यशाला में ही पाठ का अनुवाद करते हैं और फिर अनूदित पाठ पर चर्चा की जाती है। किसी-किसी कार्यशाला में यह भी सम्भव होता है कि प्रशिक्षुओं को अनूद्य सामग्री पहले ही उपलब्ध करा दी जाए, वे घर से अनुवाद कर ले आएँ और कार्यशाला में उस अनुवाद पर चर्चा की जाए। इस स्थिति में अपेक्षा की जाती है कि अनुवाद कार्य प्रशिक्षु द्वारा ही किया गया हो।

उल्लेखनीय है कि कार्यशाला पद्धति द्वारा प्रशिक्षण सम्बन्धी कार्यक्रम अल्पकालीन होते हैं। ये कार्यक्रम उन लोगों के लिए लाभदायक सिद्ध होते हैं जो अनुवाद में रुचि रखते हैं, स्वतः प्रेरणा से अनुवाद करते है या फिर कहीं अनुवाद के क्षेत्र में सेवारत है और अपनी दक्षता बढ़ाना चाहते हैं। ये कार्यक्रम प्रशिक्षुओं को अनुवाद कला में पारंगत करने के लिए आयोजित नहीं किए जाते, इनका प्रयोजन उन व्यक्तियों को अनुवाद करना सिखाना भी नहीं है जो अनुवाद बिल्कुल नहीं जानते या बहुत कम जानते हैं। ऐसे व्यक्तियों के लिए पूर्णकालिक अनुवाद प्रशिक्षण कार्यक्रम ही उपयुक्त होंगे। ऐसी कार्यशालाएँ उन व्यक्तियों के लिए उपयोगी होती हैं, जिनमें अनुवाद की कार्यसाधक क्षमता है, पर दक्षता नहीं है। आज प्रशासन के अलावा उद्योग जगत, जनसंचार माध्यमों, शिक्षण संस्थाओं, प्रकाशन उद्योगों, पर्यटन आदि अनेकोनेक क्षेत्रों में अनुवादकों की मांग बढ़ी है। ऐसे में कार्यशाला आयोजित कर व्यावहारिक प्रशिक्षण के जरिए प्रशिक्षुओं को अनुवाद की बारीकियों, समस्याओं-सीमाओं का कौशल बताया जाता है। वे इन पक्षों को ध्यान में रखकर ही अनुवाद कार्य में प्रवृत्त रह सकते हैं। कार्यशाला प्रशिक्षण से उनमें दक्षता के साथ-साथ यह आत्मविश्वास पैदा होता है कि वे अपने अर्जित ज्ञान एवं प्राप्त प्रशिक्षण के आधार पर बेहतर अनुवाद कर सकें।

प्रशिक्षण द्वारा प्रशिक्षु अनुवाद को ज्ञानार्जन एवं रोजगार के साधन की तरह अपनाता है। अनुवाद इस समय अथोपार्जन का प्रमुख माध्यम बन गया है। अनुवाद अब केवल स्वान्तः सुखाय अथवा बौद्धिक अभ्यास मात्र नहीं है, इसे एक व्यवसाय का दर्जा मिल चुका है।

सच्चाई है कि आज के प्रतिस्पर्धी समय में धनोपार्जन के लिए केवल यही व्यक्ति अनुवाद क्षेत्र में टिका रह सकता है तो छाया-कलुषित अनुवाद न कर अनुवाद-कर्म का मर्म समझे और अनूदित कृति में मूल का आनन्द दिला सके। यह सारा कुछ अनुवाद-प्रशिक्षण से सम्भव है, इससे प्रशिक्षु का अपने कार्य के प्रति सम्मान बोध और समर्पण भाव भी उमड़ता है, उनकी कार्यक्षमता बढ़ती है।

चार अनूदित कृति में अनुवादक मूल लेखक के मनोभावों को अपनी भाषा में व्यक्त करते हैं। इसलिए प्रशिक्षण में भाषाविज्ञान के पक्ष पर भी पूरा-पूरा ध्यान दिया जाता है। प्रशिक्षण द्वारा प्रशिक्षु भाषा के सम्प्रेषणात्मक पक्ष का गहराई से जान लेता है और उसे सफलतापूर्वक व्यवहार में लाता है। इस प्रकार अनूदित कृति की प्रस्तुति में प्रयुक्त भाषा, सीखी गई भाषा और भाषा कौशल के न्यायोचित मूल्यांकन का माध्यम बनती है।

प्रशिक्षण के दौरान प्रशिक्षुओं को भाषा एवं अनुवाद से सम्बद्ध संस्थाओं की जानकारी मिलती है। उदाहरण के तौर पर अंग्रेजी-हिन्दी-अंग्रेजी अनुवाद का प्रशिक्षण प्राप्त करने वाले व्यक्ति को प्रशिक्षण के माध्यम से पता चल जाता है कि भारत सरकार की संस्था 'केंद्रीय हिंदी निदेशालय/वैज्ञानिक एवं तकनीकी शब्दावली आयोग' विभिन्न भाषाओं में शब्दकोश तैयार किए जाते हैं। भारत सरकार के कार्यालय 'केन्द्रीय अनुवाद ब्यूरो' द्वारा केन्द्र सरकार के कार्यालयों, उपक्रमों, उद्यमों के हिन्दी से सम्बन्धित कर्मचारियों को अनुवाद सम्बन्धी प्रशिक्षण दिया जाता है।

अनुवाद प्रशिक्षण की यह बड़ी देन है कि देश की भावी पीढ़ी व्यावहारिक प्रशिक्षण प्राप्त कर व्यावहारिक निपुणता हासिल करती है, उनमें आत्म-विकास पैदा होता है। प्रशिक्षित अनुवादक साहित्य, समाज, राष्ट्र एवं विश्व को अपेक्षाओं-सम्भावनाओं के मनोनुकूल कार्य करने की दिशा में ज्ञान एवं प्रशिक्षण का सदुपयोग भी कर पाता है।

● प्रशिक्षण संस्था/व्यक्ति के परिप्रेक्ष्य में महत्त्व

भारत में सरकारी प्रयासों, विभिन्न विश्वविद्यालयों एवं स्वैच्छिक संस्थाओं द्वारा अनुवाद-प्रशिक्षण कार्यक्रम चलाए जा रहे हैं। वैसे भारत के मुकाबले अन्य देशों ने इस क्षेत्र में काफी प्रगति की है। वहीं धार्मिक, साहित्यिक एवं ज्ञान साहित्य में अनुवाद प्रशिक्षण दिया जाता है कि ज्ञान-साहित्य का क्षेत्र विशाल है, इसलिए अलग-अलग तकनीकी विषयों के लिए प्रायः अलग-अलग प्रशिक्षण पाठ्यक्रम चलाए जाते हैं। सम्भावना व्यक्त की जा सकती है कि जल्दी ही अनुवाद-प्रशिक्षण कार्यक्रमों की संख्या आशातीत बढ़ोतरी होगी। अनुवाद प्रशिक्षण कार्यक्रमों की बढ़ती हुई ख्याति से प्रशिक्षण सेवा में संलग्न व्यक्तियो संस्थाओं की सक्रियता भी बढ़ी है। अनुवाद के विभिन्न आयामों पर केन्द्रित कई ग्रंथों के प्रकाशन हुए। संगोष्ठियों, सम्मेलनों में इस दिशा में गम्भीरतापूर्वक विचार हुआ। प्रशिक्षण से जुड़ी संस्था एवं प्रशिक्षक लोकमान्य हुए। केन्द्रीय अनुवाद ब्यूरो (भारत सरकार) द्वारा केन्द्र सरकार के सभी कार्यालयों, उपक्रमों एवं उद्यमों कार्यरत हिन्दी से सम्बद्ध कर्मचारियों के लिए संचालित तीन मास का अनुवाद प्रशिक्षण अति चर्चित है। इस कार्यक्रम के कारण केन्द्रीय अनुवाद ब्यूरो की बड़ी ख्याति है। इस दौरान संस्था एवं व्यक्ति की अपनी प्रशिक्षण प्रतिभा एवं क्षमता का भी विकास होता है, वे उपलब्ध अपनी क्षमता का सदुपयोग करते हुए प्रशिक्षुओं की समस्या का निदानात्मक प्रयास भी करते हैं।

● समाज, राष्ट्र एवं विश्व के परिप्रेक्ष्य में महत्त्व

अध्ययन-अध्यापन विषय (discipline) के रूप में पूरी दुनिया में अनुवाद को स्वीकृति मिल चुकी है। तथ्य है कि एक भाषा के सन्देश, भाव या विचार को दूसरी भाषा में अभिव्यक्ति देने का एक मात्र साधन अनुवाद है, भिन्न भाषा-भाषी समाज की संस्कृति, रीति-रिवाज आदि का परस्पर विनिमय अनुवाद द्वारा ही सम्भव है। इसी प्रकार, विभिन्न देशों के बीच विचार-विनिमय, मैत्री-भाव और विश्व-साहित्य (सृजनात्मक साहित्य हो या ज्ञान-साहित्य) से परिचय भी अनुवाद द्वारा ही सम्भव है। अनुवाद के कारण ही 'वसुधैव कुटुम्बकम्' या 'विश्व ऐक्य' की भावना का प्रचार-प्रसार हो पाता है। उल्लेखनीय है कि तेज़ी से हो रहे विकासात्मक परिवर्तनों के कारण दुनिया भर के देशों में अनुवाद का महत्व बहुत बढ़ा हैं। लोगों ने इसकी उपयोगिता समझ ली है। भिन्न-भिन्न समाजों और राष्ट्रों से सार्थक संवाद स्थापित करने हेतु अनुवाद की महत्वपूर्ण भूमिका से आज हर कोई परिचित है। इसके द्वारा विश्व की समृद्ध सांस्कृतिक परम्परा और साहित्य तक पहुंचा जा सकता है। बहुभाषिक सन्दर्भ में अनुवाद की अपरिहार्य भूमिका सर्वमान्य है।

चर्चा हो चुकी है कि अनुवाद प्रशिक्षण के माध्यम से कुशल तथा योग्य अनुवादकों को पहचानना सरल होता है। इस अवदान को सामाजिक परिप्रेक्ष्य में भी देखा जा सकता है। व्यष्टि के विकास में ही समष्टि का विकास निहित है। उत्तरोतर विकास का क्रम हर व्यक्ति की जागरूकता से ही संभव होता है। व्यक्ति के विकास से समाज का विकास होता है फिर देश और तब विश्व एवं मानवीयता को विकास की दिशा प्राप्त होते हैं। प्रशिक्षित अनुवादकों की दक्षता, अर्जित ज्ञान के सदुपयोग से समाज, राष्ट्र एवं विश्व की अपेक्षाओं-संभावनाओं के अनुकूल कार्य हो पाता है। अनुवाद-प्रशिक्षण के क्रम में अन्य भाषाओं में हो रहे चिन्तन, अध्ययन-अनुसन्धान एवं लेखन कार्य को सार्थक ढंग से जान पाना और उसे अपनी भाषा में सम्प्रेषित करना सम्भव हो पाता है।

आधुनिक विश्व, भूमंडलीकरण और वैश्वीकरण के दौर से गुजर रहा है जहां विश्व-संस्कृतियां सूचना-प्रौद्योगिकी और आर्थिक उदारीकरण के कारण निकट आ रही हैं। सांस्कृतिक आदान-प्रदान अनुदित साहित्य के माध्यम से ही सरलता से हो पाता है। यही कारण है कि आज के विश्व में प्रत्येक देश में अनुवाद प्रशिक्षण केंद्रों की आवश्यकता है। बुल्लगारिया में सर्वाधिक पर्यटक स्थल आते हैं वहां की सरकार विदेशी भाषाओं के प्रशिक्षण हेतु विशेष कार्यक्रम चलाती है, उन्हें आर्थिक सहायता देती है। विभिन्न भाषाओं में कुशलता प्राप्त कर वहां के युवक दुभाषिए का काम करते हैं, अनुवादक का काम करते हैं, अनेक भाषाओं में साहित्य-रचना भी करते हैं। भारत जैसे बहुभाषिक देश में जहां हर व्यक्ति एक से अधिक भाषाएं सीखता है, अनुवाद का महत्व स्वयं सिद्ध है। स्वाधीनता प्राप्ति के पश्चात हिंदी को केंद्र की राजभाषा बनाने के कारण इसे अनुवाद की मूल भाषा बनाना भी आवश्यक हो गया। अंग्रेजी में प्रशासनिक कार्य होता था, उसे हिंदी में भाषान्तरित करना आवश्यक हो गया।

भारत बहुभाषिक देश है। 22 राष्ट्रीय भाषाएं संविधान की 14वीं अनुसूची में दर्ज है। भारत में भावात्मक एकता के लिए आवश्यक है कि राष्ट्रीय अनुवाद प्राधिकरण स्थापित किया जाए ताकि देश की सभी भाषाओं में रचित साहित्य सभी को उपलब्ध को सके।

15.3.1 अनुवाद प्रशिक्षण केंद्रों की आवश्यकता :

भारत जैसे बहुभाषी देश में अनुवाद की आवश्यकता सर्वविदित है। राष्ट्रीय एकता को पुष्ट करने के लिए सांस्कृतिक, आदान-प्रदान को बढ़ावा देना आवश्यक है। प्रादेशिक भाषाओं में राष्ट्रीय साहित्य आए और प्रादेशिक भाषाओं का साहित्य हिंदी में आए, यह अनुवाद द्वारा ही संभव है। वैश्वीकरण के दौर में सूचना ही शक्ति है और सूचनाओं के आदान-प्रदान का माध्यम भाषाएं हैं। ऐसी अवस्था में विभिन्न भाषाओं में उपलब्ध ज्ञान को एक दूसरे के लिए उपलब्ध करवाने का कार्य, अनुवाद के माध्यम से ही संभव है। वैश्विक स्तर पर विश्व कही सारी कूटनीति का आधार वे अनुवादक हैं, आशु अनुवादक हैं जो विश्व नेताओं के बीच विचार विमर्श संभव करते हैं। ये अनुवादक पर्दे के पीछे रहकर काम करने वाले, आधुनिक युग के निर्माण में सहायक योद्धा हैं। वैश्विक स्तर पर अनुवाद के महत्व को समझते हुए और अनुवाद कार्य को गरिमा प्रदान करने के लिए संयुक्त राष्ट्र संघ की जनरल असैम्बली ने 30 सितंबर, 2017 को प्रतिवर्ष अनुवाद दिवस के रूप में मनाने की घोषणा की है।

15.3.2 विविध प्रशिक्षण केंद्र :

भारत में अनौपचारिक रूप से अनुवाद का प्रशिक्षण, गुरू शिष्य परंपरा से होता आया है। सदियों से अनुवादक अपनी आंतरिक प्रेरणा से श्रमपूर्वक अनुवाद करते आए हैं। वर्तमान वैश्वीकरण के दौर में विश्व संस्कृतियां ही नहीं, विश्व व्यापार भी एक दूसरे के निकट आया है। सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक और राजनीतिक संवाद तीव्र हुआ है और इसके लिए अनुवाद कार्य की अधिकाधिक आवश्यकता निर्मित हुई है। पर्यटकों, शोध करने वाले छात्रों, विद्वानों को अनुदित सामग्री चाहिए। स्वतंत्र भारत में संविधान में 14 भाषाओं को आगामी सूची में रखकर, राष्ट्रीय भाषाओं का दर्जा दिया गया था जिनकी संख्या अब 22 हो चुकी है। अंग्रेजी, संविधान की सूची में नहीं है परंतु सह राजभाषा होने के कारण महत्वपूर्ण है। अंग्रेजी आज भी उच्च शिक्षा का माध्यम है और ज्ञान विज्ञान, विधि तथा तकनीक के क्षेत्र में

आज भी अंग्रेजी ग्रंथों का वर्चस्व है। अंग्रेजी ग्रंथों का हिंदी और क्षेत्रीय भाषाओं में अनुवाद शिक्षा के लोकतंत्रीकरण के लिए आवश्यक है। इसी उद्देश्य को सामने रखकर अनुवाद शिक्षण और प्रशिक्षण की अनेक संस्थाएं कार्यरत हैं।

• विश्वविद्यालयों में अनुवाद विभाग एवं अनुवाद प्रशिक्षण :

भारत के अनेक विश्वविद्यालयों में एम.ए. अनुवाद, अनुवाद डिप्लोमा, अनुवाद-सर्टिफिकेट के लिए विभिन्न अवधियों के कोर्स चलाए जा रहे हैं। असंख्या छात्र हर वर्ष इनमें शिक्षण और प्रशिक्षण प्राप्त कर अनुवाद कार्य में सहायता कर रहे हैं।

• निजी संस्थाओं द्वारा प्रशिक्षण :

अनुवादकों की बढ़ती मांग को पूरा करने के लिए देश भर में अनेक निजी संस्थाएं अनुवाद प्रशिक्षण कार्यक्रम चलाती है जो यू.जी.सी. द्वारा भी मान्यता प्राप्त है।

• इग्नू स्कूल ऑफ ट्रांसलेशन स्टडीज :

इग्नू स्कूल ऑफ ट्रांसलेशन स्टडीज से अनुवाद प्रशिक्षण के अनेक कोर्स चलाए जाते है। सबसे लोकप्रिय कोर्स हैं। पी.जी. डिप्लोमा इन ट्रांसलेशन। देश भर से हजारों छात्र इसके अधीन शिक्षण और प्रशिक्षण प्राप्त करते हैं।

• सरकारी संस्थान :

'केंद्रीय हिंदी संस्थान' भी यह कार्य करता है। 1950 में राजभाषा विभाग के अंतर्गत 'केंद्रीय अनुवाद ब्यूरो' स्थापित किया गया था जो 1971 में 'केंद्रीय अनुवाद ब्यूरो' बल दिया गया और गृह मंत्रालय के अधीन कार्य करता है। केंद्र में इसके अधीन 'ई लर्निंग अनुवाद प्रशिक्षण' कार्य भी प्रारंभ हुआ है। नई दिल्ली में 'सर्टिफाइड ट्रांसलेशन एजेंसी' भी अनुवाद कार्य और शिक्षण का काम करती है। दिल्ली स्थित मोडलिंग्वा सर्टिफाइड ट्रांसलेशन सर्विसेज नामक संस्था भी अनुवाद शिक्षण प्रशिक्षण और अनुवाद कार्य में लगी है।

• नेशनल ट्रेनिंग मिशन :

भारत सरकार का उपक्रम नेशनल ट्रांसलेशन मिशन (एन.टी.एम.) 'राष्ट्रीय अनुवाद मिशन' भारत का सबसे बड़ा संस्थान है जो 23 भाषाओं में अनुवाद कार्य की देखरेख, प्रशिक्षण और सामग्री तैयार करवाने का कार्य करता है। अंग्रेजी से विभिन्न विषयों की स्तरीय पुस्तकों का हिंदी तथा अन्य प्रादेशिक भाषाओं में अनुवाद का कार्य यह संस्थान करता है। नेशनल कॉलेज कमीशन में प्रो. यशपाल और सैम पैतरोपा के सुझावों से यह संस्थान स्थापित हआ और मैसूर स्थित 'सेंट्रल इंस्टीटयूट ऑफ इंडियन लेग्वेजिज' इसके केंद्रीय अभिकरण के रूप में कार्य करता है। इसका कार्य 23 भाषाओं में द्विभाषी शब्दकोष तैयार करना, थिसिस तैयार करना, मशीनी ट्रांसलेशन को बढ़ावा देना, कौन सी पुस्तकें अनुवाद के लिए राष्ट्रीय स्तर पर चुनी जाए इसका निर्णय करना और पुस्तकों का अनुवाद करवाना है।

25 सदस्यीय एक परामर्श समिति इसका कार्य देखती है। एक उप समिति कॉपी राइटस के विषय को देखती है। राष्ट्रीय अनुवाद मिशन की ओर से सर्टिफिकेट और डिप्लोमा कोर्स चलाने के प्रयास भी हो रहे हैं।

• अनुवादकों का राष्ट्रीय रजिस्टर :

एन.टी.एम. ने देश भर के अनुवादकों का रजिस्टर तैयार किया है। विभिन्न भाषाओं ने 6824 अनुवादक इसमें पंजीकृत हैं। अनुवादकों की विशेषज्ञता, अर्हता आदि का परिचय इसमें रहता है।

एन.टी.एम. ने भारतीय विश्वविद्यालयों में अनुवादकों और अनुवाद कार्यो का डाटाबेस, अनुवाद की विबलोग्राफी भी तैयार की है। इसकी वेबसाइट www.ntm.org.in है।

• राष्ट्रीय अनुवाद मिशन की उपलब्धियां :

अभी तक मिशन ने विज्ञान अर्थशास्त्र, इतिहास, विधि, गणित, अंग्रेजी, मकेनिक्स, औषध विज्ञान, राजनीति शास्त्र, मनोविज्ञान, समाज शास्त्र, दर्शन, भौतिक विज्ञान, रसायन विज्ञान आदि विषयों की 105 स्तरीय पुस्तकों का

अनुवाद विभिन्न क्षेत्रीय भाषाओं में किया है। हिंदी में ग्रीनबेल आस्टिन की पुस्तक 'The Indian Constitulation cornerstone of a nation' का अनुवाद 'भारतीय संविधान' राष्ट्र की आधारशिला शीर्षक से किया है। पल्लवी भट्‌टनागर आदि ने मिलकर 'असमान्य मनोविज्ञान' अनुदित क्रिया है। कार्बोनिक रसायन ग्रंथ भी अनुदित किया है।

• प्रशिक्षण कार्यक्रम :

एन.टी.एम. के 3 सप्ताह के अनुवाद प्रशिक्षण कार्यक्रम में पंजीकरण करवाकर कोई भी अनुवादक भाग ले सकता है। यह कार्यक्रम कार्यरत अनुवादकों में अध्यापन करने वाले तथा शौकिया अनुवाद करने में रूचि रखने वालों के लिए है। इस प्रशिक्षण के विषय अनुवाद की प्रकृति, इतिहास, सिद्धांत, साहित्यिक अनुवाद, गैर साहित्यिक अनुवाद, विज्ञान तकनीक की परिभाषिक शब्दावली, मशीनी अनुवाद, सब टाइटल डविंग, अनुवाद का स्थानीकरण और वैश्वीकरण आदि रहते हैं। प्रवेश के लिए प्रार्थना पत्र निम्न पते पर भेजना होता है।

सेंट्रल इन्स्टीच्यूट ऑफ इंडियन लेंग्वेजिज,
मानस गंगोत्री, हनसुर रोड़
मैसूर, कर्नाटक-570006

स्वयं आकलन प्रश्न

प्रश्न-1 किसी एक अनुवाद प्रशिक्षण केंद्र का नाम बताइए।

प्रश्न-2 'केंद्रीय अनुवाद ब्यूरो' की स्थापना किस वर्ष हुई थी।

प्रश्न-3 एन.टी.एम. का पूरा नाम क्या है।

प्रश्न-4 अनुवाद कार्य की देखरेख, प्रशिक्षण और सामग्री तैयार करवाने का कार्य कितनी भाषाओं में हो रहा है ?

15.4 सारांश

भारत में अनुवाद प्रशिक्षण केन्द्रों पर विचार करते हुए भारत में चल रहे अनुवाद प्रशिक्षण केन्द्रों के कार्यों पर विचार किया गया है। सरकारी संस्थाएं, निजी संस्थाएं, विश्वविद्यालय तथा औद्योगिक, व्यापारिक संस्थान अनुवाद कार्य में सहायता दे रहे हैं। भारत में राष्ट्रीय अनुवाद प्रशिक्षण संस्थान की आवश्यकता पर विचार करते हुए पाया है कि राष्ट्रपिता की भावात्मक एकता के लिए यह परमावश्यक है। विभिन्न भारतीय भाषाओं के बीच अनुवाद ही पुल बना सकता है।

15.5 कठिन शब्दावली

मूल्य - कीमत

गण - समूह

उभय - दोनों

सम - बराबर

मूल - जड़

15.6 स्वयं आकलन हेतु प्रश्नों के उत्तर

उ-1 इग्नू स्कूल ऑफ ट्रांसलेशन स्टडीज।

उ-2 सन् 1950 ई. में।

उ-3 नेशनल ट्रांसलेशन मिशन (राष्ट्रीय अनुवाद मिशन)

उ-4 23 भाषाओं में

15.7 संदर्भित पुस्तकें

(1) वासुदेवचन्द्र भाटिया, हिन्दी अनुवाद : सिद्धांत और प्रयोग, भारती भवन।

(2) सुरेश कुमार, अनुवाद सिद्धांत की रूपरेखा, वाणी प्रकाशन, दिल्ली।

(3) डॉ. कैलाशचन्द्र भाटिया, भारतीय भाषाएं और हिन्दी अनुवाद समस्या समाधान, वाणी प्रकाशन, दिल्ली।

15.8 सात्रिक प्रश्न

प्रश्न–1 अनुवाद प्रशिक्षण से क्या तात्पर्य है ? विस्तार से वर्णन कीजिए।

प्रश्न–2 भारत में अनुवाद प्रशिक्षण की क्या आवश्यकता है ? विवेचना कीजिए।

प्रश्न–3 भारत में विभिन्न अनुवाद प्रशिक्षण केन्द्रों का वर्णन कीजिए।

*****

इकाई पाठ-16
अनुवाद में राष्ट्रीय प्राधिकरण : आवश्यकता एवं भविष्य

संरचना

16.1 भूमिका

16.2 उद्देश्य

16.3 अनुवाद के राष्ट्रीय प्राधिकरण के गठन की आवश्यकता
- हिन्दी अनुवाद का भविष्य
- वर्तमान समय में अनुवाद की उपादेयत्ता
- भाषिक भूमंडलीकरण में अनुवाद की उपादेयता
- अनुवाद की महत्ता

स्वयं आकलन प्रश्न

16.4 सारांश

16.5 कठिन शब्दावली

16.6 स्वयं आकलन प्रश्नों के उत्तर

16.7 संदर्भित पुस्तकें

16.8 सात्रिक प्रश्न

16.1 भूमिका

इकाई पन्द्रह में हमने भारत में अनुवाद प्रशिक्षण के प्रमुख केन्द्र तथा अनुवाद प्रशिक्षण केन्द्रों की आवश्यकता का गहन अध्ययन किया। इकाई सोलह में हम अनुवाद के राष्ट्रीय प्राधिकरण के गठन की आवश्यकता, हिन्दी अनुवाद का भविष्य, वर्तमान समय में अनुवाद की उपादेयता, भाषिक भूमंडलीकरण में अनुवाद की उपादेयता तथा अनुवाद की महत्ता का विस्तारपूर्वक अध्ययन करेंगे।

16.2 उद्देश्य

इकाई सोलह का अध्ययन करने के पश्चात् हम यह जानने में सक्षम होंगे कि -

1. अनुवाद के राष्ट्रीय प्राधिकरण के गठन की आवश्यकता क्यों पड़ी ?
2. हिन्दी अनुवाद का भविष्य क्या है ?
3. वर्तमान समय में अनुवाद की उपादेयता क्या है ?
4. भूमंडलीकरण में अनुवाद की उपादेयता क्या है ?
5. अनुवाद की महता क्या है ?

16.3 अनुवाद के राष्ट्रीय प्राधिकरण के गठन की आवश्यकता

भारत भाषिक दृष्टि से विविधताओं का देश है। भारत के विविध भाषा-भाषी समाजों में संपर्क और सद्भाव बनाए रखने के लिए इनकी भाषाओं में सतत् संवाद स्थापित करने की आवश्यकता है। आधुनिक युग ज्ञान के विस्फोट का युग है। विश्व ज्ञान आधारित समाजों की ओर बढ़ रहा है। पूरा विश्व ज्ञान के आधार पर दो खेमों में बंट रहा है। एक खेमा ज्ञान का उत्पादन करने वाले देशों का होगा जो संपन्न, शक्तिशाली और ज्ञानवान होने के कारण शासन करेंगे। दूसरा खेमा ज्ञान के उपभोक्ता राष्ट्रों का होगा जो उन्नत राष्ट्रों द्वारा उत्पन्न ज्ञान का उपयोग करेंगे और उसकी कीमत रॉयल्टी के रूप में चुकाते रहेंगे और गरीबों की रेखा के नीचे चले जाएंगे। भारत को ज्ञान आधारित समाज के रूप में विकसित करने के लिए आवश्यक है कि उपलब्ध ज्ञान के भंडार को आम आदमी तक उसकी भाषा में पहुंचाया जाए।

इसके लिए एन.टी.एम. से भी बड़े और सशक्त राष्ट्रीय प्राधिकरण की आवश्यकता स्वयंसिद्ध है। भारतीय भाषाओं को समृद्ध करने के लिए भी ऐसे ही किसी अभिकरण की आवश्यकता है। साहित्य अकादमी दिल्ली ने भी भारतीय भाषाओं से हिंदी में और हिंदी से भारतीय भाषाओं में अनुवाद के लिए सर्वप्रथम 151 पुस्तकें चुनी थीं अब उनकी संख्या निरंतर बढ़ती जा रही है। नेशनल बुक ट्रस्ट भी सह साहित्य को बढ़ावा देने के पुस्तकें तैयार करवाती रही है। यह पुस्तकें सामान्य पाठकों और पुस्तकालयों के लिए है।

• हिंदी अनुवाद का भविष्य :

इक्कीसवीं सदी निश्चय भी भूमंडलीकरण, वैश्वीकरण, साइबर कैफे और आर्थिक उदारीकरण की कहलाएगी। इस युग में भारत भी विश्व के विकसित राष्ट्रों की पंक्ति में खड़े होने के लिए अपनी अर्थव्यवस्था, समाज-व्यवस्था और शिक्षा व्यवस्था में बड़े परिवर्तन कर रहा है। कहावत है कि वर्तमान से स्वतंत्र कोई भविष्य नहीं होता। वर्तमान में भविष्य की स्थिति के बीज छुपे रहते हैं। आज हिंदी की जो स्थिति है उसके समक्ष विकास की जो संभावनाएं खुली हैं उन्हीं का आंकलन करते हुए हम इसके भविष्य का अनुमान लगा सकते हैं। हर प्राणी अपने भविष्य के लिए योजनाएं बनाता है, भविष्य की चिंता करता है और यदि संभव हो तो अपना भविष्य जानना भी चाहता है। सच्चाई तो यह है कि कोई भी समाज पैदा तो अतीत में होता है, जीता वर्तमान में है परंतु देखता सदा भविष्य की ओर है। हिंदी में वर्तमान स्थिति का आंकलन आवश्यक है।

भारत 125 करोड़ लोगों की विविधताओं से भरा देश है। संविधान की आठवीं अनुसूची में 22 राष्ट्रीय भाषाओं का उल्लेख है। पांच हजार से अधिक बोलियां यहां बोली जाती हैं। हजारों भाषा-समाज यहां रहते हैं। हिंदी को भारतीय संविधान में केंद्र की राजभाषा का दर्जा दिया है और हिंदी भाषी प्रदेशों में यह सरकारी काम काज की भाषा भी है। संसद् तथा विधानसभाओं में इसका आज प्रयोग होता है। एक बड़े भूभाग में यह माध्यमिक और उच्च शाखा का माध्यम भी है। भारत के 40 प्रतिशत से अधिक लोगों की मातृभाषा अथवा प्रथम भाषा है। 10 प्रतिशत से अधिक लोगों की दूसरी भाषा है। भारत के हर कोने में इसे बोलने और समझने वाले मिल जाएंगे। यह अधिकांश भारतीयों की संपर्क भाषा भी है। सेना में इसका व्यवहार होता है यद्यपि कहीं कहीं रोमन लिपि में इसे लिखा जाता है। भारत में यूरोपीय, द्रविड़, मंगोल और चीनी-तिब्बती परिवारों की भाषाओं का प्रचलन है। 98 प्रतिशत लोग योरोपीय और द्रविड़ परिवार की भाषाएं बोलते हैं। संस्कृत का प्रभाव सभी पर है। हिंदी को संस्कृत की बड़ी बेटी कह सकते हैं। आधुनिक भारतीय भाषाओं में हिंदी सर्वोपरि है। विश्व का हर हर झूठा व्यक्ति भारतीय मूल की किसी न किसी भाषा को प्रयोग करता है। भाषिक दृष्टि से भारत अत्यंत समृद्ध है।

भारतीय बहुभाषी देश है इसलिए यहां अनुवाद की आवश्यकता स्वयंसिद्ध है। प्राचीनतम काल में संस्कृत ज्ञान-विज्ञान और संचार-संपर्क की भाषा रही है।, प्राचीन तीर्थ स्थानों, धर्मशालाओं और पर्यटक स्थलों पर निश्चय ही दुभाषिए अनुवाद रहे होंगे जो संस्कृत को स्थानीय भाषा में अनुदित करने का काम करने होंगे। संस्कृत के सारे श्रेष्ठ ग्रंथ भारत की सभी प्रमुख भाषाओं में प्राचीनकाल से अनुदित होते आए हैं। रीतिकाल तक यह परंपरा निरंतर चलती रही। विदेशी भाषाओं में फारसी, अंग्रेजी में भी संस्कृत का प्राचीन साहित्य और हिंदी का मध्यकालीन साहित्य अनुदित हुआ। अमीर खुसरो जैसा महान भाषाविद फारसी, हिंदी, संस्कृत का प्रयोग सहजता से करता था।

हिंदी अनुवाद का भविष्य उज्ज्वल है। ऐसा मानने के अनेक कारण हैं। हिंदी का साहित्य अत्यंत समृद्ध है। भारत के अन्य भाषा-भाषी और विश्व के अन्य लोग इसे पढ़ना चाहते हैं। बड़ी मात्रा में हिंदी कविता, कहानी, उपन्यासों का अनुवाद अपेक्षित है। भारत के बाहर भारतीयों का एक बड़ा वर्ग है जो भारतीय साहित्य में रूचि रखता है और अंग्रेजी आदि भाषाओं में पढ़ने में आसारी महसूस करता है। साहित्यिक अनुवाद बढ़े हैं। साहित्यिक कृतियों के अनुवाद हिंदी से अन्य विश्व भाषाओं में अधिकाधिक होने लगे हैं क्योंकि वैश्वीकरण के दौर में विश्व मानवता एक दूसरे के निकट आई है। आवागमन और सूचना प्रौद्योगिकी के असीम विकास के कारण स्थानों की दूरियां प्राय: मिट गई हैं। विश्व-संस्कृतियां आज जितनी एक दूसरे के निकट है उतनी निकटता उन्हें मानवता के इतिहास में पहले कभी प्राप्त

नहीं थी। सांस्कृतिक आदान प्रदान अतीत में भी होता था परंतु वह सीमित था। व्यापारी, धर्म-प्रचारक, साहित्यिक यात्री अथवा सैनिक अभियानों के माध्यम से संस्कृतियों का मेल होता था। आज तो टी.वी. और इंटरनेट पर विश्व संस्कृतियां हर क्षण एक दूसरे से गले मिलती है। संस्कृतियां जब एक दूसरे के निकट आती हैं तो एक दूसरे को प्रभावित करती हैं। संस्कृतियां एक दूसरे के साथ-साथ समानांतर रेखाओं में नदियों की तरह नहीं बहतीं। आज के युग में सांस्कृतिक आदान प्रदान बड़े पैमाने पर हो रहा है। हिंदी रचनाओं के अनुवाद इसमें अपनी भूमिका निभा रहे हैं। हिंदी न केवल भारत में बल्कि वैश्विक स्तर पर संपर्क की भाषा बन रही है। यू. एन.ओ. में अब हमारे प्रतिनिधि हिंदी में बोलने लगे हैं। विश्व मंचों पर प्रधान मंत्री मोदी जिस सहजता से हिंदी में वार्तालाप करते हैं उससे हिंदी में अनुवाद को बढ़ावा मिला है।

वैश्वीकरण के दौर में हिंदी का भविष्य उज्ज्वल है। इस दौर में आर्थिक उदारीकरण के चलते पूरा विश्व एक बड़ा बाजार बन गया है। बहुराष्ट्रीय कंपनियां कहीं भी अपना सामान बना सकती है, बेच सकती है। भारत आज विश्व की चौथी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था है। 125 करोड़ की आबादी वाला भारत आज विश्व के सामान के लिए सबसे बड़ी मंडी है। विश्व के सभी देश यहां अपने कार्यालय स्थापित कर रहे हैं, कारखाने लग रहे हैं और अपना माल बेच रहे हैं। सामान बेचने के लिए विज्ञापन की जरूरत रहती है। भारत के पचास प्रतिशत क्षेत्र में हिंदी विज्ञापन ही देखे समझे जाते हैं। शेष क्षेत्रों में भी हिंदी की सहायता अपेक्षित है। परिणामस्वरूप हिंदी अनुवादकों की आवश्यकता रही है। बिक्री योग्य सामान के साथ जो सूचनाएं सामग्री विषयक विशेषताएं पैकेट पर छापी जाती हैं वह हिंदी के साथ-साथ अन्य प्रादेशिक भाषाओं में रहती हैं। अनुवादक की भूमिका यहां भी महत्वपूर्ण है।

आज विश्व का सबसे अधिक विकसित होने वाला व्यवसाय पर्यटन है। ज्ञान-विज्ञान के अद्‌भुत विकास ने मनुष्य के समय और और शक्ति को बचाया है। आज विकसित मानव के पास घूमने-फिरने के लिए, पर्यटन के लिए पैसा और समय है। पर्यटन के विकास से अनवुाद गहरे में जुड़ा है। विदेशी पर्यटक, दुभाषिएं की सहायता लेते ही हैं। पर्यटन एजेंटों का व्यवसाय चमक रहा है। विदेशी भी भारतीय भाषाएं अधिक से अधिक सीख रहे हैं। हिंदी को सर्वाधिक लोग सीखना चाहते हैं। विश्व के सभी बड़े विश्वविद्यालयों में हिंदी विभाग पनप रहे हैं। हिंदी अनुवादक तैयार किए जा रहे हैं। चीन जैसे देश में भी हिंदी सीखने की होड़ है।

आज का विश्व सूचनाओं के आदान-प्रदान की दृष्टि से 'साइबर कैफे' बनता जा रहा है। विश्व में कहीं भी, कभी भी घटित होने वाली किसी घटना को वास्तविक समय में विश्व भर में प्रचारित, प्रदर्शित किया जा सकता है। सूचनाओं के अधिक प्रचार-प्रसार के लिए अनुवादकों की जरूरत है। हिंदी के अनुवादक बड़ी संख्या में विश्व के सूचना प्रौद्योगिकी तथा मीडिया में लगे हैं उनकी मांग बढ़ती जा रही है। विश्व में हिंदी अनुवाद और अनुवादकों का भविष्य निश्चत ही उज्जवल है।

पर्यटन और जन संचार माध्यमों के साथ मनोरंजन का एक बड़ा क्षेत्र हिंदी अनुवादों की मांग करता है। भारत में सैकड़ों देसी-विदेशी चैनल अपने कार्यक्रम हिंदी में देने लगे हैं ताकि अधिकाधिक लोगों तक पहुंच सकें। अंग्रेजी तथा अन्य भाषाओं के कार्टून, फिल्में, हिंदी में डब होने लगी हैं और हिंदी के धारावाहिक तथा दूरदर्शन कार्यक्रम विश्व की अन्य भाषाओं में ध्वन्यान्तरित (डब) होने लगे हैं। हिंदी अनुवाद का भविष्य, वैश्वीकरण की प्रगति पर टिका है। भारत में प्रादेशिक भाषाओं की मनोरंजन सामग्री हिंदी में और हिंदी के कार्यक्रम अन्य भाषाओं में प्रसारित होने लगे हैं। अनुवादक की आवश्यकता यहां भी है।

वैश्वीकरण के इस दौर में पूरा विश्व यह मानता है कि भारत का मध्यम वर्ग, विश्व का सबसे बड़ा उपभोक्ता वर्ग है जहां व्यापार की अधिक संभावनाएं हैं। यह प्रामाणिक तथ्य है कि बाज़ार की भाषा, उपभोक्ता की भाषा होती है, उत्पादक अथवा वितरण नहीं। यदि किसी को अपना सामान बेचता है तो उसे लोगों की जुबान में बात करनी होगी। टी.वी. पर आ रहे 90 प्रतिशत विज्ञापन हिंदी अथवा प्रादेशिक भाषाओं में है जो सिद्ध करते हैं कि बहुराष्ट्रीय कंपनियों को अपना माल बेचने के लिए हिंदी और प्रादेशिक भाषाओं में ही विज्ञापन और व्यापार करना होगा। हिंदी अनुवाद के लिए यहां भी अधिक संभावनाएं हैं।

विश्व पटल पर भारत का महत्व एक महाशक्ति के रूप में उभर रहा है। भारत की अद्‌भुत प्रगति से विश्व चमत्कृत है। भारत का विश्व में सम्मान बढ़ा है और भारत को जानने और समझने की इच्छा भी बढ़ी है। भारत में आकर शिक्षा ग्रहण करने वाले छात्रों की संख्या भी बढ़ रही है। अफ्रीका और मध्य पूर्व एशिया से अनेक छात्र यहां आ रहे हैं। अनुवाद के माध्यम से यहां के ज्ञान तक पहुंच रहे हैं।

निश्चय ही हिंदी भाषा का प्रचार-प्रसार बढ़ा है और इसके साथ ही हिंदी अनुवादकों की मांग भी बढ़ी है। हिंदी को मानक रूप देकर और इसके शब्द भंडार विशेष वैज्ञानिक-तकनीक परिभाषिक शब्दों को तैयार कर हम हिंदी की स्वीकार्यता बढ़ा सकते हैं और हिंदी से अंग्रेजी तथा अंग्रेजी से हिंदी अनुवाद को अधिक प्रामाणिक और ग्राह्य बना सकते हैं। हिंदी का मानकीकरण, सरलीकरण और कम्प्यूटरीकरण इसे अधिकाधिक ग्राह्य बना रहा है। इसके अनुवाद की आवश्यकता और क्षमता को विकसित कर रहा है। हिंदी अनुवादों और अनुवादकों का भविष्य उज्ज्वल है। कोई कह सकता है, भविष्य बनाना तो ज्योतिषियों का काम है परंतु होनहार पूत के पांव तो पालने में ही दिख जाते हैं यह भी तो सत्य है।

प्रस्तुत पाठ में हमने भारत के अनुवाद प्रशिक्षण केंद्रों पर विचार करते हुए इस पाठ में भारत में चल रहे अनुवाद प्रशिक्षण केंद्रों के कार्य पर विचार किया है। सरकारी संस्थाएं, निजी संस्थाएं, विश्वविद्यालय तथा औद्योगिक, व्यापारिक संस्थान अनुवाद कार्य में सहायता दे रहे हैं। भारत में राष्ट्रीय अनुवाद प्रशिक्षण संस्थान की आवश्यकता पर विचार करते हुए हमने पाया कि राष्ट्रीय की भावात्मक एकता के लिए यह परमावश्यक है। विभिन्न भारतीय भाषाओं के बीच अनुवाद ही पुल बना सकता है। विश्व की भाषाओं और भारतीय भाषाओं के बीच भी अनुवाद पुल बनाता है।

भारत में अनुवाद के भविष्यपर विचार करते हुए हमने पाया कि भारत में अनुवाद की अमित संभावनाएं हैं और भारतीय सामाजिक, सांस्कृतिक और राजनीतिक ढांचे में अनुवाद का अत्यधिक महत्व है।

● वर्तमान समय में अनुवाद की उपादेयता

अनुवाद आधुनिक युग की मांग की उपज हैं। संसार में ज्ञान असीम है और उस असीम ज्ञान को अर्जित करने के लिए जीवन सीमित है। यह भी सत्य है कि संसार का समग्र ज्ञान-विज्ञान किसी एक भाषा में समाहित नहीं है। वह तो सैंकड़ों भाषा में फैला हुआ है। यह कहना भी असंगत नहीं होगा कि समय, श्रम, धन एवं प्रतिभा की सीमाओं के कारण मनुष्य को संसार की सभी भाषाओं को सीखना असंभव है। अत: वह संसार की समग्र भाषाओं में स्थित ज्ञान-विज्ञान तक कैसे पहुंचे ? अनुवाद का महत्व इसी प्रश्न के उत्तर में निहित है। एक पहलू यह भी है कि मानव जीवन के अभाव की पूर्ति एवं जिज्ञासाओं की प्राप्ति के प्रयास के रूप में अनुवाद का जन्म हुआ।

अनुवाद की उपादेयता का प्रतिपादन करते हुए रामचंद्र वर्मा लिखते हैं ''आधुनिक हिंदी गद्य साहित्य का आरम्भ ही वस्तुत: अनुवादों में हुआ था। ऐसा होना प्राय: अनिवार्य भी था और अनेक अंशों में उपयोगी तथा आवश्यक भी। आजकल किसी नई भाषा को अपने पैरों पर खड़ा होने के समय दूसरी भाषाओं का सहारा लेना ही पड़ता है और स्वतंत्र साहित्य की रचना का युग प्राय: अनुवाद युग के बाद ही आता है। पहले दूसरी भाषाओं के अच्छे-अच्छे अनुवाद प्रस्तुत होते हैं। उन अनुवादों की सहायता में पाठकों का ज्ञान बढ़ता और उनकी आँखें खुलती है। भारतीय साहित्य का इतिहास विश्व भर में सर्वाधिक प्राचीन, प्रौढ़ और कालमय है। साहित्यिक आदान प्रदान तथा राष्ट्रीय चेतना को विकास के लिए भी अनुवाद एक सशक्त उपादान है। आदान-प्रदान की प्रक्रिया जीवन के सभी क्षेत्रों में निरंतर होती है। इस प्रक्रिया में ही मनुष्य सुसंस्कृत, सुबुद्ध एवं समृद्ध हो सकता है। भाषा के क्षेत्र में भी इस प्रक्रिया का महत्व कम नहीं है। इसी प्रवाह में भाषा की समृद्धि होती है। शब्द सम्पदा की अभिवृद्धि के साथ उसकी अभिव्यंजना क्षमता भी पुष्ट होती है। इस संदर्भ में रामचद्र वर्मा 'अच्छी हिंदी' नामक पुस्तक में लिखते है- ''जब भाषा पूर्ण रूप में पुष्ट तथा साहित्य परम उन्नत हो जाती है, तब भी अनुवादों की आवश्यकता बनी ही रहती है। अन्यान्य भाषाओं में जो अनेक उत्तमोत्तम ग्रन्थ प्रकाशित होते हैं, उनके अनुवाद भी लोगों को अपनी भाषा में प्रकाशित करने ही पड़ते हैं। यदि ऐसा न हो तो एक भाषा के पाठक दूसरी भाषाओं के अच्छे-अच्छे ग्रंथों और उनमें प्रतिपादित विचारों तथा सिद्धांतों के ज्ञान से वंचित ही रह जाए। उस अवस्था में पहुँचने पर भाषा साहित्यों में परस्पर होड़ सी होने लगती है।

स्वयं को दूसरों के सामने प्रकट करना तथा दूसरों के बारे में कुछ तो जानने की जिज्ञासा रखना मनुष्य का स्थायी भाव होता है जिसके लिए उसे भाषा की आवश्यकता होती है। परन्तु स्थिति यह है कि दुनिया के सभी देश की भाषाएँ भिन्न-भिन्न मिलती है, जिससे संपर्क बनाये रखना कठिन होता है। अतः अनुवाद के माध्यम से ही संपर्क किया जा सकता है। वही दूसरी और अनुवाद ज्ञानात्मक तथा विज्ञानार्जन का मुख्य साधन है। सभी प्रकार की, देश-विदेश की ज्ञानात्मक सामग्री हमें अनुवाद के कारण ही उपलब्ध हो सकती है।

अनुवाद भाषा समृद्धि का साधन है। अनुवाद से स्रोत भाषा की विशेषताएं, उसकी अभिव्यंजना, शब्द शक्तियां, कहावतें, मुहावरे तथा शैली का भी बोध होता है। इस संदर्भ में डॉ. पी. जयरामन का कथन है- ''भाषा तथा उसके साहित्य की प्रवृतियों से परचित होने का एकमात्र साधन अनुवाद है''। भाषिक समृद्धि के साथ-साथ अनुवाद में साहित्यिक समृद्धि भी होती है। आज अनुवाद के कारण ही मराठी, कन्नड़, तमिल, तेलगु, मलयालम, बंगला तथा गुजराती जैसी अनेक भारतीय भाषों का साहित्य हिंदी में उपलब्ध है।

अध्ययन तथा अनुसंधान २०वीं शताब्दी के ज्ञानात्मक क्षेत्र की चरम उपलब्धियां हैं। अब संसार की अनेक भाषाओं के अध्ययन एव अनुसंधान का लाभ एक दूसरे को हो रहा है। प्रत्येक देश एक दूसरे के ज्ञानात्मक तथा विज्ञानात्मक अध्ययन से और शोधकार्य से लाभान्वित हो रहा है। इसके साथ ही साहित्यिक, सामजिक और वैज्ञानिक आदि सामग्री के तुलनात्मक अध्ययन का एक नया आयाम खुल गया है। यह अनुवाद का ही चमत्कार है कि अंतर्राष्ट्रीय साहित्य का अध्ययन और अध्यापन भारतीय भाषाओं में संभव हुआ है। इसके कारण ही हम टॉल्सटॉय उपन्यासों और शेक्सपियर के नाटकों से परिचित हुए है। अनुवाद के माध्यम से कामू, सात्र और बैकेट से लेकर पाब्लो नेरुदा तक की रचनाओं में भारतीय पाठक लाभान्वित हैं। अनुवाद ने न केवल पाठकीय रूचि को अंतर्राष्ट्रीय आस्वाद प्रदान है बल्कि अध्ययन और अनुसंधान को नई दिशाएं भी दी हैं।

राष्ट्रीय एकता वर्तमान काल की अनिवार्य आवश्यकता है। भारत जैसे बहु-प्रांतीय राष्ट्र में अनेक भाषा-भाषी बसे होने के कारण उनमें अनेकरूपता मिलना स्वाभाविक ही है। जाति, धर्म, वर्ग, व्यवसाय, भाषा तथा प्रदेश आदि भिन्न-भिन्न होते हुए भी राष्ट्रीय एकता को अनुवाद के द्वारा ही स्थापित किया जा सकता है। एक प्रदेश के समाज, साहित्य एव संस्कृति आदि को दूसरे प्रदेश के लोग अनुवाद के जरिए ही समझ सकते है। अनुवाद ही उन्हें एक दूसरे के करीब ला सकता है। अतः अनुवाद राष्ट्रीय एकता के संरक्षण एवं संवर्द्धन का एक महत्वपूर्ण साधन हैं।

आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी जी ने अनुवाद की महत्ता को स्पष्ट करते हुए हिंदी साहित्यकारों को उत्तमोत्तम ग्रंथों का अनुवाद हिंदी में करने के लिए अनुप्राणिक किया था। 'सरस्वती' पत्रिका में उनके विचार इस प्रकार हैं- ''जैसे अंग्रेजो ने ग्रीक और लैटिन भाषा की सहायता से अंग्रेजी की उन्नति की और उन भाषाओं के उत्तमोत्तम ग्रंथों का अनुवाद करके अपने साहित्य की शोभा बढ़ाई, वैसे ही हमको भी करना चाहिए''। द्विवेदी जी के कथन में एक विचार स्पष्ट है कि अनुवाद एक ऐसा सशक्त उपादान है जिसके माध्यम से नई विधाओं के पथ प्रशस्त हो जाते हैं और विद्यमान विधाओं को पोषण मिलता है। अनुवाद की यह उपादेयता विशेष स्मरणीय है।

● भाषिक भूमंडलीकरण में अनुवाद की उपादेयता

भूमंडलीकरण एक आर्थिक, राजनीतिक, सामाजिक और सांस्कृतिक प्रक्रिया है। इस प्रक्रिया में भौगोलिक दूरी का संकुचन होता है और राष्ट्र राज्य की सीमा की भावना समाप्त प्रायः हो जाती है। भूमंडलीकरण का संबंध आर्थिक उदारीकरण और निजीकरण से है। भूमंडलीकरण की अवधारणा के संबंध में आर्थिक, राजनीतिक एवं समाजशास्त्रीय पहलुओं पर तो काफी विचार हुआ है परंतु भाषापरक संदर्भो पर बहुत कम विचार हुआ है। कहा जा सकता है कि भूमंडलीकरण का भाषिक आयाम उपेक्षित-सा रहा है।

भाषिक भूमंडलीकरण शब्द 'भाषिक' और 'भूमंडलीकरण' के योग से बना है। इसमें देखा गया कि भूंमडलीकरण के आर्थिक, राजनीतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक और प्रौद्योगिकीपरक आयामों से कई भाषाई समस्याएँ उत्पन्न हुई हैं क्योंकि भूमंडलीकरण की प्रक्रिया में भाषाओं का विशेष महत्व रहता है। इस प्रकार, भाषिक

भूमंडलीकरण से अभिप्राय आज के विश्व समाज में भाषा की विभिन्न भूमिकाओं का विस्तार है, जो विश्व बाजार की स्थापना के लिए महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाता है और जो वाणिज्यीकरण तथा अंतर्राष्ट्रीयकरण के द्वारा सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण स्थान प्राप्त कर लेता है। भूमंडलीकरण के द्वारा विश्व ग्राम की तो संकल्पना अद्‌भुत हुई है, उसमें भाषाओं की भी विशिष्ट भूमिका रहती है। इन भाषाओं में से एक भाषा अन्य भाषाओं को पीछे छोड़कर आगे बढ़ जाती है। ऐसी भाषा के विभिन्न आयामों का अध्ययन भाषिक भूमंडलीकरण है।

आज संपूर्ण संसार एक छोटे से गाँव के रूप में बदलता जा रहा है। सूचना प्रौद्योगिकी की क्रांति ने हमें एक ऐसे मुकाम पर पहुंचा दिया है जहाँ से विश्व के एक कोने से दूसरे कोने में संपर्क साधना अत्यधिक सुगम हो गया है। आज संपूर्ण विश्व में आपसी सहयोग, व्यापार और सांस्कृतिक आदान-प्रदान का बड़ी तेजी से विकास हो रहा है। नए-नए शोध एवं ज्ञान का विपुल भंडार। आज किसी एक देश तक सीमित नहीं रह गया है, बल्कि यह निरंतर विश्व के कोने-कोने में अनुवाद के माध्यम से पहुँच रहा है। आज व्यापार, पर्यटन उद्योग, चिकित्सा, प्रौद्योगिकी, साहित्य तथा सांस्कृतिक संबंधों में जितनी तेजी से विकास हो रहा है उतनी ही तेजी से अनुवाद की आवश्यकता बढ़ती जा रही है। भारत जैसे बहुभाषी देश में तो अनुवाद के बिना विकास की बात करना अर्थहीन-सा है। यहाँ के जन-जन तक पहुंचने के लिए अनुवाद की अत्यंत उपादेयता है।

वाणिज्य-व्यापार में अनुवाद : प्राचीनकाल से ही अनुवाद देश-विदेश में वाणिज्य और व्यापार के क्षेत्र में अत्यंत उपयोगी रहा है। प्राचीनकाल से ही भारत, अरब, चीन और यूरोप में व्यापारी लोग अपने व्यापार के लिए देश-विदेश जाया करते थे और अनुवाद के सहारे ही अपना व्यापार और वाणिज्य करते थे। प्रो. कृष्ण कुमार गोस्वामी के अनुसार, ''स्वतंत्र भारत में वित्त तथा वाणिज्य क्षेत्रों की विभिन्न संस्थाओं का राष्ट्रीयकरण होने से जनता की भाषा में ही जनता के लिए कार्य करने के उपाय खोजे गए, जिनके परिणामस्वरूप मुद्रित फार्मों, चालानी, जमा रशीदों तथा अन्य प्रलेखों, कागज़ातों का अंग्रेजी में क्षेत्रीय तथा हिंदी भाषा में अनुवाद का महत्ता को समझते हुए बढ़ावा दिया जाने लगा।'' (अनुवाद विज्ञान की भूमिका, पृ. 486) आज भी व्यापारी अपने उत्पादनों और वस्तुओं की गुणवत्ता तथा उनके क्रय-विक्रय के संवर्धन के लिए अनुवाद का ही सहारा लेते हैं। इसके अतिरिक्त, अंतर्राष्ट्रीय बाज़ार में उत्पादों और माल को खपाने की प्रतिस्पर्धा में आगे बढ़ने के लिए भी अनुवाद का महत्त्व बढ़ जाता है। इस प्रकार भूमंडलीकरण और उदारीकरण में अनुवाद ने अपनी सीमाओं को पार कर विभिन्न कार्यक्षेत्रों में अपनी उपादेयता में वृद्धि कर ली है।

जनसंचार माध्यमों में अनुवाद : संचार माध्यम जीवन की गति को प्रमाणित करने वाले सबसे जीवंत और कारगर साधन हैं। विज्ञान, वाणिज्य, उद्योग, शिक्षा, प्रशासन और आर्थिक गतिविधियों में सर्वत्र ही संचार सक्रिय है। प्रो. कृष्ण कुमार गोस्वामी के अनुसार, ''देश और काल की दूरियों को समाप्त करते हुए इन संचार माध्यमों ने संपूर्ण विश्व को एक-दूसरे के निकट पहुंचाने का कार्य किया है। अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर विभिन्न राष्ट्रों के बीच राजनीतिक, आर्थिक, वैज्ञानिक और प्रौद्योगिकी तथा साहित्यिक और सांस्कृतिक स्तर पर बढ़ते हुए आदान-प्रदान के कारण अनुवाद कार्य की अनिवार्यता और महत्ता की नई चेतना प्रबल रूप से विकसित हुई है। भूमंडलीकरण के परिप्रेक्ष्य में यह कहना उचित ही प्रतीत होता है कि अनुवाद की एक व्यापक तवा एक सीमा तक अनिवार्य और तर्कसंगत स्थिति है।'' (अनुवाद वितान की भूमिका, पृ 59)

संचार माध्यमों की प्रिंट और इलेक्ट्रॉनिक मीडिया की कार्य प्रणाली में अनुवाद का अपरिहार्य महत्व है। दुनिया के कोने-कोने से एकत्र सूचना को पाठकों, श्रोताओं और दर्शकों को उनकी भाषा में पहुंचाने में अनुवाद ही माध्यम बनता है। समाचार एजसियों कुछ प्रमुख भाषाओं में समाचार प्रस्तुत करती है, जिन्हें अखबार, रेडियो तथा टेलीविजन उन्हें अपनी जरूरतों के अनुसार भाषातंरित कराते हैं। समाचारों के अतिरिक्त सूचनाओं, विज्ञापनों, संदेशों आदि के अनुवाद भी किए जाते हैं। भारत जैसे बहुभाषी देश में संचार माध्यमों को विभिन्न प्रादेशिक भाषाओं में समाचार तथा महत्त्वपूर्ण सूचनाओं का अनुवाद करना पड़ता है। वास्तव में इन माध्यमों का तंत्र काफी हद तक अनुवाद पर आश्रित होता है।

विश्व संस्कृति में अनुवाद : विश्व की सभ्यताओं और संस्कृतियों के विकास में अनुवाद की विशेष भूमिका रही है। उन्हें जानने-समझने के लिए अनुवाद को माध्यम बनाना हमारी नियति है। यूनान, मिस्त्र, चीन आदि की प्राचीन सभ्यताओं से भारत का घनिष्ठ संबंध रहा है और इस संबंध में अनुवाद की विशेष महत्ता रही है। बौद्ध धर्म का समूचे एशिया में प्रचार-प्रसार अनुवाद की जीवंत परपरा का ही परिणाम है। गीता, बाइबिल, कुरान तथा उपनिषद् आदि के ज्ञान के अनुवाद से विश्व अत्यधिक लाभान्वित हुआ है। बौद्ध धर्म के माध्यम से भारतीय ग्रंथों का अनुवाद चीनी और अन्य एशियाई भाषाओं में हुआ। पंचतंत्र के लघु संग्रहों का अनुवाद अरबी तथा अन्य यूरोपीय भाषाओं में हुआ। इससे साहित्य और कला की विश्व चेतना का विकास हुआ। विश्व की सांस्कृतिक एकता में इसकी आवश्यकता निश्चित रूप में सिद्ध हो जाती है। मनुष्य ने बहुभाषिक स्थिति में विडंबनाओं से बचने के लिए इसका आविष्कार किया था। अनुवाद के माध्यम से सार्वभौमिक, ऐतिहासिक और सामाजिक एकता के दर्शन होते हैं।

विश्व साहित्य में अनुवाद : भारत की महान परंपराओं एवं अपार ज्ञान राशि का लाभ विश्व ने उठाया है। संस्कृत ग्रंथों और हमारे चिंतन एवं आध्यात्मिक वर्चस्व की विश्व में जो धूम मची है, उसका श्रेय अनुवाद को ही जाता है। आज भी विश्व स्तर पर अपनी उपलब्धियों को बताने के लिए भी अनुवाद एक श्रेष्ठ माध्यम है। अनुवाद से हम विश्व साहित्य से भी परिचित होते हैं। आज भारत विश्व में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है, विशेष रूप से दक्षिण एशिया में तो भारत का अत्यंत प्रभाव दिखाई देता है। अतः इस समग्र क्षेत्र में आपसी भाव एवं मैत्री सौहार्द को बनाए रखने के लिए अनुवाद एक अनिवार्य आवश्यकता बन गया है।

शिक्षा में अनुवाद : अनुवाद का शिक्षा के क्षेत्र में भी महत्त्व है। विश्व स्तर पर प्राप्त ज्ञान को शिक्षा में समाहित करना अनुवाद से ही संभव है। हम अपनी शिक्षा व्यवस्था में विश्व स्तर पर हो रहे परिवर्तनों को शामिल करते हुए अपनी शिक्षा व्यवस्था में हो रहे अनुसंधानों को भी जान सकते हैं।

ज्ञान-विज्ञान में अनुवाद : ज्ञान-विज्ञान के विभिन्न क्षेत्रों में अनुवाद का महत्त्वपूर्ण योगदान मिलता है। ज्ञान के संचार और संरक्षण में यह एक महत्त्वपूर्ण साधन के रूप में उभरा है। आज भूमंडलीकरण के कारण तेजी से बदलते हुए विश्व में प्रौद्योगिकी, चिकित्सा, कृषि आदि क्षेत्रों में हो रहे नए-नए आविष्कारों और अनुसंधानों से जुड़े रहने के लिए अनुवाद सबसे बड़ा साधन है। ''न्यूटन के गुरुत्वाकर्षण सिद्धांत, डॉर्विन के विकासवाद, फ्रॉयड के मनोविश्लेषणवाद और कार्ल मार्क्स के द्वंद्वात्मक भौतिकवाद की जानकारी अनुवाद से ही प्राप्त हुई है और इससे समूचा विश्व प्रभावित हुआ है।'' (अनुवाद सिद्धांत की रूपरेखा, डॉ. सुरेश कुमार, पृ. 21) रूसी, जर्मनी, फ्रांसीसी, अंग्रेजी आदि विभिन्न भाषाओं से विज्ञान, कंप्यूटर और प्रौद्योगिकी का विश्व-भर में प्रचार-प्रसार हुआ। इस परमाणु शक्ति के युग में प्रत्येक शक्तिशाली राष्ट्र अन्य राष्ट्रों की सामरिक गतिविधियों पर पूरी-पूरी निगरानी रख सकता है और ऐसी स्थिति में अनुवाद का महत्व बढ़ जाता है। वास्तव में विश्व की कम होती दूरियों में अनुवाद की उपयोगिता, प्रासंगिकता और महत्व में वृद्धि हो रही है।

• अनुवाद की महत्ता

उत्तर-आधुनिक युग में अनुवाद की महत्ता व उपादेयता को विश्वभर में स्वीकारा जा चुका है। वैदिक युग के पुनः कथन से लेकर आज के ट्रांसलेशन तक आते-आते अनुवाद अपने स्वरूप और अर्थ में बदलाव लाने के साथ-साथ अपने बहुमुखी व बहुआयामी प्रयोजन को सिद्ध कर चुका है। प्राचीन काल में स्वातः सुखाय माना जाने वाला अनुवाद कर्म आज संगठित व्यवसाय का मुख्य आधार बन गया है। दूसरे शब्दों में कहें तो अनुवाद प्राचीन काल की व्यक्ति परिधि से निकलकर आधुनिक युग की समष्टि परिधि में समा गया है। आज विश्वभर में अनुवाद की आवश्यकता जीवन के हर क्षेत्र में किसी-न-किसी रूप में अवश्य महसूस की जा रही है। और इस तरह अनुवाद आज के जीवन की अनिवार्य आवश्यकता बन गया है।

बीसवीं शताब्दी के अवसान और इक्कीसवीं सदी के स्वागत के बीच आज जीवन का कोई भी ऐसा क्षेत्र नहीं है जहाँ पर हम चिन्तन और व्यवहार के स्तर पर अनुवाद के आग्रही न हों। भारत में अनुवाद की परम्परा पुरानी है किन्तु

अनुवाद को जो महत्त्व 21वीं सदी के उत्तरार्द्ध में प्राप्त हुआ वह पहले नहीं हुआ था। सन 1947 में भारत के स्वतंत्र होने के पश्चात देश की आर्थिक एवं राजनीतिक स्थिति में परिवर्तन आया। विश्व के अन्य देशों के साथ भारत के आर्थिक एवं राजनीतिक समीकरण बदले। राजनैतिक और आर्थिक कारणों के साथ विज्ञान एवं प्रोद्यौगिकी का विकास भी इस युग की प्रमुख घटना है जिसके फलस्वरूप विभिन्न भाषा-भाषी समुदायों में सम्पर्क की स्थिति उभर कर सामने आयी। आज विश्व के अधिकांश बड़े देशों में एक प्रमुख भाषा के साथ-साथ अन्य कई भाषाएँ भी गौण भाषा के रूप में समान्तर चल रही है। अतएव एक ही भौगोलिक सीमा की राजनैतिक प्रशासनिक इकाई के अन्तर्गत भाषायी बहुसंख्यक भी रहते हैं और भाषायी अल्पसंख्यक भी। अत: विभिन्न भाषाभाषियों के बीच उन्हीं की अपनी भाषा में सम्पर्क स्थापित कर लोकतंत्र में सबकी हिस्सेदारी सुनिश्चित की जा सकती है। वस्तुत: अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर विभिन्न देशों के बीच राजनैतिक, आर्थिक, हिन्दी अब बाजार-तंत्र की व्यवसाय व्यापार की संचार तंत्र की तथा शासकीय व्यवस्था की भाषा बन रही है। हिन्दी भाषा में और हिन्दी भाषा से अनुवाद की परम्परा अब सुदीर्घ होने के साथ-साथ पुख्ता और उल्लेखनीय भी होती जा रही है। लोठार लुत्से की बात पर गौर करें तो हमें हिन्दी मराठी, बांग्ला, तमिल, तेलुगू या कन्नड़ लेखकों को उनकी भाषा के नहीं भारतीय लेखक के रूप में देखना चाहिए। तभी भारतीय भाषाएँ भारत में और फिर विश्व में प्रतिष्ठा प्राप्त करेगी। ओड़िशा का लेखक सारे ओड़िशा में प्रतिष्ठा प्राप्त कर ले तो यह कोई छोटी बात नहीं होगी लेकिन ओड़िआ का लेखक पूरे भारत में प्रतिष्ठा हासिल करे तो यह उससे भी बड़ी बात होगी और उसके लिए चुनौती भी। और जो लेखक इस चुनौती को स्वीकार कर उसमें खरे उतरते हैं. वे सचमुच बड़े बहुत बड़े लेखक सिद्ध होते हैं। इसके लिए जरूरी है कि भारतीय भाषाओं में अनुवाद की प्रक्रिया को तेज किया जाए। अनुवाद के बिना हमारा कोई भी लेखक यूरोप अमेरिका तो दूर अपने ही देश में भारतीय लेखक के रूप में प्रतिष्ठित नहीं हो सकता। उदाहरण के लिए फकीर मोहन सेनापति, प्रतिभा राय सीताकान्त महापात्र आदि अगर हिन्दी में अनूदित न होते तो क्या भारतीय लेखक के रूप में इतने बड़े पैमाने पर देश और दुनिया में स्वीकार्य हो सकते थे? निश्चय ही नहीं। अनुवाद की ताकत पाकर ही कोई बड़ा लेखक और भी बड़ा सिद्ध होता और अपनी सामर्थ्य को दिग-दिगंत तक फैला पाता है। अनुवाद के बगैर यह वह सिद्ध नहीं हो सकता, जो दरअसल वह होता है और यह काम अनुवादक ही कर सकता है। ऐसे में अनुवाद की महत्ता को जन-जन तक पहुँचाना और अनुवादकों को सम्मानजनक स्थान दिलाना जरूरी हो गया है ताकि भारतीय साहित्य और मनीषा को दूसरों तक पहुँचा कर राष्ट्रीय सेतु का निर्माण किया जा सके।

अनुवाद आज के व्यावसायिक युग की अपेक्षा ही नहीं अनिवार्यता भी बन गया है। यह एक सेतु है। सांस्कृतिक सेतु। सांस्कृतिक एकता परस्पर आदान-प्रदान तथा 'विश्वकुटुम्बकम' के स्वप्न को साकार करने की दृष्टि से अनुवाद की भूमिका उल्लेखनीय रही है। इस प्रकार वर्तमान युग में अनुवाद की महत्ता और उपयोगिता केवल भाषा और साहित्य तक ही सीमित नहीं है वह हमारी सांस्कृतिक ऐतिहासिक और राष्ट्रीय संहिता और ऐक्य का माध्यम है जो भाषायी सीमाओं को पार करके भारतीय चिन्तन और साहित्य की सर्जनात्मक चेतना की समरूपता के साथ-साथ वर्तमान तकनीकी और वैज्ञानिक युग की अपेक्षाओं की पूर्तिकर हमारे ज्ञान-विज्ञान के आयामों को देश-विदेश में संपृक्त करती है। दूसरे शब्दों में अनुवाद विश्व संस्कृति विश्व-बंधुत्व, एकता और समरसता स्थापित करने का एक ऐसा सेतु है। सांस्कृतिक तथा विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में बढ़ती हुई आदान-प्रदान की अनिवार्यता ने अनुवाद एवं अनुवाद कार्य के महत्त्व को बढ़ा दिया है।

हमारे देश में अनुवाद का महत्त्व प्राचीन काल से ही स्वीकृत है। प्रो. जी गोपीनाथन ने ठीक ही लक्ष्य किया था कि अनुवाद आज व्यक्ति की सामाजिक आवश्यकता बन गया है। आज के सिमटते हुए संसार में सम्प्रेषण माध्यम के रूप में अनुवाद भी अपना निश्चित योगदान दे रहा है। भारत जैसे बहुभाषी देश में अनुवाद की उपादेयता स्वयं सिद्ध है। भारत के विभिन्न प्रदेशों के साहित्य में निहित मूलभूत एकता के स्वरूप को निखारने के लिए अनुवाद ही एक मात्र अचूक साधन है। इस तरह अनुवाद द्वारा मानव की एकता को रोकने वाली भौगोलिक और भाषायी दीवारों को ढहाकर विश्वमैत्री को और सुदृढ़ बना सकते हैं।

• 21वीं सदी में अनुवाद की महत्ता

21वीं शताब्दी के मौजूदा दौर में अनुवाद एक अनिवार्य आवश्यकता बन गया है। भारत जैसे बहुभाषा-भाषी देश के जन समुदायों के बीच अंत: संप्रेषण के संवाहक के रूप में अनुवाद का बहुआयामी प्रयोजन सर्वविदित है। यदि आज के इस युग को अनुवाद का युग कहा जाए तो कोई अतिशयोक्ति न होगी क्योंकि आज जीवन के हर क्षेत्र में अनुवाद की उपादेयता को सहज ही सिद्ध किया जा सकता है। धर्म दर्शन, साहित्य-शिक्षा, विज्ञान-तकनीकी, वाणिज्य व्यवसाय, राजनीति-कूटनीति, आदि सभी क्षेत्रों से अनुवाद का अभिन्न संबंध रहा है। अत: चिंतन और व्यवहार के प्रत्येक स्तर पर आज मनुष्य अनुवाद पर आश्रित है। इतना ही नहीं विश्व-संस्कृति के विकास में भी अनुवाद की महत्त्वपूर्ण भूमिका रही है। विश्व के विभिन्न प्रदेशों की जनता के बीच अंत:सप्रेषण की प्रक्रिया के रूप में उनके बीच भावात्मक एकता को कायम रखने में देश-विदेश के नवीन ज्ञान-विज्ञान, शोध-चिंतन को दुनिया के हर कोने तक ही नहीं आम जनता तक भी पहुँचाने में तथा दो भिन्न संस्कृतियों को नजदीक लाकर एक सूत्र में पिरोने में अनुवाद की महती भूमिका को नकारा नहीं जा सकता। प्रो जी. गोपीनाथन के शब्दों में अनुवाद मानव की मूलभूत एकता की व्यक्ति-चेतना एवं विश्व चेतना के अद्वैत का प्रत्यक्ष प्रमाण है। अत: मौजूदा शताब्दी में अनुवाद ने अपनी संकुचित साहित्यिक परिधि को लाँघकर प्रशासन, विज्ञान, प्रौद्योगिकी तकनीकी चिकित्सा, कला, संस्कृति अनुसंधान, पत्रकारिता जनसंचार दूरस्थ शिक्षा प्रतिरक्षा विधि व्यवसाय आदि हर क्षेत्र में प्रवेश कर यह साबित कर दिया है कि अनुवाद समकालीन जीवन की अनिवार्यता है जिसके माध्यम से विश्व ज्ञान-विज्ञान के क्षेत्र में क्षेत्रीयतावाद के संकुचित एवं सीमित दायरे से बाहर निकलकर मानवीय एवं भावात्मक एकता के केंद्र बिन्दु तक पहुंच सकता है और यही अनुवाद की आवश्यकता और उपयोगिता का सशक्त एवं प्रत्यक्ष प्रमाण है।

आज जब सारा विश्व सामाजिक पुनर्व्यवस्था पर एक नये सिरे से विचार कर रहा है और व्यक्ति तथा समाज को एक नव्य स्वतंत्र दृष्टि मिली है वहीं हम भी व्यक्ति और देश को विश्व के प्ररिप्रेक्ष्य में देखने-समझने का प्रयत्न कर रहे हैं। ऐसी स्थिति में अनुवाद का महत्व और भी बढ़ जाता है। किसी समाज और देश की अभिव्यक्ति भाषा की सीमा के कारण एक क्षेत्र विशेष तक सीमित रह जाए और दूसरों तक न पहुंच पाए तो विश्व स्तर पर एक नव्य सामाजिक पुनर्व्यस्था की बात सार्थक कैसे हो सकती है।

स्वयं आकलन हेतु अभ्यास प्रश्न-1

प्रश्न-1 'सेंट्रल इंस्टीटयूट ऑफ इण्डियन लेंग्वेजिन' कहां स्थित है?

प्रश्न-2 नेशनल नॉलेज कमीशन में किन व्यक्तियों के सुझावों से एन.टी.एम. स्थापित किया गया ?

प्रश्न-3 मैसूर स्थित 'सेंट्रल इंस्टीट्यूट ऑफ इण्डियन लेंग्वेजिन' का अनुवाद कार्य कितनी भाषाओं में हो रहा है?

प्रश्न-4 नई दिल्ली में किस संस्था द्वारा अनुवाद कार्य और शिक्षण किया जा रहा है ?

16.4 सारांश

भारत में अनुवाद के भविष्य पर विचार किया जाए तो भारत में अनुवाद की अमिट संभावनाएं हैं। भारतीय समाजिक, सांस्कृतिक और राजनीतिक ढांचे में अनुवाद का अत्याधिक महत्त्व है। आज हिन्दी भाषा की जो स्थिति है। उसके समक्ष विकास की जो संभावनाएं खुली हैं उन्हीं का आकलन करते हुए इसके भविष्य का अनुमान लगा सकते हैं।

16.5 कठिन शब्दावली

हिस्सा - भाग

वायु - हवा

समस्या - मुसीबत

आशय - मतलब

स्मरण - याद करना

16.6 स्वयं आकलन हेतु प्रश्नों के उत्तर

उ-1 मैसूर (कर्नाटक, भारत)।

उ-2 प्रो. यशपाल और सैम पैतरोया।

उ-3 23 भाषाओं।

उ-4 सर्टिफाइड ट्रांसलेशन एजेंसी।

16.7 संदर्भित पुस्तकें

(1) डॉ. रीतारानी पालीवाल, अनुवाद प्रक्रिया, अंतिम प्रकाशन, दिल्ली।

(2) प्रो. दिलीप सिंह, अनुवाद की व्यापक संकल्पना, वाणी प्रकाशन दिल्ली।

(3) विभा गुप्ता, अनुवाद के भाषिक पक्ष, वाणी प्रकाशन दिल्ली।

16.8 सात्रिक प्रश्न

प्र.1 अनुवाद के राष्ट्रीय प्राधिकरण के गठन की आवश्यकता क्यों है? स्पष्ट कीजिए।

प्र.2 हिन्दी अनुवाद के भविष्य की चर्चा कीजिए।

प्र.3 वर्तमान संदर्भ में अनुवाद की क्या उपादेयता है? विस्तारपूर्वक बताइए।

*****

बी०ए० हिन्दी
द्वितीय वर्ष

प्रश्न पत्र–SEC-2
कोर्स कोडः HIND 206

अनुवाद विज्ञान

इकाई 1 से 16

लेखक : डॉ. ऊषा रानी

दूरस्थ एवं ऑनलाइन शिक्षा केंद्र हिमाचल प्रदेश
विश्वविद्यालय, ज्ञान पथ समरहिल, शिमला–05

अनुक्रमणिका

क्र.सं.	विषय	पृष्ठ संख्या
1.	अनुवाद का तात्पर्य	
2.	अनुवाद के प्रकार	
3.	अनुवाद का शिल्पगत भेद	
4.	साहित्यिक अनुवाद के प्रमुख रूप	
5	काव्यानुवाद	
6.	कथानुवाद	
7	नाट्यनुवाद	
8.	अनुवाद में पर्यवेक्षण (बेटिंग)	
9.	वैज्ञानिक तकनीकी शब्दावली का अनुवाद	
10.	मुहावरों एवं लोकोक्तियों का अनुवाद	
11.	संक्षिप्ताक्षर, कूटपद, आंचलिक शब्दावली का अनुवाद	
12.	सम्पादन प्रक्रिया	
13.	अनुवादक की अर्हता और सफल अनुवाद के लक्षण	
14.	विश्व भाषाओं एवं हिन्दी भाषा की प्रमुख कृतियों का अनुवाद	
15.	भारत में अनुवाद प्रशिक्षण केंद्र	
16.	अनुवाद में राष्ट्रीय प्राधिकरण आवश्यकता एवं भविष्य	